CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

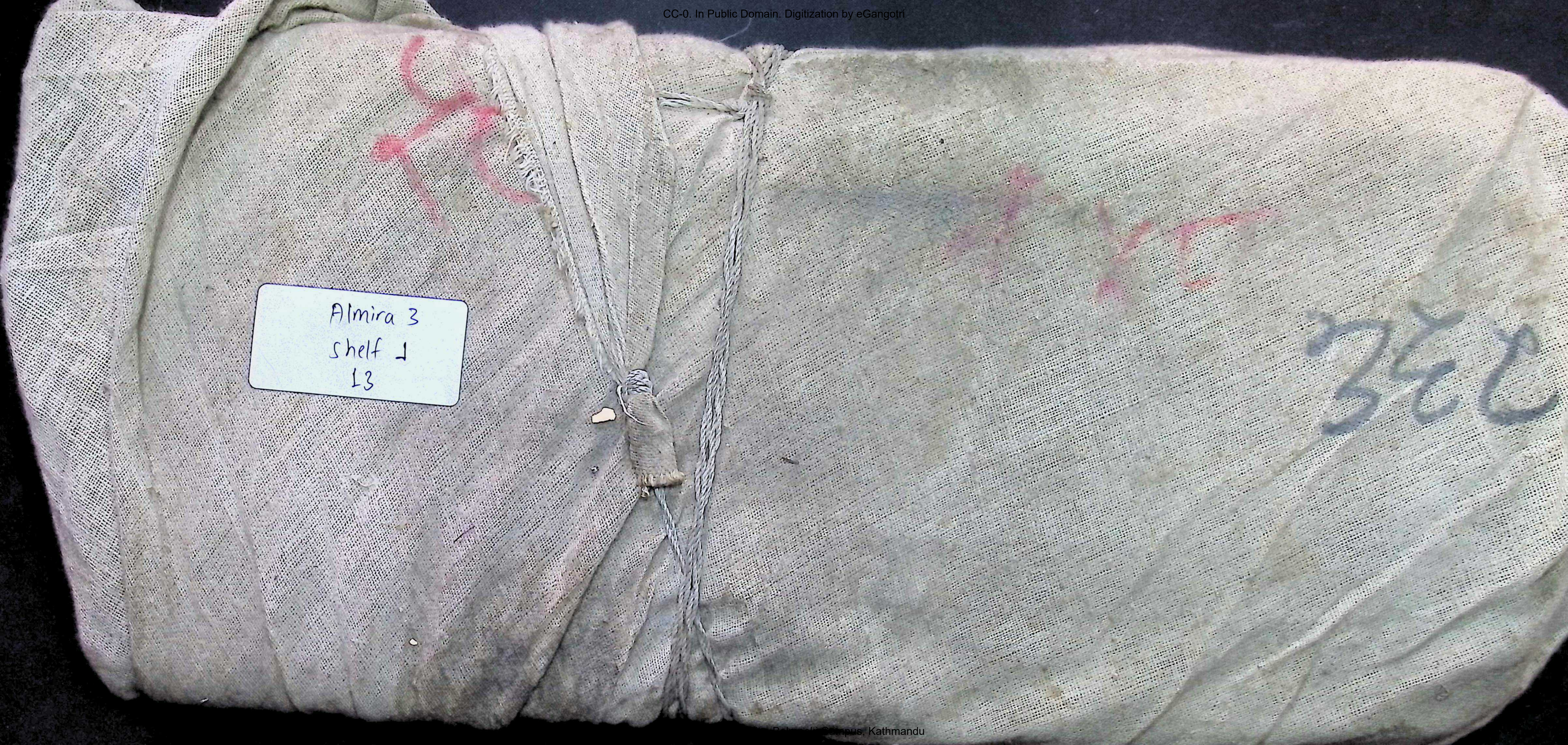

Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

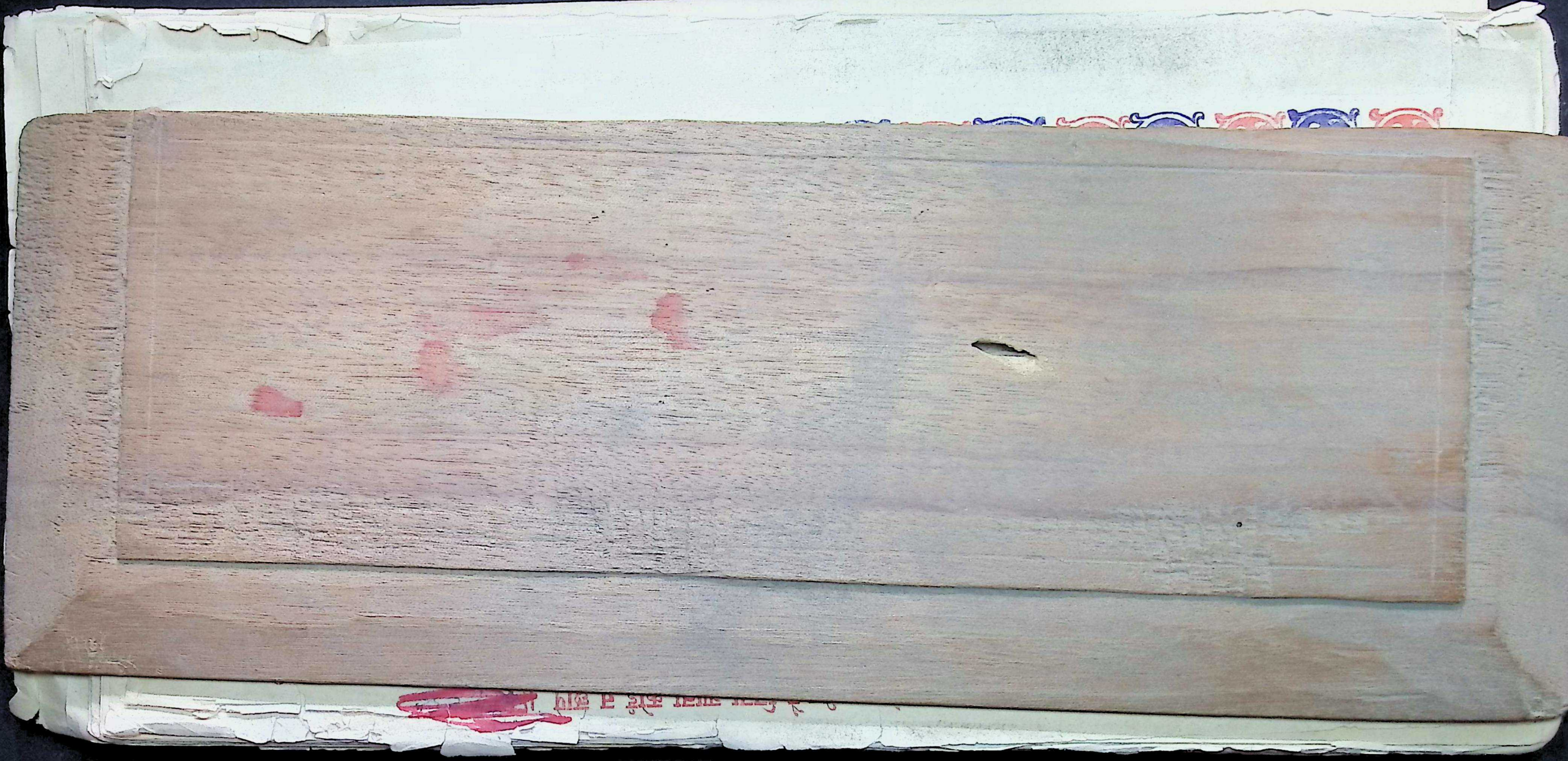

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ह॰ नं॰ 2928

इस पुस्तक का सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन है बिना आज्ञा कोई न छापे ॥

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगुसंहिता महाशास्त्र प्रत्यक्ष मूक प्रश्न

समाप्तम्

पं॰ श्यामभरोसे गंगाशरण ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ शहर।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ऊँ ५ ॥ اوم (۵)

प्रश्न.घरमें तकलीफ़ है	سوال گھر میں تکلیف ہے۔
प्रश्न.चित्त भ्रम के विषय में	سوال چت بھرم کی بابت۔
प्रश्न.जीव की चिन्ता के विषय में	سوال جیو کی چنتا کی بابت۔
प्रश्न.इम्तहान में पास होगा या नहीं	سوال امتحان میں پاس ہونگے یا نہیں۔
प्रश्न.तरक्की होगी या नहीं	سوال ترقی ہوگی یا نہیں۔
प्रश्न.असामी मिलेगी या नहीं	سوال اسامی ملے گی یا نہیں۔
प्रश्न.हमने क्या खाया है	سوال ہم نے کیا کھایا ہے۔
प्रश्न.जीतेंगे या हारेंगे	سوال جیتینگے یا ہارینگے۔

Nepal Sanskrit University, Valmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ उँ ४ ॥ اوم (۴)

प्रश्न.यात्रा से प्राप्ति के विषय में	سوال یاترا سے پراپتی کی بابت۔
प्रश्न.तीर्थ यात्रा के विषय में	سوال تیرتھ یاترا کی بابت۔
प्रश्न.दुकान खोलने के विषय में	سوال دوکان کھولنے کی بابت۔
प्रश्न.भूत चुरैल प्रेत के विषय में	سوال بھوت چڑیل پریت کی بابت۔
प्रश्न.मकान बनाने के विषय में	سوال مکان بنانا۔
प्रश्न.कुवां बनाने के विषय में	سوال کنواں بنانے کی بابت۔
प्रश्न.बाग लगाने के विषय में	سوال باغ لگانے کی بابت۔
प्रश्न.वो चीज़ मिलेगी या नहीं	سوال وہ چیز ملے گی یا نہیں۔

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ॐ २ ॥ اوم (۲)

प्रश्न.मुक़द्दमे के विषय में	سوال مقدمہ کی بابت ۔
प्रश्न.ज़मीन के झगड़े के विषय में	سوال زمین کے جھگڑے کی بابت ۔
प्रश्न.लड़ाई के विषय में	سوال لڑائی کی بابت ۔
प्रश्न.कोई जीव चला गया है	سوال کوئی جیو چلا گیا ہے ۔
प्रश्न.आमदनी के विषय में	سوال آمدنی کی بابت ۔
प्रश्न.जिन्स में नफ़ा होगा या टोटा	سوال جنس میں نفع ہوگا یا ٹوٹا
प्रश्न.विद्या के विषय में	سوال ودیا کی بابت ۔
प्रश्न.करज लेने के विषय में	سوال قرض لینے کی بابت ۔

Nepal Sanskrit University, Balmeekri Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

	ॐ १	ॐ २	ॐ ३	ॐ ४	ॐ ५	ॐ ६	ॐ ७	ॐ ८
श्री १	रोजगार के विषय में	मुकदमे के विषय में	करज देना	यात्रा से प्राप्ति	घर में तकलीफ है	वेगा या नहीं	एक आदमी कुछ लेकर भाग गया	मकान का झगड़ा
श्री २	चोरी होने के विषय में	जमीन के झगड़े के विषय में	धन के विषय में	तीर्थ यात्रा के विषय में	चित्त भ्रम के विषय में	परदेश में बीम । है सो कैसे है	बदली होना चाहते हैं	खोटे स्वप्न दाखे हैं
श्री ३	संतान के विषय में	लड़ाई के विषय में	गुप्त चिंता के विषय में	दुकान खोलने के विषय में	जीव की चिंता के विषय में	मनोर्थ सिद्ध होगा या नहीं	एक चीज खोई गई	रंडी के विषय में
श्री ४	लड़का होगा या लड़की	जीव चला गया	बेमारी को कब आराम होगा	भूत चुरैल प्रेतके विषय में	इम्तहान में पास होंगे या नहीं	एक आदमी फंस गया	हमारी जेब में क्या है	जिंदा है या मर गया
श्री ५	बदली नहीं चाहते हैं	आमदनी के विषय में	खेती के विषय में	मकान बनाने के विषय में	तरक्की होगी या नहीं	मुकदमे की अपील	गड़ा धन कहां गुप्त है	कारखाना जारी करने के विषय में
श्री ६	सगाई के विषय में	जिन्स से नफा होगा या टोटा	नौकरी के विषय में	कुआं बनवाने के विषय में	आसामी मिलेगी या नहीं	सवारी के विषय में	दस्तकारी विद्या का	राजदरबार के विषय में
श्री ७	विवाह के विषय में	विद्या के विषय में	स्त्री का मुलाकात का	बाग लगाने के विषय में	हमने क्या खाया है	चौपाये से लहना होगा	यह काम हम पै आभी जायगा	ईश्वर की भक्ती के विषय में
श्री ८	माशूक के विषय में	करज लेने के विषय में	मित्र की मुलाकात का	वो चीज मिलेगी या नहीं	जीतेंगे या हारेंगे	हमारे पास रहेगी या नहीं	दिन कब तक नाकिस हैं	रसायन के विषय में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ॐ ८ ॥ دفعہ

प्रश्न. मकान के झगड़े के विषय में	سوال مکان کا جھگڑا۔
प्रश्न. खोटे सुपने दीखते हैं	سوال خراب خواب کا۔
प्रश्न. रंडी के मामले का	سوال رنڈی کے معاملے کا:
प्रश्न. ज़िन्दा है या मरगया	سوال زندہ ہے یا مرگیا:
प्रश्न. कारखाना जारी करनेके विषयमें	سوال کارخانہ جاری کرنے کی بابت۔
प्रश्न. राजदरबार के विषय में	سوال راج دربار کی بابت۔
प्रश्न. ईश्वर की भक्ति के विषय में	سوال ایشور کی بھگتی کی بابت۔
प्रश्न. रसायन के विषय में	سوال رسائن کی بابت۔

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ डाँ ७ ॥

प्रश्न.एक आदमी कुछलेकरभागगयाहै		ایک شخص کچھ لیکر بھاگ گیا ہے۔	سوال
प्रश्न.बदली होना चाहते हैं		بدلی ہونا چاہتے ہیں۔	سوال
प्रश्न.एक चीज़ खोई गई है		ایک چیز کھوئی گئی ہے۔	سوال
प्रश्न.हमारी जेब में क्या है		ہماری جیب میں کیا ہے۔	سوال
प्रश्न.गढ़े हुवे धनके विषय में		گڑے ہوئے دھن کی بابت۔	سوال
प्रश्न.दस्तकारी विद्या के विषय में		دستکاری ودیا کی بابت۔	سوال
प्रश्न.यह काम हमपै आभी जावेगा		یہ کام ہمپے آبھی جاوے گا۔	سوال
प्रश्न.दिन कबतक नाकिस हैं		دن کب تک ناقص ہیں	سوال

Nepal Sanskrit University, Baliganj Campus

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ डा ६ ॥

प्रश्न. जीवेगा या मरेगा	سوال جیے گا یا مرے گا۔
प्रश्न. परदेश में बीमार है सो कैसे है	سوال پردیس میں بیمار ہے کیسے ہے۔
प्रश्न. मनोर्थ सिद्ध होगा या नहीं	
प्रश्न. एक आदमी फँस गया है	سوال ایک آدمی پھنس گیا ہے۔
प्रश्न. मुक़द्दमे के अपील के विषय में	سوال مقدمہ کے اپیل کی بابت۔
प्रश्न. सवारी के विषय में	سوال سواری کی بابت۔
प्रश्न. चौपाये से लहना भी होगा	سوال چوپائے سے لہنا بھی ہوگا
प्रश्न. हमारे पास रहेगी या छूट जावेगी	سوال ہمارے پاس رہیگی یا چھوٹ جاویگی

Nepal Sanskrit University, Dang. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ॐ ५ ॥ اوم (۵)

प्रश्न. घरमें तकलीफ़ है	سوال گھر میں تکلیف ہے۔
प्रश्न. चित्त भ्रम के विषय में	سوال چت بھرم کی بابت۔
प्रश्न. जीव की चिन्ता के विषय में	سوال جیو کی چنتا کی بابت۔
प्रश्न. इम्तहान में पास होगा या नहीं	سوال امتحان میں پاس ہونگے یا نہیں۔
प्रश्न. तरक्की होगी या नहीं	سوال ترقی ہوگی یا نہیں۔
प्रश्न. असामी मिलेगी या नहीं	سوال اسامی ملے گی یا نہیں۔
प्रश्न. हमने क्या खाया है	سوال ہم نے کیا کھایا ہے۔
प्रश्न. जीतेंगे या हारेंगे	سوال جیتینگے یا ہارینگے۔

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ उँ ४ ॥ اوم ([illegible])

प्रश्न.यात्रा से प्राप्ति के विषय में		سوال یاترا سے پراپتی کی بابت۔
प्रश्न.तीर्थ यात्रा के विषय में		سوال تیرتھ یاترا کی بابت۔
प्रश्न.दुकान खोलने के विषय में		سوال دوکان کھولنے کی بابت۔
प्रश्न.भूत चुरैल प्रेत के विषय में		سوال بھوت چڑیل پریت کی بابت۔
प्रश्न.मकान बनाने के विषय में		سوال مکان بنانا۔
प्रश्न.कुवां बनाने के विषय में		سوال کنواں بنانے کی بابت۔
प्रश्न.बाग लगाने के विषय में		سوال باغ لگانے کی بابت۔
प्रश्न.वो चीज़ मिलेगी या नहीं		سوال وہ چیز ملے گی یا نہیں۔

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ॐ ३ ॥ اوم (۳)

प्रश्न. करज़ देने के विषय में	قرض دینے کی بابت۔	سوال
प्रश्न. धन के विषय में	دھن کی بابت۔	سوال
प्रश्न. गुप्त चिन्ता के विषय में	گپت چنتا کی بابت۔	سوال
प्रश्न. बीमारी को कब आराम होगा	بیماری کو کب آرام ہوگا۔	سوال
प्रश्न. खेती के फायदे के विषय में	کھیتی میں نفع کی بابت۔	سوال
प्रश्न. नौकरी के विषय में	نوکری کی بابت۔	سوال
प्रश्न. स्त्री की मुलाकात के विषय में	استری کی ملاقات کا۔	سوال
प्रश्न. मित्र से मुलाकात के विषय में	متر سے ملاقات کی بابت۔	سوال

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ॐ २ ॥ (२) ओम

प्रश्न.मुक़द्दमे के विषय में		سوال مقدمہ کی بابت۔
प्रश्न.ज़मीन के झगड़े के विषय में		سوال زمین کے جھگڑے کی بابت۔
प्रश्न.लड़ाई के विषय में		سوال لڑائی کی بابت۔
प्रश्न.कोई जीव चला गया है		سوال کوئی جیو چلا گیا ہے۔
प्रश्न.आमदनी के विषय में		سوال آمدنی کی بابت۔
प्रश्न.जिन्स में नफा होगा या टोटा		سوال جنس میں نفع ہوگا یا ٹوٹا
प्रश्न.विद्या के विषय में		سوال وِدیا کی بابت۔
प्रश्न.करज लेने के विषय में		سوال قرض لینے کی بابت۔

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ॐ ? ॥ اوم (۱)

प्रश्न. रोज़गार के विषय में	سوال روزگار کی بابت۔
प्रश्न. चोरी होने के विषय में	سوال چوری ہونے کی بابت۔
प्रश्न. सन्तान के विषय में	سوال سنتان کی بابت۔
प्रश्न. लड़का होगा या लड़की	سوال لڑکا ہوگا یا لڑکی۔
प्रश्न. बदली नहीं चाहते	سوال بدلی نہیں چاہتے۔
प्रश्न. सगाइ के विषय में	سوال سگائی کی بابت۔
प्रश्न. ब्याह के विषय में	سوال بیاہ کی بابت۔
प्रश्न. माशूक के विषय में	سوال معشوق کی بابت۔

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका

आज दिन नष्ट जन्मपत्र कहनेका अभावसा होगया है कहीं२ कोई२ पंडित नष्ट जन्मपत्र कहते भी हैं तो परीक्षा करनेपर वहां कुछ का कुछ मालूम होताहै बहुत वर्षोंसे खोज करते२ भृगुसंहिता वाले पंडितों तथा नष्ट जन्मपत्र बनाने वाले पंडितों तथा मंत्र शास्त्री सिद्धजनों के द्वारा इस विद्याके जो कुछ गूढ़ रहस्य हमको प्राप्त हुएहैं सो सर्व महाशयों के हितार्थ इस पुस्तक में यथाक्रम उदाहरणों सहित वर्णन किये जातेहैं सर्व महाशयों से सविनय प्रार्थना है कि इन सिद्ध रीतियों से विशेष अभ्यासकर अपना कार्य सिद्धकरें यह ब्राह्मणों पंडितों के कमाने खाने के धन्वे हैं जहांतक होसके गुप्त रखने चाहियें हमने अत्यंत परिश्रम से संग्रह करके बहुतसा धन खर्चकर यह पुस्तक छापकर प्रकाशित किया है ॥

सूचना—इस पुस्तक का सर्वाधिकार ऐक्ट २५ सन् १८६७ के राजनियमानुसार प्रकाशक के आधीनहै बिना आज्ञा कोई नछापें ॥

पुस्तक मिलने का पता—

पं० श्यामभरोसे गङ्गाशरण ज्ञानसागर प्रेस, बनियापाड़ा मेरठ-शहर ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूक प्रश्न बताने की रीति

यह मूक प्रश्न कहने की बहुत उत्तम क्रिया अङ्क विद्या से निर्माण की है इससे प्रश्न ज्यों का त्यों मिल जाता है इस क्रिया में ६४ प्रश्न लिखे हैं इनके बताने में ८ पत्रे ऊँ के और ८ श्री के जिनके एक एक पत्रे में आठ २ प्रश्न हैं ऐसे ही उन आठ २ पत्रों में चौंसठ २ प्रश्न हैं जिनमें देवनागरी और उर्दू अक्षरों में लिखे हैं ऐसे सब सोलह पत्रे हैं और एक प्रश्नचक्र है उस प्रश्नचक्र में ऊँ और श्री दोनों पत्रों के ऊपर अंक लिखे हैं और उसके ६४ कोष्ठों में ६४ प्रश्न हैं अब इन सोलह पत्रे और प्रश्नचक्र से प्रश्न बताने की रीति लिखते हैं इस पुस्तक से प्रश्न बताने की यह रीति है कि जब प्रच्छक प्रश्न बूझने आवे तब उसके हाथमें ८ पत्रों को देकर कहे कि इन ८ पत्रों में संसारिक व्यवहार के चौंसठ प्रश्न हैं सो जिस पत्रे में आपका प्रश्न हो वह प्रश्न देखकर पत्रा अपने पास रखलो जब वह प्रच्छक ऐसा कर चुके तब उसको दूसरे ८ पत्रे श्री के देकर कहो कि जो प्रश्न तुमने उन ८ पत्रों में देखा है वही इनमें भी देखलो कि कौनसे पत्रे में है जब वह प्रश्न देखकर अपने प्रश्न के दोनों पत्रे अलग निकालले तब बतलाने वाले को चाहिये कि अपनी बुद्धिमानी और चतुराई के साथ उसके प्रश्न के दोनों पत्रों के अंक ज्ञात होजांय तब प्रश्नचक्र में देखो कि कौनसे अंकका कोठा ऊँ का है और कौनसे अंक का श्री का है बस जो कुछ उन दोनों के कोष्ठों की सीध में आवे वही प्रच्छकका प्रश्न समझो और अपनी चतुराई से बताओ कि आपका प्रश्न अमुक विषय का है अमुक अनुष्ठान करने से कार्य की सिद्धि होगी अमुक रीतिसे करो इत्यादि वार्ता अन्य मतों से बुद्धिमानी से कहो।

आपका शुभचिंतक—पं० श्यामभरोसे गङ्गाशरण, ज्ञानसागर प्रेस, महाजनपाड़ा मेरठ सिटी।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस पुस्तक का सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन है बिना आज्ञा कोई न छापे ।।

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगुसंहिता नष्टजन्माङ्ग दीपिका

समाप्तम्

पं० श्यामभरोसे गंगाशरण ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ शहर ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री १ ॥ (۱) سری

प्रश्न. रोज़गार के विषय में	سوال روزگار کی بابت۔
प्रश्न. मुक़द्दमे के विषय में	سوال مقدمہ کی بابت:
प्रश्न. करज़ देने के विषय में	سوال قرض دینے کی بابت۔
प्रश्न. यात्रा मे प्राप्ति के विषय में	سوال یاترا سے پراپتی کی بابت۔
प्रश्न. घर में तकलीफ है	سوال گھر میں تکلیف ہے۔
प्रश्न. जीवेगा या मरेगा	سوال جیئے گا یا مرے گا۔
प्रश्न. एक आदमी कुछ लेकर भाग गया है	سوال ایک شخص کچھ لیکر بھاگ گیا ہے۔
प्रश्न. मकान के झगड़े के विषय में	سوال مکان کا جھگڑا۔

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री २ ॥ سری (۴)

प्रश्न.चोरी होने के विषय में	سوال چوری ہونے کی بابت۔
प्रश्न.ज़मीन के झगड़े के विषय में	سوال زمین کے جھگڑے کی بابت۔
प्रश्न.धन के विषय में	سوال دھن کی بابت۔
प्रश्न.तीर्थयात्रा के विषय में	سوال تیرتھ یاترا کی بابت۔
प्रश्न.चित्त भ्रम के विषय में	سوال چت بھرم کی بابت۔
प्रश्न.परदेश में बीमार है सो कैसे है	سوال پردیس میں بیمار کیسے ہے۔
प्रश्न.बदली होना चाहते हैं	سوال بدلی ہونا چاہتے ہیں۔
प्रश्न.खोटे सुपने दीखते हैं	سوال خراب خواب کا۔

Nepal Sanskrit University, Balmiki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री ३ ॥ (३) بسری

प्रश्न.सन्तान के विषय में	سوال سنتان کی بابت۔
प्रश्न.लड़ाई के विषय में	سوال لڑائی کی بابت۔
प्रश्न.गुप्त चिंता के विषय में	سوال گپت چنتا کی بابت۔
प्रश्न.दुकान खोलने के विषय में	سوال دوکان کھولنے کی بابت۔
प्रश्न.जीव की चिन्ता के विषय में	سوال جیو کی چنتا کی بابت۔
प्रश्न.मनोर्थ सिद्ध होगा या नहीं	سوال منورتھ سدھ ہوگا یا نہیں۔
प्रश्न.एक चीज़ खोई गई है	سوال ایک چیز کھوئی گئی ہے۔
प्रश्न.रंडी के मामले का	سوال رنڈی کے معاملے کا:

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री ४ ॥ سری (تہ)

प्रश्न. लड़का होगा या लड़की	سوال لڑکا ہوگا یا لڑکی۔
प्रश्न. कोई जीव चला गया है	سوال کوئی جیو چلا گیا ہے۔
प्रश्न. बीमारी को कब आराम होगा	سوال بیماری کو کب آرام ہوگا۔
प्रश्न. भूत चुरैल प्रेत के विषय में	سوال بھوت چڑیل پریت کی بابت۔
प्रश्न. इम्तहान में पास होगा या नहा	سوال امتحان میں پاس ہونگے یا نہیں۔
प्रश्न. एक आदमी फंस गया है	سوال ایک آدمی پھنس گیا ہے۔
प्रश्न. हमारी जेब में क्या है	سوال ۔ ہماری جیب میں کیا ہے۔
प्रश्न. ज़िन्दा है या मरगया	سوال زندہ ہے یا مر گیا۔

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री ५ ॥ (۵) سیری

प्रश्न.बदली नहीं चाहते	سوال بدلی نہیں چاہتے۔
प्रश्न.आमदनी के विषय में	سوال آمدنی کی بابت۔
प्रश्न.खेती के फायदे के विषय में	سوال کھیتی میں نفع کی بابت۔
प्रश्न.मकान बनाने के विषय में	سوال مکان بنانا۔
प्रश्न.तरक्की होगी या नहीं	سوال ترقی ہوگی یا نہیں۔
प्रश्न.मुकदमे के अपील के विषय में	سوال مقدمہ کے اپیل کی بابت۔
प्रश्न.गढ़े हुए धन के विषय में	سوال گڑے ہوے دھن کی بابت۔
प्रश्न.कारखाना जारी करने के विषयमें	سوال کارخانہ جاری کرنے کی بابت۔

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री ६ ॥ (۲۱) بسری

प्रश्न.सगाई के विषय में	منگائی کی بابت۔	سوال
प्रश्न.जिन्स में नफा होगा या टोटा	جنس میں نفع ہوگا یا ٹوٹا	سوال.
प्रश्न.नौकरी के विषय में	نوکری کی بابت۔	سوال
प्रश्न.कुवां बनाने के विषय में	کنواں بنانے کی بابت۔	سوال
प्रश्न.असामी मिलेगी या नहीं	اسامی ملے گی یا نہیں۔	سوال
प्रश्न.सवारी के विषय में	سواری کی بابت۔	سوال
प्रश्न.दस्तकारी विद्या के विषय में	دستکاری وِدّیا کی بابت۔	سوال
प्रश्न.राजदर्बार के विषय में	راج دربار کی بابت۔	سوال

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री ७ ॥ اِستری

प्रश्न. ब्याह के विषय में	سوال بیاہ کی بابت۔
प्रश्न. विद्या के विषय में	سوال وِدیا کی بابت۔
प्रश्न. स्त्री की मुलाकात के विषय में	سوال استری کی ملاقات کا۔
प्रश्न. बाग लगाने के विषय में	سوال باغ لگانے کی بابت۔
प्रश्न. हमने क्या खाया है	سوال ہم نے کیا کھایا ہے۔
प्रश्न. चौपाये से लहना भी होगा	سوال چوپائے سے لہنا بھی ہوگا
प्रश्न. यह काम हमपै आभी जावेगा	سوال یہ کام ہم پے آبھی جاوے گا۔
प्रश्न. ईश्वर की भक्ती के विषय में	سوال ایشور کی بھگتی کی بابت۔

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रत्यक्ष मक प्रश्न क्रिया ॥ श्री ८ ॥ سر (۸)

प्रश्न.माशूक के विषय में	عشوق کی بابت۔۔	سوال
प्रश्न.करज़ लेन के विषय में	قرض لینے کی بابت۔	سوال
प्रश्न.मित्र से मुलाकात के विषय में	متر سے ملاقات کی بابت	سوال
प्रश्न.वो चीज़ मिलेगी या नहीं	وہ چیز ملے گی یا نہیں۔	سوال
प्रश्न.जीतेंगे या हारेंगे	جیتینگے یا ہارینگے۔۔	سوال
प्रश्न.हमारे पास रहेगी या छूट जावेगी	ہمارے پاس رہیگی یا چھوٹ جاویگی	سوال
प्रश्न.दिन कब तक ना।कस हैं	دن کب تک ناقص ہیں	سوال
प्रश्न.रसायन के विषय में	رسائن کی بابت۔	سوال

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

29608

इस पुस्तक का सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन है बिना आज्ञा कोई न छापे ॥

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगुसंहिता नष्टजन्माङ्ग दीपिका

प्रारम्भ

पं० श्यामभरोसे गंगाशरण ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ शहर ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

❁ श्रीगणेशायनमः ❁

अथ नष्ट जन्मांग दीपिका प्रारम्भः ॥ पृष्ट १

(१) प्रथम प्रकार लिख्यते ॥ प्रच्छकस्य वाक्य क्षराणि अकारादिस्वर संयुक्तानिग्राह्या ॥ यदिचेदक्षराणि अधिकानी भवंति तदा प्रच्छकस्य प्रति पदे त्वनेकानि फलंनिसन्ति तेषां मध्ये कमपि फलं कथय तदा ॥ श्रेणी प्रश्नाक्षराणां तदुदधि ४ गुणितामन्त्य वर्णौ रुपेतां दन्ताष्टौ ३२ लोकपाल ५ रवि १२ धृति १८ मुनि ७ भौ २७ विंशति २० मूर्च्छनाभि २१ सम्वत ६० मासश्च १२ स्थिति १५ भे २७ लग्न १२ बार ७ राशि क्रमेण लभ्य ज्ञातव्यं तेश्वंश्र्वपूर्वग्रहणं सहितं जायते ॥ इति नष्ट जन्म व्याख्या ॥ प्रद्धया क्षराणि मात्रा सहितानि गणयित्वा चतुर्गुणानि कृत्वा (४) अत्यं वर्ण वर्गा विक्षिप्य तन्मध्ये द्वात्रिंशत क्षेप्य पुनरेका कृत्य त्रशोधिकं शत मध्ये क्षेप्य अष्टोत्तर शतेन भागं कार्यं शेषांके प्रभावादि संबत्सरो लभ्यते ॥ इति प्रकारान्तरेण ॥ अष्टोतर शतंमध्ये क्षेप्य अष्टोत्तर शतेनभागो हार्यः षष्टयधिकं यदि भवति तक्षषष्टि र्भागुर्द्धरितां कस्य मध्ये दष्टौ क्षेप्य उपरियदा षष्टयाधिकः तस्य षष्टि र्भागुः तदा जात संबत्सरो लभ्यते इति संबत्सरः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्नाक्षरा ध्रुवां कस्य मध्ये अष्टौक्षेप्या ८ द्वादश १२ भिर्भागुः उद्धरितां केन कार्तिकादि मासाः लभ्यंते अथवा प्रश्नाक्षरा मात्रा संहितस्य ध्रुवां कस्य मध्ये त्रयोधिक शतम् १०३ लिप्यं पञ्चदश हीनं कृत्वा वसु सहिते क्षिप्ते द्वादश भक्तं शेषांक कार्तकादि मासाः लभ्यंते ॥ इति मासा ॥ पक्षक्षेये प्रश्नाक्षरा कस्य मध्ये ७३ क्षेप्या द्वादशभिर्भागो कार्यः एकेका धृतौ कृष्ण पक्षः अन्यथा शुक्ल पक्ष यद्वा प्रश्न मात्राक्षर ध्रुवा कस्य मध्ये त्रिंशत्त क्षेप्य द्वाभ्यां भक्तं शेषं शून्यं एकं भवति तदा कृष्णा द्विशेषे शुक्लः ॥ ॥ इति पक्षः ॥ तिथि प्रश्ना क्षरांक मध्ये षटक्षेप्या पञ्चदश भिर्भागः उद्धरितां केन प्रतिपदादि तिथि यः लभ्यंते अथवा प्रश्नाक्षर मध्ये अष्टपञ्च शच्छिवा पञ्चदश भिर्भागं उद्धरितां केन प्रतिपदादि तिथय लभ्यते ॥ इति तिथि ॥ अथ वारायनमः ॥ प्रश्नाक्षरांका द्वात्रिंश युतं तनमध्ये त्रयश्च त्वारिंश ४३ क्षेप्या सप्तभिर्भागः उद्धरितांकेन सूर्यादियो वारा लभ्यते ॥ इतिवार नक्षत्रा नयनम् ॥ प्रश्ना क्षरांक मध्ये २१०८ इक्कीस सौ आठ क्षेप्या पुनः वार क्षेप्या २८ अष्ठाईस भागः उद्धरितां केन कृतिकादि नक्षत्रानि लभ्यते ॥ अथ योगा नयनम् । प्रश्नाक्षरां कमध्ये रामनन्द १३ क्षेप्या उपरि ७ सप्तक्षेप्या पुनः २८ अष्ठा विंशति भिर्भागः उद्धरितां केन विष्कुं भादि योगानि लभ्यते ॥ इति योगकरणा नयनम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्नाक्षरांकमध्ये वसुमुनि ७८ त्तेप्या पुनः विंशति त्तेप्या २१ भागः उद्धरितां केन शकुनि प्रमुखाभि कर्णानि लभ्यंते

अथ वेला नयनम लिख्यते

प्रश्ना क्षरांकमध्ये वसु मुनि क्षेप्या गुण ऋतु योज्या षष्टया ६० भागः शेषांकेन जन्म पलांघटिकाः लभ्यंते ॥ इति ॥

अथ लग्ना नयनम् लिख्यते

प्रश्नाक्षरांकस्य मध्ये २८ क्षेप्या द्वादश भिर्भागः शेषांकेन लग्न ज्ञेयम ॥ इति लग्ना नयनम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
ततो ग्रहाणां स्थापनाच ॥ सूर्य प्रश्नात्तर मात्रा अष्टगुणी कृत्य त्रिहीनः ते ६४ मिश्रितः द्वादश भाग शेषेषु मेषादिषु रविस्थितिः अथवा प्रश्न मात्रात्रिगुणिता वसुहीनः षट् ६ मिश्रितः द्वादश भाग शेषेरवि ॥ अथ चन्द्रमा ॥ प्रश्नाक्षर मात्रा दशगुणितः त्रिहीनः सप्त ७ मिश्रितः द्वादश भागेः शेषे चन्द्र स्थितिः अथ भौमः ॥ प्रश्नाक्षर मात्रा सप्तगुणितः १२ द्वादश भागे शेषेषु भौमः स्थितिः ॥ अथ बुध ॥ प्रश्नाक्षर मात्रा चतुर्गुणितं नव हीनं पञ्चदश मिश्रितं द्वादश भागे शेषे बुधो ज्ञेयः ॥ वृहस्पति प्रश्नाक्षर मात्रा नव गुणिता षट् हीना वेद मिश्रिना द्वादश भागे शेषे गुरुः॥ अथवा सम्बत् में १८०० कम करे सात युक्त करे १२ बारह से भाग शेष से वृहस्पति की राशि जाने ॥ शुक्र प्रश्नाक्षर मात्राषट् गुणिता पञ्चदश मिश्रिता एक हीनो द्वादश भाग शेषे शुक्रः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ शनिः ॥ प्रश्नाक्षर मात्रा सप्त गुणिता त्रिहीना षट् मिश्रिता द्वादश भागे शेषे शनिः अथवा वर्तमान् जन्म काल सम्बत्सरे १८०० हीना पुनः त्रयोदश युक्तः त्रिंशता भागो कार्यः पुनः शेषांके २ $\frac{1}{2}$ भागे शेषे राहुः तस्मात्सप्तमो केतुः ॥ इति प्रथम प्रकार समाप्तः ॥

अथ द्वितीय प्रकारः भाषा लिख्यते

प्रच्छक जिस समय नष्ट जन्म पत्र बनवाने का प्रश्न करे उस समय ज्योतिषी शीघ्र ही शुद्ध इष्ट काल करे तात्कालिक लग्न ठीक ठीक स्पष्ट करे परन्तु जो विद्वान शीघ्रता के कारण लग्न सारिणी से तात्कालिक लग्न स्पष्ट न करेगा तो नष्ट ज़न्म पत्र न बन सकेगा इस कारण लग्न को ठीक ठीक स्पष्ट करे क्योंकि नष्ट मुख्य लग्न ही होता है ॥ १ ॥

अथायन ज्ञानम् लिख्यते

प्रश्न कालिक लग्न के यदि पन्द्रह अंश से कम अंश व्यतीत हुवे हों तो उत्तरायण सूर्य में और पन्द्रह से अधिक अंश व्यतीत हुवे होंतो दक्षिणायन सूर्य में जन्म कहे ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरणार्थ प्रश्नसमयो लिख्यते

सम्बत् १९५८ शाके १८२३ माघ कृष्ण एकादशी शुक्रवार को प्रश्न काल ३१ घ० १५ पल था लग्न स्पष्ट २ । १७ । ३० । ५५ सूर्य ७ । २१ था यहां प्रश्नकालिक लग्न में पन्द्रह अंश से अधिक अंश व्यतीत हैं इस कारण दक्षिणायन सूर्य का जन्म ठहरा ॥

अथ सम्वत ज्ञानमाह

प्रश्न कालिक लग्न में यदि प्रथम द्रेष्काण का उदय होतो लग्न ही की राशि में बृहस्पति के रहते जन्म चाहिये और यदि दूसरे द्रेष्काण का उदय होतो प्रश्न कालिक पांचवें स्थान की राशि में वृहस्पति के रहते जन्म कहना चाहिये और यदि तीसरे द्रेष्काण का उदय होतो नौवें स्थान की राशि में बृहस्पति के हतेजन्म कहना चाहिये और कोई इस पर विशेष भी कहते हैं प्रश्न कालिक लग्न में जिस संख्या वाले द्वादशांश में वृहस्पति स्थित हो लग्न से उतने ही संख्या वाले स्थान में वृहस्पति के रहते जन्म कहना चाहिये अर्थात् पहिला द्वादशांश हो तो लग्न में द्वितीय होतो द्वितीय स्थान में तृतीय द्वादशांश होतो तृतीय स्थान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में बृहस्पति इत्यादि परन्तु सब का इष्ट पहला ही है इस रीति से जन्म कालिक बृहस्पति स्थान जान कर प्रश्न कर्ता अर्थात् जिस का नष्ट जन्म पत्र बनाना हो उस की अवस्था के अनुसार अनुमान करके वर्षों की कल्पना करना चाहिये अर्थात उसकी राति से जिस राशि में बृहस्पति आई हो उस से आगे की राशि से वर्तमान ॥ प्रश्न कालिक ॥ बृहस्पति की राशि तक गिने जो संख्या हो उस को प्रश्न कालिक सम्बत्सर में घटा दें तो जन्म कालिक सम्बत् सर स्पष्ट होगा अथवा अनुमान से बारह से ज्यादह प्रतीत हो तो उक्त संख्या में बारह जोड़ दे चौबोस से अधिक हो तो २४ चौबीस जोड़ कर प्रश्न कालिक संवत्सर में घटावे तो जन्म कालिक संवत्सर स्पष्ट होगा ऐसे ही एक सौ बीस के भीतर जितनी अवस्था का अनुमान से संभव होतो उतनी ही बार उक्त संख्या में बारह जोड़ कर उस को उक्त संवत्सर में घटाने से जन्म का संवत्सर स्पष्ट होता है ॥

अथ उदाहरण लिख्यते

यहां प्रश्न कालिक लग्न में दूसरा द्रेष्कोण है इस कारण लग्न से पांचवे स्थान तुला में बृहस्पति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न कालिक लग्न २ । १७

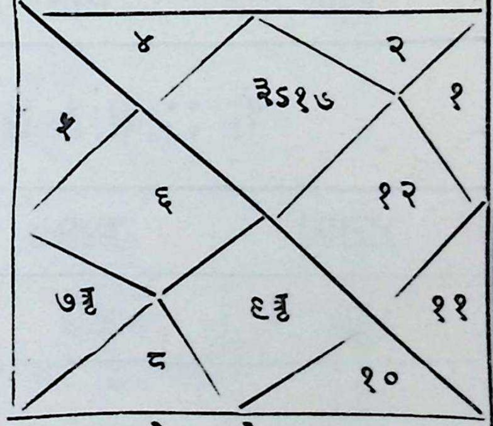

को स्थिति हुई अब तुला के आगे वृश्चिक से वर्तमान प्रश्न कालिक वृहस्पति धन का गिना तो दो हुये परन्तु अवस्था ३८ वर्ष से अधिक और ६२ वर्ष से कम प्रतीत होती है इस कारण बारह को चार बार एकत्र किया तो ४८ हुवा इस में उक्त दो वर्षों का जोड़ कर प्रश्न कालिक संवत् सर ११५८ में घटाया तो शेष ११०८ रहा यही जन्म का संवत है कुन्डली से मिला लीजिये ॥

अथ संवत से शाका सन् निकालना लिख्यते ॥

प्रश्न कालिक शाको में वही गत वर्ष जो प्रश्न कालिक संवत् में घटाया थी घटावे तो जन्म कालिक शाका स्पष्ट होगा अथवा जन्म कालिक संवत में १३५ हीन किये शाका होता है जैसे वर्तमान प्रश्न कालिक शाका १८२३ में पचास ५० हीन किया तो १७७३ शाका जन्म का ठहरा अथवा जन्म कालिक संवत ११०१ में १३५ हीन किया तो १७७३ बचे यही शाका हुवा शाके में अठहत्तर ७८ जो उन से ईसवी सन् होतेहैं जैसे १७७३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में ७८ जोड़ा तो १८५१ ईसवी सन् ठहरा और शाके में ५१५ घटाने से फसली सन होता है जैसे १७७३ में ५१५ घटाया तो १२५८ फसली सन् का जन्म भया ॥ ४ ॥

ऋतु विचार चक्रम्

ग्रहद्रेष्कोण	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	बसन्त	शिशिर

अथ ऋतम विपरीतायन में ऋतु ज्ञान चक्रम् लिख्यते ॥ :: ॥

ग्रहद्रेष्कोण	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	हेमन्त	बसन्त	शनि
ऋतु	शरद	बसन्त	शरद	ग्रीष्म	शिशिर	वर्षा	हेमन्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्मकालिक ऋतु ज्ञानम्

प्रश्न कालिक लग्न में जिस ग्रह का द्रेष्कोण हो उसी द्रेष्कोण के अनुसार जन्म काल में ऋतु कहै जैसा चक्र में ऋतु स्पष्ट है — यदि ऋतुओं के विपरीत अयन हो और अयन के विपरीतायन ऋतु चक्र से जन्म का ऋतु जाने ॥ ६ ॥

उदाहरण

यहां प्रश्न लग्न २ । १७ में शुक्र का द्रेष्कोण है और शुक्र का ऋतु वसन्त है परन्तु दक्षिणायन सूर्य में वसन्त ऋतु होता नहीं इस कारण विपरीतायन ऋतु चक्र में देखा तो शुक्र के नीचे वर्षा ऋतु मिली यहीं वर्षा ऋतु जन्म काल में है जिसको मालूम हो पूंछ देखे ॥

अथ मासज्ञान

प्रश्न कालिक लग्न में जो द्रेष्कोण वर्तमान हो उस का यदि पूर्वार्द्ध हो तो उक्त रीति से जाने हुवे ऋतु का पहिला मास और यदि उत्तरार्द्ध हो तो दूसरा मास जानना चाहिये ऋतु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के महीने – चैत्र वैसाष में बसन्त (१) ज्येष्ट आषाढ़ में ग्रीष्म (२) श्रावण भाद्र पद में वर्षा (३) अश्विन कार्तिक में शरद (४) मार्ग शिर और पौष में हेमन्त (५) माह फाल्गुण में शिशिर इस प्रकार दो दो महीने एक एक ऋतु के होते हैं ॥ ७ ॥

उदाहरण

प्रश्न कालिक लग्न २ । १७ मिथुन में सत्तरह अन्श व्यतीत हुए हैं तो एक द्रेष्कोण में १० दस अन्श होते हैं तिस में पांच अश का एक महीना हुवा परन्तु यहां पांच से अधिक अंश व्यतीत हैं इस कारण वर्षा ऋतु का दूसरा मास भादों भया सो असली जन्म पत्र में देखलो ॥

अथ तिथि ज्ञान माह

उसी द्रेष्कोण व मास से त्रैराशिक के हिसाब से तिथि जानना चाहिये यहां त्रैराशिक की यह रीति है कि छः सौ कलाओं का एक द्रेष्कोण या दो मास होते हैं और उसके आधे तीन ३ सौ होते हैं अब अनुमान करना चाहिये कि यदि प्रश्न कालिक लग्न सम्बन्धी वर्तमान द्रेष्काण के तीन सौ ३०० कलायें व्यतीत होतीं हैं तो एक महिना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थात् तीन ३० दिन व्यतीत होते हैं और उसी द्रेष्काण के इष्ट कला विकला व्यतीत होगये होंतो कितने दिन घटी पला होवेंगे इस प्रकार जो दिन आवें उनको तिथि भुक्त जाने और जो घटा पला होवें उतने ही घटा पला आगे की तिथि में जन्म समय होता है ॥ ८ ॥

उदाहरण

जैसे यहां द्रेष्काण के दो दो अं० ३० क० ५५ विक हैं तो ५ पांच अंश का महीना होता है परन्तु यहां पांच से कम हैं इस लिये कला बनाया तो १५० क० ५५ वि० हुवा इसका ३० तीस से गुणा तो ४५ । २७ । ३० हुवा इसका तीन सौ में भाग दिया तो लब्ध दिना दि १५ । ५ । ३० हुवा अर्थात पन्द्रह दिन भाद्र के भुक्त हैं और ५ घ० ३० । ५० प्रति पदा भुक्त पर जन्म समय भया कहा कि प्रति पदा भादौ शुक्ल का जन्म है जन्म पत्र से मिला लीजिये ग्रह स्पष्टादि कार्य करने के निमित अहर्गण जानने की रीति लिख्यते ॥ + ॥ ० ॥

वर्तमान शाका में १४४२ एक महस्र चार सौ बयालीस घटावे जो शेष रहे उस में ११ ग्यारह का भाग देय जो लब्ध मिले वह चक्र होता है भाग देने से जो शेष बचे उस को १२ से गुणा करे जो गुणन फल होय उस में चैत्रादि मास अर्थात चैत्र शुक्ल प्रति पदा से लेकर इष्ट काल पर्यन्त जो गत मास हो उन को जोड़ देय (यह मध्यम मास गण कहलाता है)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसको दो स्थान में लिखे एक स्थान में द्विगुणित चक्र और दस १० को युक्त कर दे तब जो अंक हों उनमें ३३ तैंतीस का भाग दे जो लब्धि मिले उसको (अधिक मास कहते हैं) द्वितिय स्थान में लिखे हुए मध्यम मास गण में युक्त कर दे तब जो अंक हो उनको तीस से गुणा करदे जो गुणनफल हो उसमें गत तिथि अर्थात् शुक्ल प्रतिपदा से लेकर इष्ट दिन पर्यन्त की गत तिथि युक्त कर के चक्र में ६ छः का भाग दे जो शेष बचे उसको छोड़ दे जो लब्धि हो वह गति तिथि युक्त करे हुवे अंकों में युक्त कर दे ॥ यह मध्यम अहर्गण कहलाता है ॥ इसको दो स्थान में लिखे एक स्थान में ६४ का भाग दे जो लब्धि हो वह क्षय दिवस होते हैं इन क्षय दिवसों को द्वितिय स्थान में घटा दे जो शेष रहे वह अहर्गण (दिनों की संख्या) होती है पूर्वोक्त चक्र को ५ पांच से गुणा करके जो गुणन फल मिले उसमें अहर्गण युक्त करके ७ सात का भाग दे जो शेष बचे उससे भौमादि वार जानो अर्थात् एक शेष से मंगल दो शेष से बुधवार इत्यादि जाने कदाचित इस प्रकार इष्टवार नहीं मिले तो अहर्गण में १ युक्त करदे या १ घटादे तब अहगणोत्पन्न वार और इष्टवार बराबर मिलेगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष रीति

जिम वर्ष में अधिक मास पड़ता हो उस वर्ष में अधिक मास के पूर्व अथवा अनन्तर अहर्गण साधना हो तो जो मास अधिक पड़ता हो उम मास के पूर्व अहर्गण साधने के समय पूर्व वर्ष की अपेक्षा अधिक मास अधिक आवे तो ग्रहण न करे अर्थात् अधिक मास से एक १ घटा दे और जो मास अधिक पड़े तो उसके अनन्तर अहर्गण साधने के समय पूर्व वर्ष का अपेक्षा अधिक मास कम आवे तो उसमें एक १ और युक्त करके पाछे अहर्गण साधे इस प्रकार अहर्गण स्पष्ट होता है ॥ श्री रस्तु ॥

सम्वत् १९०८ शाका १७७३ भाद्र शुक्ला प्रतिपदा को सूर्योदय में वार तिथि नक्षत्र योग करण नवग्रहों और स्पष्ट काल जानने के निमित्त अहर्गण साधने हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुद्ध पंञ्चांग और इष्ट काल जानने की रीति

शाका मास पक्ष तिथि विज्ञान होने पर ज्योतिषी को चाहिये कि उक्त तिथि का अहर्गण साधन करे अनन्तर उस अहर्गण द्वारा सूर्योदय में सूर्य चन्द्रमा स्पष्ट करे फिर सूर्य चन्द्रमा से तिथि, नक्षत्र, योग और करण भुक्त और भाग्य अलहदा २ स्पष्ट करके एकान्त स्थापित करे फिर जन्म समय के तिथि की भुक्त घटि पल यदि सूर्योदय की भुक्त घटी पलोंसे अधिक होतो जन्म समय के भुक्त तिथि के घटी पलों में सूर्योदय के भुक्त घटी पलों को घटा देय घटन से जो शेषरहे वह इष्ट काल उसी दिन सूर्योदय से होता है (१) और यदि सूर्योदय समय आई हुई तिथि के भुक्त घटी पलों से जन्म

उदाहरण

१७७३ शाका
१४४२
११) ३३१ (३० चक्र च० ३० × २=६०
३३०
१
१२
१२
५ गतमास
१७ मध्यम मासगण

१० (६० + ...)
३३) ८७ (२
२ गत अधिक मास
१७
१९ मासगण

१७ मध्यम मास गण

१९ मासगण
३०
५७० गततिथि
५
च० ३० ÷ ६=
४६) ५७५ [९ क्षयदिवस
५७६

५७५
९ क्षय दिवस
५६६ अहर्गण
चं० ३० × ५ = १५०
७) ७१६ (१०२ व्यर्थ
७
१६
१४
२ बुधवार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समय के भुक्त तिथि के घटी पल कम होंय तो सूर्योदय के भुक्त तिथि के घटी पलों में जन्म के भुक्त घटी पलों को घटा देय घटाने से जो शेष रहे उस को भुक्त वार (पिछले बार) के ६० साठ घटियों में घटाने से इष्ट काल अहर्गण के वार से पीछे के वार में सूर्योदय से होता है (२) इसी प्रकार अर्थात यदि इष्ट काल पिछले वार में मिले तो नक्षत्र तथा योग के भुक्त घटी पलों को ६० में घटा कर जो शेष रहे वह उन से पीछे का नक्षत्र योग पिछले दिन सूर्योदय से होता है और यदि उसी दिन में इष्ट काल मिले तो वही भोग्य घटी पला तिथि नक्षत्र योग के रख देवे इस प्रकार से इष्ट काल तथा भुक्त भाग्य नक्षत्र जान कर भजात भभोग बना लेवे ॥

अथ उदाहरण लिख्यते ॥

अहर्गण ५६६ से लाया स्पष्ट सूर्य ४ । १० । ४५ । ४० ग० ५८ । ५३ स्पष्ट चन्द्रमा ४ । १२ । ३ । ० गति ८५४ । ६ (तारो के स्पष्ट करने की राति तथा सूक्ष्म सारिणी आगे लिखी जायगी) सूर्य चन्द्रमा से लाई तिथि प्रति पदा भुक्त घटी ५ पला ५१ भोग्य घटी ४८ पला २१ भुक्त मघा नक्षत्र घटी ५० । ४७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भोग्य मघा घटी ५ । १ परिघ योग भुक्त घ० ११ । ०५ भोग्य घ० ५२ । २१ यहां पर भुक्त प्रति पदा जन्म समय की घ०५ पल३० है और अहर्गण से बुधवार को सूर्योदय में घ० ५ पल ५१ है यहां सूर्योदय में अधिक है इस कारण सूर्योदय की भुक्त घटी पला ५ । ५१ में जन्म के भुक्त घटी पलों को घटाया तो शेष २१ पला रहे इसको पिछले दिन मंगलवार के ६० घटियों में घटाया तो ५१ घटी ३१ पला शेष रहा यहा मंगल के दिन सूर्योदय से इष्ट काल हुवा अब भुक्त प्रतिपदा को ६० में घटाया तो मंगलवार को सूर्योदय से अमावस्या ५४ घ० ६ पल हुई ॥

भुक्त मघा नक्षत्र के घ० ५०। ४७ को ६० में घटाया तो श्लेषा मंगलवार को सूर्योदय से ९ घटी १३ पल हुवा भुक्त परिघ योग घ० ११ । ५ को ६० घटी में घटाया तो शेष ४८ । ५५ वरीयान योग सूर्योदय से मंगलवार को हुवा शुक्ल पक्ष की प्रति पदा को पूर्वार्द्ध होने से किंस्तुघ्न करण जन्म का हुवा सूर्योदय से पहिले विकला २१ का जन्म है इस कारण २१ विकला भुक्त मघा के घ० ५० । ४७ में घटा तो शेष भजात ५० । २६ हुवा भुक्त मघा ५० । ४७ भोग्य मघा ५ । १ को जोड़ा तो ५५ । ५६ भभोग हुवा इति श्री रस्तु ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म पत्र परिलेखनं उदाहरणम

श्रीगणेशायनमः ॥ स्वस्ति वाक्यं ततः———ततः श्रीसम्वत् ११०८ शाका १७७३ दक्षिणायने वर्षाऋतौ भाद्रमास कृष्णापक्षे तिथौ अमावस्यां भौम वासरे० घ० ५४ । १ परतः प्रति पदायां ऽश्लेषां नक्षत्रे घ० १ । १३ परतः मघा नक्षत्रे चतुर्थ चरणे भुजातं ५० । १६ भभोग ५५ । ५६ बरीयान योग घ० ४८ । ५५ परतः परिघ योगे किंस्तुघ्न करणे एवं विध शुभ पञ्चांगो दये श्री सूर्योदया दिष्टम् ॥ घ० ५१ प० ३१ तदाचार ७४ ऋ दिन मानं घटी ३२ । २८ सूर्य ४ । १० । ४५ । ४० अयना शाः २२ । १ । २५ इत्यादि शुभं श्री रस्तु ॥

नक्षारान्तरेण वार बतावने की युक्ति

चैत्रशुक्ल परवासे महीनागिने ड्यौढ़ेकरे बीते पक्ष के दिन उसीमें जोड़दे सातका भागदे जितने शेषबचैं वितने वारजानो राजासे गिनिके

अथ जन्म नक्षत्र जानने की युक्ति

कार्तिक से महीना दूनाकरे बीते पक्षके दिन जोड़े और मिलाये सत्ताइसका भागदे जै बचैं तिसको नक्षत्र जाने अश्वनी से गिनलेय॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ लग्न शोधनम्

चन्द्रमा से ५ या ९ तहां से ७ या वहां से ५ या ९ कोठों के भीतर लग्न होय तो शुद्ध अन्यथा अशुद्ध जानो ॥

अथ स्त्री पुरुष का जन्मांग जानने की युक्ति

सूर्य राहु और मंगल यह तीनों ग्रह जिन२ राशि के अकों में होय उन तीनों अंकों को और जन्म लग्न को एक में जोड़े ३ तीन से भागदे जो शेष एक या शून्य बचे तो स्त्री को जो दो बचे तो पुरुष की जन्म पत्र जाने कोई आचार्य मंगल की राशि के अंक नहीं जोड़ते हैं

जीवित या मरे का जन्म पत्र जानने की रीति ॥

प्रश्न लग्न का अंक अष्टम भाव का अंक और जन्म लग्न का अंक एक में जोड़े अष्टमेश के अंक से गुणाकरे और लग्नेश के अङ्क से भागदेय जो समया शून्य बचे तो मरेका और जो विषम बचेतो जियेका जन्मपत्र जानिये ॥ इति ॥

श्री श्री मन्महाराज विद्वद्वर माधव रामजी सुत पंडित वंशीधर विरचिता नष्ट जन्मांग दीपिका समाप्तम् ॥

पुस्तक मिलने का पता– पंडित श्यामभरोसे गङ्गाशरण ज्ञानसागर प्रेस, महाजनपाड़ा मेरठ शहर । (यह ग्रन्थ बिना आज्ञा कोई न छापे)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८० नं. २१६१

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगुसंहिता संतान उपाय खंड

प्रारम्भ

पं० श्यामभरोसे गंगाशरण ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ शहर ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द० २१७८ द० २१७८

इस ग्रन्थ से संतान कष्टियों की पत्री देखी जाती हैं

श्री भृगुसंहिता महाशास्त्र संतानउपाय खंड प्रारम्भः

पं० श्यामभरोसे गङ्गाशरण ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ शहर ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आवश्यक सूचना

पंडित जन इस विषयका सकोच न करें कि भृगुसंहिता में तो उसे पूर्वजन्म में क्षत्री लिखाहै और मृग का श्राप कहाहै और संतानउपाय खण्ड से पूर्व जन्ममें वैश्य या ब्राह्मण लिखा और गऊका शाप कहा है तो कारण यह है कि श्राप ते कई जन्म तक फल करेहैं पिछले सात जन्मोंमेंसे किसी जन्म की कुछ उत्पत्ति और श्राप जानो इस पुराचीन पुस्तक के श्लोकों का अर्थ प्रथम बहुत कठिन था विद्वान् पंडित हो समझ सकते थे इस कारण हमने इस ग्रन्थके श्लोक भी बहुत सुगम कराकर भाषा सहित छापकर प्रकाशित किया जिससे कि भली प्रकार सब की समझ में आजावे ॥ ॥ ॥ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्मपत्र दिखलाने वाले को उचित है कि शुद्ध चित्त होकर फलफूल मिष्टान दक्षिणा पंडित को भेट करे

जो मनुष्य संतान औलाद के वास्ते जन्मपत्र दिखलावे तो इस ग्रन्थ से देखनेकी क्रिया यहहै कि जन्म समय के इष्टकी घड़ी, पल, तिथि, वार चारोंकी एकत्रित याने चार संख्याओं को जोडे और संतान के देखनेका स्थान पांचवा है तो पंचम स्थान के पांच और मिलावे अब सब संख्या पांच हुई इष्टकी घड़ी और पल और तिथि और वार पंचम स्थान के पांच अब पांचो संख्या जुड़के जो संख्या हुई याने जो अंक हुवे उन्हीं अंकों का सुफा पुस्तक में पढो याने वही सुफा दोनों तरफसे पढो प्रच्छक का सर्व संतान का और पूर्व जन्म के पाप का प्रायश्चित पावेगा उपाय करने से ईश्वर चाहेतो निश्चय संतान होकर जीवें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स०उ०

६

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ शुभ सम्वत् ११५१ मासानाम मासोत्तमे ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां गुरुवासरे ५७।२४ ऽनुराधा मे. २५ । १८ इष्ट घड़ी ३८ पल ४५

॥ अथ लग्न चक्रम् ॥

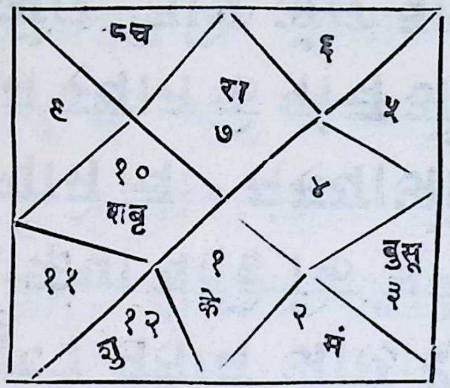

जिस संतान कष्टीके पास जन्मपत्री नहीं हो तो उसीवक्त प्रश्न पत्र बनवाकर इसी रीति से देखो तो भी ठीक विध मिलेगी

॥ उदाहरण ॥

जैसे कि यह जन्म पत्री सन्तान भाव दिखाने लाया तो इष्ट की घड़ी ३८ पल ४५ तिथि चतुर्दशी १४ वार गुरु के ५ सन्तान स्थान स्थान पञ्चम के ५ अत्र सब संख्या पांच हैं ॥

इष्ट की घड़ी	—३८
पल—— ——	४५
तिथि चतुर्दशी	-१४
वार गुरु——	५
पञ्चम स्थान के	५
	१०७

पांचों संख्या जुड़के एकसौ सात हुवे अब आगे पुस्तक का १०७ सुफा दोनों तरफ से पढ़ो जहांसे कथा आरम्भ हुई है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहा विराजत्वा श्रेष्ठपत्री सुखीनरः सुदशा फलप्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः ॥ पापक्रूर ग्रहपूजा क्रियतेफल प्राप्नुयात भाग्यवृद्धि विशेषेण मनवांछित फलप्रदा ॥ ग्रहापूजा नकर्तव्यम अर्धप्राप्ति नसंशयः चन्द्रस्त्री महाप्रीति आनन्द अति ध्यानकं ॥ आदिपठनश्च विद्यायां अन्तविद्या विसर्जन बहूविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रश्च सिद्धति ॥ अष्टमेष्टादशे वर्षे बालवृद्धि दिने दिने तातधन शुभकार्य विवाहोत्सव मंगलम ॥ सप्तचन्द्र मितेवर्षे सून्यराम मितेतथा भाग्यवृद्धि

सं०३० विशेषेण धनप्राप्तिनसंशयः ॥ देहकष्ट विजानीयात् औषधि प्रतिशांतये गुप्तचिंता शरीरेच शत्रुपक्ष विरोधता ॥ युग्म

६ अल्पगतेकाव्य पूर्णआयु नसंशयः व्ययदीर्घ विजानीयात छत्रचिंतान प्राप्तये ॥ गुप्तधन प्राप्नोति कस्मिन् कालेन संशयः पत्नीगर्भश्च स्थित्वा अल्पजीवीच बालकः ॥ आदर्ष विजानीयात पश्चाते शोकबूडनं सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रसुख विनश्यति ॥ बामचिंता महाक्लेशं भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जीव की कथा सुनो पत्र श्रेष्ठ है स्वदशा में फल अच्छा करेंगे पाप और क्रूर ग्रहों का मन्त्रजाप कराना श्रेष्ठ है भाग्य की वृद्धि होगी मन इच्छा पूर्ण होगी इतने पाप ग्रहों के दान मन्त्र न बनेंगे अधूरी लाभ होगी यह जीव बुद्धिवान् अक्लमन्द सूरमा दूसरे की बात को तोले सत्य झूठ को पहचाने धीरज धारी विद्यापूर्ण नहो परन्तु पढ़ों से भी ज्यादे प्रतिष्ठा हो ८ वर्ष से १८ तक विवाह स्त्री प्राप्त तात का धन शुभ काम में खर्च हो १७ वर्ष से ३० तक भाग्य की वृद्धि हो धन की प्राप्ति हो शरीर में कुछ खेद हो औषधि से आराम हो शत्रु पक्ष से विरोध हो ..८ अल्प भुगत कर आयु पूर्ण ७२ वर्ष की हो खर्च विशेष हो छत्रचिंता किसी समय गुप्तधन की प्राप्ति हो पत्नीगर्भ धारण करे अल्पजीवी बालक हो माता पिता को दुख दिखावे हे शुक्र इस जीव को पृथ्वी पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुख हो परन्तु पुत्रोंके सुख को भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनपाप प्रभावेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथा कथ्यं उचारण विधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ ठाकुरवंश कुलेजन्म बहुसेवी नरोभवेत् कोटपति गजग्रामीच वन्धुकुल विरोधता ॥ ज्येष्ठभ्रातश्च पुत्रोवा अर्धभागीच बालकः तातमृत्यु भवेल्लोके सुमाता देवपूजनं ॥ ठाकुरं लोभकं कारण भ्रात पुत्रश्चमृत्युदा माताच देवमन्द्रस्य दीर्घशाप सुखंददेत् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस जीव का पूर्व एक समय में ठाकुर वंश में जन्म हुवा था सो हाथी घोड़े ग्राम बड़ा धनवान था सो बड़ा भ्रात एक पुत्र छोड़ के मृत्यु को प्राप्त हुवा और

स०उ० उसकी स्त्री देवताओं के मन्द्र में पूजा करने लगी सो उस ठाकुर का आपस में हिस्सा बांटने में बहुत विवाद बढ़ गया

१० आखीर अन्त में ठाकुर ने अपने बड़े भ्रात के पुत्र को नष्ट करा दिया तो उसकी माता ने देवमन्द्र में जाय के बहुत रुदन किया और शाप दिया कि तूभी सात जन्म तक बारंबार भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्र किंजापकं बन्धुसुखंशापं सर्वपापश्चनश्टकं ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमन्त्र जाप कराने से पूर्वजन्म का पापनष्ट हो और यह पुत्रोंके सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णास्यप्रतिमाकारं सप्तटंकप्रमाणकं नराकारोलिखेन्मूर्ति गंगाजल स्नानकं ॥ गायत्री मन्त्रकंजापं अर्धलक्ष प्रमाणकं मन्त्रसन्तानगोपालं श्रद्धामात्र करंतथा ॥ देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते देहिमेतनयंकृष्ण त्वामहंशरणंगतः ॥ श्रेष्ठविप्रददेत्दानं सर्वशापविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र स्वर्ण का पत्र सातटंक प्रमाण बनवावे तिसपर नर आकार मूर्ति चन्दन से लिखे तिसे विधि पूर्वक संकल्प करावे और मंत्र गायत्री ५१ हजार और संतान गोपाल बहुतसा श्रद्धा प्रमाण जपवावे तो पुत्र होकर जीवें आनन्द भोगे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वा ग्रहाचेदं बलवीर्य समन्वितः उद्यमेन धनंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः ॥ मध्यभागी सुखीलोके धनप्राप्तिपरिश्रमः कार्यकृत्यविशेषेण उच्चपदवींचप्राप्तये ॥ पूर्वपाप ग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशन अतस्तेषां तुशांतिश्च कर्तं याहि विनिश्चितम् ॥ अनुष्ठान महादान सर्वसौख्य प्रदसदा गुप्तचिंता विनष्यन्ति मनिच्छा पूरितंततः ॥ विद्यामध्यमाप्रीति बाल क्रीड़ा किलोलकं मित्रपक्ष परंप्रीति आनन्द भूमिमण्डले ॥ तातधनं शुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं पत्नीप्राप्ति नमंदेहो
स०उ० विंद्यादीर्घप्राप्तये ॥ सत्यवादी प्रवक्ताच नवीनो चिंतनंकृते जलंपशु भयंलोके शत्रुपक्ष विरोधता ॥ नवीनो कार्यकंकृत्वा
११ धनलाभ भविष्यति युवावस्थाच प्राप्नोति आनन्दभूमि मंडले ॥ पत्नीप्रीत सुखीलोके विद्याण्ठनंपाठनं बन्ध्यायोगश्च प्राप्नोति अल्पगर्भोपि खण्डतः ॥ वामचिंता विशेषेण पुत्रसुखंनदृश्यते पूर्वपाप प्रभावेण वंशवृद्धि विनश्यति ॥ सर्वसुखश्च भोक्तव्यं सुतरहितोनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव परिश्रमी और पुरुषार्थी हो भाग्यश्रेष्ठ मध्यम हो अच्छे काम करे नीचसे ऊंची पदवी पावे परन्तु पापक्रूर ग्रहोंके कारण किसी समय में गुप्तचिंता बुद्धिभ्रम चित्तस्थिर नरहे सोचे और होय और अधूरालाभ हो ग्रहोंके उपायस मनोकामना पूर्णहो चिंताका नाशहो विद्याकी उन्नति मित्रसे प्रीत बहुत बनी रहे एक जीवकी आशामें मनरहे पिताका धन शुभकाम में खर्चहो स्त्री श्रेष्ठकुल की हो पुत्र के सुख को भटके हे शुक्र यह जीव बड़े २ मामले देखे बहुतों क काम निकाले दयावान प्रेमप्रीत करने वाला किसी का बुरा न चाहे सबका भला चाहे अल्प आवे सो नया जन्महो फिर आयु पूर्णहो परन्तु इतने पूर्व पापके उपाय न बने इतने हे शुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पुत्रका सुख स्वप्न मात्र नहो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुख विनश्यति पूवजन्म कथासर्वं कथ्यन्तमुनि सत्तमः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहे सो वर्णन करो ॥

भाषा ॥ हे पिता कौन से कर्म करे हैं इस जीव ने जो सारे सुख दुःख देखे और पुत्रों के सुख से रहित

भृगुवाच ॥ शृणुपुत्र कथासर्वं कथ्यन्ते विधिपूर्वकम् वैश्यवंश कुलेजन्म अतितेजो प्रतिष्टया ॥ लोकंलक्ष पतिख्यातो

बहुदासी निजकृत्यये हटवा अन्न व्यापारं अकालो दीर्घभूमिक ॥ क्षुधातुर ब्रह्मणपुत्र अन्नलब्धश्च प्राप्तये वैश्यति क्रोधकं

कृत्या ब्रह्मपुत्रश्च ताडयेत् ॥ लष्टमुष्ट प्रहारेण द्विजपुत्रश्च मृत्युदा पुत्रमृत्यु दृश्यंतात कठिन शापिकंददेत ॥

भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्र प्रथम एक जन्म में यह जीव वैश्य वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा धनवान् था अन्न का

स०उ० व्यापार बहुत करता था एक समय अतिकाल पड़ा सो सहस्रों कगले अन्न के अर्थ फिरते थे इसकी दूकान पर दो ब्राह्मण के

१२ पुत्र याचना करने आये उससे विवाद हुवा इस वैश्यने क्रोधवशहो दोनोको मारा धक्के मुक्के में उनके प्राणगये तब उनके पिता

ब्राह्मण ने दो पुत्र मृतक देखे सो हाहाकार विव्हल होगया और वैश्यको शाप दिया कि तूभी बारम्बार तीन जन्म तक

पुत्रों का दुःख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ कियत्ने कुरुतात पूर्वशाप निवार्णं जाप्य पूजा महादानं क्रियते पुत्र सुक्खकं

भाषा ॥ हे पिता कौन से यत्न करे जो पूर्व शाप नष्टहो और दान मंत्र पूजा उपाय करने से पुत्रों का इस जीव को सुख प्राप्त हो

भृगुवाच ॥ स्वर्णश्चप्रतिमांचैव अष्टमाशाप्रमाणकी द्विजपुत्रलिखेन्मूर्त्ति गंगाजलस्नानकं ॥ ताम्रपात्रञ्च घृतमध्ये स्वर्णमूर्ति

प्रवेशकं मध्यकालप्रमाणञ्च संकल्पब्राह्मणंददेत ॥ श्रेष्ठविप्रपठंनिद्या शुभदानोफलप्रदा पुत्रप्राप्तिनसन्देहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्णका पत्र ८ माशे प्रमाण बनवावे ब्राह्मणके पुत्रोंकी मूर्ति रक्त चन्दनसे लिखे तिस को तांबेक

कलशमें घृत भर कर गुप्त प्रवेश करे संकल्प करके श्रेष्ठब्राह्मण कर्मैष्टिकोकोदे गायत्री मन्त्र जपवावेतो पुत्रोंकी प्राप्तिहो शाप नष्टहो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ अस्यखेटानुसारेण नरोजन्म भुवितले बालवृद्धि भवेल्लोके आदिक्रीडा यथाक्रमम् ॥ कालानुसारविद्याच मन्त्रौषधीचकारयेत् तीक्ष्णबुद्धिरिपोहंता मध्यभागीसुखान्वितः ॥ प्रलापीशीलवान्ज्ञेयो विवलश्चकलिप्रियः सुन्दरश्चपलोबाल यस्य जन्मश्चमोदिता ॥ राजद्वाराधनप्राप्ति विद्याभूषणभूषितः रूपवान्गुणसंपन्नो मासेव सुखंगताः ॥ सवलंदीर्घदेहश्च तमोगुणविशेषतः प्रतापीसुखदःमर्वे हेमरत्नोर्विभूषितः ॥ सकामश्चपलोबाल सुजनेप्रीतिकारकः मिष्ठवक्ता रिपुद्रोही गुप्तचिंतान्वितोभवेत् ॥
स०उ० वाहनादिसुखंजाते तम्पतेरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्च बुद्धिश्रेष्ठसुनिर्मलः ॥ श्रेष्ठग्रहोपिजन्मश्च सिंहतुल्यपराक्रमः बहुभृत्य
१३ समायुक्तो सुकार्यकुशलंलभेत ॥ मातृपितृगुरुभक्त मुपवद्राजतेनर द्विजदेवार्चनोप्रीति रिपोपिदासवच्चरेत ॥ भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीतविख्यातभूतले ॥ धनपूर्णो तृषायुक्त सुशीलश्चतुरोधनी बहुपीडा मनोद्वेगं बधुवर्गश्च क्लेशता ॥ चन्द्रमित्र महाप्रीतिः आशक्तोतिमोहितम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जन्म पत्री में जो ग्रह विराजमान हैं तिनका फल कहता हूँ सोतू चित से सुन यह जीव विद्यावान् चतुर मंत्र औषधी भी करता रहै तीक्ष्णबुद्धि हो शत्रुओं को जीते मध्य भागी सुखी हो शीलवान् भोला अल छल न जाने राजद्वार से भी प्राप्तिहो रूपवान् गुणवान् हो अच्छे वस्त्र आभूषण भी जावें चञ्चल काम देव के जोर में उन्मत्त हो जाया करे मीठा बोलने वाला श्रेष्ठकुल एक मित्र से प्रीत गुप्त हो मगन रहै सूरवीर पराक्रमी बहुत से कारबार करे धन पैदा करे बड़े २ उद्योग करतारहै कष्ट बीमारीहो परन्तु आयु पूर्ण हो एक जीवका दुख देखे स्त्रीकोपुत्रकी चिंता क्लेश बनारहै प्रथमतो होने कठिन जो होयतो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सब सुख प्रथ्वा पर देखे परन्तु पुत्रों का सुख खण्डित है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रयोगश्चखंडितः पूर्वजन्मकथंतातः कथ्यतेविधिपूर्वकम् ॥ भाषा ॥ शुक्र देवताने प्रार्थना
करी हे पिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म किए हैं जो पुत्रोंका योग खंडित आनके पड़ा सो विधि पूर्वक कहो
भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्नो राजमंत्रीमहाधनी ॥ लोकश्चधेनुविख्यातो अतिसूरोसुखीन्नरः
चापवाण कृतेधारण गवनखेटानुसारेण ॥ मृगबाण बधोक्षत्री साधुपुत्रश्चमृत्युदा मृतकपुत्र दृश्यंतात हाहाकार विव्हलं ॥
क०उ० साधुशापमुखदत्वा त्रियजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेशुक्र यह जीव क्षत्री कुलमें एक जन्म में जन्मा था सो बड़ा बुद्धि
१४ मान् धनवान् राजमंत्रीथा सो शिकार खेलने गया इसने जंगल में जाकर दूर से देखा तो मृग दृष्टी में पड़ा सो इसने तीर मारा
हिरन तो बच गया एक साधु दो बालकों को साथ लिये जाता था सो क्षत्री के बाण से दोनों साधु के शिष्य मृत्यु को प्राप्त
हुवे तब पश्चात् साधुने मृतक बालक देख बड़ा दुख माना और क्षत्री को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों
का दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं साधुशापविनिर्मुक्तो पुत्रजीवीनसंशय ॥ भाषा ॥ शुक्र जी
ने कहा कौनसे दान मंत्र जाप करनेसे पूर्व जन्मका दिया हुवा साधुका शाप नष्टहो और पुत्रों की प्राप्तिहो तब भृगुजी ने कहा ॥
भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाचैव युग्ममुद्राप्रमाणकं रक्तचन्दनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ वस्त्रआभुषणंदानंयुग्मबालञ्च
मूर्तये संकल्पञ्चददेत्विप्र पूज्यंतोविधिपूर्वकं ॥ इददानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिर्नसंशय ॥ भाषा ॥ हेपुत्रस्वर्णके पत्रपर दो मूर्ति साधुके
बच्चोंकी लिखे और स्वर्णका पत्र दो मुद्राभर प्रमाणसे हो वह वस्त्र आभुषण सहित दानकरे तो निश्चय करके पुत्रोंके सुखदेखे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पुत्रस्थितग्रहाएते भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यकरोबालः भृगुणापरिभाषितः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति आनंदभूमि मंडले विचित्रोवार्तयाकथ्यं कामक्रीडाकिलोलकृत ॥ भ्रातभग्नीचउत्पन्न अंतबंधुविरोधता भूमिलाभनसंदेहो गुप्तचिताशरीरजा ॥ मित्रपक्षेपरंप्रीति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रग्रल्पविजानीयात् नवीनोजन्मप्राप्तये ॥ आदौपठश्चविद्यायाः अंतेविद्याविसार्जनं बहुविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ द्विभार्यायोप्राप्नोति गुप्तप्रीतिनसंशयः उपद्रवीअकस्माश्च भयचिंताविशेषतः ॥

स०उ० संतोषीधैर्यधारीच ज्ञानवांश्चसुखीनरः कस्मिन्कालभोकाव्य प्राणंभयतिचिंतया ॥ जलोपशुभयंपुत्र भृगुवाक्यंनचान्यथा

१५ दीर्घकष्टंविजानीयात् औषधीमंत्रशांतये ॥ छत्रचिंताभविष्यंति धनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेचपराजयः ॥ नवीनोवार्तयाचित्तं अर्धप्राप्तिचदृश्यते सर्वसुक्खश्चदृश्यते पुत्रसुखंविनश्यति ॥ अतिक्लेशमहाचिंता पत्नीकष्टविशेषतः ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव भाग्यवान् सुन्दर पिता की सम्मति वाला गुणवान् शीलवान् प्रथ्वी पर आनंद देखे तरह २ की बात ध्यान से सोचे मित्रों से प्रीत, और भाई बहन भी हो परन्तु पीछे अभाव शत्रुतासी हो जाय भूमि से लाभ हो गुप्त चिंता बनी रहै एक जीव से विशेष ध्यान रहै चित्त दुख माने एक समय नया जन्म हो प्राण बचे दूसरा स्त्री से भी प्यार हो विद्या बहुत पूर्ण तो नहो परन्तु कार्य मात्र बहुत हो संतोषी धीरज धारण करने वाला ऋण का जोग होय खर्च विशेष छत्र की चिंता बड़ेकी मृत्यु हो शत्रुओं से विवाद होजाया करे शरार में पीड़ा हो जाया करे पितृ पीड़ा का उपाय करता रहै पुत्र के वास्ते स्त्री यत्न करे परन्तु पूर्व पाप के कारण पुत्र का सुख देखना बहुत कठिन है भटकता रहै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन संतत्वंशविनाशकः पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ शुक्र जी बोले हेपिता इस
जीव ने पहले जन्म में, कौन से पाप किए जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटकता रहै ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं
पूर्वंपापञ्चकथ्यते वैश्यवंशकुलेजन्म रसत्यागीचवाणियो त्रियसर्पगृहवासं तातपुत्रोतिनागकं ॥ गृहदेवस्तुरक्षा वैश्यलभ्यहारकं
नागपुत्रद्वयंमृत्यु अतिक्रोधोउपद्रवं ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र तूसुन मैं इस
स०उ० जीव की एक पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ यह वैश्यकुल रसत्योगी बणिया था सो इसके घर में २ सर्प पिता पुत्र रहते थे सो
१६ बणिया बहुत साहुकार था देवता के नाम के दूध पेड़े वस्त्र पहरात था फिर एक दिन दो सर्प के बच्चे वहीं इसके रसोई के
चौके में फिरते थे इसने किसी की सम्मति से दोनों को लट्ठों से मार दिया तब सर्प ने दोना बच्चे मरे देख वैश्य को
शाप दिया कि तुम भी सात जन्म तक पुत्रों के त्रास भुगतोगे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं
सर्पशापविनश्यंति वैश्यपुत्रसुखंलभेत् ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजीने कहा हेपिता कौनसे दान पुराय यत्न करने से इस जीवका पूर्व
शाप दिया हुवा नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्य पतिमाश्चैव तृयमुद्रा प्रमाणकं
तन्मध्येरामबीजञ्च रक्तचन्दनमुलिखेत ॥ वस्त्रआभूषणंदानं षटरसअन्नकंददेत् संकल्पंददेविप्र गायत्रीमंत्रजापकं ॥
सर्पशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखंभविष्यति ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका पत्र तीन मुद्राभर प्रमाणका बनवावे लाल
चन्दन से दो सर्प का मूर्ति विधिपूर्वक लिखे वस्त्र आभूषण षटरस अन्न दान करे तो शाप नष्ट हो और पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रेग्रहाःस्थिताएवं दीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहो चित्तोदारसुपुत्रवान् ॥ यशस्वीगुणवान्जीवो
सत्कीर्तिसुतनष्टकं अल्पविद्याचप्राप्नोति बुद्धिवांश्चविशेषतः ॥ गुप्तचिंताचप्राप्नोति चतुरोवामश्रेष्टया भागवान्गुणसंपन्नो पत्नीप्रीतो
भविष्यति ॥ अकस्मातउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः प्रमेहव्याधिकंदेहं शीघ्रोवीर्यस्यखंडकः ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधिप्रतिशांतये
पितृपीडाग्रहेनित्यं मातृदैवश्चपूजनं ॥ वंशवृद्धिनदृश्यंते गर्भअल्पश्चखंडतः वंध्यायोगश्चप्राप्नोति सुतचिंताति व्याकुलः ॥
स०उ० बहुयत्नश्चकर्तव्यम् पुत्रसुखंनदृश्यंते महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभप्रीति दिनेदिने ॥ ग्रहकष्टशरीरेच रेचनंव्याधिरक्तय
१७ कास्मन्कालेमहल्लाभं भाग्यवृद्धिनसंशयः ॥ उच्चपदवीचप्राप्नोति प्रसिद्धोधेनुलोकमा व्रणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यदृष्टयः ॥
मासेवर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा शाणर्थंनपुत्रंतात पूर्वपापमहानकं ॥ सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति सुतसुखस्वप्नंदृष्टयः ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज शुक्रदेवता से कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी कथा वर्णन करते हैं सो सुनो यह जीव भाग्यवान् होय चित्त उदार हो सन्तान से रहित होय कीर्तिवान् हो गुणवान् हो और विद्यावान् भी हो परन्तु विद्या से बुद्धि विशेष हो गुप्त चिंता किसी समय में हो जाया करे इसकी स्त्री भाग्यवान् चतुर श्रेष्ठ कुल की हो प्रीति करने वाली शुद्ध चित्तहो एक समय अति विघ्न हो उसमें कुछ हानहो और किसी काल में शरीरके बीच में प्रमेह व्याधि हो शीघ्र वीर्य खंडतहो उपाय करने से औषधियों से आराम हो जाय घर में पितृ पीड़ा हो माता सीतला देवताओं के निमित्त सब कुछ करे परन्तु पुत्र का सुख नहो वा होके दुख देजावे बंध्या योग गर्भ खंडत उत्पन्न होके जाता रहै कई प्रकार की बंध्या हो हैं और आगे को सारी उमर लाभ प्राप्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अच्छी हो परन्तु पुत्र का सुख स्वप्न में भी न हो हे पुत्र इस जीव ने पूर्व जन्म में दीर्घ पाप करे हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्म विपाकेन पूर्वजन्मनिकथ्यते पुत्रक्लेशभविष्यंति श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव ने कौन से खोटे कर्म प्रथम जन्म में करे हैं जो पुत्रों से क्लेशित रहै और वंश न चले सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रुणुपुत्रतिध्यानकं शूद्रवंशकुलेजन्म मीनकरोतिकृत्यया ॥ जलजीवबधोनित्यं मच्छकृत्यंधनंलभेत तिहिपापफलंप्राप्ति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में
न०उ० यह जीव शूद्र वंश में उत्पन्न हुवा और मछली जलचर जीवों को जाल में फांसकर लाता नगर में बेचता था सो लक्षों जीव
१८ का विध्वंस किया और बहुत सा धन प्राप्त किया परन्तु भूखों को अन्न बहुत बांटता था तिस कारण अच्छे कुल में उत्पन्न होकर पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्णपापप्रणश्यंति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मंत्र जाप से ऐसे महापाप की शांति हो और पुत्र होकर जीवें जो वंश की वृद्धिहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ रामनाम लिपिकृत्वा विप्रलेखधनंददेत् बहुअन्नश्चसंग्राही गोधूमश्चचूर्णकं चंद्रलक्षप्रमाणेन गुटिकारामअंकितः हरिद्वारीकुशावर्ते अथवा तीर्थतालकं रामांकितंददेत्ग्रासं मीनदीर्घंचभोजनं स्वर्णंचदक्षिणाविप्रो बहुमिष्टान्नभोजनं दीर्घदानकुरुजीव पुत्रसुखंभविष्यति ॥ ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी महाराज ने कहा हे पुत्र बहुत सा अन्न गेहूं लाकर पिसवावे और एक लक्ष प्रमाण रामनाम की गोली बनवाकर हरिद्वार या कुशाघाट या तीर्थ तालाब पर जहां कहीं बहुत सी मच्छी हों तहां रामनाम उच्चारण हर गोलीके साथ कहता जाय जल में प्रवेश करता जाय और ब्राह्मणों को जिमाया करे कुछ दक्षिणा स्वर्ण की देतो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजाता सुकुलंमानवर्द्धनं जन्मतोमातृबाधाया मासेमासेसुखगत ॥ दंतव्याधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षयथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमं वृणव्याधीमहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये ॥ भ्रातयोगश्चप्राप्नोति भृगुणापरिभाषितः अष्टमद्वादशेवर्षे षोडशाब्देर्धनाशकः तातंधनंशुभकार्यं विवाहादिचमंगलं विद्यायोगश्चप्राप्नोति पत्नीप्रीतिःचप्राप्तये ॥ चंद्रमित्र महाप्रीति आनंदम्भूमंडले तातलाभव्ययदीर्घं गुप्तचिताभविष्यति ॥ अल्पगर्भमहाकष्टं पुत्रसुखविनश्यति कार्यकृत्यनसंदेहो लाभंभवतिनान्यथा चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा नवीनोक्तकृतेजीव उच्चपदवीचप्राप्तये अतितेजप्रतिष्ठोवा भाग्यवृद्धिदिनेदिने देहकष्टमयघोरं औषधिमंत्रशांतये ॥ वामक्लेशभविष्यंति वशवृद्धिनदृश्यते आयुपूर्णश्चदृश्यंते शून्यसताब्दिकेतथा सर्वकार्यश्चसिद्धंति

स०उ० भूमिर्लाभभविष्यति गुप्तश्चधनंप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा मासवर्षेसुखप्राप्ति आनन्दम्भूमिमंडले पूर्वपापश्चआपार्थ अग्रवंशनदृश्यते ॥

१६ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस जीव की पत्री का फल कहता हूँ सुनो अच्छे कुल में जन्मे माता को कुछ कष्ट दांतों की पीड़ा दस्त रेचन व्रण व्याधी यत्न से शांति बहन भाई का योग सात वर्ष से अथवा आठ वर्ष से १२ १६ २० वर्ष तक शुभ कामों में पिताका धन खर्च, विद्या का योग, पत्नीका प्राप्ति दूसरी स्त्री भी प्रीत रक्खे एक मित्र ऐसा हो चित्त एक शरीर दो पिता को लाभ खर्च विशेष हो अल्प गर्भ संतान योग खंडत इस जीव को और स्त्रीका संतान का खयाल बहुत बनारहै यत्नभी बहुतसे करे लाभ आमदनी अच्छीहो २१ ३० वर्ष तक नया कृत्य करे ऊंची पदवीपावे बड़ाई पावे तेज प्रतापी हो इज्जत प्रतिष्ठा बढ़े एक कष्ट बहुत भारी हो मंत्र औषधी से आराम हो प्रथ्वी से लाभ गुप्त धनका लाभ आयुपूर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्तरसे अधिक हो हेशुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पूर्व पाप के अर्थ पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनस्यति पूर्वगाथाकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारणं ठाकुरवंशकुलेजन्म राजयोगञ्चप्राप्तये ॥ अश्वपतिराजग्रामीच बहुसेवीनरोभवेत् परस्त्रीमहाप्रीति कुमार्गीदुष्टपापिनी ॥ द्विजपुत्रप्रथमप्रीति त्याज्यंराज वामकम् शत्रुपक्षप्रतिराजन् असत्यवाणिभाषणं ॥ कारागारद्विजपुत्र विषराज्यञ्चमृत्युदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविहिनकं ॥

स०उ० भाषा ॥ हेपुत्र एक जन्ममें यह ठाकुरवंशमें राजाथा पर स्त्रीगामी एकस्त्री ब्राह्मणके पुत्रकी बहुत सुन्दरथी तिमको लोभदेकर छीनला

२० और स्त्री के असत्य बचन सुनकर ब्राह्मण पुत्रको कारागार भेजदिया और उसे विष दिवाकर मरवादिया तिस पापके कारण पुत्र का सुख नहीं हुवा ब्राह्मणका शाप लगा हुवाहै कि अगले जन्ममें तूभी पुत्रों के दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमापत्र पञ्चटंकप्रमाणकं अथवा अर्धस्वर्णञ्च लिख्यतविधिपूर्वक रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकम् ताम्रकलशघृतंमध्य गुप्तमूर्तिप्रवेशण सङ्कल्पंददेद्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्ष प्रमाणकं ॥ श्रेष्ठवि॰ ददेद्दानं विद्यापाठ नपानं इदंदान कृतेसंत पुत्रप्राप्ति च जीवनं ॥

भाषा ॥ हेपुत्र स्वर्ण का पत्र पांच टंक अथवा इससे आधा प्रमाण से बनवावे तिस पर चंदन से ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति लिखे और एक कलश में घृत भरकर गुप्त मूर्ति प्रवेश कर विधि पूर्वक दान करे उत्तम ब्राह्मण विद्यावान् कुटुम्बी कोदे और गायत्री मंत्र जाप करावे और ५१ सहस्र संतान गोपाल का मंत्र जपवावे तो पूर्व का दिया हुवा शाप नष्टहो और पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः कस्मिनकालगतेशुक्र बहुऐश्वर्यप्राप्तये ॥ दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवी नरोभवेत प्रथमआयुधनंन्यूनं पश्चातेसुखसंपदा ॥ बालआयुगतेकाव्य आनन्दभूमिमण्डले तातकष्टविजानीयात् भृगुणापरि भाषितः ॥ सत्यवादीप्रवक्ताच परकार्यकरःसदा अतिज्ञानीमहाशूरो संतोषीवृतिधारणम् ॥ आज्ञाकारीसुतभृत्य नृपाद्भयसमन्वितः दुष्टकर्मेणपीड्यन्ते पूर्वपापश्चदुक्खिता ॥ अल्पायुद्दश्यतेलोके सुकर्मेसुखसंभवः बंधुवर्गापवादीच शत्रुवःतप्यतेसदा ॥
स०उ० अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगतेनित्यं सुकीर्तिचापिभूतल ॥ नानासौख्यलभेजीव भजनानदसर्वदा पितुद्रव्य
२१ विनाशश्च सुयत्नेनविवर्द्धनम् ॥ कस्मिन्कालगतेशुक्र अकस्मातअतिचिंतया व्ययदीर्घधनदान गुप्तचिंताशरीरकं ॥ मित्रप्रीति महालोके आशक्तचितमोहित पत्नीकष्टभयघोरं सुतदुक्खश्चप्राप्तये ॥ रात्रिदिनमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनं दीर्घपापप्रभावेण अश्रवशविनाशकं ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं जिस जीव की पत्री में ऐसा योग पड़े सो जीव भाग्यवान् और बड़ा ऐश्वर्य प्राप्त कर और दयावान् भोक्ता पुरुष हो प्रथम तो थोड़ा ऐश्वर्य हो फिर विशेष बढ़ जाय बाल आयु आनन्द में बाचे पिता को कष्ट हो औषधी स आराम हो जाय सत्यवादी पराये कार्य मन से कर अतिज्ञानी शूरवार हो संतोषी वृति धारण करे दुष्टकर्म से पीड़ा हो पूर्व करनी के कारण थोड़ी आयु में सुकर्म करे परन्तु कुल बन्धुओं से शत्रुता विवाद रहै दुश्मन सदाजलने रहें पाप ग्रहों की शांति कराता रहै श्रेष्ठ फल हो आनन्द भोगे भजन आनन्द करे पिता का धन जाय परन्तु कुछ सुकर्म बने किसी समय में अतिचिंता हो खर्च हो मित्र से बहुत प्रीति चित्त उस तरफ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष रहै पत्नी को सन्तान का कष्ट रहै पित पीड़ा हो सारे सुख दुख देखे परन्तु पुत्र का सुख प्राप्त होना कठिन है
शुक्रोवाच ॥ किंपापपूर्वजन्मश्च वंध्यापुत्रविहीनक जीवसर्वगाथायां कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने पूर्व किसी
जन्म में क्या पाप करे हैं जो वंशकी वृद्धि बंद होगई सो पूर्व कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथांसर्व पूर्वपापश्चकारणः
कायस्थश्चकुलेजन्म चित्रगुप्तोतिवंशक ॥ यवनविद्याभविष्यंति धनधान्योभविष्यति राजद्वारमहल्लाभं उच्चपदवीचप्राप्तये ॥
स०उ० बहुपक्षोबधनश्च दयाहीनश्चदुष्टयः तितरोचित्रकंपक्षी बृक्षोर्जीवभक्षणाम ॥ उपवनंगवनंजीव दीमकोजीवभक्षणम् इदंपापप्रभावेण
२२ पुत्रसुखविनष्यति भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव प्रथम एक जन्म में कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा सो चित्र गुप्त वंशी था सो बड़ा
चतुर विद्यावान था बहुत सा धन राजदरबार से पैदा किया पुण्य भी करता था परन्तु तीतर नाम और बहुत से पक्षी थे
तिन को अपने साथ बागको ले जाता था और वृक्षों में दीमक नाम जन्तु होते हैं तिन को खुनाया करता था इस पाप के
प्रभाव से सन्तान कष्टी रहा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकं पूर्वपापप्रणाश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥
भाषा ॥ हेपिता कौन से उपाय करने से यह जीव पुत्रों के सुख देखे सो दान मन्त्र पूजा जाप कहो ॥ भृगुवाच ॥ मन्त्रसन्तान
गोपाल चंद्रलक्षप्रमाणकं अन्नमिष्टान्नकंभोजन यज्ञदानकरस्तथा ॥ पक्षीअन्नददेज्जीव मूर्गानित्यभोजनम् इदंदानकृतेमंत
पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पिछले पाप की निवृत्ति के अर्थ यज्ञ करे दान करे अच्छी सामग्री बनवावे
ब्राह्मणों को तृप्त करे और पक्षियों को अन्न डाला करे और चींटीनाल नेम करके देतो निश्चय करके पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलप्रोक्ता मयानघः त्रिग्रहाफलदंश्रेष्ठं नानालाभसमागमः । भूमिमन्द्रञ्चप्राप्नोति कीर्तिवृद्धो
धरातले क्रूरपापग्रहापूजा दानंचैवप्रयत्नतः ॥ जानचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अयत्नेनैवभोकाव्य बुद्धिलःसुस्थिरभवः ॥
उद्योगोकुरुतेदीर्घ लाभचिंतावलीयसी प्रमेहोपीडिनंगुप्त मित्रशत्रुवदाचरेत् ॥ प्रीतिकृत्वाकृतेघातं रुर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्ता
सुखीलोके असत्यवचनंव्रजेत ॥ सुकीर्तिप्राप्तेलोके उद्यमेपोष्यतेकुलः परोपकारकरताच बुद्धिवंतोसुलक्षण ॥ ईशभक्तिसुसंत्रित्य
स०उ० सुस्थिरंनविसर्जन कामीकुतुहलीचैव कुटबेप्रीतिवत्सलः ॥ पूर्वमायुसुखीजीव मध्येचसुखमध्यमं अत्यपापकुरुशांति कान्ताद्रौगुरु
२३ वत्सलः ॥ सुयत्नेसर्वथासौख्यं नात्रकार्यविचारणा कामवेगेनचोन्मत्तो चिन्तचैवोपिविभ्रमः बुद्धिवन्तोयशीसौख्यी नकश्चि
न्निंदतोमति जीवंध्यानश्चसंमग्नः यौवनंरूपचिंतनं ॥ श्रेष्ठकर्मरतोचापी बहुबाधाचशांतये सर्वसुक्खञ्चप्राप्नोति गुप्तचिंताचवामक ॥
पुत्रकांक्षानसंदेहो भृगुवाक्यनचान्यथा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस पत्र में तीन ग्रह बहुत
उत्तम पड़े हैं अनेक प्रकार के लाभ हों भूमि मंद्र कीर्ति पृथ्वी बढ़े क्रूर पाप ग्रहों का पूजा दान यत्न करना श्रेष्ठ है इतने न्यून
ग्रहों का दान मन्त्र जाप न हो चिंता बुद्धि भ्रम लाभ मध्यम उद्योग बहुत करे फायदा मर्जी माफिक न हो गुप्त प्रमेह की पीड़ा
मित्र से शत्रुता प्रीत के बदले हानि पहुंचावे यह जीव सत्य को पसन्द करे झूठ से बचे कीर्ति बढ़े पराये उपकार करने वाला
बुद्धिमान सुलक्षण दवता में कुछ भक्ति अल्पस्थिर न हो कामदव की उन्मत्तता, मित्रों से प्रीति, पूर्व आयु सुख, मध्यम
आयु मध्यम सुख दो स्त्री से प्यार सुकर्म से सदा सुख मिले एक जीव के ध्यान में मग्न रहै हेशुक्र सम्पूर्ण काम हों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु मुख्य सुख पुत्रका है सो तिसकी भटकना बनीरहै त्राम देखे ॥ शुकोवाच ॥ केन मेंपप्रभावेण पुत्रस्वप्ननदृश्यते पूर्वगाथा कथातात श्रृणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव की पिछले जन्मों की कथा कहो ऐसे कौन से पाप दीर्घ करे हैं जो स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मश्चगाथायो श्रृणुपुत्रतिध्यानकं शूद्रवंशकुलेजन्म दीर्घअघकुरुतथा ॥ पापकर्मधनंप्राप्ति उच्चपदवीचप्राप्तये लोकेलक्षपतिख्यातो मानकीर्तिभविष्यति ॥ कमट्टाचमृतिकाअंड हस्थनित्यश्चधारण बहुपक्षिवियोजीव बारम्बार

स०उ० भक्षणं ॥ विध्वंसचग्रहंपक्षो बच्चोभोजनंतथा दीर्घपापप्रभावेण पुत्रसुखविहीनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र इस जीव की पूर्व जन्म की कथा

२४ कहता हूँ सो तुम ध्यान से सुनों पूर्व एक जन्म में यह जीव शूद्र वंशमें उत्पन्न हुवा था सो बड़ा धनवान् था इज्जत प्रतिष्ठा वाला था परन्तु गुलों से जीव मारने का बहुत अभ्यास था कमट्टा हाथ में लेकर बीसियों जीव पक्षी मार लाता था और उनके घौंसले तोड़ कर निकाल लाता था तिस पाप के प्रभाव से पुत्रों के सुख से होन रहे क्यों कि पक्षियों का शांप लगा हुवा हैं शुक्रोवाच ! कियत्नश्चकरतव्यं पक्षीशापविनाशनं पुत्रप्राप्तिचदृश्ते वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे यत्नकरनेसे पक्षियों का दिया हुवा शाप नाशकोप्राप्तहो और इसजीवको पुत्रोंका सुखमिले ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापक ब्राह्मणं भोजनंदानं कुर्वांतिविधिपूर्वकं पक्षीभोजनंअन्नस् नित्यप्रतिनित्यनेमकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षश्चजापकं अनुष्ठानकृतेसन्त पुत्रसुखभविष्यति ॥ भापा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र एक लक्ष प्रमाण गायत्री और अर्ध लक्ष मन्त्र सन्तान गोपाल जपवावे और ब्राह्मणों को स्वर्ण दक्षिणा दे और पक्षियों को नित्य प्रति रोज अन्न डाल कर जिमावे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कदापिसमयेवत्स स्वकुटम्ब
श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेसमुत्पन्न युवाश्रेष्ठफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीच प्राप्यतेधननिश्चितं ॥ कदापिसमयेवत्स स्वकुटम्ब
विरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते ॥ स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभदृश्यते मध्यविद्यान्वितोपुन्स बुद्धिवंतो
विशेषतः ॥ अतितेजप्रतिष्ठोवा सुजनोमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् ईशस्यचिंतनंकृतः ॥ पत्नीश्रेष्ठकुलोप्राप्ति पुत्रचिंता
महानकं नेकयत्नकृतेपुत्र सुखस्वप्नेनदृश्यते ॥ दीर्घकष्टविजानीयात नवीनोजन्मप्राप्तयेः दोयतेसुमतिसर्वं दुष्टकर्मविसार्जिता ॥
स०उ० सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोदारनसंशयः हीनवार्त्तानकर्तव्या गुप्तचिंताचव्यासये ॥ सुकीर्तिचिंतयेन्नित्यं सुकीर्तिचमयानकं
२५ व्ययोदीर्घसमायात सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ भ्रातृभग्नीचउत्पन्न अल्पसुखश्चलोकमा कस्मिन्कालेमहत्प्राप्ति धनधान्यसमागमः ॥
युग्मजीवमहान्प्रीति सुन्दरमूर्तिसुलक्षणं पूर्वजन्मश्चपापार्थं वामचितामहानकं ॥ पुत्रसुखनदृश्यंते प्रथ्वीजन्मअकार्णम् ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र इस जीवकी पत्रीका फल सुख दुख आदि वर्णन करते हैं सो तुम सुनो युवा अवस्था में बहुतसे काम करे और बड़े २ मनुष्यों से काम पड़े धन प्राप्त करे विद्यावान् हो किसी समय में कुटंब घर में विरोधसा हो धन खर्च हो शत्रु नुकसान पहुंचाना चाहे परन्तु श्रेष्ठ दशा में थोड़े परिश्रम से अकस्मात् लाभ खुशी हो विद्या से बुद्धि विशेष इज्जत प्रतिष्ठा वाला अच्छी शिक्षा देने वाला ईश्वर की तरफ ध्यान रखने वाला स्त्री श्रेष्ठ कुल की पुत्र को चिंता रहै यत्न भी करे परन्तु पूर्व जन्मों के पाप के अर्थ पुत्रों से रहित रहै शरीर पें पाड़ा कष्ट भारी आवे सो नया जन्म हो नई २ वार्ता का विचार करे बड़े बड़े ख र्च के काम आवें सो पूर्ण उतरें भाईयों से थोड़ा सुखहो जीवोंसे प्रीत लगी रहे हेशुक्र जो दुनियां के सुख हैं सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्त हों परन्तु पुत्रों के सुख को यह जीव और इसकी स्त्री भटकते रहैं ॥ शुकोवाच ॥ किंकर्मानुभारतः वंशवृद्धिनदृश्यते
पूर्वजन्मकथाकथ्यं उच्चारणाविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने कौन से पाप पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इस
की स्त्री पुत्रों को भटके हैं सो विधि पूर्वक वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वजन्मनिकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न
धनधान्यभविष्यति ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच भूमिलाभद्ददीर्घयो ॥ निजस्थानवसतिविप्र
ब०उ० गृहभूमिउपाधकं लष्टमुष्टप्रहारेण द्विजस्थानभस्मकम् ॥ युग्मपुत्रत्रयंकन्या ग्रहमध्योतमृत्युदा तेनपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनाशन ॥
२६ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पहले एक जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा भाग्यवान् लक्षाधीश हाथी घोड़े ग्राम
थे इसकी जमीन में एक ब्राह्मण कुटंब सहित रहता था सो उससे किराए भाड़े के ऊपर बहुत विवाद हुवा यहां तक की
उसको बहुत पिटवाया और उसके घर में आग ददी सो उसके दो छोटे पुत्र और तीन कन्या जल कर भस्म हो गईं ॥
शुकोवाच ॥ किंयत्नदानमंत्रमंत्रस्य किंविधानेतिजापकं पूर्वंशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुक्खञ्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हेपिता क्या यत्न करे और
कौन से दान मन्त्र जाप करवावे जो पूर्व जन्म के शापसे छूटे और पुत्रों के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे
और पुत्र जीवें सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्थानदानकुरुजीव गायत्रीमन्त्रजापकं स्वर्णस्यप्रतिमापत्रं द्विजसुतमूर्तिलिख्यते ॥
सर्वदानविधानेच संकल्पंब्राह्मणाददेत् द्विजरतुष्टकर्तव्यं पूर्वश्रापविनाशनं ॥ पुत्रसुखनसंदहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह
जीव दान करे गायत्रीमन्त्र जपवावे स्वर्ण पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र कन्याओं की मूर्ति लिखे ब्राह्मण को दे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वंलग्नास्थित्वा जन्मकालेयदानरः बृहत्वंफलमादाय आनन्दभूमिमण्डले ॥ बहुकृत्याधिकारीच सर्वेशां शुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीति नूतनंवार्तयाचितः ॥ सुन्दरश्चश्चलोधीरः प्रतापोशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छं पूजनात्सुखवर्द्धनं ॥ अतिप्रेमीसुप्रीतिच भृगुणापरिभाषितः पञ्चमेशसुसंपूज्य वंशवृद्धिशुभप्रदा ॥ गोविप्ररक्षकोश्रीमान् सत्यवादीविचक्षणः कालानुकूल विद्याच पर्यटनंप्रियसदा ॥ चंद्रअल्पमहाकष्टं प्राणभांतिश्चचिंतनम् श्रेष्ठकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णसुखीनरः ॥ गुप्तलाभविशेषेण
७०७० अकस्माज्जायतेकदा भूमिलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं ॥ मनेच्छापूजितोवत्स अनुष्ठानंसुयत्नतः राजद्वाराधनंप्राप्य निजकृत्य
२७ फलप्रदः ॥ पिताधिक्यप्रकोपोच कामाधिक्यबलान्वितः सुखीनश्चपलोपुन्स रिपुणांकष्टदायकः ॥ निष्ठुरंवचनंवक्ता कुमतिश्च उदारधी सर्वसंपत्समायुक्तो अंगनाप्रीतिकारकः ॥ जन्माद्धनयुतपुन्स गीतनादपरंप्रियः वृणपीड़ासमुत्पन्नो निजांगेनात्रसशयः ॥ सर्वकार्याणिसिध्यंति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र जिसकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं सो पैदा होकर अनेक प्रकार के पृथ्वी पर आनन्द देखे बहुत से काम बढें और उसके शुभचिंतक बहुत हों नवीन विचित्र बातों में मन रहै एक जीव में चित्त बहुत रहा करे यह जीव सूरवीर प्रतापी धीर बंधाने वाला दूसरे की बात को तोले गुरु भौम केतु का पूजन श्रेष्ठ है भृगुजी कहते हैं पञ्चमेश की पूजा दान से वंश की वृद्धि हो पूर्व जन्म के पाप के कारण पुत्रों से रहित रहै दुख देखे स्त्री क्लेश माने और यह जीव विद्यावान् हो भ्रमण करने को चित्त चाहा करे एक समय अचानक में एक बार कष्ट भय हो अल्प भोग कर आयु पूरी हो राजद्वार से प्राप्ती खुशी रहै भूमि से धन प्राप्त हो शत्रुओ से विवाद हो सर्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्पत हों परन्तु पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकमानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात श्रुणुत्वंममवांछया ॥
भाषा ॥ हेपिता इस जीवकी प्रथम जन्म की कथा कहो ऐसे कौन से पाप इस जीवने किये ये जो यह पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥
भृगुवाच ॥ श्रुणोपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणः यवनवंशकुलेजन्म आनन्दभूमिमण्डले ॥ लोकेलक्षपतिख्यातो अतितेजोप्रतिष्ठया
बहुजीववधंकृत्वा निजभक्षोपिकारणं ॥ चापबाणकुरुधारण गवनखेटानुसारेण तिहिपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनश्यति ॥
स०उ० भाषा ॥ हे पुत्र इस जीव से प्रथम जन्म में बहुत पाप बने हैं प्रथम जन्म में यह जीव यवन जाति में उत्पन्न हुवा था नित्य
२८ प्रति शिकार खेलने जाता था और अनेक जीव मारकर लाता था और तिन्हें भक्षण करता था इस कारण पूर्व जन्म का
सात जन्म को शाप लगा हुवा है तिस कारण सन्तान का सुख कठिन है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजा च किंमंत्रकिंजापकं
पूर्वशापविनश्यंति वंशवृद्धिभविष्यति ॥ हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से पूर्व जन्म का शाप नष्ट हो जो
पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या सप्तटंकप्रमाणकं विष्णुधेनुलिखेन्मूर्ति शुद्धचित्तंचशांतये रक्तचन्दन
मिश्राणि गंगाजलस्नानकं संकल्पंददेत्विप्र पूर्वपापस्यशांतये ॥ चन्द्रलक्ष प्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं ॥ भाषा ॥ हे पुत्र सप्तटंक
प्रमाण से स्वर्ण का पत्र बनवावे तिस पर विष्णु भगवान की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और गंगाजल से
स्नान करावे तिसके आगे एक लक्ष गायत्री मंत्र जाप करावे और (मुंह से यह मन्त्र कहता जाय) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं
विष्णु भगवान मम कार्य सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॥ फिर वह मूर्ति ब्राह्मण को संकल्प करके दे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रेष्टपत्रंग्रहाकाव्य दोर्घमान्योप्रतिष्टतः पुत्रदारादिसंचिंत्य भृगुणापरिभाषितः ॥ मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्धं
सुखीन्नरः रूपयौवनसंपन्नो सुमित्रश्चारुभाषितः ॥ नानामंगलंकार्यं जायंतेचमहोत्सवम मध्यसौख्याधिकारीच विलासीमति
मान्नरः ॥ गुप्तशोकविशेषेण अकस्मात्भयमागमः दीर्घद्रव्यव्ययोचापि चिंतयंर्तिदिनेदिने ॥ जलंपशुभयंशुक्र तनकष्टमुपपाथयः
शत्रुपक्षविरोधश्च कुलबधुविप्रीतये ॥ चिंतयेदीर्घकार्याणि अतसौख्यसमायुतः द्वयोकष्टविशेषेण चंद्रअल्पमहाभयं ॥ सुयत्नं
स०३० रक्षितोप्राण नूतनंजन्ममन्यते ॥ दीर्घायुचततोलोके उद्यमेणधनंस्थितः असत्योदोषकंप्राप्त शत्रुपक्षविरोधता ॥ व्ययदीर्घ
२६ मुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः अल्पजीवीचबालोयं अथवागर्भखंडतः ॥ पत्नीकष्टविशेषेण पुत्रचिन्ताचव्याकुलः द्विभार्यायोग
प्राप्यंते किंवान्यत्रस्त्रीप्रीतया ॥ बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षणः सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति वंशवृद्धिनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस पत्र के ग्रह श्रेष्ट हैं बड़ी प्रतिष्टा वाला हो परन्तु यह जीव और इसको स्त्री संतान की चिंता में रहै मान कीर्ति बढ़े लोक में प्रसिद्ध हो सुन्दर स्वरूप मित्रों से प्रीति करने वाला अच्छे वचन बोलने वाला नाना प्रकार के सुख पृथ्वी पर देखे परन्तु गुप्त शोक सन्तान का रहै अकस्मात चित्त पर भय सा रहै बहुत खर्च हो जल से पशु से भय हो या कहीं से गिर कर चोट आवे शत्रु पक्ष से विरोध हो कुल बन्धुओं से विप्रीत हो चिंता क्लेश हो कर फिर अन्त में सुख प्राप्त हो दो कष्ट हों एक में प्राणों का भय हो फिर आयु पूर्ण हो किसी समय में झूंठा दोष लगे इलजाम का भय हो जाय पुत्र होने बहुत कठिन जो होय तो माता और पिता को भारी दुःख देकर बड़े बड़े तरसाव दिखा कर चले जांय ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ शुक्रोवाच ॥ भोतातःकृपनाथ ग्रहमदासकुरुदया पूर्वपापक्षवक्तव्यम् पुत्रस्वप्नेनपश्यति ॥ भाषा ॥ हे पिता मुझ पर कृपा करके कहो इस जीवने ऐसे कौन से पाप किये हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहै ॥ ॥ भृगुवाच ॥ ग्रादजन्मश्चगाथायां कथ्यंतेविधिपूर्वकं दीर्घंपापंकुरुजीव श्रुणुपुत्रतिध्यानकं ॥ चित्रगुप्तकुलजन्म बहुभागीप्रधानक राजद्वारकंन्यायम् उच्चपदवीचप्रासये ॥ द्विजशूद्रउपाधीच लष्टमुष्टप्रहारकं निजकरशूद्रमृत्युच विप्रदोषग्रसत्यक ॥ राजद्वारकृतेन्यायं न्यायकर्ताधनजमेत् प्राणदण्डददेत्विप्र सुद्राशूद्र

स०उ० कंलभेत् तातपुत्रमृत्युदश्य न्यायाधीशोश्रापकम् ॥ भाषा ॥ हे पुत्र प्रथम जन्म में यह जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था

३० राजद्वार में बड़े ग्रोहदे पर था मुकदमे में न्याय किया करता था सो एक शूद्र बूढ़े ने ग्रपने हाथ से ग्रपना ग्रपघात कर लिया उस शूद्र के वारिसों ने ब्राह्मण को फांस लिया ग्रौर हाकिम को रिश्वत देदो सो न्यायाधीश ने ब्राह्मण के पुत्र को प्राण दण्ड की ग्राज्ञा दी सो ब्राह्मण ने श्राप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों का सुख न देखे ॥

॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजाच किंमंत्रकिंजापकं ब्रह्मश्रापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मन्त्र जाप से पूर्व जन्म का ब्राह्मण का दिया हुवा शाप नष्ट हो ग्रौर पुत्र होकर जीवें ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या युग्मसुद्राप्रमाणकं ब्रह्मपुत्रलिखेन्मूर्ति गायत्रोमंत्रजापकं ॥ तान्दूलंयथाशक्ति गुप्तमूर्तिप्रवेशकं संकल्पंददेत्विप्र पूर्वश्राणश्चनष्टकं ॥ इदंदानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र स्वर्ण के दो मुद्रा प्रमाण भर के पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति लिखे ग्रौर चावलों में गुप्त रख कर दान करे ब्राह्मण को दे गायत्री मन्त्र जाप करावे तो निश्चय पत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मकालइतिषेटा सर्वत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजाया ग्रहसौख्यसुयत्नतः ॥ वाटिकामंद्रयानश्च विपाकेनन
वर्धनं जीवोसत्यमान्श्रीमान् उपकारीविचक्षणः ॥ मित्रकृत्यघ्नतांयाति बांधवानासुखलघु कवित्वमतिसंजाते मिष्टभोज्य
मतिप्रिय ॥ स्वभुजेनधनंप्राप्ते पंडितोनृपपूजितः विरोधश्चकुटम्बेन शत्रुवःतप्यतसदाः ॥ देवविद्यामहाप्रीति गुणग्राहिभवेन्नरः
अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनंवर्धतेगृह नानाचतुस्पदानश्च धनकीर्तिविवर्धनः ॥ स्वजनेसुखभोक्तव्या धनरत्नानिसञ्चयः देवतागुरु
स०उ० भक्तश्च सौम्यमूर्तिसुखीनरः ॥ दिव्यवस्त्रसदाधारी स्वजातिमानवर्धनं गुप्तचिंताशरीरेच पुत्रसुखनदृश्यते ॥ पत्नीक्लेशितसृशुक्रो
१३ भाग्यवृद्धिचन्यूनता विद्याबुद्धिविशेषेण भृगुणापरिभाषितः ॥ इन्द्रीव्याधिकचित्काले शीघ्रवीर्यखंडनं चंद्रअल्पनसंदेहो प्राणोभय
विनाशनं ॥ युग्मकष्टगतेशुक्र आनंदंभूमिमंडले पशुभयजलंप्राप्त उपरञ्चपपायथः ॥ सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जीवकी पत्रीमें ऐसे गृहपड़ें सोजीव कन्या पुत्र स्त्रीके सुखका यत्नउपाय करता रहै और इसजीवको रास्तेमेंसे या मंद्रमेंसे धनकीप्राप्ति किसीकालमेंहो सत्यबातको पसंदकरनेवाला परोपकारी मित्रसे बंधुवोंसे किसी समयमें विपरीतताहो और कुछ कविता गानेसुन्नेका भी शौकहो मिष्ट भोजन प्यारालगे अपने पुरुषार्थसे पैदाकरे विद्यावान्हो बड़ेआदमीभी आदरकरे शत्रु जलतेरहैं गुणग्राहीहो देवविद्यामें प्रीतहो सुन्दरस्वरूप भूमिसेलाभ चौपायेभीहों अच्छे आदमियोंसे लेनदेन ऐश्वर्य पैदाकरे अच्छेवस्त्र पहरे दरिद्रीसा नरहै बिरादरी में इज्जतहो गुप्तचिंता रहै बिनाकारण भी डरता रहै इज्जतका ध्यान रखनेवाला भलेबुरेको परखनेवाला अच्छी शिक्षा देनेवाला हेशुक्र पृथ्वीपर आनंद करे यहजीव अनेक प्रकारके सुख दुःख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखको भटकता रहै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रचिंताभविष्यति पूर्वजन्मकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ हेपिता कौन कर्म इस जीवने पूर्व
जन्म में करे हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख न देखें ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रगतेजन्म कथ्यंतेविधिपूर्वकं मैथुलदेश
कुलेजन्म अग्रवालोतिश्रेष्ठया ॥ व्यौहानधनम्प्राप्नोति धनधान्यसमागमः लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसर्वानरोभवेत् ॥ ऋषीपुत्रजगन्नाथ
तीर्थदेवदर्शनम् धनिधनअर्पणकृत्वा आगत्वाददेतमम: ॥ अग्रवालोधनीपश्चात लाभार्थवशिभूतकं दर्शनपर्शआगत्वा ऋषीपुत्र
स०उ० धनददेत शृणुवाक्यधनामुख्य ऋषीपुत्रचविह्हल धनचिंताशरीरेच कृश्यदेहदुर्बलम ॥ तथाकालगतेकाव्य ऋषीपुत्रमृतंतथा
३२ मृतकपुत्रलखंतात हाहाकारविह्हलं ॥ ऋषीशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ हेशुक्र प्रथम एक जन्म में एक ऋषी
का पुत्र जगन्नाथ आदि देवदर्शन करने गया तिस के पास जो कुछ धन था अग्रवाल धनी सेठ तिस के पास धर गया जब
दर्शन से आया तब लोभ के वशिभूत हो कर मुकर गया इसी चिंता में ऋषी के पुत्र ने प्राण दिये तब पुत्र को मृतक देख
ऋषी पिता ने धनी को शाप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों के सुख न देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रं
किंजापकं ऋषीशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ स्वर्णपत्रलिखेन्मूर्तिं ऋषीपुत्रस्वकारकं ताम्रपात्रघृतमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवशक ।
वस्त्रआभूषणंदानं श्रद्धामात्रप्रमाणकं संकल्पंददेत्विप्र श्रधांतेविधिपूर्वकं (मुख से कहे) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रींबटुकभरवाय आप
दुद्धारणाय पूर्वशापनिवारणार्थं दानमंत्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ वस्त्रदानकृतेदंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः सर्वसुखश्चप्राप्नोते वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
हे पुत्र यह जीव स्वर्णपत्रपर ऋषी पुत्रकी मूर्ति लिखे घृतभरे तांबेके कलशमें गुप्तरख ब्राह्मणको दान कर तो निश्चय पुत्र होकर जावें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजन्म माननीयप्रतिष्ठता पञ्चमेशोपिपूज्यन्ते दानमंत्रव्रतोषिता ॥ विद्याबुद्धिविशेषेण पश्चातो सुखपुत्रकं पूर्वणपप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ पूजादानजमंत्रेण पूर्वशापविनश्यति सुतसुखञ्चंतयोशुक्र भृगुणापरिभाषितः ॥ अष्टमद्वादशेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं युग्मविद्याचभ्रम्भामं भृगुणापरिभाषितः ॥ धनव्ययशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं तातमात महासुखं जीवनंसुफलंममः ॥ त्रियोदशेषोडशवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा बहुविद्याचप्राप्नोति पत्नीभीतचयुग्मकं ॥ देहकष्टविजानीयात
स० उ० औषधीप्रतिशांतये गुप्तप्रीतिश्रन्यजीवो नान्यथावचनंममः ॥ जीवचिताचप्राप्नोति अल्पगर्भोपिखंडतः चंद्रनेत्रमितेवर्षे सून्यराम
३३ मितेतथा ॥ दीर्घलाभनसंदेहो उच्चपदवीचप्राप्तये महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिर्दिनेदिने ॥ तातधनशुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं अचानकंउपद्रोवा ग्रहकष्टमहानकं ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधीप्रतिशांतये चद्रअल्पगतेकाव्य पूर्णआयुनसंशयः ॥ षष्टसप्ताद्वकेवर्षे आनन्दभूमिमंडले सर्वानन्दभोक्तव्यम् युत्रदुखञ्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव मध्यम भागवाला प्रतिष्ठा पावेविद्या बुद्धि विशेष हो पञ्चम स्थान के पूजा दान से पुत्रों के सुख देखे पूर्व जन्म के पाप के प्रभाव से संतान का दुख देखे परन्तु पाप निवारण का मन्त्र दान जाप करावे तो अन्त में पुत्र हो कर जीवें और आठवें बारवें सोलवें वर्ष तक विद्या प्राप्ति स्त्री प्राप्ति पिता का धन शुभ काम में खर्च हो प्रथम माता पिता को खुशी हो जीवन सुफल माने दे कष्ट हों औषधी से आराम हो दूसरी स्त्री से प्रीत हो परन्तु अल्प गर्भ खंडत हो या बंध्या हो और रोजगार उत्तम हो उच्च पदवी पावे २१, ३० वर्ष तक फिर ऊपर अनेक प्रकार के सुख दुःख देखे आयु पूर्ण हो ७६ वर्ष के लग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भग आनंद देखे परन्तु पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मगतेजन्म पुत्रसुखविनश्यति विधिपूर्वकथंतात श्रुणुत्वं
ममवांछया ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं कुर्मोवंशकुलेजन्म धनधान्यभविष्यति ॥ दाताभोक्ता कृतज्ञश्च
बहूसेवीनरोभवेत राजमुद्रादददेत्कुर्मी लदयोवृक्षविनष्यति ॥ कोमलपातलतावृत्ते कोटोपक्षीवासकं जंगलुपवनंबद्धो सत्याजन
उद्यानकं ॥ जीवग्रानंदभोक्तव्यं सर्वजीवविनष्यति वृक्षडालगृहपक्षी बालोकीटमृतंतथा ॥ पक्षीशापमहादीर्घ पुत्रस्वप्नेनजीवितं ॥
स०उ० भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म की कथा इस जीवकी वर्णन करते हैं जो कुछ पाप इस जीवसे बने हैं सो सुनो राजा
३४ को मुद्रा देकर बड़े भारी बन काटने का ठेका लिया सो वह बन हरा भरा जहां अनगिनत जीव आराम पाते थे और भोजन
फल फूल खाते थे और बृक्षों की डालो में घोंसले बना रखे थे सो बन कई योजन में को था इस धनवान् कुर्मी ने सब बन को
काट कर विध्वंस कर दिया तिस कारण पुत्रों के सुख स्वप्न में भी होने दुर्लभ हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच
किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुक्खश्चप्राप्तये ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं श्रेष्ठविप्रश्चकर्मेष्टि इच्छा
भोजनददेत् स्वर्णश्चदक्षिणांचैव प्रसन्नात्मसंतुष्टयः बहूअन्नंददेत्पक्षी नितप्रतिकीटभोजनम् ॥ मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षप्रमाणकम्
विधिपूर्वअनुष्ठानं पुत्रप्राप्तिचजीवितः ॥ सुतप्राप्तिनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पक्षियों के पाप निमित्त
एक लक्ष गायत्री जपवावे श्रेष्ठ ब्राह्मण कर्मेष्टि बैठावे तिन्हें अच्छे२ पदार्थ जिमावे स्वर्ण की दक्षिणा दे और बहुत सा अन्न
पक्षियों को जंगल या कोठे पर डाला करे और नित्य प्रति चींटीनाल जिमावे तो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पापग्रहप्रभावेण दीर्घचिन्ताऽवि
श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभागमब्रवन मध्यश्रेष्ठदशाभुक्तो पूजितेसुमनोरथा ॥ पापग्रहप्रभावेण दीर्घचिंतानि
तोभवेत चित्तश्चचञ्चलोनिरं लाभविघ्नसमुद्भवः ॥ विलम्बोजायतेप्राज्ञ पुनर्दीर्घधनागमः हीनकार्यभवेच्चापि पश्चात्तेचिंतनंकृतः ॥
नारीचिंताहृदेगुप्तः शत्रुमित्रवदाचरेत जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशयः ॥ प्रायश्चितकृतेमंत पुत्रसौख्यनसंशयः लाभकृत्योपि
सिद्धंति बृहत्वोधनमागमः ॥ सत्यवक्तासुशीलश्च अमन्याक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीच दुखसौख्यविशेषतः ॥ दानीबुद्धिमतोप्राज्ञ
स०उ० विभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्य कामाशक्तोऽणिगुप्तता ॥ दानमन्त्रजपंपुण्य सर्वदानन्दसंभवः सर्वअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्च
३५ सुखावहं ॥ मनेच्छापूजितेचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं इष्टदेवस्यपूजनम् ॥ सुन्दरमृदुवाणीच धनसंयुक्तकौशलः
वाणिज्यश्चधनदीर्घ भृगुणापरिभाषितः पुत्रजन्मनसंदेहो अल्पजीवीचमृत्युदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक जिस जन्मपत्री में
ऐसे गृह आनकर पड़ें सोमध्यम दशाभी देखैहै और श्रेष्ठदशाभी देखैहैं मनकी इच्छा सब पूर्ण होय परन्तु पापग्रहोंके प्रभाव करके
दीर्घचिंता होय लाभमें विघ्नआवे लाभ होता २ रुक जावे फिर बहुतसे धनका आगमनहो हीनकार्यकरके पछतावे स्त्रीको गुप्तचिंतारहै
और जीवको चिंताक्लेश बनीरहै हेशुक पूर्व पापका प्रायश्चित करनेसे पुत्रोंका सुख देखे और यहजीव झूंठीवार्ता सुनकर क्रोधित
हुवाकरे सत्यसे प्रसन्नरहै साहसी पुरुषार्थी दानीसुकर्मी बुद्धिमान् कभी बुद्धिभ्रमसी होजावे अकलसे नवीन बात निकाले मनुष्य भला
कहैं कई अलाआवें नयाजन्महो फिर आयु पूर्णभोगे हेशुक पृथ्वीपै यहजीव अनेकतरहके आनन्ददेखे परन्तुपुत्रके सुखसे रहितरहै
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से कर्म इस जीव से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी पूर्व जन्ममें बने हैं जो वंशकी वृद्धि नहीं और पुत्रोंके क्लेश देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मनिपापार्थं भृगुपुत्रोति ध्यानक ग्वालवंशकुलेजन्म कृषीकर्मअहीरक ॥ मिष्टत्तेत्रस्चउत्पत्ति गुड़खड़वाचभासये चन्द्रदिवसोपिहोतव्यं दीर्घपापश्चभागिकं ॥ अग्निमन्द्रमहाज्वाला लोहपात्ररसाधिक युग्मसर्पमहानदीर्घं भाविवशप्रवेशकं ॥ विषयरोरसाबूडं गुडमिष्टान्नमेलनं ग्वालवंशीच लोभार्थं मेलिकाकृत्यविक्रय ॥ बहुजावगुडोभक्ष प्राणोचगवनंतथा दीर्घपापप्रभावेण वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ अतिक्लेशमहादुक्खं

स०उ० पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पूर्व जन्म में ग्वाल वंशी अहीर था और खेती का कृत्य करे था ईख बहुत

३६ बोवेथा मिष्टान बनाता था सो कोल्हू में भट्टी पर रस पक रहा था भावी के वश दो सर्प बड़े २ मोटे जहरीले विषियर कड़ाह में आन पड़े सो गिरतेही मृत्यु हो गई तो इस ग्वाल वंशी ने सब होतव्य अपनी दृष्टी से देखा परन्तु उस रस का त्यागन लोभ वश नहीं किया मरे हुवे सर्पों को निकाल कर फेंक दिया और उस कड़ाह के पाक का गुड़ बनवा कर वेचा वो गुड़ जिस जीव ने खाया वही मृत्यु का प्राप्त हुवा सो बड़े पाप का भागी है इस कारण वंश की वृद्धि नहीं होती और पुत्रों को भटके है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकं पूर्वपापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिर्दिनेदिने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धा म त्रमाणक युग्मसर्पलिखेन्मूर्ति गायत्रीमन्त्रजापकं ॥ यज्ञहवनश्चदानञ्च कुर्वंतिविधिपूर्वकं संकल्पंददेत्विप्र सहितोवस्त्रभूषणं ॥ दानमन्त्रकृतेसत पूर्वपापश्चशांतये पुत्रसुखनसंदेहो वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव श्रद्धामात्र स्वर्ण पर दो सर्पोंकी मूर्ति बनावे और वस्त्र भूषण सहित विधिपूर्वक कर्मेष्टि ब्राह्मणको दान करे और यज्ञ हवन करे तो अवश्य पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एषग्रहस्थितपत्री बहुविद्याचप्राप्तये बलान्वितःविलासांच विफलःसर्वकार्यकृत ॥ मतिमानचारुशीलश्च भृगुणापरिभाषितः जन्मश्रेष्ठकुलेयातो बहुभागीचलोकमा परोपकारकर्ताच चित्तचिंताचगुप्तता मित्रपक्षमहाप्रीति सर्वसुखंचप्राप्तये ॥ साहसांसन्मार्नोश्च दीर्घव्ययनसंशयः श्रेष्ठशिक्षाददंमित्र सूरवीरोपराक्रमः ॥ युग्मअल्पमहापीडा नवीनोजन्मप्राप्तये जलग्नि भयर्जाव वृणचिन्होतिदृष्यते ॥ कस्मिनकालउपद्रोवा गुप्तचिंताभविष्यति लाभप्राप्तिविशेषेण अतितजोप्रतिष्ठया ॥ स्त्रीप्रीति

स०उ० नसदेहो आशक्तंचित्तगुप्तत नवीनोमन्द्रकरचना ऋणभयभृगुसनमः ॥ सर्वसुखचप्राप्नोति पुत्रदुखनसंशयः पत्नीक्लेशमहाचिंता

२७ वशवृद्धिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जिस जीव की पत्री में ऐसे गृह आन के पड़े हैं सो भागवान् विद्यावान् सूरवीर श्रेष्ठ कार्य करने वाला परोपकारी पहली अवस्था से अन्त में सुख विशेष खर्च विशेष रहै श्रेष्ठ शिक्षा देने वाला इज्जत पैदा करे जल अग्नि भय होय किसी काल में उपद्रव हो फिर शांत हो दो अल्प भुगत कर आयु पूर्ण हो स्त्री से मित्र से प्रीत नई २ लाभ की वार्ता सोचा करे पुत्रों का दुख देखे स्त्री को क्लेश रहे सब सुख हों परन्तु पाप के कारण पुत्रों का दुख हो ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन वंशवृद्धिनदृश्यते त्रासपुत्रश्चभोक्तव्यं पत्नीक्लेशोपिदीर्घता ॥ पूर्वगाथाइदंजीव श्रुणुत्वंममवांछया केनपापप्रभावेण सुतानन्दनदृश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्र ज कहते हैं हेपिता कौन से पाप कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः आद्यजन्मांतरंगाथा कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ ग्वालवंशसमुत्पन्न बहुसेवीनरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच तेजस्वीप्रतिष्ठवान् ॥ अरजुनधेनुविख्यातो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवपुरग्रामवासकम् बहुदानीप्रधानजीव ग्रानन्दभूमिमंडले ॥ हस्तिथापितेयात्रा स्नानेहरिद्वारकम् रविग्रास्तानिशोमार्गें
ग्रन्धकारोपिगच्छति ॥ कुमार्गोगवनंकत्वा ग्रन्यपुषोंपिवर्जयेत् पशुसर्पइदंमार्गें पगडंडीनगच्छति ॥ यात्रीमंदश्रु णुशब्द
ग्रंगिकारनकृत्यया सर्पंचसहितपुत्रो गजचर्णौपिमृत्युदा ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मग्रपुत्रवान् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा
हेपुत्र प्रथम एक जन्म में यह जीव ग्वाल वंश था हरिद्वार गङ्गा स्नान करने जाता था सो रात्रि के समय ग्रन्य मनुष्यों ने
स०उ० मना किया कि इस रास्ते में सर्प बहुत पड़े रहते हैं रात्री में मत जाग्रो सो यह न माना बहुत से सर्प ग्रादि जीवों का विध्वंस
३८ हुवा तो पाप का भागी हुवा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकम् सर्पशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥
भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौनसे दान मंत्रसे पुत्रों के सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकम्
मृत्युसर्पलिखेन्मूर्ति रक्तचन्दनकारकम् ॥ गंगाजलेनसंशुद्धो धूपीदपंचचन्दनम् वीजमन्त्रश्चगायत्री लिपिकत्वाविधिपूर्वकम् ॥
दीर्घवज्रकृतेदानं मन्त्रश्रद्धाप्रमाणकम् ताम्रकुम्भघृतमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकम् ॥ ग्रनवस्त्रददेत्दानं जापंचविधिपूर्वकम् मंत्रसन्तान
गोपालं चन्द्रलक्षप्रमाणम ॥ देवकीसुतगोविंद दूसरामन्त्र उच्चारण करे ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय ग्रापदुद्धारणाय
पूर्वशापनिवारणार्थं दानमन्त्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ मन्त्रदानकृतेसन्त निश्चयपुत्रजीवित पूर्वशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं स्वर्ण पत्र पर सर्पों की मूर्ति बनाय गंगाजल से शुद्ध कर विधिपूर्वक दान करे ऊपर लिखा मन्त्र पढ़ता
जाय ग्रौर एक लक्ष सन्तान गोपालका मन्त्र विद्वान् पंडित से जपवावैं तो निश्चय पुत्र होकर जीवें इसमें कुछ संशय नहीं है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वग्रहस्थित्वा कुण्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितेलोके विलम्बोनात्रसंशयः ॥ युवावस्था यदाप्राप्य भाग्योदयविशेषतः द्रव्यलाभंभवेच्चापि स्वकृत्यकुशलोगुणी ॥ बहुकार्यरतोनित्यं सुमित्रलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् माननीयोविशेषतः ॥ ग्रदौज्ञात्वामहद्दुखं पुनरंतोश्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितं नतुष्यतिकदाचनः ॥ गोधौम्रापिवर्णाश्च बुद्धि वानोविशेषतः द्विभार्यागेहेप्राप्नोति अथवामंगलंत्यजेत ॥ सत्यमार्गसुकृत्यश्च स्वकुलेपोषणेरतः प्रतिष्ठावर्धतेलोके भूमिलाभ
स०३० नसंशयः ॥ श्रेष्टकृत्यविजानियां गुप्तचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंता देहपीडाचगुप्तता ॥ अकस्मात्महाद्दुखं भयभीतोचप्राणक
३६ शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेपराजयम् ॥ प्रदेशोगवनंकृत्वा नान्यथावचनंमम शुभकार्येधनव्ययं अर्थप्राप्तिभविष्यति ॥ सर्वसुखञ्च प्राप्नोति पुत्रशोकनसंशयः ॥ भाषा ॥ हेशुक्र इस जीव की पत्री में श्रेष्ट ग्रह पड़े हैं परन्तु फल देर से करेंगे अन्त अच्छा हो अच्छे लाभ के काम करे राजद्वार से लाभ हो बहुतों का काम निकले गुप्त प्रीत रहै दूसरी स्त्री भी प्यार करे सूरवीर किसी के छल में न आवे सगाई हो के छूटे या द्विभार्या योग हो सत्य बोलने वाला दूसरे की बात को तोले बड़े बड़े मामले देखे स्त्री पुत्रों का क्लेश चिंता रहै सब सुख देखे परन्तु पूर्ण पाप के प्रभाव से पुत्रों के शोक देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात कथ्यतेविधिपूर्वक ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता कौनसे ऐसे कर्म इस जीवने पूर्वजन्म में करे हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं यवनवंशकुलेजन्म षटकर्मापिवर्जयेत् ॥ पशुअंडश्चभोजनाय बहुजीवविनाशनं नित्यउपवनंगत्वा पक्षीबालभक्षणं ॥ सहस्रोजीवश्चापार्थं पुत्रसुखविनश्यति ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव एक पूर्व जन्म में यवन वंश में उत्पन्न हुवा था सो अपने षटकर्म से रहित रहा और नित्य
प्रति बागों में जाकर सैकड़ों पक्षियों के अंडे लाकर के भक्षण किया करता था और बड़ा धनवान् था बाग जमीन अनेक
तरह की सवारी थी परन्तु षटकर्म से रहित था और अपने आनन्द भोगे था सो सैंकड़ों पक्षियोंका शाप लगा हुवा है ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान
ब०उ० मन्त्र जाप कराने से इस जीव को पूर्व का दियो हुवा शाप नष्ट हो जो पुत्र के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥
४० भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या चन्द्रलक्षप्रमाणकी गायत्रीमूलमन्त्रस्य रक्तचन्दनमलिखेत ॥ पक्षीबालकमकारम् लिख्यतेविधि
पूर्वकम् षटरसआदिसामग्री संकल्पम्ब्राह्मणंददेत ॥ गायत्रीमूलमंत्रस्य चंद्रलक्षप्रमाणकं मन्त्रसन्तानगोपालम् श्रेष्ठविप्रजपंतथा ॥
दान करते समय श्रद्धा और भक्ति पूर्वक विष्णुभगवान् का ध्यान करे और मुख से यह मन्त्र उच्चारण करता जाय ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायण विष्णुभगवान् पूर्वशापनिवारणार्थं पुत्रसुखनिमित्यर्थं दान मन्त्र जाप करूं हूं सो ग्रहण करो ॥
मंत्रदानकृतेमन्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशय वंशवृद्धिभविष्यति भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण का पत्र एक
मुद्रा प्रमाण बनवावे और उसके ऊपर गङ्गा जल मिश्रित लाल चन्दन में मूल मन्त्र लिखे और पक्षियों का आकार बनवा कर
और षटरस आदिका संकल्प करा कर श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मण को दे और मन्त्र सन्तान गोपाल और गायत्री मन्त्र लक्ष प्रमाण
जपवावे हवन यज्ञ करता निश्चय पुत्र होकर जीवें और धन संतानकी वृद्धिहो और जीवन सुफल माने हर प्रकारके आनंद हों ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रइस्थित्वा बहुभागीचबालकः साहसीचप्रतापीच विनीतश्चतुरोगुणी ॥ मंत्रतंत्रविजानीयात् शिवभक्तिचमध्यमा दृष्टीन्यूनविजानीयात् नेत्रपीडानसंशयः ॥ अंगरोगकचित्काले औषधिप्रतिशांतये मित्रश्रेष्टमहाप्रीति नवीनोवार्तयाचितः ॥ अल्पकष्टभयंशुक्र नवीनोजन्मप्राप्तये मिष्टवाक्यप्रियवाणी धनचिंतानसंशयः ॥ महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने कटुवाक्यउपाधीच शत्रुपक्षविरोधता ॥ चौरभय विजानीयात् गुप्तशत्रुचप्राप्तये राजद्वारप्रतिष्टोवा भूमिलाभ

भ०उ० भविष्यति ॥ पुत्रचिंताविशेषेण पत्नीशोकबूडनं प्रमेहोव्याधिकंक्लिष्ट औषधीप्रतिशांतये ॥ कस्मिन्कालेउपद्रोवा शीघ्रोवीर्यखंडतः

४१ अर्धआयुगतेशुक्र भाग्योदयदिनेदिने ॥ पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस जीव की पत्री में ग्रह श्रेष्ट हैं इज्जत पावे चतुर बुद्धिमान् मन्त्र यन्त्र का भी कभी शौक हो शिव भक्ति करे मध्यम श्रद्धा से कभी आंख दुखनी आवें दृष्टि मध्यम सी होवे एक मित्र से प्रीत बनी रहे चित्त उसकी तरफ विशेष रहे एक कष्ट अल्प समय हो फिर औषधी से शांति हो श्रेष्टवार्ता बारम्बार सोचे किसी काल में क्रोध विशेष आया करे कड़ा बोले शत्रु जला करें मार्ग में या और कहीं चोर का भय हो स्त्री से प्रीत हो राजद्वार और भूमि से लाभ पुत्रों के दुख देखे स्त्री को औलाद की चिंता रहे अनेक यत्न करे पूर्व पाप के कारण निष्फल जाय हेपुत्र यह जीव सर्व सुख देखे परन्तु पुत्र सुख न हो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रृणुत्वममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता पहले किसी जन्म में कौन से पाप इस जीव से बने हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्व पूर्वपापञ्चकारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ उपवनंगवनंकृत्वा सन्मुखोसिंहदृष्ट्यः क्षत्रीसिंहवधोबाण द्विजपुत्रचमृत्युदा ॥
चन्द्रपुत्रसुखीविप्र क्षत्रीवंशविनाशनं द्विजदृष्टिकृतेपुत्र हाहाकारविव्हलं ॥ विप्रशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतदुखी ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव एक पूर्व जन्म क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया बड़ा भारी धनवान् था सो एक समय
धनुषबाण लेकर शिकार खेलने गया तहां सिंह दृष्टिमें आयातो क्षत्रीने तीरमारा सिंह तो बच गया एक ब्राह्मणका पुत्र सन्मुखसे
स०उ० आवे था सो क्षत्री के बाणों से उसके प्राणों का नाश हुवा तो ब्राह्मण के यह एक ही पुत्र था सो उसका मृतक शरीर देख कर
४२ हाहाकार कर के विव्हल हुवा और क्षत्री को ब्राह्मण ने शाप दिया कि तू भी सात जन्म तक पुत्रों को भटकता रहेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् विप्रशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान
मन्त्र जाप से पूर्व का दिया हुवा ब्राह्मण का शाप छूटे जो इस जीव को पुत्रों का सुख हो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या
चन्द्रटंकप्रमाणकी तन्मध्येकामवीजश्च स्वर्णोशुद्धमाद्रशेत ॥ रक्तचन्दनमिश्राणि द्विजमूर्तिप्रकोरकम् चन्द्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्र
जापकं ॥ वस्त्रभोजनदानं संकल्पंब्राह्मणददेत् वज्रदानविनिर्मुक्तो पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ वंशवृद्धिनसंदेहो भाग्योदयदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र एक टंक प्रमाण स्वर्ण का पत्र बनवा कर तिस के ऊपर रक्त चन्दन और
अनार के कलम से द्विज के पुत्र की मूर्ति लिखे और वस्त्र भोजन सहित सब सामग्री संकल्प कर के ब्राह्मण को दे
एक लक्ष गायत्री मन्त्र जपवावे हवन यज्ञ करे ब्राह्मण को दक्षिणा देकर तृप्त करे तो अवश्य पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं एवंसाकुण्डलीफलं आदौभाग्यञ्चमध्योपि पुनरंतेविशेषता ॥ बालवस्थाचक्रीड्यन्ते विद्याभ्यासेपिमंगलं तातद्रव्यंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवः ॥ भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेनात्रसंशयः वारिभीतोथवावन्हि चतुष्पादेन पीडितम् ॥ उच्चस्थेपतितोभूमौ शरीरोबातपोडिनं बहुविद्यानप्राप्यन्ते कार्यमात्रञ्चसिद्धांते ॥ बुद्धिमंतोविशेषेण सुज्ञाताचसुलक्षणः युवावस्थासुखंप्राप्य पुत्रसुखविनश्यति ॥ व्ययलाभविशेषेण कीर्तिवंतोप्रतिष्ठत भाग्यवंतोधनाध्यक्ष सुप्रसिद्धंसुखीन्नरः ॥
स०३० चंद्रमित्रपरंप्रीति सर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिताद्वयोजीव प्राप्यतेशोकसंयुतं ॥ कदाचकष्टरोगार्तो बहुद्रव्यव्ययोभव राजद्वारे
४२ धनागम्य भूमिलाभस्तथैवच ॥ बरङ्गोसिंधुवच्चितं जायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्य नूतनजन्ममन्यते ॥ पुनः तेसुखंप्राप्य आयुपूर्णभविष्यति पापक्रूरग्रहापूज्यं यकृताभाग्यमन्दता ॥ दानमन्त्रविधानेन मनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्यविशेषेण परकार्य रतोनरः ॥ दयालुसुविचारश्च गातवाद्यतस्सदा सुन्दरंभृगुवाणीच धनसंयुक्तकौशल ॥ सत्यवक्ताप्रतापीच विनितश्चतुरोगुणी सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रप्राप्तिउपायकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ हो प्रथम मन्द भाग हो पश्चात् में विशेष भाग की वृद्धि हो बाल्यावस्था में बालक्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में खर्च हो बहन भाई का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय हो या कहीं से गिरे विद्या कार्य मात्र हो चतुर दाना युवा वस्था में बड़े काम और मामले देखे लाभ खर्च बहुत हो प्रतिष्ठा पावे एक मित्र से गुप्त प्रीति विशेष हो उससे मन की बात कहै और एक जीव का क्लेश बहुत माने कई बीमारियों में खर्च हो राजद्वार तथा भूमि से लाभ हो चित्त में समुद्र के सी नित्य नई तरंग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उठैं एक अल्प भारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हो हेशुक पूर्व जन्मों के कारण पुत्रों के सुख से रहित रहे ॥
शुकोवाच ॥ केनपापञ्चकर्तव्यं पूर्वजन्मनिकथ्यते विधिपूर्वकथंतात श्रृणुत्वंममवांछया ॥ सर्वसुलञ्चप्राप्नोति वामपुत्रञ्चविन्हलं
पुत्रप्राप्तिनदृश्यंते जन्मतेसुतमृत्युदा ॥ हेपिता इसजीवने पूर्वजन्ममें कौनसेपाप किएहैं सोकहो ॥ भृगुवाच ॥ ब्रह्मवंशकुलेजन्म
कुरुक्षेत्रनिवासयो दीर्घदानञ्चग्रहणं यात्रापुत्रविनाशनं ॥ हेशुक तुम चित्तदेकर सुनो हम प्रथम जन्मसे पहले जन्मकी कथा वर्णन
स०उ० करते हैं क्योंकि शापतो सातजन्म तकभी फलकरैहैं सो यह प्रथमसे प्रथम जन्ममें ब्रह्मकुलमें कुरुक्षेत्रमें पराडाथे इन्होंने बहुत कुछ
४४ दानलिये परंतु एकदुष्टकी सम्मतिमें आनके एकयात्री जोसाथमें स्त्रीपुत्रकोलिए इनकेस्थानपरठहराथा उसकेपुत्रको स्वर्णकाआभूषण
जड़ाऊ और सच्चेमोतियोंकी माला उतारकर उसके सोतेहुवे पुत्रको कूपमेंडालदिया सो उसयात्रीने अतिदुखीहो वहींतीर्थपर शापदिया
कि जिसने मेरे पुत्रकी यहगतकी उसके सात जन्म तक पुत्रका सुख नहो और दुखित रहे ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच
किंमंत्रंकिंजापकं यात्रीशापविनिर्मुक्तो सुखसंतानवर्द्धनः ॥ यहकथा सुनकर तिनके पुत्र शुकजीने भृगुजीसे प्रार्थना करके पूछा
हेपिता कौनसे दानमंत्रजाप करानेसे इसजीवका शापनष्टहो औरपुत्रोंका सुखदेखे सोवर्णनकरो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिंकृत्वा
यात्रीमूर्तिपुत्रकं रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ तीर्थदानददेत्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं वस्त्राभूषणसहितं संकल्पश्रेष्ठविप्रयो ॥
इदंदानकृतेजीव पूर्वशापनष्टकं पुत्रसुखनसंदेहो मनवांछितफलप्रदा ॥ भाषा ॥ हेशुक यहजीव स्वर्णपत्रपर यात्री पुत्रको मूर्ति लाल
चंदनसे लिखे गंगाजलसे स्नान कराय तीर्थ पर जाय श्रेष्ठ ब्राह्मणको दानकरे गायत्रीमंत्र जपवावैतो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्ठबलान्वितः फलपूर्णनकर्ततव्या त्रिग्रहाअधमस्थिता ॥ कार्यसिद्धिश्चद्दश्यंते तेनहानिप्रजायते भौमपुच्छेरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित ॥ विशेषोलाभसंजातं भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोके सर्वतोदिशि मंगलं ॥ अयत्नेनतदाकाव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमंत्रसुपुण्येन बहूत्वोलाभसंभवा ॥ आनन्दमंगलाचारं जीवहर्षंचमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्योप्रतिष्टत ॥ यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंत्तनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते ॥

सं०उ० क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पजन्मनूतनम् सुयत्नंदानमन्त्रेण सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ पुत्रचिंताभविष्यन्ति पत्नीक्लेशविव्हलं दशाश्रेष्ट

४५ प्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव ॥ कुबेरद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णयुतोजीव सर्वेषांशुभचिंतकः ॥ नकस्याअशुभ चिंत्य परनिंदाविनिर्मुखः व्रणचिन्हशरीरोपि शत्रुपक्षविरोधता ॥ तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुण्यप्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणः पत्नीपुत्रमहाचिंता भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं इस कुण्डली का फल बहुत उत्तम श्रेष्ठ था परन्तु पूरा फल देर से हो तीन ग्रह हानि कारक हैं सूर्य, मंगल और केतु इनका दान मन्त्र उपाय करने से लाभ विशेष हो और भाग्य की वृद्धि होगी और यह जीव बड़ी इज्जत और प्रतिष्ठा पावे परन्तु इतने नाकिस ग्रहों का यत्न न हो मध्यम फल हो और यत्न उपाय करने से अनेक प्रकार के लाभ हों और आनन्द मंगलाचार हों जीव की खुशी हो और यह जीव बड़ी इज्जत कीर्ति पैदा करे मध्यम दशा में मध्यम लाभ और गुप्त चिंता अनेक प्रकार के खर्च एक अल्प से बच कर नया जन्म हो और कहीं से अकस्मात लाभ हो यह जीव सब का भला चाहै एक मित्र से मिल कर लाभ हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऊञ्ची पदवी पावे शत्रु उपाय करे घर में क्लेश सा हो॥फिर मनोकामना पूरी हो हेशुक इस जीव का पञ्चम स्थान पूजनीक है
सब सुख देखे परन्तु बिना उपाय पुत्रों के सुख से रहित रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनष्यति पूर्वजन्म
कथाकथ्यं शृणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता ऐसे कौन से खोटे कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो
पुत्रों के सुख प्राप्त नहों ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ मृगीपुत्र
स०७० विलोकस्य क्षत्रीचापधारणम् दक्षिणहस्तकंसाय मृगीपुत्रश्चमृत्युदा ॥ हाहाकारमृगकृत्वा पुत्रशोकोपिबूडनं मृगशापमुखंदत्वा
४६ सप्तजन्मसुतहीनकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र पूर्व जन्म की कथा इस जन्म पत्र वाले जीव की तुम सुनो
क्षत्री वंश में पूर्व से पूर्व जन्म में उत्पन्न हुवा सो शिकार खेलने गया तो इसने मृग का बच्चा मारा सो मृग ने दुखी हो शाप
दिया कि सात जन्म तक तुझे पुत्र का सुख नहो और पुत्रों के विलाप देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्र
किंजापकम् पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखभविश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी महाराज ने कहा हेपिता यह जीव कौन से दान मंत्र और
जाप करावे जो इस जीव को पूर्वका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र होकर जीवें और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥
भृगुवाच ॥ स्वर्णंचप्रतिमाकारः मृगमूर्तिलिपिकृतः ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ श्रद्धामात्रददेहानं अर्धरात्रप्रमाणकम् ॥
भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका बनवावे तिसपर मृगकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखे और शुद्ध करके घृतके भरे कलश
में मूर्ति गुप्त प्रवेश कर अर्धरात्रि प्रमाण दान करा कर श्रेष्ठ विप्रको देतो पुत्रका सुख निश्चय हो और मनोकामना पूर्ण होय ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्येदंफलंदृश्य यथाभाग्यादिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवआशाविनिर्मुखः ॥ चिंतनंसुस्थिरंलोके
चञ्चलोचितविशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चजायते ॥ नूतनंवार्तयाचित्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुद्रष्यन्ते
विलम्बोजायतेपुनः ॥ क्लेशरोगेनपीड्यन्ते पुत्रशोकोपिचिंतनं लाभेशोपंचमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता ॥ फलश्रेष्ठसुखंप्राप्य सुपुण्यं
फलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण पुत्रचिंतानसंशयः ॥ बहुकृत्यमहल्लाभं सुजनानन्दवर्द्धन मित्रपक्षपरंप्राति आनन्दंभूमिमण्डले ॥
७०३० पितृपीड़ाग्रहगुप्त अकस्माद्भयदायकः पत्नींक्लेशनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः ॥ बंधुक्लेशविरोधश्च चंद्रपीड़ाविशेषतः अकस्मात्
४७ महाचिंता नान्यथावचनंमम: ॥ गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधि तेनसौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं ॥ द्रव्यप्राप्तिविशेषेण
कुलबंधुचहर्षिता मध्यविद्याचप्राप्नोति भाग्यवृद्धिविशेषतः ॥ गुप्तलाभनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने पूर्वशापप्रभावेण पुत्रसुखनदृश्यते ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस पत्र का फल सुनो यह जीव ज्ञानवान् चतुर हो सब का भला चाहै भागवान् हो
प्रसन्न रहै एक जीवको आस लगी रहै चित्त चलाय मानसा रहै और नई नई बार्ता सोचता रहे गुप्त चिंतासीं हो जाया करे नये
नये लाभहों कार्य की सिद्धि में विलम्बसा हो जाया करे और क्लेश पीड़ा होकर आनन्द हो पुत्रकी चिंता लगी रहे लाभेश और
पञ्चमेश को पूजा दान से फल श्रेष्ठ और मनोकामना पूर्ण हो कृत्य में लाभ और मित्रों से प्रीत पृथ्वी पें आनन्द और पितृ
पीड़ा का भय हो स्त्री को क्लेशसा हो किसी समय बन्धु या और शत्रुओं से विवाद हो अकस्मात चिंता हो जाय गायत्री मंत्र
जाप करानेसे मन इच्छा पूर्णहो विद्या मध्यम और चतुर विशेषहो कहींस गुप्त लाभहो बहुतसी प्राप्तिहो हेशुक्र पूर्वपाप और शाप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के कारण पुत्र का सुख नदेखे ॥ शुक्रोवाच ॥ शृणुतातकृपानाथ पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापं पुत्रसुखविनश्यति ॥
भाषा ॥ शुक्रजी ने कहा हेपिता कौन से पाप इस जीवने पूर्वजन्म में किये हैं जो पृथ्वी पर सब सुख देखे और पुत्रों के दर्शनों
को भटकता रहे सो कृपा कर कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते शृणुपुत्रोतिध्यानकं ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्मोपिकृत्यया ॥
गौवच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं वच्छोपिप्राणागवनं गौश्चापसुखंददेत ॥ दारुणदुखददेत्विप्र अग्रजन्मश्चभोक्तया पुत्रसुखविनश्यंति
स०ज० सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्म कुल में उत्पन्न हो कर खेती करता
४८ था सो रात्रीं को गौ और उसका बच्चा खेती में आघुसे तो बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह बछड़ा मृत्यु को प्राप्त हुवा
गौ ने विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे मैंने बछड़ेका दुख देखा तैसे तूभी सातजन्मतक पुत्रों का दुख देखेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वंशापविनश्यंति पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा हे पिता कौन से
दान मंत्र जाप कराने से गौ का दिया हुवा शाप नष्ट हो संतान का सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गंगाजल
रक्तचंदनं गौवच्छतियाकारं तांदुलस्त्रेतगुप्तया ॥ संकल्पंददेत्विप्रः सुखउच्चार्णमंत्रकं बटुकमंत्रकृतेजापं पूर्वशापविनश्वति ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुरस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्र स्वर्ण के पत्र परगौ के
बछड़े की मूर्ति रक्तचन्दन और गंगाजल से लिखे चावल का थाल भरकर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी
श्रेष्ठ ब्राह्मण कोदे और ऊपर लिखे मंत्र का श्रद्धा प्रमाण जाप करावे गायत्री मंत्र जपवावे तो पत्र होकर जीवें मनोकामना पूर्णहो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं यथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्या चितचिंतातिमन्यते ॥ श्रमोपिजायतेदीर्घ
ग्रहद्रव्यश्चन्यूनता विद्यावंतोसुबुद्धिश्च सर्वावस्थाप्रतिष्ठतः ॥ सत्यवक्तासुखीलोके नकश्चितहानिचिंतकः परकृत्यरतोप्रेमी जनासुर्वे
प्रशमिता ॥ जीवचिंताविशेषेण मित्रप्रीतिबृहत्वया नूतनोवार्तयाचित्त उद्यमेणधनाप्तयः ॥ कुलश्रेष्टसुभाषीच सर्वेषांतोषणेरत
दशान्यूनमहाचिंता उद्यमेश्रमनिष्फलम् ॥ विलम्बोजायतेलाभम् अर्द्धन्त्यश्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्य पदउच्चमुपस्थितः ॥
स०उ० विशेषोजायतेलाभम् मानकीर्तिविवर्द्धनम् पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनः ॥ पापक्रूरगृहापूज्यं पञ्चमेशोप्रयत्नतः दानमंत्र
४६ सुपुण्येन मनेच्छासर्वपूजिता ॥ सर्वावस्थामहल्लाभं भाग्योदयदिनेदिने अतश्चायुमहासुखं भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ सर्वसुखश्च
प्राप्नोति पुत्रप्राप्तिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी पत्री में गृह श्रेष्ट हैं लाभ खर्च विशेष हो
लाभ के वास्ते नई नई बात का चिंतवन करे एक समय बुद्धि भ्रमसी हो घर में द्रव्य की न्यूनता प्रतीत पड़े विद्यावान्
बुद्धिवान् हो इज्जत प्रतिष्ठा पावे सत्य बोलने वाला गुप्त चिंता सी हो जाया करे पराए काम सुधारने वाला लोग प्रशंसा
करें मित्रसे प्रीत विशेष रहे नई नई बात का ध्यान धन की प्राप्ति का परिश्रम उद्यम करे न्यूनदशा में परिश्रम
निष्फल हो अधूरा लाभ हो एक समय अकस्मात् लाभ विशेष हो उच्च पदवी पावे मान कीर्ति बढ़े स्त्री को पुत्र
के न होने की चिंता लगी रहे और अन्त आयु सुख मिले हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्रों के सुख को भटकता रहे ॥
शुक्रोवाच ॥ श्रृणुतातकृपानाथम् पूर्वगाथावकथ्यते केनकर्ममहापापम् पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता कौनसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

पाप इस जीवने पुर्व जन्ममें किये हैं जो पृथ्वीपर सब सुख देखे और पुत्रोंके दर्शनको भटकता रहे सो कृपाकर मुझसे कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते श्रृणुपुत्रतिध्यानकम् ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्म्मासुकुत्यया ॥ गौवच्छत्रणाभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं बच्छोपिप्राणगवनं गौशापमुखंददेव ॥ दारुणादुखददेत्विप्र अग्रजन्मचमोत्त्या पुत्रसुखविनष्यति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्मकुलमें उत्पन्न होकर खेती करताथा सो रात्री को गौ और

प०उ० उसका बच्चा इसकी खेती में आघुसे तो इसने बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह मृत्यु को प्राप्त हुवा तब उस गौने बड़ा

५० विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे तैंने मेरे बछड़े को मारा और मैंने बछड़े का दुख देखा तैसे तूभी सात जन्म तक पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपुजाच किंमंत्रंकिंजापक पूर्वशापविनष्यंति पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्रजी महाराज ने कहा हेपिता कौन से दान से और कौन से मंत्र जाप पुजा से पुर्व का गौ का दिया हुवा शाप नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रोंका सुख देखे सो विधि पूर्वक कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णापत्रलिपिकृत्वा गङ्गाजलरक्तचंदनं गौवच्छोतिआकारं तांदुलस्वेतगुप्तया ॥ संकल्पंददेत्विप्रः सुखउच्चार्णमंत्रकम् बटुक त्रकृतेजापश् पूर्वशापविनष्यति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुकुरुस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण के पत्र पर गौके बछड़े की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और चावल का थाल भर कर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी श्रेष्ट ब्राह्मण को दे और फिर ऊपर लिखे मन्त्र का श्रद्धा प्रमाण भक्ति पूर्वक जाप करावे तो निश्चय पुत्र हो कर जीवें ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं विशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभागीच चिंचचिंताविशेषतः ॥ व्ययलाभविशेषेण सर्वावस्थासुमोदिता मात्रभग्निचप्राप्नोति अल्पसुखनसंशयः ॥ व्रणचिन्हशरीरश्च वायुखेदश्चपीडिका कस्मिन्कालउपाधीच बंधुपक्षविरोधता ॥ अकस्मातउपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरेण महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभोभवतिनान्यथा ॥ युग्मविद्याचप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति मध्यप्राप्तिविजानीयात् व्ययदीर्घोनसंशय ॥ चन्द्रअल्पमहादुक्खं नर्वानोजन्मप्राप्तये आयुभोगंचपुर्वोगा
ब०६० भृगुणापरिभाषितः ॥ चन्द्रस्त्रीमहाप्रीति आनंदंभूमिमण्डले सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखविनश्यति ॥ पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रयोगश्च
५१ खण्डत मानसीविविधाचिंता भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ पूर्वपापप्रभावेण पूर्णवांछानदृश्यते पितृपीड़ाग्रहमध्ये श्रद्धामात्रश्चपूज्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ है गृह बलवान् पड़े हैं लाभ कारी और खर्च विशेष हो भग्नी और भ्राता का सुख मध्यम हो श्रेष्ट दशा में लाभ बहुत हो कीर्ति बढ़े शरीर में व्रण का चिन्ह कभी दर्द पीड़ा हो जाया करे और मित्र या बन्धु भ्रात से उपाधी हो अकस्मात् उपद्रव सा उठे शत्रुपक्ष से विरोध हो गुप्त चिंता सी हो जाय फिर बहुत सी प्राप्ति हो और इज्जत प्रतिष्ठा पावे दो विद्या का मध्यम योग हो ऊंचादर्जा पावे लाभ मध्यम हो किसी समय में खर्च विशेष हो एक अल्प आयु से बच कर उमर पूर्ण हो एक स्त्री से महा प्रींत हो कर एक जीव का ख्याल बना रहे हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्र की महा चिंता क्लेश स्त्री को रहा करे पूर्व पाप के प्रभाव के कारण पुत्रों का सुख कठिन है पितृ पींड़ा घर में हो गुप्त बामारी हो अनेक प्रकार की चिंता हो सब सुख प्राप्त हों परन्तु पुत्रों का योग खंडत है पितृ पीड़ा को श्रद्धा मात्र उपाय भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संततिवंशविनाशकः
करावे परंतु इच्छा पूर्ण विलंब से हो ॥ भृगुवाच ॥ मासेवर्षेसुखंप्रासि भृगुणापरिभाषितः सर्वसुखञ्चप्राप्नोति
भाषा ॥ सूर्य वंश ऋषी पुत्र भृगुजी महाराज ने कहा हेपुत्र यह जीव सब सुख देखे परन्तु पुत्रों के सुख से क्लेशित रहे ॥
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मचभोतात पूर्वजन्मनिकथ्यते सर्वंचविस्तराद्ब्रुहि पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजी ने कहा हेपिता
पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म करे हैं जो सब सुख देखे और पुत्रोंके सुखसे रहित रहे सो पूर्व जन्मकी कथा कहो ॥
भृगुवाच ॥ सूर्यवंशसमुत्पन्न बहुसेवीनरोभवेत अश्वपतिगजग्रामी मानदीर्घोनसंशय ॥ तीर्थयात्रागवनकृत्वा मार्गेमध्यउपद्रवं

अश्वञ्चजीवइस्थित्वा अर्धरात्रिप्रमाणकम् ॥ ऋषिसुतवाटिकागच्छं अश्वचणातिमृत्युदा ऋषिपुत्रश्चदृश्यते हाहाकारविह्वलं ॥

क्रोधोशापमुखंदत्वा त्रयजन्मोमतहीनक ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र प्रथम जन्ममें यहजीव सूर्यवंशीथा और बड़ाभागवान्था
हाथी घोड़े ग्रामथे तीर्थयात्रा करने जाताथा रुपयापायके अभिमान बहुत बढ़गया अर्धरात्रीको घोड़ेपर सवार होकर जाताथा रात्री
कासमय कुछ अभिमानमें अंधाहुवा जाताथा सोमार्गमें एक ऋषीका पुत्र खेलताथा उसके ऊपर घोड़ेका चरणआया तुरंत मृत्यु को
प्राप्तहुवा तब ऋषीने देखकर विलाप किया और शाप दिया किजैसेमें पुत्रोंके क्लेशमेंहुवा तैसे तूभी तीन जन्मतक पुत्रोंको भटकेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापप्रणश्यंति वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दान जापसे शाप
नष्टहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकं ऋषिपुत्रलिखेन्मूर्ति संकल्पंब्राह्मणांददेत ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह
जीव श्रद्धाप्रमाण स्वर्णपत्र बनवाय उसपर ऋषीपुत्र की मूर्ति लिखाय विधिपूर्वक श्रेष्ठ ब्राह्मणको दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मपत्रफलश्रेष्ट मध्ययोगश्चप्राप्तये तेजस्वीचप्रतापीच बुद्धिवानविशेषतः ॥ मध्यलाभनसंदेहो लाभईशपूजनं
दीर्घज्ञानसमायुक्तो सुशीलोजीवदर्शनं ॥ दीर्घआयुसुयत्नेन बृहत्योफलमाप्नुयात् आदपठनश्चविद्यायां अंते विद्याविसार्जनम् ॥
बहूविद्यानप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति कस्मिन्कालेमहापीड़ा औषधिप्रतिशांतये ॥ पशुजलभयजीव नवीनोजन्मप्राप्तये भाग्यवृद्धि
विशेषेण आनन्दंभूमिमण्डले ॥ शत्रुपक्षविरोधीच गुप्तचिंताशरीरजं भ्रातभगिनिसमायुक्तो भृगुणापरिभाषितः ॥ तेजस्वीप्रतापीच
ब०उ० सूरवीरमहान्नरः पत्नीप्रीतिनसंदेहो बुद्धिचितचलायनं ॥ पुत्रहेतुकृतेयत्न दुर्लभसुतजीवः पत्नीगुप्तमहाक्लेश भृगुणापरिभाषितः
५३ चौरभीतिविजानीयात गुप्तशत्रुमहारकं धनव्ययविशेषेण अन्तशत्रुविनाशनं ॥ महाप्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्ष
महाप्रीति गुप्तप्रीतिचलोकमा ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदर्शन ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस पत्र का
फल श्रेष्ट है और मध्यम योग है यह जीव इज्जत प्रतिष्ठा वाला ज्ञानवान और सूरवीर, तथा सोच समझ कर बात कहने वाला
मध्यम लाभ हो लाभेश के पूजन से विशेष प्राप्तिहो विद्या कार्य मात्र हो एक समय अल्प से नया जन्म हो पशु या जलका भय
हो शत्रु पक्ष से विरोध गुप्त चिंता हो जाय बहन वा भाई का योग हो घर में कभी क्लेश गुप्त पीड़ा हो पुत्र के वास्ते यत्न करे
परन्तु जीव ने दुर्लभ हों घर में स्त्री सुशील श्रेष्ट खान दान की चतुर हो दूसरी स्त्री से भी प्रीत हो एक समय गुप्त शत्रु और
चोर का भयहो हानि पहुंचावे परन्तु अन्तमें शत्रु का नाशहो भागकी वृद्धिहो लाभ विशेपहो मित्रोंसे प्रीतहो शुभ काम में धन
खर्चहो भाग्य दिनदिन उदयहोय हेशुक्र यहजीव पूर्व पापके कारण पुत्रोंको भटकता रहे पश्चात्में दान मंत्र उपायसे हो कर जीवें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनश्यति पुर्वजन्मांतरंतात गाथाकथ्यंममप्रति ॥ भाषा ॥ इस जीव ने कौन से
पाप कर्म किये हैं जो यह पुत्रों का सुख न देखे इस जीव के पूर्व जन्म की कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं
पूर्वपापस्यकारणः राजपुत्रकुलेजन्म लक्षाढ्यसुविमण्डले ॥ हरिद्वारगवनंकृत्वा अथवावाहनोद्दिपः वहूविप्रसहितपुत्रो कावेरीतट
वासकं ॥ वृषभदोर्घ चरंमार्ग द्विजपुत्रभयंवधो मृत्युपुत्रदशाविप्र हाहाकारविह्वल ॥ राजपुत्रददेतशापं अतिक्रोधोपिवूडनं
ग०उ० पुत्रक्लेशमहाशोक सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हे पुत्र यह जीव एक जन्म में राज पुत्र था सो बड़ा
५४ अभिमानी था हरिद्वार पै जाय पराई स्त्रियों को खोटी दृष्टी से देखता था सो रथ में बैठ के गया गङ्गाजी के किनारे बहुत
से ब्राह्मण स्त्री पुत्र सहित बात करते थे सो अंधाधुन्ध रथ भगाया सो एक ब्राह्मण के दो पुत्र बाल अवस्था के रथ के पईये के
नीचे आन कर मृत्यु को प्राप्त हुवे सो ब्राह्मण पुत्रों की मृत्यु देख राज पुत्र को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक
पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकम् द्विजशापप्रणश्यति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हेपिता
यह जीव कौन से दान जाप करावे जो पूर्व जन्म का ब्राह्मणका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र पोतेके सुख देखे ॥
भृगुवाच ॥ शृणु पुत्रमहादानं वंशवृद्धिचकारयेत स्वर्णपत्रमहाश्रेष्ठ कावेरीजलशुद्धयो ॥ रक्तचंदनमिश्राणि घृतपात्रअग्रतया गायत्री
मंत्रजाप्यंवे चंद्रलक्षप्रमाणकं ॥ सकल्पंपदेतविप्र लीनपात्रद्विजोत्तमः वस्त्रआभूषणंदानं निश्चयपुत्रप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र
स्वर्ण पत्रपर रक्त चंदनसे ब्राह्मणके दोपुत्रों की मूर्ति लिखे घृतभरे कलश में प्रवेशकरे विधिपूर्वक ब्राह्मण को दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगे नरोजन्म आनंदं भूमिमंडले सत्यवादी भवेत्वालो भृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयो प्रमादोप्रसवःपुमान् देवद्विजरतोनित्यं मानकीर्तिविशेषतः ॥ बुद्धिदीर्घ आयुस्याद सत्कीर्ति कुलवर्द्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोवार्तथाचितः ॥ चन्द्रमित्रपरमप्रीति चित्तवृत्ति आशक्तया दीर्घकार्याणि आगत्वा सर्वसुखंव्यतीततः ॥ अकस्मात् उपद्रोवा कस्मिन् कालशांतये चन्द्रअल्प नसन्देहो नवीनोजन्म प्राप्तय ॥ कुलबन्धु महाचिता प्राणोभय भविश्यति दान
स०उ० मन्त्रश्चकर्तव्यं औषधी प्रतिशांतये ॥ वृणव्याधी शरीरेत्र चिन्हदेहोपिदृश्यते युवाआयु नसन्देहो धनप्राप्तिभविष्यति ॥
५५ अतितेज प्रतिष्टोवा भाग्यवृद्धि दिनेदिने वामचिता महाक्लेशं अल्पगर्भोत्र खण्डतः वंशवृद्धि नदृश्यंते पुत्रचिता महानकं पित्रश्च देवपूजाच नेकयत्नश्च कारयेत् ॥ सुतःपुत्रस्च विनश्यन्ति भृगुवाक्यं नचान्यथा सर्वानन्द भोक्तव्यम् वंशवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र इस जीव की कुण्डली में ग्रह श्रेष्टहैं सत्यबोलने वाला परमार्थी पराये काम मनसे करे सबका प्यारा देव ब्राह्मणों का मानने वाला इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे विद्या से बुद्धि विशेष हो श्रेष्ठ कुल वाला सुन्दर नई २ बात सोचे एक मित्र से प्रीति हो चित की वृति आसक्त हो जाय लाभ मध्यमहो परन्तु बड़े २ काम खर्च के आवें सब आनन्द से पूरे उतरें एक समय अकस्मात उपद्रव हो एक अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो कुलबंधु चिंता कुछ विरोध प्राणका भय हो मंत्र औषधि से आरामहो फोड़ेका चिन्हहो युवा अवस्था में धन प्राप्तहो प्रतिष्ठा बढ़े भाग्य की वृद्धिहो स्त्रीको क्लेश चिंता पुत्रोंके ध्यानमें दुखीरहे पुत्र नहो जोहो तो अल्प जीवी हो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सो हे शुक्र यह जीव सब सुख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखसे रहित रहे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भृगुवाच ॥ केनकर्मविपाकेन अग्रवंशविनाशकः पूर्वगाथाकथंतात श्रुणुत्वंमनवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव के पूर्व जन्म की कथा वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ जटिलवंश कुलेजन्म धनधान्या भविश्यति अश्वपति गजग्रामीच उच्चपदवी प्रधानक ॥ चापवाण गटीद्वार गवनखेटानु सारिणः मयूरोसहितेबाल वनखंडा किलोलकं ॥ प्रधानोजटिलं चाप बाण संधानकंक्रिया मयूरोपुत्रकं बद्धो हाहाकार विलापनं ॥ मयूरोशापदत्वा अतिक्लेश दुखदारुणः ममपुत्र

स०उ० महाशोकं सप्तजन्मत्वशाप्रभो ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जाट वंशमें यह जीव प्रथम एक जन्ममें उत्पन्न हुवा था भाग्यवान धनवान हाथी घोड़े गांव सब थे उच्चपदवी वाला प्रधान था सो शिकार खेलने गया जंगल में मोरके बच्चे मारे मोरने

५६ बच्चों की मृत्यु देख शापदिया कि चौधरी प्रधान जैसे मुझे बच्चे का दुख दिया तैसे तूभी सात जन्म पुत्रोंका दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्रं किंजापकं मयूरो श्रापकंनष्टः सुपुत्रो भूमिमंडले ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमंत्र जाप करानेसे पूर्वजन्मका पापनष्टहो और पुत्रों के सुख यह जीव देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्र लिपिकृत्वा युग्मसुद्राप्रमाणकं मयूरोपुत्रकंकार चित्रंतेविधिपूर्वकं ॥ रक्तचन्दन मिश्राणि गंगाजलस्नानकं षटरसदानसहितो गायत्री मूलमंत्रकं ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन श्रद्धामंत्रजापकम् पठितविप्रददेत्दानं सुखउच्चार्णं मंत्रकं ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवार्णार्थं स्वर्णमयूरदान कुरुकुरु स्वाहा ॥ इदंदानं कृतेसन्त मनवांछित फलप्रदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्ण का पत्र दो मुद्रा प्रमाण बनावे फिर उस पर रक्त चंदन से मोर की मूर्ति लिख गायत्री लक्ष प्रमाण जपवावे सकल्प करके पढ़े हुवे श्रेष्ठ ब्राह्मण को देतो निश्चय कर के पुत्रों के सुख देखेगा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुख हो परन्तु पुत्रोंके सुख को भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनपाप प्रभावेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथा कथ्यं उचारण विधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ ठाकुरवंश कुलेजन्म बहुसेवी नरोभवेत कोटपति गजग्रामीच वन्धुकुल विरोधता ॥ ज्येष्ठभ्रातश्च पुत्रोवा अर्धभागीच बालकः तातमृत्यु भवेल्लोके सुमाता देवपूजनं ॥ ठाकुरं लोभकं कार्ण भ्रात पुत्रश्चमृत्युदा माताच देवमन्द्रस्य दीर्घशाप मुखंददेत् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस जीव का पूर्व एक समय में ठाकुर वंश में

स०७० जन्म हुवा था सो हाथी घोड़े ग्राम बड़ा धनवान था सो बड़ा भ्रात एक पुत्र छोड़ के मृत्यु को प्राप्त हुवा और उसकी स्त्री देवताओं के मन्द्र में पूजा करने लगी सो उस ठाकुर का आपस में हिस्सा बांटने में बहुत विवाद बढ़ गया

५८ आखीर अन्त में ठाकुर ने अपने बड़े भ्रात के पुत्र को नष्ट करा दिया तो उसकी माता ने देवमन्द्र में जाय के बहुत रुदन किया और शाप दिया कि तूभी सात जन्म तक बारंबार भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्र किंजापकं बन्धुमुखंशापं सर्वपापश्चनश्यकं ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमन्त्र जाप कराने से पूर्वजन्म का पापनष्ट हो और यह पुत्रोंके सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकारं सप्तटंकप्रमाणकं नराकारोलिखेन्मूर्ति गंगाजल स्नानकं ॥ गायत्री मन्त्रकंजापं अर्धलक्ष प्रमाणकं मन्त्रमन्तानगोपालं श्रद्धामात्र करंतथा ॥ देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते देहिमतनयंकृष्ण त्वामहंशरणंगतः ॥ श्रेष्ठविप्रददेत्दानं सर्वशापविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा पुत्र स्वर्ण का पत्र सातटंक प्रमाण बनवावे तिसपर नर आकार मूर्ति चन्दन से लिखे तिसे विधि पूर्वक संकल्प करावे और मंत्र गायत्री ५१ हजार और संतान गोपाल बहुतसा श्रद्धा प्रमाण जपवावे तो पुत्र होकर जीवें आनन्द भोगे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहा विराजत्वा श्रेष्ठपत्री सुखीनरः सुदशा फलप्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः ॥ पापक्रूर ग्रहापूजा
क्रियतेफल प्राप्नुयात् भाग्यवृद्धि विशेषेण मनवांछित फलप्रदा ॥ ग्रहापूजा नकर्तव्यस्य अर्धप्राप्ति नसंशयः चन्द्रस्त्री महाप्रीति
आनन्द अति ध्यानकं ॥ आदिपठनञ्च विद्यायां अन्तविद्या विसर्जनं बहुविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रञ्च सिद्धति ॥ अष्टमेष्टादशे
वर्षे बालवृद्धि दिने दिने तातधन शुभकार्य विवाहोत्सव मंगलम् ॥ सप्तचन्द्र मितेवर्षे सूर्यरामं मितेतथा भाग्यवृद्धि
स०उ० विशेषेण धनप्राप्तिनसंशयः ॥ देहकष्ट विजानीयात् औषधि प्रतिशांतये गुप्तचिंता शरीरेच शत्रुपक्ष विरोधता ॥ युग्म
५७ अल्पगतेकाव्य पूर्णआयु नसंशयः व्ययदीर्घ विजानीयात् छत्रचिंतात्र प्राप्तये ॥ गुप्तधन प्राप्नोति कस्मिन् कालेन
संशयः पत्नीगर्भञ्च स्थित्वा अल्पजीवीच बालकः ॥ आदहर्ष विजानीयात पश्चाते शोकबूडनं सर्वसुखञ्च प्राप्नोति पुत्रसुख
विनश्यति ॥ वामचिंता महाक्लेशं भृगुप्राणरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहत हैं हे पुत्र इस जीव की कथा सुनो पत्र श्रेष्ठ है
स्वदशा में फल अच्छा करेंगे पाप और क्रूर ग्रहों का मन्त्रजाप कराना श्रेष्ठ है भाग्य की वृद्धि होगी मन इच्छा पूर्ण होगी
इतने पाप ग्रहों के दान मन्त्र न बनेंगे अधूरी लाभ होगी यह जीव बुद्धिवान् अक्लमन्द सूरमा दूसरे की बात को तोले सत्य
झूठ को पहचाने धीरज धारी विद्यापूर्ण नहो परन्तु पढ़ों से भी ज्यादे प्रतिष्ठा हो ८ वर्ष से १८ तक विवाह स्त्री प्राप्त तात
का धन शुभ काम में खर्च हो १७ वर्ष से ३० तक भाग्य की वृद्धि हो धन की प्राप्ति हो शरीर में कुछ खेद हो औषधि से
आराम हो शत्रु पक्ष से विरोध हो कष्ट अल्प भुगत कर आयु पूर्ण ७२ वर्ष की हो खर्च विशेष हो छत्रचिंता किसी समय
गुप्तधन की प्राप्ति हो पत्नीगर्भ धारण करे अल्पजीवी बालक हो माता पिता को दुख दिखावे हे शुक्र इस जीव को पृथ्वी पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वा ग्रहाचेदं बलवीर्य समन्वितः उद्यमेन धनंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः ॥ मध्यभागी सुखीलोके
धनप्राप्तिपरिश्रमः कार्यकृत्यविशेषेण उच्चपदवीचप्राप्तय ॥ पूर्वपाप ग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशन अतस्तेषां तुशांतिश्च कर्त याहि
विनिश्चितम् ॥ अनुष्ठान महादान सर्वसौख्य प्रदसदा गुप्तचिंता विनश्यन्ति मनिच्छा पूरितंततः ॥ विद्यामध्यप्राप्नोति बाल
क्रीड़ा किलोलकं मित्रपक्ष परंप्रीति आनन्द भूमिमण्डले ॥ तातधनं शुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं पत्नीप्राप्ति नमंदेहो
म०उ० विद्यादीर्घप्राप्तये ॥ सत्यवादो प्रवक्ताच नवीनो चिंतनंकृते जलंपशु भयंलोके शत्रुपक्ष विरोधता ॥ नवीनो कार्यकंकत्वा
धनलाभ भविष्यति युवावस्थाच प्राप्नोति आनन्दभूमि मंडले ॥ पत्नीप्रीत सुखीलोके विद्यापठनंपाठनं वन्ध्यायोगश्च
५६ प्राप्नोति अल्पगर्भोपि खण्डतः ॥ वामचिंता विशेषेण पुत्रसुखंनदृश्यते पूर्वपाप प्रभावेण वंशवृद्धि विनश्यति ॥ सर्वसुखश्च
भोक्तव्यं सुतरहितोनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव परिश्रमी और पुरुषार्थी हो भाग्यश्रेष्ठ मध्यम हो
अच्छे काम करे नीचसे ंची पदवी पावे परन्तु पापक्रूर ग्रहोंके कारण किसी समय में गुप्तचिंता बुद्धिभ्रम चत्तस्थिर
नरहे सोचे और होय और अधूरालाभ हो ग्रहोंके उपायसे मनोकामना पूर्णहो चिंताका नाशहो विद्याकी उन्नति मित्रसे
प्रीत बहुत बनी रहे एक जीवकी आशामें मनरहे पिताका धन शुभकाम में खर्चहो स्त्री श्रेष्ठकुल की हो पुत्र के सुख को भटके
हे शुक्र यह जीव बड़े २ मामले देखे बहुतों के काम निकाले दयावान प्रेमप्रीत करने वाला किसी का बुरा न चाहे सबका भला
चाहे अल्प आवे सो नया जन्महो फिर आयु पूर्णहो परन्तु इतने पूर्व पापके उपाय न बने इतने हे शुक्र सर्व सुख देखे परन्तु
पुत्रका सुख स्वप्न मात्र नहो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुख विनश्यति पूवजन्म कथामर्वं कथ्यन्तमुनि सत्तमः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहा विराजत्वा श्रेष्ठपत्री सुखीनरः सुदशा फलप्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः ॥ पापक्रूर ग्रहापूजा क्रियतेफल प्राप्नुयात् भाग्यवृद्धि विशेषेण मनवांछित फलप्रदा ॥ ग्रहापूजा नकर्तव्यम अर्धप्राप्ति नसंशयः चन्द्रस्त्री महाप्रीति आनन्द अति ध्यानकं ॥ आदिपठनञ्च विद्यायां अन्तविद्या विसर्जनं बहूविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रञ्च सिद्धांत ॥ अष्टमेष्टादशे वर्षे बालवृद्धि दिने दिने तातधन शुभकार्य विवाहोत्सव मंगलम् ॥ सप्तचन्द्र मितेवर्षे सून्यराम मितेतया भाग्यवृद्धि
स०उ० विशेषेण धनप्राप्तिनसंशयः ॥ देहकष्ट विजानीयात् औषधि प्रतिशांतये गुप्तचिंता शरीरेच शत्रुपक्ष विरोधता ॥ युग्म
५७ अल्पगतेकाव्य पूर्णआयु नसंशयः व्ययदीर्घ विजानीयात छत्रचिंतान प्राप्तये ॥ गुप्तचधन प्राप्नोति कस्मिन् कालेन संशयः पत्नीगर्भञ्च स्थित्वा अल्पजीवीच बालकः ॥ आदहर्ष विजानीयात पश्चाते शोकबूडनं सर्वसुखञ्च प्राप्नोति पुत्रसुख विनश्यति ॥ वामचिंता महाक्लेशं भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहत हैं हे पुत्र इस जीव की कथा सुनो पत्र श्रेष्ठ है स्वदशा में फल अच्छा करंगे पाप और क्रूर ग्रहों का मन्त्रजाप कराना श्रेष्ठ है भाग्य की वृद्धि होगी मन इच्छा पूर्ण होगी इतने पाप ग्रहों के दान मन्त्र न बनेंगे अधूरी लाभ होगी यह जीव बुद्धिवान् अक्लमन्द सूरमा दूसरे की बात को तोले सत्य झूठ को पहचाने धीरज धारी विद्यापूर्ण नहो परन्तु पढ़ों से भी ज्यादे प्रतिष्ठा हो ८ वर्ष से १८ तक विवाह स्त्री प्राप्त तात का धन शुभ काम में खर्च हो १७ वर्ष से ३० तक भाग्य की वृद्धि हो धन की प्राप्ति हो शरीर में कुछ खेद हो औषधि से आराम हो शत्रु पक्ष से विरोध हो कष्ट अल्प भुगत कर आयु पूर्ण ७२ वर्ष की हो खर्च विशेष हो छत्रचिंता किसी समय गुप्तधन की प्राप्ति हो पत्नीगर्भ धारण करे अल्पजीवी बालक हो माता पिता को दुख दिखावे हे शुक्र इस जीव को पृथ्वी पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वा ग्रहाचेदं बलवीर्य समन्वितः उद्यमेन धनंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः ॥ मध्यभागी सुखीलोके धनप्राप्तिपरिश्रमः कार्यकृत्यविशेषेण उच्चपदवीचप्राप्तय ॥ पूर्वपाप ग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशन ग्रतस्तेषां तुशांतिश्च कर्त याहि विनिश्चितम् ॥ अनुष्ठान महादान सर्वसौख्य प्रदसदा गुप्तचिंता विनश्यन्ति मनिच्छा पूरितंततः ॥ विद्यामध्यमाप्नोति बाल क्रीड़ा किलोलकं मित्रपक्ष परंप्रीति आनन्द भूमिमण्डले ॥ तातधनं शुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं पत्नीप्राप्ति नमंदेहो

म०उ०

५६

विद्यादीर्घप्राप्तये ॥ सत्यवादी भवक्ताच नवीनो चिंतनंकृते जलंपशु भयंलोके शत्रुपक्ष विरोधता ॥ नवीनो कार्यकंकत्वा धनलाभ भविष्यति युवावस्थाच प्राप्नोति आनन्दभूमि मंडले ॥ पत्नीप्रीत सुखीलोक विद्यापठनंपाठनं वन्ध्यायोगश्च प्राप्नोति अल्पगर्भोपि खण्डतः ॥ वामचिंता विशेषेण पुत्रसुखंनदृश्यते पूर्वपाप प्रभावेण वंशवृद्धि विनश्यति ॥ सर्वसुखश्च भोक्तव्यं सुतरहितोनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव परिश्रमी और पुरुषार्थी हो भाग्यश्रेष्ठ मध्यम हो अच्छे काम करे नीचमे ंची पदवी पावे परन्तु पापक्रूर ग्रहोंके कारण किसी समय में गुप्तचिंता बुद्धिभ्रम चित्तस्थिर नरहे सोचे और होय और अधूरालाभ हो ग्रहोंके उपायस मनोकामना पूर्णहो चिंताका नाशहो विद्याकी उन्नति मित्रसे प्रीत बहुत बनी रहे एक जीवकी आशामें मनरहे पिताका धन शुभकाम में खर्चहो स्त्री श्रेष्ठकुल की हो पुत्र के सुख को भटके हे शुक्र यह जीव बड़े २ मामले देखे बहुतों क काम निकाले दयावान प्रेमप्रीत करने वाला किसी का बुरा न चाहे सबका भला चाहे अल्प आवे सो नया जन्महो फिर आयु पूर्णहो परन्तु इतने पूर्व पापके उपाय न बने इतने हे शुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पुत्रका सुख स्वप्न मात्र नहो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारश्च पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथानर्व कथ्यन्तमुनि सत्तमः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषा ॥ हे पिता कौन से कर्म करे हैं इस जीव ने जो सारे सुख दुःख देखे और पुत्रों के सुख से रहित रहे सो वर्णन करो ॥
भृगुवाच ॥ शृणुपुत्र यथासर्वं कथ्यन्ते विधिपूर्वकम् वैश्यवंश कुलेजन्म अतितेजो प्रतिष्ठया ॥ लोकलक्ष पतिख्यातो
बहुदासी निजकृत्यये हटवा अन्न व्यापारे अकालो दीर्घभ्रमिक ॥ क्षुधातुर ब्रह्मणपुत्र अन्नलब्धस्य प्रातये वैश्यति क्रोधकं
कृत्या ब्रह्मपुत्रश्च ताडयेत् ॥ लष्टमुष्ट प्रहारेण द्विजपुत्रश्च मृत्युदा पुत्रमृत्यु दृश्यंतात कठिन शापिकंददेत ॥
सं०उ० भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक प्रथम एक जन्म में यह जीव वैश्य वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा धनवान् था अन्न का
व्यापार बहुत करता था एक समय अतिकाल पड़ा सो सहस्रों कगले अन्न के अ फिरते थे इसकी दूकान पर दो ब्राह्मण के
६० पुत्र याचना करने आये उससे विवाद हुवा इस वैश्यने क्रोधवशहो दोनोको मारा धक्के मुक्के में उनके प्राणगये तब उनके पिता
ब्राह्मण ने दो पुत्र मृतक देखे सो हाहाकार विह्वल होगया और वैश्यको शाप दिया कि तूभी बारम्बार तीन जन्म तक
पुत्रों का दुःख देखेगा ॥ शुकोवाच ॥ कियत्ने कुरुतात पूर्वशाप निवार्णं जाप्य पूजा महादानं क्रियते पुत्र सुक्खकं
भाषा ॥ हे पिता कौन से यत्न करे जो पूर्व शाप नष्टहो और दान मंत्र पूजा उपाय करने से पुत्रों का इस जीव को सुख प्राप्त हो
भृगुवाच ॥ स्वर्णश्चप्रतिमांचैव अष्टमाशाप्रमाणकं द्विजपुत्रलिखेन्मूर्त्ति गंगाजलस्नानक ॥ ताम्रपात्रञ्च घृतमध्ये स्वर्णमूर्ति
प्रवेशकं मध्यकालप्रमाणञ्च संकल्पब्राह्मणंददेत ॥ श्रेष्ठविप्रपठंविद्या शुभदानोफलप्रदा पुत्रप्राप्तनसन्देहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक स्वर्णका पत्र ८ माशे प्रमाण बनवावे ब्राह्मणके पुत्रोंकी मूर्ति रक्त चन्दनसे लिखे तिस को तांबेक
कलशमें घृत भर कर गुप्त प्रवेश करे संकल्प करके श्रेष्ठब्राह्मण कर्मैष्टिकोकोदे गायत्री मन्त्र जपवावेतो पुत्रोंकी प्राप्तिहो शाप नष्टहो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ अस्यखेटानुसारेण नरोजन्म भुवितले बालवृद्धि भवेल्लोक आदिक्रीडा यथाक्रमम् ॥ कालानुसारविद्याच मन्त्रौषधीचकारयेत् तीक्ष्णबुद्धिरिपोहंता मध्यभागीसुखान्वितः ॥ प्रलापीशीलवान्ज्ञेयो विवलश्चकलिप्रियः सुन्दरश्चपलोबाल यस्य जन्मश्चमोदिना ॥ राजद्वाराधनंप्राप्ति विद्याभूषणभूषितः रूपवान्गुणसंपन्नो मासेवें सुखंगताः ॥ सवलंदीर्घदेहश्च तमोगुणविशेषतः प्रतापीसुखदःसर्वें हेमरत्नोर्विभूषितः ॥ सकामश्चपलोबाल सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्ता रिपुद्रोही गुप्तचिंतान्वितोभवेत् ॥
स०उ० वाहनादिसुखंजाते तप्यतेरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्च बुद्धिश्रेष्ठसुनिर्मलः ॥ श्रेष्ठग्रहोपिजन्मश्च सिंहतुल्यपराक्रमः बहूभृत्य
६१ समायुक्तो सुकार्यकुशलंलभेत ॥ मातृपितृगुरुर्भक्त मुपवद्राजतेनर द्विजदेवार्चनोप्रीति रिपोपिदासवच्चरेत ॥ भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातभूतले ॥ धनपूर्णो तृषायुक्त सुशीलश्चतुरोधनी बहुपीडा मनोद्वेगं बंधुवर्गच क्लेशता ॥ चन्द्रमित्र महाप्रीतिः आशक्तोतिमोहितम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जन्म पत्री में जो ग्रह विराजमान हैं तिनका फल कहता हूँ सोतू चित से सुन यह जीव विद्यावान् चतुर मंत्र औषधी भी करता रहै तीक्ष्णबुद्धि हो शत्रुओं को जीते मध्य भागी सुखी हो शीलवान् भोला अल छल न जाने राजद्वार से भी प्राप्तिहो रूपवान् गुणवान् हो अच्छे वस्त्र आभूषण भी जावें चञ्चल काम देव के जोर में उन्मत्त हो जाया करे मीठा बोलने वाला श्रेष्ठकुल एक मित्र से प्रीत गुप्त हो मगन रहै सूरवीर पराक्रमी बहुत से कारवार करे धन पैदा करे बड़े २ उद्योग करतारहै कष्ट बीमारीहो परन्तु आयु पूर्ण हो एक जीवका दुख देखे स्त्री को पुत्रकी चिंता क्लेश बनारहै प्रथमतो होने कठिन जो होयतो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सब सुख प्रथ्वी पर देखे परन्तु पुत्रों का सुख खण्डित है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रयोगश्चखंडितः पूर्वजन्मकथंतातः कथ्यतेविधिपूर्वकम् ॥ भाषा ॥ शुक्र देवताने प्रार्थना
करो हे पिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म किए हैं जो पुत्रोंका योग खंडित आनके पड़ा सो विधि पूर्वक कहो
भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्नो राजमंत्रीमहाधनी ॥ लोकश्चधेनुविख्यातो अतिसूरोसुखीनरः
चापवाण कृतेधारण गवनखेटानुसारेण ॥ मृगवाण वधोक्षत्री साधुपुत्रश्चमृत्युदा मृतकपुत्र दृश्यंतात हाहाकार विव्हलं ॥
९०३० साधुशापमुखदत्वा त्रिय जन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेशुक्र यह जीव क्षत्री कुलमें एक जन्म में जन्मा था सो बड़ा बुद्धि
६२ मान् धनवान् राजमंत्रीथा सो शिकार खेलने गया इसने जंगल में जाकर दूर से देखा तो मृग दृष्टी में पड़ा सो इसने तीर मारा
हिरन तो बच गया एक साधु दो बालकों को साथ लिये जाता था सो क्षत्री के वाण से दोनों साधु के शिष्य मृत्यु को प्राप्त
हुवे तब पश्चात् साधुने मृतक बालक देख बड़ा दुख माना और क्षत्री को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों
का दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं साधुशापविनिर्मुक्तो पुत्रजीवीनसंशय ॥ भाषा ॥ शुक्र जी
ने कहा कौनसे दान मंत्र जाप करनेसे पूर्व जन्मका दिया हुवा साधुका शाप नष्टहो और पुत्रों की प्राप्तिहो तब भृगुजी ने कहा ॥
भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाचैव युग्ममुद्राप्रमाणकं रक्तचन्दनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ वस्त्रआभूषणंदानंयुग्मबालश्च
मूर्तये संकल्पश्चददेत्विप्र पूज्यंतोविधिपूर्वक ॥ इददानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिर्नसंशय ॥ भाषा ॥ हेपुत्रस्वर्णके पत्रपर दो मूर्ति साधुके
बच्चोंकी लिखे और स्वर्णका पत्र दो मुद्राभर प्रमाणसे हो वह वस्त्र आभूषण सहित दानकरे तो निश्चय करके पुत्रोंके सुखदेखे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पुत्रस्थितग्रहाएते भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यकरोबालः भृगुणापरिभाषितः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति आनंदभूमि मंडले विचित्रोवार्तयाकथ्यं कामक्रीडाकिलोलकृत ॥ भ्रातभग्नीचउत्पन्न अंतबंधुविरोधता भूमिलाभनसंदेहो गुप्तचिंताशरीरजा ॥ मित्रपक्षेपरंप्रीति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रअल्पविजानीयात् नवीनोजन्मप्राप्तये ॥ आदौपठश्चविद्यायाः अंतेविद्याविसार्जनं बहुविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ द्विभार्यायोप्राप्नोति गुप्तप्रीतिनसंशयः उपद्रवीअकस्माश्च भयचिंताविशेषतः ॥
सं०७० संतोषीधैर्यधारीच ज्ञानवांश्चसुखीनरः कस्मिन्कालभोकाव्य प्राणंभयतिचिंतया ॥ जलोपशुभयंपुत्र भृगुवाक्यंनचान्यथा
६३ दीर्घकष्टंविजानीयात औषधीमंत्रशांतये ॥ छत्रचिंताभविष्यंति धनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेचपराजयः ॥ नवीनोवार्तयाचित्तं अर्धप्राप्तिचदृश्यते सर्वसुक्खश्चदृश्यते पुत्रसुखंविनश्यति ॥ अतिक्लेशमहाचिंता पर्लोकष्टविशेषतः ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव भाग्यवान् सुन्दर पिता की सम्मति वाला गुणवान् शीलवान् पृथ्वी पर आनंद देखे तरह २ की बात ध्यान से सोचे मित्रों से प्रीत, और भाई बहन भी हो परन्तु पीछे अभाव शत्रुतासी हो जाय भूमि से लाभ हो गुप्त चिंता बनी रहे एक जीव से विशेष ध्यान रहे चित्त दुख माने एक समय नया जन्म हो प्राण बचे दूसरा स्त्री से भी प्यार हो विद्या बहुत पूर्ण तो नहो परन्तु कार्य मात्र बहुत हो संतोषी धीरज धारण करने वाला ऋण का जोग होय खर्च विशेष छत्र की चिंता बड़ेकी मृत्यु हो शत्रुओं से विवाद होजाया करे शरार में पीड़ा हो जाया करे पितृ पीड़ा का उपाय करता रहै पुत्र के वास्ते स्त्री यत्न करे परन्तु पूर्व पाप के कारण पुत्र का सुख देखना बहुत कठिन है भटकता रहै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन संततवंशविनाशकः पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ शुक्र जी बोले हेपिता इस जीव ने पहले जन्म में, कौन से पाप किए जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटकता रहै ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वंपापञ्चकथ्यते वैश्यवंशकुलेजन्म रसत्यागीचवाणियो त्रियसर्पगृहवासं तातपुत्रोतिनागकं ॥ गृहदेवकुरुरक्षा वैश्यल[illegible]महारकं

नागपुत्रद्वयंमृत्यु अतिक्रोधोउपद्रवं ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र तूसुन मैं इस जीव की एक पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ यह वैश्यकुल रसत्योगी बणिया था सो इसके घर में ३ सर्प पिता पुत्र रहते थे सो बणिया बहुत साहुकार था देवता के नाम के दूध पेड़े वस्त्र पहरात था फिर एक दिन दो सर्प के बच्चे वहीं इसके रसोई के चौके में फिरते थे इसने किसी की सम्मति से दोनों को लट्ठों से मार दिया तब सर्प ने दोना बच्चे मरे देख वैश्य को शाप दिया कि तुम भी सात जन्म तक पुत्रों के त्रास भुगतोगे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं सर्पशापविनश्यंति वैश्यपुत्रसुखंलभेत् ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजीने कहा हेपिता कौनसे दान पुण्य यत्न करने से इस जीवका पूर्व शाप दिया हुवा नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्य पतिमाचैव तृयमुद्रा प्रमाणकं तन्मध्येकामबीजञ्च रक्तचन्दनमालिखेत ॥ वस्त्राभूषणदानं षटरसअन्नकंददेत् संकल्पददेद्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं ॥ सर्पशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखंभविष्यति ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका पत्र तीन मुद्राभर प्रमाणका बनवावे लाल चन्दन से दो सर्प का मूर्ति विधिपूर्वक लिखे वस्त्र आभूषण षटरस अन्न दान करे तो शाप नष्ट हो और पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रेग्रहाःस्थिताएवं दीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहो चित्तोदारसुपुत्रवान् ॥ यशस्वीगुणवान्जीवो
सत्कीर्तिसुतनष्टकं अल्पविद्याचप्राप्नोति बुद्धिवांश्चविशेषतः ॥ गुप्तचिंताचप्राप्नोति चतुरोवामश्रेष्ठया भागवान्गुणसंपन्नो पत्नीप्रीतो
भविष्यति ॥ अकस्मातउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः प्रमेहव्याधिकंदेहं शीघ्रोवीर्यस्यखंडकः ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधिप्रतिशांतये
पितृपीडाग्रहेनित्यं मातृदैवश्चपूजनं ॥ वंशवृद्धिनदृश्यंते गर्भअल्पश्चखंडतः वंध्यायोगश्चप्राप्नोति सुतचिंताति व्याकुलः ॥
स०३० बहुयत्नश्चकर्तव्यम् पुत्रसुखंनदृश्यंते महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभप्रीति दिनेदिने ॥ ग्रहकष्टशरीरेच रेचनंव्याधिरक्तय
६५ कस्मिन्कालेमहल्लाभं भाग्यवृद्धिनसंशयः ॥ उच्चपदवीचप्राप्नोति प्रसिद्धोधेनुलोकमा व्रणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यदृश्यः ॥
मासेवर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा शाणार्थंनपुत्रंतात पूर्वपापमहानकं ॥ सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति सुतसुखस्वप्नंदृश्यः ॥
भाषा ॥ भृगुजो महाराज शुक्रदेवता से कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी कथा वर्णन करते हैं सो सुनो यह जीव भाग्यवान् होय चित्त उदार हो सन्तान से रहित होय कीर्तिवान् हो गुणवान् हो और विद्यावान् भी हो परन्तु विद्या से बुद्धि विशेष हो गुप्त चिंता किसी समय में हो जाया करे इसकी स्त्री भाग्यवान् चतुर श्रेष्ठ कुल की हो प्रीति करने वाली शुद्ध चित्तहो एक समय अति विघ्न हो उसमें कुछ हानहो और किसी काल में शरीरके बीच में प्रमेह व्याधि हो शीघ्र वीर्य खंडतहो उपाय करने से औषधियों से आराम हो जाय घर में पितृ पीड़ा हो माता सीतला देवताओं के निमित्त सब कुछ करे परन्तु पुत्र का सुख नहो वा होके दुख देजावे बंध्या योग गर्भ खंडत उत्पन्न होके जाता रहै कई प्रकार की बंध्या हो हैं और आगे को सारी उमर लाभ प्राप्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अच्छी हो परन्तु पुत्र का सुख स्वप्न में भी न हो हे पुत्र इस जीव ने पूर्व जन्म में दीर्घ पाप करे हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्म
विपाकेन पूर्वजन्मनिकथ्यते पुत्रक्लेशभविष्यंति शृणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव ने कौन से खोटे कर्म प्रथम जन्म
में करे हैं जो पुत्रों से क्लेशित रहै और वंश न चले सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मकथाकथ्यं शृणुपुत्रतिध्यानक शूद्रवंशकुलेजन्म
मीनकरोतिकृत्यया ॥ जलजीवबधोनित्यं मच्छकृत्यंधनंलभेत तिह्निपापफलंप्राप्ति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में
स०उ० यह जीव शूद्र वंश में उत्पन्न हुवा और मछली जलचर जीवों को जाल में फांसकर लाता नगर में वेचता था सो लक्षों जीव
६६ का विध्वंस किया और बहुत सा धन प्राप्त किया परन्तु भूखों को अन्न बहुत बांटता था तिस कारण अच्छे कुल में उत्पन्न होकर
पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्णपापप्रणश्यंति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन
से दान पुण्य मंत्र जाप से ऐसे महापाप की शांति हो और पुत्र होकर जीवें जो वंश की वृद्धिहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ रामनाम
लिपिकृत्वा विप्रलेखधनंददेत् बहुअन्नञ्चसंग्राही गोधूमश्चचूर्णकं चंद्रलक्षप्रमाणेन गुटिकारामअंकितः हरिद्वारीकुशावर्तें अथवा
तीर्थतालकं रामांकितंददेत्ग्रामं मीनदीर्घंचभोजनं स्वर्णंचदक्षिणाविप्रो बहुमिष्ठान्नभोजनं दीर्घदानकुरुजीव पुत्रसुखंभविष्यति ॥
॥ भाषा ॥ तब भृगुजी महाराज ने कहा हे पुत्र बहुत सा अन्न गेहूं लाकर पिसवावे और एक लक्ष प्रमाण रामनाम की गोली
बनवाकर हरिद्वार या कुशाघाट या तीर्थ तालाब पर जहां कहीं बहुत सी मच्छी हों तहां रामनाम उच्चारण हर गोलीके साथ कहता
जाय जल में प्रवेश करता जाय और ब्राह्मणों को जिमाया करे कुछ दक्षिणा स्वर्ण की देतो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजाता सुकुलंमानवर्द्धनं जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखगत ॥ दंतव्याधाज्वरोजाता
रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षयथापञ्च बालक्रीडायथाक्रमं व्रणव्याधीमहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये ॥ भ्रातयोगञ्चप्राप्नोति भृगुणापरिभाषितः
अष्टमद्वादशेवर्षे षोडशाब्देर्चाविनाशकः तातंधनंशुभंकार्यं विवाहादिचमंगलं विद्यायोगञ्चप्राप्नोति पत्नीप्रीतिःचप्राप्तये ॥ चद्रमित्र
महाप्रीति आनंदम्भूमंडले तातलाभव्ययदीर्घं गुप्तचिताभविष्यति ॥ अल्पगर्भमहाकष्टं पुत्रसुखविनष्यति कार्यकृत्यनसंदेहो
सउ० लाभंभवतिनान्यथा चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा नवीनोक्तकृतेजीव उच्चपदवीचप्राप्तये अतितेजप्रतिष्टोवा भाग्यवृद्धिदिनेदिने
६७ देहकष्टभयंघोरं औषधिमंत्रशांतये ॥ वामक्लेशर्भविष्यंति वंशवृद्धिनदृश्यते आयुपूर्णञ्चदृश्यंते शून्यसप्ताब्दिकेतथा सर्वकार्यञ्चसिद्धंति
भूमिर्लाभभविष्यति गुप्तञ्चधनंप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखप्राप्ति आनन्दम्भूमिमंडले पूर्वपापञ्चश्रापार्थं अग्रवंशनदृश्यते ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस जीव की पत्री का फल कहता हूँ सुनो अच्छे कुल में जन्मे माता को
कुछ कष्ट दांतों की पीड़ा दस्त रेचन व्रण व्याधी यत्न से शांति बहन भाई का योग सात वर्ष से अथवा आठ वर्ष से
१२ १६ २० वर्ष तक शुभ कामों में पिताका धन खर्च, विद्या का योग, पत्नीकी प्राप्ति दूसरा स्त्री भी प्रीत रक्खे एक मित्र
ऐसा हो चित्त एक शरीर दो पिता को लाभ खर्च विशेष हो अल्प गर्भ संतान योग खंडत इस जीव को और स्त्रीको संतान का
खयाल बहुत बनारहै यत्नभी बहुतसे करे लाभ आमदनी अच्छीहो २१ ३० वर्ष तक नया कृत्य करे ऊंची पदवीपावे बड़ाई पावे
तेज प्रतापी हो इज्जत प्रतिष्ठा बढ़े एक कष्ट बहुत भारी हो मंत्र औषधी से आराम हो प्रथ्वी से लाभ गुप्त धनका लाभ आयुपूर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्तरसे अधिक हो हेशुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पूर्व पाप के अर्थ पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनस्यति पूर्वगाथाकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापप्रकारणं ठाकुरवंशकुलेजन्म राजयोगप्रप्राप्तये ॥ अश्वपतिराजग्रामीच बहुसेवीनरोभवेत् परस्त्रीमहाप्रीति कुमार्गीदुष्टपापिनी ॥ द्विजपुत्रप्रथमप्रीति त्याज्यंराज वामकम् शु पक्षप्रतिराजन् असत्यवाणिभाषणं ॥ कारागारद्विजपुत्र विषराज्यप्रमृत्युदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविहिनकं ॥

सं०उ० भाषा ॥ हेपुत्र एक जन्ममें यह ठाकुरवंशमें राजाथा पर स्त्रीगामी एकस्त्री ब्राह्मणके पुत्रकी बहुत सुन्दरथी तिसको लोभदेकर छीनला

६८ और स्त्री के असत्य बचन सुनकर ब्राह्मण पुत्रको कारागार भेजदिया और उसे विष दिवाकर मरवादिया तिस पापके कारण पुत्र का सुख नहीं हुवा ब्राह्मणका शाप लगा हुवाहै कि अगले जन्ममें तूभी पुत्रों के दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्वशापविनश्यति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमापत्र पञ्चटंकप्रमाणकं अथवा अर्धस्वर्णञ्च लिख्यतेविधिपूर्वक रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकम् ताम्रकलशघृतंमध्य गुप्तमूर्तिप्रवेशण संकल्पंददेद्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्ष प्रमाणकं ॥ श्रेष्टविप्र ददेद्दानं विद्यापाठ नपानं इदंदान कृतेसंत पुत्रप्राप्ति च जीवनं ॥

भाषा ॥ हेपुत्र स्वर्ण का पत्र पांच टंक अथवा इससे आधा प्रमाण से बनवावे तिस पर चंदन से ब्राह्मण के पु की मूर्ति लिखे और एक कलश में घृत भरकर गुप्त मूर्ति प्रवेश कर विधि पूर्वक दान करे उत्तम ब्राह्मण विद्यावान् कुटुम्बी कोदे और गायत्री मंत्र जाप करावे और ५१ सहस्र संतान गोपाल का मंत्र जपवावे तो पूर्व का दिया हुवा शाप नष्टहो और पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः कस्मिनकालगतेशुक्र बहुऐश्वर्यप्राप्तये ॥ दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुमेवो
नरोभवेत प्रथम आयुधनंन्यूनं पश्चातेसुखसंपदा ॥ बालआयुगतेकाव्य आनन्दभूमिमण्डले तातकष्टविजानीयात् भृगुणापरि
भाषितः ॥ सत्यवादीप्रवक्ताच परकार्यकरःसदा अतिज्ञानीमहाशूरो संतोषीवृतिधारणम् ॥ आज्ञाकारीसुतभृत्य नृपाद्भयसमन्वितः
दुष्टकर्मेणापीड्यन्त पूर्वपापश्चदुक्खिता ॥ अल्पायुदृश्यतेलोके सुकर्मेसुखसंभवः बंधुवर्गापवादीच शत्रुवःतप्यतेसदा ॥
अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगतनित्यं सुकीर्तिच पिभूत न न न.न सौख्यलभेजोव भजनानदसर्वदा पितुद्रव्य
विनाशश्च सुयत्नेनविवर्द्धनम् ॥ कस्मिन्कालगतशुक्र अकस्मात्अतिचिंतया व्ययदीघधनदान सुतचिंताशरीरकं ॥ मित्रप्रोति
महालोक आशक्तोचितमाहित पत्नीकष्टभयघोरं सुतदुक्खश्चप्राप्तये ॥ रात्रिदिनमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनं दीघपापप्रभावेण
अप्रवशविनाशकं ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजो कहते हैं जिस जीव की पत्री में ऐसा योग पड़े
सो जीव भाग्यवान् और बड़ा ऐश्वर्य प्राप्त कर और दयावान् भोक्ता पुरुष हो प्रथम तो थोड़ा ऐश्वर्य हो फिर विशेष बढ़
जाय बाल आयु आनन्द में बाचे पिता को कष्ट हो औषधी से आराम हो जाय सत्यवादी पराये काय मन से कर अतिज्ञानी
शूरवार हो संतोषी वृत्ति धारण करे दुष्टकर्म से पीड़ा हो पूर्व करनी के कारण थोड़ी आयु में सुकर्म करे परन्तु कुल बन्धुओं
से शत्रुता विवाद रहे दुश्मन सदाजलते रहें पाप ग्रहों को शांति कराता रहै श्रेष्ठ फल हो आनन्द भोगे भजन आनन्द
करे पिता का धन जाय परन्तु कुछ सुकर्म बने किसी समय में अतिचिंता हो खच हो मित्र से बहुत प्रीति चित्त उस तरफ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष रहै पत्नी को सन्तान का कष्ट रहै पित पीड़ा हो सारे सुख दुख देखे परन्तु पुत्र का सुख प्राप्त होना कठिन है
शुक्रोवाच ॥ किंपापपूर्वजन्मश्च वंध्यापुत्रविहीनक जीवसर्वगाथायां कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने पूर्व किसी
जन्म में क्या पाप करे हैं जो वंशकी बृद्धि बंद होगई सो पूर्व कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथांसर्व पूर्वपापश्चकारणः
कायस्थश्चकुलेजन्म चित्रगुप्तोतिवंशक ॥ यवनविद्याभविष्यंति धनधान्योभविष्यति· राजद्वारमहलाभं उच्चपदवीचप्राप्तये ॥
सं०उ० बहुपक्षोबधनश्च दयाहीनश्चदुष्टयः ततरोचित्रकंपक्षी बृक्षोर्जीवभक्षणम् ॥ उपवनंगवनंजीव दीमकोजीवभक्षणम् इदंपापप्रभावेण
७० पुत्रसुखविनष्यति भाषा ॥ हेपुत्र यह जाव प्रथम एक जन्म में कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा सो चित्र गुप्त वंशी था सो बड़ा
चतुर विद्यावान था बहुत सा धन राजदरबार से पैदा किया पुराय भी करता था परन्तु तीतर नाम और बहुत से पक्षी थे
तिन को अपने साथ बागको ले जाता था और बृक्षों में दीमक नाम जन्तु होते हैं तिन को खुलाया करता था इस पाप के
प्रभाव से सन्तान कष्टी रहा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकं पूर्वपापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥
भाषा ॥ हेपिता कौन से उपाय करने से यह जीव पुत्रों के सुख देखे सो दान मन्त्र पूजा जाप कहो ॥ भृगुवाच ॥ मन्त्रसन्तान
गोपाल चंद्रलक्षप्रमाणकं अन्नमिष्टान्नकंभोजन यज्ञदानकरस्तथा ॥ पक्षीअन्नददेज्जीव मृर्गानित्यभोजनम् इदंदानकृतेसंत
पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पिछले पाप की निवृत्ति के अर्थ यज्ञ करे दान करे अच्छी सामग्री बनवावे
ब्राह्मणों को तृप्त करे और पक्षियों को अन्न डाला करे और चांटीनाल नेम करके देतो निश्चय करके पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलप्रोक्ता मयानघः त्रिग्रहाफलदंश्रेष्ठं नानालाभसमागमः । भूमिमन्द्रञ्चप्राप्नोति कीर्तिवृद्धो
धरातले क्रूरपापग्रहापूजा दानंचैवप्रयत्नतः ॥ जीवचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अयत्नेनैवभोकाव्य बुद्धिनःसुस्थिरभवः ॥
उद्योगोकुरुतेदीर्घ लाभचिंतावलीयसी प्रमेहोपीडिनंगुप्त मित्रशत्रुवदाचरेत् ॥ प्रीतिकृत्वाकृतेघातं सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्ता
सुखीलोके असत्यवचनंव्रजेत ॥ सुकीर्तिप्राप्तेलोके उद्यमेपोष्यतेकुलः परोपकारकरताच बुद्धिवंतोसुलक्षण ॥ ईशभक्तिसुसंचित्य
स०उ० सुस्थिरंनविसर्जन कामीकुतुहलीचैव कुटंबेप्रीतिवत्सलः ॥ पूर्वमायुसुखीजीव मध्येचसुखमध्यमं अत्यपापकुरुगांति कान्ताद्वौगुरु
७१ वत्सलः ॥ सुयत्नेसर्वथासौख्यं नात्रकार्यविचारणा कामवेगेनचोन्मत्तो चिनचैवोपिविभ्रमः बुद्धिवन्तोयशीसौख्यी नकश्चि
न्निंदतोमति जीवंध्यानञ्चसंमग्नः यौवनंरूपचिंतनं ॥ श्रेष्ठकर्मरतोचापी बहुबाधाचशांतये सर्वसुक्खञ्चप्राप्नोति गुप्तचिंतादवामकं ॥
पुत्रकांक्षानसंदेहो भृगुवाक्यनचान्यथा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस पत्र में तीन ग्रह बहुत
उत्तम पड़े हैं अनेक प्रकार के लाभ हों भूमि मंद्र कीर्ति पृथ्वी बढ़े क्रूर पाप ग्रहों का पूजा दान यत्न करना श्रेष्ठ है इतने न्यून
ग्रहों का दान मन्त्र जाप न हो चिंता बुद्धि भ्रम लाभ मध्यम उद्योग बहुत करे फायदा मर्जी माफिक न हो गुप्त प्रमेह की पीड़ा
मित्र से शत्रुता प्रीत के बदले हानि पहुंचावे यह जीव सत्य को पसन्द करे झूठ से बचे कीर्ति बढ़े पराये उपकार करने वाला
बुद्धिमान सुलक्षण देवता में कुछ भक्ति अल्पस्थिर न हो कामदेव की उन्मत्तता, मित्रों से प्रीति, पूर्व आयु सुख, मध्यम
आयु मध्यम सुख दो स्त्री से प्यार सुकर्म से सदा सुख मिले एक जीव के ध्यान में मग्न रहै हेशुक्र सम्पूर्ण काम हों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु मुख्य सुख पुत्रका है सो तिसकी भटकना बनीरहै त्राम देखे ॥ शुकोवाच ॥ केन मंप्रभावेण पुत्रस्वप्ननदृश्यते पूर्वगाथा
कथातात श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव की पिछले जन्मों की कथा कहो ऐसे कौन से पाप दीर्घ करे हैं जो
स्रो पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मश्चगाथायो श्रुणुपुत्रतिध्यानकं शूद्रवंशकुलेजन्म दीर्घअधकुरुतथा ॥ पापकर्मधनंप्राप्ति
उच्चपदवीचप्राप्तये लोकेलक्षपतिख्यातो मानकार्तिभविष्यति ॥ कमट्टांचसृतिकाखंड हस्थनित्यश्चधारण बहुपक्षिविनोजीव बारम्बार
स०उ० भक्षणं ॥ विध्वंसचग्रहंपक्षो बच्चोभोजनंतथा दीर्घपापप्रभावेण पुत्रसुखविहीनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र इस जीव की पूर्व जन्म की कथा
७२ कहता हूँ सो तुम ध्यान से सुनों पूर्व एक जन्म में यह जीव शूद्र वंशमें उत्पन्न हुवा था सो बड़ा धनवान् था इज्जत प्रतिष्ठा वाला
था परन्तु गुलों से जीव मारने का बहुत अभ्यास था कमट्टा हाथ में लेकर बीसियों जीव पक्षी मार लाता था और उनके
घौंसले तोड़ कर निकाल लाता था तिस पाप के प्रभाव से पुत्रों के सुख से हीन रहै क्यों कि पक्षियों का शाप लगा हुवा है
शुकोवाच ! कियत्नश्चकरतव्यं पक्षीशापविनाशनं पुत्रप्राप्तिश्चदृश्ते वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे यत्नकरनेसे पक्षियों
का दिया हुवा शाप नाशकोप्राप्तहो और इसजीवको पुत्रोंका सुखमिले ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापक ब्राह्मणं
भोजनंदानं कुर्वंतिविधिपूर्वकं पक्षीभोजनंअन्नम् नित्यप्रतिनित्यनेमकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षश्चजापकं अनुष्ठानकृतेसन्त
पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र एक लक्ष प्रमाण गायत्री और अर्ध लक्ष मन्त्र सन्तान गोपाल जपवावे
और ब्राह्मणों को स्वर्ण दक्षिणा दे और पक्षियों को नित्य प्रति रोज अन्न डाल कर जिमावे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेसमुत्पन्न युवाश्रेष्ठफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीच प्राप्यतेधननिश्चितं ॥ कदापिसमयेवत्स स्वकुटम्ब
विरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते ॥ स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभदृश्यते मध्यविद्यान्वितोपुन्स बुद्धिवंतो
विशेषतः ॥ अतितेजप्रतिष्ठोवा सुजनोमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् ईशस्यचिंतनंकृतः ॥ पत्नीश्रेष्ठकुलोप्राप्ति पुत्रचिंता
महानकं नेकयत्नकृतेपुत्र सुखस्वप्नेनदृश्यते ॥ दीर्घकष्टविजानीयाव नवीनोजन्मप्राप्तये: दीयतेसुमतिसर्वं दुष्टकर्मविसार्जिता ॥
स०उ० सुमित्रोभाषणोप्रीति चिन्तोदारनसंशयः हीनवार्त्तानकर्तव्या गुप्तचिंताचव्याप्तये ॥ सुकीर्तिचिंतयेनित्यं सुकीर्तिचभयानकं
८३ व्ययोदीर्घसमायात सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ भ्रातृभग्नीचउत्पन्न अल्पसुखञ्चलोकेमा कस्मिन्कालेमहत्प्राप्ति धनधान्यसमागमः ॥
युग्मजीवमहान्प्रीति सुन्द्रमूर्तिसुलक्षणां पूर्वजन्मश्चपापार्थं वामचिंतामहानकं ॥ पुत्रसुखनदृश्यंते प्रथ्वीजन्मअकारणम् ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र इस जीवकी पत्रीका फल सुख दुख आदि वर्णन करते हैं सो तुम सुनो युवा अवस्था में बहुतसे काम करे और बड़े २ मनुष्यों से काम पड़े धन प्राप्त करे विद्यावान् हो किसी समय में कुटंब घर में विरोधसा हो धन खर्च हो शत्रु नुकसान पहुंचाना चाहे परन्तु श्रेष्ठ दशा में थोड़े परिश्रम से अकस्मात् लाभ खुशी हो विद्या से बुद्धि विशेष इज्जत प्रतिष्ठा वाला अच्छी शिक्षा देने वाला ईश्वर की तरफ ध्यान रखने वाला स्त्री श्रेष्ठ कुल की पुत्र को चिंता रहै यत्न भी करें परन्तु पूर्व जन्मों के पाप के अर्थ पुत्रों से रहित रहै शरीर पै पीड़ा कष्ट भारी आवे सो नया जन्म हो नई २ वार्ता का विचार करे बड़े बड़े ख के काम आवें सो पूर्ण उतरें भाईयों से थोड़ा सुखहो जीवोंसे प्रीत लगी रहे हेशुक्र जो दुनियां के सुख हैं सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्त हों परन्तु पुत्रों के सुख को यह जीव और इसकी स्त्री भटकते रहैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण: वंशवृद्धिनदृश्यते
पूर्वजन्मकथाकथ्यं उच्चारणविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने कौन से पाप पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इस
की स्त्री पुत्रों को भटके हैं सो विधि पूर्वक वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वजन्मनिकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न
धनधान्यभविष्यति ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच भूमिलाभश्चदीर्घयो ॥ निजस्थानवसतिविप्र
स०७० गृहभूमिउपाधकं लष्टमुष्टप्रहारेण द्विजस्थानभस्मकम् ॥ युग्मपुत्रत्रयंकन्या ग्रहमध्योतमृत्युदा तेनपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनाशनं ॥
७४ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पहले एक जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा भाग्यवान् लक्षावीश हाथी घोड़े ग्राम
थे इसकी जमीन में एक ब्राह्मण कटंब सहित रहता था सो उससे किराए भाड़े के ऊपर बहुत विवाद हुवा यहां तक की
उसको बहुत पिटवाया और उसके घर में आग देदी सो उसके दो छोटे पुत्र और तीन कन्या जल कर भस्म हो गईं ॥
शुक्रोवाच ॥ किंयत्नदानमंत्रमंत्रस्य किंविधानेतिजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हेपिता क्या यत्न करे और
कौन से दान मन्त्र जाप करवावे जो पूर्व जन्म के शापसे छूटे और पुत्रों के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे
और पुत्र जीवें सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्थानदानकुरुजीव गायत्रीमन्त्रजापकं स्वर्णस्यप्रतिमापत्रं द्विजसुतमूर्तिलिख्यते ॥
सर्वदानविधानेच संकल्पंब्राह्मणाददेत् द्विजदंतुष्टकर्तव्यं पूर्वश्रापविनाशनं ॥ पुत्रसुखंनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेपत्र यह
जीव दान करे गायत्रीमन्त्र जपवावे स्वर्ण पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र कन्याओं की मूर्ति लिखे ब्राह्मण को दे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वंखगास्थित्वा जन्मकालेयदानरः वृहत्वंफलमादाय आनन्दभूमिमण्डले ॥ बहुकृत्याधिकारीच सर्वेशां शुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीति नूतनंवार्तयाचितः ॥ सुन्दरश्चलोधीरः प्रतापोशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छं पूजनात्सुखवर्द्धनं ॥ अतिप्रेमीसुकीर्तिच भृगुणापरिभाषितः पञ्चमेशंसुसंपूज्य वंशवृद्धिशुभप्रदा ॥ गोविप्ररक्षकोधीमान् सत्यवादीविचक्षणः कालानुकूल विद्याच पर्यटनंप्रियसदा ॥ चंद्रअल्पमहाकष्टं प्राणभीतिश्चचिंतनम् श्रेष्टकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णंसुखीनरः ॥ गुप्तलाभविशेषेण अकस्माज्जायतेकदा भूमिलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं ॥ मनेच्छापूजितोवत्स अनुष्ठानंसुयत्नतः राजद्वाराधनंप्राप्य निजकृत्य फलप्रदः ॥ पिताधिक्यप्रकोपीच कामाधिक्यबलान्वितः सुशीलश्चपलोपुन्स रिपुणांकष्टदायकः ॥ निष्ठुरंवचनंवक्ता कुमतिश्च उदारधी सर्वसंतसमायुक्तो अंगनाप्रीतिकारकः ॥ जन्माद्धनयुतपुन्स गीतनादपरंप्रियः वृणपीड़ासमुत्पन्नो निजांगेनात्रसंशयः ॥ सर्वकार्याणिसिध्यंति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र जिसकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं सो पैदा होकर अनेक प्रकार क पृथ्वी पर आनन्द देखे बहुत से काम बढें और उसके शुभचिंतक बहुत हों नवीन विचित्र बातों में मन रहै एक जीव में चित्त बहुत रहा करे यह जीव सूरवीर प्रतापी धीर बंधाने वाला दूसरे की बात को तोले गुरु भौम केतु का पूजन श्रेष्ठ है भृगुजी कहते हैं पञ्चमेश की पूजा दान से वंश की वृद्धि हो पूर्व जन्म के पाप के कारण पुत्रों से रहित रहै दुख देखे स्त्री क्लेश माने और यह जीव विद्यावान् हो भ्रमण करने को चित्त चाहा करे एक समय अचानक में एक वार कष्ट भय हो अल्प भोग कर आयु पूरी हो राजद्वार से प्राप्ती खुशी रहै भूमि से धन प्राप्त हो शत्रुओ से विवाद हो सर्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्पत हों परन्तु पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकमानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात श्रुणुत्वंममवांछया ॥
भाषा ॥ हेपिता इस जीवकी प्रथम जन्म की कथा कहो ऐसे कौन से पाप इस जीवने किये ये जो यह पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥
भृगुवाच ॥ श्रृणोपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारणः यवनवंशकुलेजन्म आनन्दभूमिमण्डले ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो अतितेजोप्रतिष्ठया
बहुजीवबधंकृत्वा निजभक्षोपिकारणं ॥ चापबाणकुरुधारण गवनखेटानुसारेण तिहिपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनश्यति ॥
भाषा ॥ हे पुत्र इस जीव से प्रथम जन्म में बहुत पाप बने हैं प्रथम जन्म में यह जीव यवन जाति में उत्पन्न हुवा था नित्य
प्रति शिकार खेलने जाता था और अनेक जीव मारकर लाता था और तिन्हें भक्षण करता था इन कारण पूर्व जन्म का
सात जन्म को शाप लगा हुवा है तिस कारण सन्तान का सुख कठिन है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजा च किंमंत्रकिंजापकं
पूर्वशापविनश्यंति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से पूर्व जन्म का शाप नष्ट हो जो
पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या सप्तटंकप्रमाणकं विष्णुधेनुलिखेन्मूर्ति शुद्धचित्तंचशांतये रक्तचन्दन
मिश्राणि गंगाजलस्नानकं सकल्पंददेत्विप्र पूर्वपाहश्चशांतये ॥ चन्द्रलक्ष प्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं ॥ भाषा ॥ हे पुत्र सप्तटंक
प्रमाण से स्वर्ण का पत्र बनवावे तिस पर विष्णु भगवान की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और गंगाजल से
स्नान करावे तिसके आगे एक लक्ष गायत्री मंत्र जाप करावे और (मुंह से यह मन्त्र कहता जाय) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं
विष्णु भगवान मम कार्य सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॥ फिर वह मूर्ति ब्राह्मण को संकल्प करके दे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रेष्टपत्रंग्रहाकाव्य दीर्घमान्योप्रतिष्टतः पुत्रदारादिसंचिंत्य भृगुणापरिभाषितः ॥ मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्धं सुखीन्नरः रूपयौवनसंपन्नो सुमित्रश्चारुभाषितः ॥ नानामंगलकार्यं जायतंचमहोत्सवम् मध्यसौख्याधिकारीच विलासीमति मान्नरः ॥ गुप्तशोकविशेषेण अकस्मातभयमागमः दीर्घद्रव्यव्ययोचापि चिंतयंतिदिनेदिने ॥ जलंपशुभयंशुक्र तनकष्टमुपपाथयः शत्रुपक्षविरोधश्च कुलबधुविप्रीतये ॥ चिंतयेदीर्घकार्याणि अतसौख्यसमायुतः द्वयोकष्टविशेषेण चंद्रअल्पमहाभयं ॥ सुयत्नं
८०३० रक्षितोप्राण नूतनंजन्ममन्यते ॥ दीर्घायुचततोलोके उद्यमेणधनस्थितः असत्योदोषकंप्राप्त शत्रुपक्षविरोधता ॥ व्ययदीर्घ
७७ मुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः अल्पजीवीचबालोयं अथवागर्भखंडतः ॥ पत्नीकष्टविशेषेण पुत्रचिन्ताचव्याकुलः द्विभार्यायोग प्राप्यंते किंवान्यत्रस्त्रीप्रीतया ॥ बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षणः सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस पत्र के ग्रह श्रेष्ट हैं बड़ी प्रतिष्टा वाला हो परन्तु यह जीव और इसकी स्त्री संतान की चिंता में रहै मान कीर्ति बढ़े लोक में प्रसिद्ध हो सुन्दर स्वरूप मित्रों से प्रीति करने वाला अच्छे वचन बोलने वाला नाना प्रकार के सुख पृथ्वी पर देखे परन्तु गुप्त शोक सन्तान का रहै अकस्मात चित्त पर भय सा रहै बहुत खर्च हो जल से पशु से भय हो या कहीं से गिर कर चोट आवे शत्रु पक्ष से विरोध हो कुल बन्धुओं से विप्रीत हो चिंता क्लेश हो कर फिर अन्त में सुख प्राप्त हो दो कष्ट हों एक में प्राणों का भय हो फिर आयु पूर्ण हो किसी समय में झूंठा दोष लगे इलजाम का भय हो जाय पुत्र होने बहुत कठिन जो होय तो माता और पिता को भारी दुःख देकर बड़े बड़े तरसाव दिखा कर चले जांय ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ शुक्रोवाच ॥ भोतातःकृपानाथ अहम्दासकुरुदया पूर्वंपापञ्चवक्तव्यम् पुत्रस्वप्नेनपश्यति ॥ भाषा ॥ हे पिता मुझ पर कृपा करके
कहो इस जीवने ऐसे कौन से पाप किये हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहै ॥ ॥ भृगुवाच ॥ आदजन्मञ्चगाथायां कथ्यंतेविधिपूर्वकं
दीर्घंपापंकुरुजीव शृणुपुत्रतिध्यानकं ॥ चित्रगुप्तकुलेजन्म बहुभागोप्रधानक राजद्वारकंन्यायम् उच्चपदवीचप्राप्तये ॥ द्विजशूद्रउपाधीच
लष्टमुष्टप्रहारकं निजकरशूद्रमृत्युच विप्रदोषअसत्यक ॥ राजद्वारकृतेन्यायं न्यायकर्ताधनलभेत् प्राणदण्डददेत्विप्र मुद्राशूद्र
म०उ० कंलभेत् तातपुत्रमृत्युदश्य न्यायाधीशोश्रापकम् ॥ भाषा ॥ हे पुत्र प्रथम जन्म में यह जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था
७८ राजद्वार में बड़े ओहदे पर था मुकदमे में न्याय किया करता था सो एक शूद्र बूढ़े ने अपने हाथ से अपना अपघात
कर लिया उस शूद्र के वारिसों ने ब्राह्मण को फांस लिया और हाकिम को रिश्वत देदी सो न्यायाधीश ने
ब्राह्मण के पुत्र को प्राण दण्ड की आज्ञा दी सो ब्राह्मण ने श्राप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों का सुख न देखे ॥
॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजाच किंमंत्रकिंजापकं ब्रह्मश्रापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य
मन्त्र जाप से पूर्व जन्म का ब्राह्मण का दिया हुवा शाप नष्ट हो और पुत्र होकर जीवें ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या
युग्मसुद्राप्रमाणकं ब्रह्मपुत्रलिखेन्मूर्ति गायत्रीमंत्रजापकं ॥ तान्दूलंयथाशक्ति गुप्तमूर्तिप्रवेशकं संकल्पंददेत्विप्र पूर्वश्रापञ्चनष्टकं ॥
इदंदानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र स्वर्ण के दो मुद्रा प्रमाण भर के पत्र पर ब्राह्मण के
पुत्र की मूर्ति लिखे और चावलों में गुप्त रख कर दान करे ब्राह्मण को दे गायत्री मन्त्र जाप करावे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाटिकामद्रयानञ्च विपाकेयन

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मकालइतिषेटा सर्वत्रास्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजाया ग्रहसौख्यसुयत्नतः ॥ वाटिकामद्रयानञ्च विपाकेयन मिष्टभोज्य
वर्धनं जीवोसत्यमानश्रीमान् उपकारीविचक्षणः ॥ मित्रकृत्यघ्नतायाति बांधवानांसुखलघु कवित्वमतिसजातं मिष्टभोज्य
मतिप्रिय ॥ स्वभुजेनधनंप्राप्ते पंडितोनृपपूजितः विरोधश्चकुटम्बेन शत्रुवःतप्यतसदाः ॥ देवविद्यामहाप्रीति गुणग्राहिभवेन्नरः
अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनंवर्धतेगृह नानाचतुस्यदानञ्च धनकीर्तिविवर्धनः ॥ स्वजनेसुखभोक्तव्या धनरत्नानिसञ्चयः देवतागुरु
स०उ० भक्तश्च सौम्यमूर्तिसुखीनरः ॥ दिव्यवस्त्रसदाधारी स्वजातिमानवर्धनं गुप्तचिंताशरीरच पुत्रसुखनदृश्यते ॥ पत्नीक्लेशितम्शुक्रो
७९ भाग्यवृद्धिचन्यूनता विद्याबुद्धिविशेषेण भृगुणापरिभाषितः ॥ इन्द्रीव्याधिकचित्काले शीघ्रवीर्यखंडनं चंद्रअल्पनसंदेहो प्राणाभय
विनाशनं ॥ युग्मकष्टगतेशुक्र आनंदंभूमिमंडले पशुभयजलंप्राप्त उपरश्चपपायः ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदृश्यते ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जीवकी पत्रीमें ऐसे गृहपड़ें सोजीव कन्या पुत्र स्त्रीके सुखका यत्नउपाय करता रहै और इसजीवको
रास्तेमेंसे या मंद्रमेंसे धनकीप्राप्ति किसीकालमेंहो सत्यवातको पसंदकरनेवाला परोपकारी मित्रसे बंधुवोंसे किसी समयमें विपरीतताहो
और कुछ कविता गानेसुन्नेका भी शौकहो मिष्ट भोजन प्याराल्गे अपने पुरुषार्थसे पैदाकरे विद्यावान्हो बड़ेआदमीभी आदरकरे शत्रु
जलतरहैं गुणग्राहीहो देवविद्यामें प्रीतहो सुन्दरस्वरूप भूमिसेलाभ चौपायेभीहों अच्छे आदमियोंसे लेनदेन ऐश्वर्य पैदाकरे अच्छेवस्त्र
पहरे दरिद्रीसा नरहै बिरादरी में इज्जतहो गुप्तचिंता रहै बिनाकारण भी डरता रहै इज्जतका ध्यान रखनेवाला भलेबुरेको परखनेवाला
अच्छी शिक्षा देनेवाला हेशुक्र पृथ्वीपर आनर कर यहजीव अनेक प्रकारके सुख दुःख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखको भटकता रहै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रचिंताभविष्यति पूर्वजन्मक तात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ हेपिता कौन कर्म इस जीवने पूर्व
जन्म में करे हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख न देखें ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रगतेजन्म कथ्यंतेविधिपूर्वकं मैथुलदेश
कुलेजन्म अग्रवालोतिश्रेष्ठया ॥ व्यौहानधनप्राप्नोति धनधान्यसमागमः लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् ॥ ऋषीपुत्रजगन्नाथ
तीर्थदेवदर्शनम् धनिधनअर्पणकृत्वा आगत्वाददेतममः ॥ अग्रवालोधनीपश्चात लाभार्थंवशिभूतकं दर्शनपर्श्यागत्वा ऋषीपुत्र
स०उ० धनददेत् श्रृणुवाक्यधनामुख्य ऋषीपुत्रचविह्वल धनचिंताशरीरेच कृश्यदेहदुर्बलम ॥ तणकालगतेकाव्य ऋषी त्रमृतंतथा
८० मृतकपुत्रलखंतात हाहाकारविह्वलं ॥ ऋषीशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ हेशुक्र प्रथम एक जन्म में एक ऋषी
का पुत्र जगन्नाथ आदि देवदर्शन करने गया तिस के पास जो कुछ धन था अग्रवाल धनी सेठ तिस के पास धर गया जब
दर्शन से आया तब लोभ के वशिभुत हो कर मुकर गया इसी चिंता में ऋषी के पुत्र ने प्राण दिये तब पुत्र को मृतक देख
ऋषी पिता ने धनी को शाप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों के सुख न देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रं
किंजापकं ऋषीशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ स्वर्णपत्रलिखेन्मूर्तिं ऋषीपुत्रस्वकारकं ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥
वस्त्रआभूषणंदानं श्रद्धामात्रप्रमाणकं संकल्पंददेत्विप्र श्रधांतेविधिपूर्वकं (मुख से कहे) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रींबटुकभरवाय आप
दुद्धारणाय पूर्वशापनिवारणार्थं दानमंत्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ बज्रदानकृतेरंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः सर्वसुखमप्राप्नोति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
हे पुत्र यह जीव स्वर्णपत्रपर ऋषी पुत्रकी मूर्ति लिखे घृतभरे तांबेके कलशमें गुप्तरख ब्राह्मणको दान करे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजन्म माननीयप्रतिष्ठता पञ्चमेशोपिपूज्यन्ते दानमन्त्रव्रतोषिता ॥ विद्याबुद्धिविशेषेण पश्चातो सुखपुत्रकं पूर्वणपप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ पूजादानञ्चमंत्रेण पूर्वशापविनश्यति सुतसुखअंतयोशुक्र भृगुणापरिभाषितः ॥ अष्टमेद्वादशेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं युग्मविद्याचअभ्यासं भृगुणापरिभाषितः ॥ धनव्ययशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं तातमात महासुखं जीवनंसुफलंममः ॥ त्रियोदशेषोडशवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा बहुविद्याचप्राप्नोति पत्नीप्रीतचयुग्मकं ॥ देहकष्टविजानीयात
स०३० औषधीप्रतिशांतये गुप्तप्रीतिअन्यजीवो नान्यथावचनंममः ॥ जीवचिंताचप्राप्नोति अल्पगर्भोपिखंडतः चंद्रनेत्रमितेवर्षे सून्यराम
८१ मितेतथा ॥ दीर्घलाभनसंदेहो उच्चपदवीचप्राप्तये महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने ॥ तातधनशुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं अचानकंउपद्रोवा ग्रहकष्टमहानः ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधीप्रतिशांतये चद्रअल्पगतेकाव्य पूर्णआयुनसंशयः ॥ षट्सप्ताद्धकेवर्षे आनन्दभूमिमंडले सर्वानन्दभोक्तव्यम् पुत्रदुखञ्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव मध्यम भागवाला प्रतिष्ठा पावेविद्या बुद्धि विशेष हो पञ्चम स्थान के पूजा दान से पुत्रों के सुख देखे पूर्व जन्म के पाप के प्रभाव से संतान का दुख देखे परन्तु पाप निवारण का मन्त्र दान जाप करावे तो अन्त में पुत्र हो कर जीवें और आठवें बारवें सोलवें वर्ष तक विद्या प्राप्ति स्त्री प्राप्ति पिता का धन शुभ काम में खर्च हो प्रथम माता पिता को खुशी हो जीवन सुफल माने दे कष्ट हों औषधी से आराम हो दूसरी स्त्री से प्रीत हो परन्तु अल्प गर्भ खंडत हो या बंध्या हो और रोजगार उत्तम हो उच्च पदवी पावे २१, ३० वर्ष तक फिर ऊपर अनेक प्रकार के सुख दुःख देखे आयु पूर्ण हो ७६ वर्ष के लग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भग आनंद देखे परन्तु पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुकोवाच ॥ केनकर्मगतेजन्म पुत्रसुखविनश्यति विधिपूर्वकथंतात शृणुत्वं ममवांछया ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं कुर्मीवंशकुलेजन्म धनधान्यभविष्यति ॥ दाताभोक्ता कृतज्ञश्च बहूसेवीनरोभवेत् राजमुद्रादददेत्कुर्मी लद्ययोवृक्षविनष्यति ॥ कोमलपातलतावृक्षे कोटोपक्षीबासकं जंगलुपवनंबद्धो सत्याजन उद्यानकं ॥ जीवआनंदभोक्तव्यं सर्वजीवविनष्यति बृक्षडालगृहपक्षी बालो कोटमृतंतथा ॥ पक्षीशापमहादीर्घ पुत्रस्वप्नेनजीवितं ॥
स०उ० भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक पूर्व जन्म की कथा इस जीवकी वर्णन करते हैं जो कुछ पाप इस जीवसे बने हैं सो सुनो राजा
८२ को मुद्रा देकर बड़े भारी बन काटने का ठेका लिया सो वह बन हरा भरा जहां अनगिनत जीव आराम पाते थे और भोजन फल फूल खाते थे और बृक्षों की डालो मं घौंसले बना रखे थे सो बन कई योजन म का था इस धनवान् कुर्मी ने सब वन को काट कर विध्वंस कर दिया तिस कारण पुत्रों के सुख स्वप्न में भी होने दुर्लभ हैं ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं श्रेष्ठविप्रश्चकर्मेष्टि इच्छा भोजनददेत् स्वर्णश्चदक्षिणांचैव प्रसन्नात्मसंतुष्टयः बहूअन्नंददेत्पक्षी नितप्रतिकीटभोजनम् ॥ मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षप्रमाणकम् विधिपूर्वअनुष्ठानं पुत्रप्राप्तिचजीवितः ॥ सुतप्राप्तिनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेशुक यह जीव पक्षियों के पाप निमित्त एक लक्ष गायत्री जपवावे श्रेष्ठ ब्राह्मण कर्मेष्टि बैठावे तिन्हें अच्छे२ पदार्थ जिमावे स्वर्ण की दक्षिणा दे और बहुत सा अन्न पक्षियों को जंगल या कोठे पर डाला करे और नित्य प्रति चींटीनाल जिमावे तो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पापग्रहप्रभावेण दीर्घचिंतावि

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभागमब्रवन मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितेसुमनोरथा ॥ पापग्रहप्रभावेण दीर्घचिंतावि हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेचितनंकृतः ॥
तोभवेत चित्तश्चचञ्चलोनिर्ं लाभविघ्नसमुद्भवः ॥ विलम्बोजायतप्राज्ञ पुनर्दीर्घधनागमः हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेचितनंकृतः ॥
नारीचिंताहृदेगुप्तः शत्रुमित्रवदाचरेत जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशयः ॥ प्रायश्चितकृतेसत पुत्रसौख्यनसंशयः लाभकृत्योपि
सिद्धंति बृहत्वोधनमागमः ॥ सत्यवक्तासुशीलश्च ग्रमन्याक्रोधसमभवः साहसीपुरुषार्थीच दुखसौख्यविशेषतः ॥ दानीबुद्धिमतोप्राज्ञ
विभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्य कामाशक्तोणिगुप्तता ॥ दानमन्त्रजपंपुराय सर्वदानन्दसंभवः सर्वग्रल्पविनश्यंति दीर्घायुश्च
स०उ० सुखावहं ॥ मनेच्छापूजितेचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्ं इष्टदेवस्यपूजनम् ॥ सुन्दरमृदुवाणीच धनसंयुक्तकौशलः
८३ वाणिज्यश्चधनदीर्घ भृगुणापरिभाषितः पुत्रजन्मनसंदेहो ग्रल्पजीवीचमृत्युदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक जिस जन्मपत्री में
ऐसे गृह ग्रानकर पड़ें सोमध्यम दशाभी देखेहै ग्रौर श्रेष्ठदशाभी देखेहैं मनकी इच्छा सब पूर्ण होय परन्तु पापग्रहोंके प्रभाव करके
दीर्घचिंता होय लाभमें विघ्नग्रावे लाभ होता २ रुक जावे फिर बहुतसे धनका ग्रागमनहो हीनकार्यकरके पछतावे स्त्रीको गुप्तचिंतारहे
ग्रौर जीवको चिंताक्लेश बनीरहै हेशुक पूर्व पापका प्रायश्चित करनेसे पुत्रोंका सुख देखे ग्रौर यहजीव झूठीबार्ता सुनकर क्रोधित
हुवाकरे सत्यसे प्रसन्नरहै साहसी पुरुषार्थी दानीसुकर्मी बुद्धिमान् कभी बुद्धिभ्रमसी होजावे ग्रकलसे नवीन बात निकाले मनुष्य भला
कहैं कई ग्रलाग्रावें नयाजन्महो फिर ग्रायु पूर्णभोगे हेशुक पृथ्वीपै यहजीव ग्रनेकतरहके ग्रानन्ददेखे परन्तुपुत्रके सुखसे रहितरहै
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण वंशबृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से कर्म इस जाव से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी पूर्व जन्ममें बने हैं जो वशकी वृद्धि नहो और पुत्रोंके क्लेश देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मनिपापार्थं शृणुपुत्रति
ध्यानक ग्वालवंशकुलेजन्म कृषीकर्मग्रहीरक ॥ मिष्टक्षेत्रञ्चउत्पत्ति गुड़खड़वाचप्राप्तये चद्रदिवसोपिहोतव्यं दीर्घपापंचभागिकं ॥
अग्निमन्द्रमहाज्वाला लोहपात्ररसाधिकं युग्मसर्पमहान्दोर्घं भाविवशप्रवेशकं ॥ विषयरोरसाबूडं गुडमिष्टान्नमेलनं ग्वालवंशीच
लोभार्थं मेलिकाकृत्यविक्रय ॥ बहुजोवगुडोभक्ष प्राणोचगवनंतथा दीर्घपापप्रभावेण वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ अतिक्लेशमहादुक्खं
स०३० पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक यह जीव पूर्व जन्म में ग्वाल वंशी अहीर था और खेती का कृत्य करे था ईख बहुत
८४ बोवेथा मिष्टान बनाता था सो कोल्हू में भट्टी पर रस पक रहा था भावी के वश दो सर्प बड़े २ मोटे जहरीले विषियर कड़ह
में आन पड़े सो गिरतेही मृत्यु हो गई तो इस ग्वाल वंशी ने सब होतव्य अपनी दृष्टी से देखा परन्तु उस रस का त्यागन
लोभ वश नहीं किया मर हुवे सर्पों को निकाल कर फेंक दिया और उस कड़ाह के पाक का गुड़ बनवा कर बेचा वो गुड़ जिन
जीव ने खाया वही मृत्यु का प्राप्त हुवा सो बड़े पाप का भागी है इस कारण वंश की वृद्धि नहीं होती और पुत्रों को सटके है ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकं पूर्वपापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या
श्रद्धामात्रमाणक युग्मसर्पलिखेन्मूर्ति गायत्रीमन्त्रजापकं ॥ यज्ञहवनञ्चदानञ्च कुर्यंतिविधिपूर्वकं संकल्पंददेत्विप्र सहितोवस्त्रभूषणं ॥
दानमन्त्रकृतेसत पूर्वपापश्चशांतये पुत्रसुखनसंदेहो वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक यह जीव श्रद्धामात्र स्वर्ण पर दो
सर्पोंको मूर्ति बनावे और वस्त्र भूषण सहित विधिपूर्वक कर्मेष्टि ब्राह्मणको दानकरे और हवन करे तो अवश्य पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एषग्रहस्थितपत्री बहुविद्याचप्राप्तये बलान्वितःविलासोच विमलःसर्वकार्यकृत ॥ मतिमानचारुशीलश्च भृगुणापरिभाषितः जन्मश्रेष्ठकुलेयातो बहुभागीचलोकमा परोपकारकर्ताच चित्तचिंताचगुप्तता मित्रपक्षमहाप्रीति सर्वसुखंचप्राप्तये ॥ साहसीसन्मानीश्च दीर्घव्ययनसंशयः श्रेष्ठशिक्षाददेत्मित्र सूरवीरोपराक्रमः ॥ युग्मग्रल्पमहापीडा नवीनोजन्मप्राप्तये जलग्नि भयजीव वृणाचिन्होतिदृष्यते ॥ कस्मिनकालउपद्रोवा गुप्तचिंताभविष्यति लाभप्राप्तिविशेषेण अतितेजोप्रतिष्ठया ॥ स्त्रीप्रीति
स०उ० नसंदेहो ग्राशक्तंचित्तगुप्तत नवीनोमन्द्रकंरचना ग्रणभयभृगुसनमः ॥ सर्वसुखत्रप्राप्नोति पुत्रदुखनसंशयः पत्नीक्लेशमहाचिंता
८५ वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जिस जीव की पत्री में ऐसे गृह ग्रान के पड़े हैं सो भागवान् विद्यावान् सूरवीर श्रेष्ठ कार्य करने वाला परोपकारी पहली अवस्था से अन्त में सुख विशेष खर्च विशेष रहै श्रेष्ठ शिक्षा देने वाला इज्जत पैदा करे जल अग्नि भय होय किसी काल में उपद्रव हो फिर शांत हो दो अल्प भुगत कर आयू पूर्ण हो स्त्री से मित्र से प्रीत नहीं २ लाभ की वार्ता सोचा करे पुत्रों का दुख देखे स्त्री को क्लेश रहे सब सुख हों परन्तु पाप के कारण पुत्रों का दुख हो ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन वंशवृद्धिनदृश्यते त्रासपुत्रश्चभोक्तव्यं पत्नीक्लेशोपिदीर्घता ॥ पूर्वगाथाइदंजीव शृणुत्वंममवांछया केनपापप्रभावेण सुतानन्दनदृश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्र ज कहते हैं हेपिता कौन से पाप कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः आद्यजन्मांतरंगाथा कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ ग्वालवंशसमुत्पन्न बहुसेवानरोभवेत अश्वपतिगजग्रामीच तेजस्वीप्रतिष्टवान् ॥ अरजुनपेनुविख्यातो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवपुरग्रामवासकम् बहुदानीप्रधानजीव आनन्दभूमिमंडले ॥ हस्तिथापितेयात्रा स्नानेहरिद्वारकम् रविग्रास्तानिशामार्गें अन्धकारोपिगच्छति ॥ कुमार्गोगवनंकृत्वा अन्यपुर्षोपिवर्जयेत् पशुसर्पइदंमार्गें पगडंडीनगच्छति ॥ यात्रीमंदश्रुणुशब्द अंगिकारनकृत्यया सर्पंचसहितपुत्रो गजचर्णोंपिमृत्युदा ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मअपुत्रवान् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र प्रथम एक जन्म में यह जीव ग्वाल वंश था हरिद्वार गङ्गा स्नान करने जाता था सो रात्रि के समय अन्य मनुष्यों ने

स०उ० मना किया कि इस रास्ते में सर्प बहुत पड़े रहते हैं रात्री में मत जाओ सो यह न माना बहुत से सर्प आदि जीवों का विध्वंस

८६ हुवा तो पाप का भागी हुवा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् सर्पशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौनसे दान मंत्रसे पुत्रों के सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकम् मृत्युसर्पलिखेन्मूर्ति रक्तचन्दनकारकम् ॥ गंगाजलेनसंशुद्धो धूपीदपंचचन्दनम् वीजमन्त्रञ्चगायत्री लिपिकृत्वाविधिपूर्वकम् ॥ दीर्घवज्रकृतेदानं मन्त्रश्रद्धाप्रमाणकम् ताम्रकुम्भघृतमध्ये गुरुमूर्तिप्रवेशकम् ॥ अन्नवस्त्रंददेत्दानं जापंचविधिपूर्वकम् मंत्रसन्तान गोपालं चन्द्रलक्षप्रमाणम् ॥ देवकीसुतगोविंद दूसरामन्त्र उच्चारण करे ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवारणार्थं दानमन्त्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ मन्त्रदानकृतेसन्त निश्चयपुत्रजीवितं पूर्वशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं स्वर्ण पत्र पर सर्पों की मूर्ति बनाय गंगाजल से शुद्ध कर विधिपूर्वक दान करे ऊपर लिखा मन्त्र पढ़ता जाय और एक लक्ष सन्तान गोपालका मन्त्र विद्वान् पंडित से जपवावैं तो निश्चय पुत्र होकर जीवें इसमें कुछ संशय नहीं है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वग्रहस्थित्वा कुण्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितेलोके विलम्बोनात्रसंशयः ॥ युवावस्था यदाप्राप्य
भाग्योदयविशेषतः द्रव्यलाभंभवेच्चापि स्वकृत्यकुशलोगुणी ॥ बहुकार्यरतोनित्यं सुमित्रलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्
माननीयोविशेषतः ॥ यदौज्ञात्वामहद्दुखं पुनर्दंतोश्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितं नतुष्यतिकदाचनः ॥ गोधौम्रापिवर्णश्च बुद्धि
स०३० वानोविशेषतः द्विभार्यागेहेप्राप्नोति अथवामंगलंत्यजेत् ॥ सत्यमार्गसुकृत्यश्च स्वकुलेपोषणेरतः प्रतिष्ठावर्धतेलोके भूमिलाभ
८७ नसंशयः ॥ श्रेष्टकृत्यविजानिया गुप्तचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंता देहपीडाचगुप्तता ॥ अकस्मात्महाद्दुखं भयभीतोचप्राणाक
शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेपराजयम् ॥ प्रदेशोगवनंकृत्वा नान्यथावचनंमम शुभकार्येधनव्ययं अर्थप्राप्तिभविष्यति ॥ सर्वसुखश्च
प्राप्नोति पुत्रशोकनसंशयः ॥ भाषा ॥ हेशुक इस जीव की पत्री में श्रेष्ट ग्रह पड़े हैं परन्तु फल देर से करेंगे अन्त अच्छा हो
अच्छे लाभ के काम करे राजद्वार से लाभ हो बहुतों का काम निकले गुप्त प्रीत रहै दूसरी स्त्रीं भी प्यार करे सूरवीर किसी के
छल में न आवे सगाई हो के छूटे या द्विभार्या योग हो सत्य बोलने वाला दूसरे की बात को तोले बड़े बड़े मामले देखे स्त्री
पुत्रों का क्लेश चिंता रहै सब सुख देखे परन्तु पूर्ण पाप के प्रभाव से पुत्रों के शोक देखे ॥ शुकोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण
पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता कौनसे ऐसे कर्म इस जीवने पूर्वजन्म
में करे हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं यवनवंशकुलेजन्म षटकर्मापिवर्जयेत् ॥
पशुअंडश्चभोजनाय बहुजीवविनाशनं नित्यउपवनंगत्वा पक्षोबालभक्षणं ॥ सहस्रोजीवश्चापार्थं पुत्रसुखविनश्यति ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव एक पूर्व जन्म में यवन वंश में उत्पन्न हुवा था सो अपने षटकर्म से रहित रहा और नित्य प्रति बागों में जाकर सैंकड़ों पक्षियों के अंडे लाकर के भक्षण किया करता था और बड़ा धनवान् था बाग जमीन अनेक तरह की सवारी थी परन्तु षटकर्म से रहित था और अपने आनन्द भोगे था सो सैंकड़ों पक्षियोंका शाप लगा हुवा है ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान मन्त्र जाप कराने से इस जीव को पूर्व का दियो हुवा शाप नष्ट हो जो पुत्र के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥
भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या चन्द्रलक्षप्रमाणकी गायत्रीमूलमन्त्रस्य रक्तचन्दनमूलिखेत ॥ पक्षीबालकयकारम् लिख्यतेविधिपूर्वकम् षटरसआदिसामग्री संकल्पमब्राह्मणंददेत ॥ गायत्रीमूलमंत्रस्य चंद्रलक्षप्रमाणकं मन्त्रसन्तानगोपालम् श्रेष्ठविप्रजपंतथा ॥
दान करते समय श्रद्धा और भक्ति पूर्वक विष्णुभगवान् का ध्यान करे और मुख से यह मन्त्र उच्चारण करता जाय ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायण विष्णुभगवान् पूर्वशापनिवारणार्थ पुत्रसुखनिमित्यर्थं दान मन्त्र जाप करूं हूं सो ग्रहण करो ॥
मंत्रदानकृतेसन्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशय वंशवृद्धिभविष्यति भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक स्वर्ण का पत्र एक मुद्रा प्रमाण बनवावे और उसके ऊपर गङ्गा जल मिश्रित लाल चन्दन में मूल मन्त्र लिखे और पक्षियों का आकार बनवा कर और षटरस आदिका संकल्प करा कर श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मण को दे और मन्त्र सन्तान गोपाल और गायत्री मन्त्र लक्ष प्रमाण जपवावे हवन यज्ञ करेतो निश्चय पुत्र होकर जीवें और धन संतानकी वृद्धिहो और जीवन सुफल माने हर प्रकारके आनंद हों ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रइस्थित्वा बहुभागीचबालकः साहसीचप्रतापीच विनीतश्चतुरोगुणी ॥ मंत्रतंत्रविजानीयात् शिवभक्तिचमध्यमा दृष्टीन्यूनविजानीयात् नेत्रपाडानसंशयः ॥ अंगरोगकचित्काले औषधिप्रतिशांतये मित्रश्रेष्टमहाप्रीति नवीनोवार्तयाचितः ॥ अल्पकष्टभयंशुक्र नवीनोजन्मप्राप्तये मिष्टवाक्यप्रियवाणी धनचितानसंशयः ॥ महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने कटुवाक्यउपाधीच शत्रुपक्षविरोधता ॥ चौरभय विजानीयात् गुप्तशत्रुचप्राप्तये राजद्वारप्रतिष्टोवा भूमिलाभ भविष्यति ॥ पुत्रचिंताविशेषेण पत्नीशोकबूडनं प्रमेहोव्याधिकंक्लिष्ट औषधीप्रतिशांतये ॥ कस्मिन्कालेउपद्रोवा शीघ्रोवीर्यखंडतः अर्धआयुगतेशुक्र भाग्योदयदिनेदिने ॥ पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस जीव की पत्री में ग्रह श्रेष्ट हैं इज्जत पावे चतुर बुद्धिमान् मन्त्र यन्त्र का भी कभी शौक हो शिव भक्ति करे मध्यम श्रद्धा से कभी आंख दुखनी आवें दृष्टि मध्यम सी होवे एक मित्र से प्रीत बनी रहे चित्त उसकी तरफ विशेष रहे एक कष्ट अल्प समय हो फिर औषधी से शांति हो श्रेष्टवार्ता बारम्बार सोचे किसी काल में क्रोध विशेष आया करे कैड़ा बोले शत्रु जला करें मार्ग में या और कहीं चोर का भय हो स्त्री से प्रीत हो राजद्वार और भूमि से लाभ पुत्रों के दुख देखे स्त्री को औलाद की चिंता रहे अनेक यत्न करे पूर्व पाप के कारण निष्फल जाय हेपुत्र यह जीव सर्व सुख देखे परन्तु पुत्र सुख न हो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनष्यति पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रृणुत्वममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता पहले किसी जन्म में कौन से पाप इस जीव से बने हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारण

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ उपवनंगवनंकृत्वा सन्मुखोसिंहदृश्यः क्षत्रासिंहवधोवाण द्विजपुत्रचमृत्युदा ॥
चन्द्रपुत्रसुखीविप्र क्षत्री शविनाशनं द्विजदृष्टिकृतेपुत्र हाहाकारविव्हलं ॥ विप्रशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतदुखी ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव एक पूर्व जन्म क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया बड़ा भारी धनवान् था सो एक समय
धनुषबाण लेकर शिकार खेलने गया तहां सिंह दृष्टिमें आयातो क्षत्रीने तीरमारा सिंह तो बच गया एक ब्राह्मणका पुत्र सन्मुखसे
भ०ज० आवे था सो क्षत्री के बाणों से उसके प्राणों का नाश हुवा तो ब्राह्मण के यह एक ही पुत्र था सो उसका मृतक शरीर देख कर
६० हाहाकार कर के विव्हल हुवा और क्षत्री को ब्राह्मण ने शाप दिया कि तू भी सात जन्म तक पुत्रों को भटकता रहेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् विप्रशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान
मन्त्र जाप से पू ॑ का दिया हुवा ब्राह्मण का शाप छूटे जो इस जीव को पुत्रों का सुख हो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या
चन्द्रटंकप्रमाणकी तन्मध्येकामवीजञ्च स्वर्णोशुद्धमाद्रशेत ॥ रक्तचन्दनमिश्राणि द्विजमूर्तिश्चकोरकम् चन्द्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्र
जापकं ॥ वस्त्रभोजनंदानं संकल्पंब्राह्मणाददेत वज्रदानविनिर्मुक्तो पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ वंशवृद्धिनसंदेहो भाग्योदयदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र एक टंक प्रमाण स्वर्ण का पत्र बनवा कर तिस के ऊपर रक्त चन्दन और
अनार के कलम से द्विज के पुत्र की मूर्ति लिखे और वस्त्र भोजन सहित सब सामग्री संकल्प कर के ब्राह्मण को दे
एक लक्ष गायत्री मन्त्र जपवावे हवन यज्ञ करे ब्राह्मण को दक्षिणा देकर तृप्त करे तो अवश्य पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेद एवंसाकुण्डलीफलं आदौभाग्यञ्चमध्योपि नंतेविशेषता ॥ बालवस्थाचक्रीड्यन्ते
विद्याभ्यासेपिमंगलं तातद्रव्यंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवः ॥ भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेनात्रसंशयः वारिभीतोथवावन्हि चतुष्पादेन
पीडितम् ॥ उच्चस्थेपतितोभूमौ शरीरोवातपीडिनं वहुविघ्नानप्राप्यन्ते कार्यमात्रञ्चसिद्धति ॥ बुद्धिमंतोविशेषेण सुज्ञाताचसुलक्षणः
स०७० युवावस्थासुखंप्राप्य पुत्रसुखविनश्यति ॥ व्ययलाभविशेषेण कीर्तिवंतोप्रतिष्ठत भाग्यवंतोधनाध्यक्ष सुप्रसिद्धंसुखीनरः ॥
चंद्रमित्रपरंप्रीति सर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीव प्राप्यतेशोकसंयुतं ॥ कदाचकष्टरोगार्तो बहुद्रव्यव्ययोभव राजद्वारे
६१ धनागम्य भूमिलाभस्तथैवच ॥ बरङ्गोसिंधुवच्चित्तं जायतेवहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्य नूतनजन्ममन्यते ॥ पन तेसुखंप्राप्य
आयुपूर्णभविष्यति पापक्रूरग्रहापुज्यं यक्तताभाग्यमन्दता ॥ दानमन्त्रविधानेन मनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्यविशेषेण परकार्य
रतोनरः ॥ दयालुसुविचारश्च गीतनाद्यतस्सदा सुन्दरंमृगुवाक्षीच धनसंयुक्तकौशल ॥ सत्यवक्ताप्रतापीच विनितश्चतुरोगुणी
सर्वंसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रप्राप्तिउपायक ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ हो प्रथम मन्द
भाग हो पश्चात् में विशेष भाग की वृद्धि हो बाल्यावस्था में बालक्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में
खर्च हो बहन भाई का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय हो या कहीं से गिरे विद्या कार्य मात्र हो चतुर दाना युवा वस्था
में बड़े काम और मामले देखे लाभ खर्च बहुत हो प्रतिष्ठा पावे एक मित्र से गुप्त प्रीति विशेष हो उससे मन की बात कहै और
एक जीव का क्लेश बहुत माने कई बीमारियों में खर्च हो राजद्वार तथा भूमि से लाभ हो चित्त में समुद्र के सी नित्य नई तरंग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उठैं एक अल्प भारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हो हेशुक पुर्व जन्मों के कारण पुत्रों के सुख से रहित रहैं ॥
शुक्रोवाच ॥ केनपापश्चकर्तव्यं पूर्वजन्मनिकथ्यते विधिपुर्वकथंतात शृणुत्वंममवांछया ॥ सर्वंमुलक्षमाप्नोति वासपुत्रश्चविह्वलं
पुत्रप्राप्तिनहश्यंते जन्मतेसुतमृत्युदा ॥ हेपिता इसजीवने पूर्वजन्ममें कौनसेपाप किएहैं सोकहो ॥ भृगुवाच ॥ ब्रह्मवंशकुलेजन्म
कुरुक्षेत्रचवासयो दीर्घदानश्चग्रहणं यात्रापुत्रविनाशनं ॥ हेशुक तुम चित्तदेकर सुनो हम प्रथम जन्मसे पहले जन्मकी कथा वर्णन
 करते हैं क्योंकि शापतो सातजन्म तकभी फलकरेहैं सो यह प्रथमसे प्रथम जन्ममें ब्रह्मकुलमें कुरुक्षेत्रमें पराडाथे इन्होंने बहुत कुछ
 दानलिये परंतु एकदुष्टकी सम्मतिमें आनके एकयात्री जोसाथमें स्त्रीपुत्रकोलिए इनकेस्थानपरठहराथा उसकेपुत्रको स्वर्णकाआभूषण
जड़ाऊ और सच्चेमोतियोंकी माला उतारकर उसके सोतेहुवे पुत्रको कूपमेंडालदिया सो उसयात्रीने अतिदुखीहो वहींतीर्थपर शापदिया
कि जिसने मेरे पुत्रकी यहगतकी उसके सात जन्म तक पुत्रका सुख नहो और दुखित रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच
किंमंत्रंकिंजापकं यात्रीशापविनिर्मुक्तो सुखसंतानवर्द्धनः ॥ यहकथा सुनकर तिनके पुत्र शुक्रजीने भृगुजीसे प्रार्थना करके पुछा
हेपिता कौनसे दानमंत्रजाप करानेसे इसजीवका शापनष्टहो औरपुत्रोंका सुखदेखे सोवर्णनकरो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा
यात्रीमूर्तिपुत्रकं रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ तीर्थदानददेविप्र गायत्रीमंत्रजापकं वस्त्रआभूषणसहितं संकल्पश्रेष्ठविप्रयो ॥
इदंदानकृतेजीव पूर्वशापनष्टकं पुत्रसुखनसंदेहो मनवांछितफलप्रदा ॥ भाषा ॥ हेशुक यहजीव स्वर्णपत्रपर यात्री पुत्रको मूर्ति लाल
चंदनसे लिखे गंगाजलसे स्नान कराय तीर्थ पर जाय श्रेष्ठ ब्राह्मणको दानकरे गायत्रीमंत्र जपवावैतो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्ठबलान्वितः फलपूर्णनकर्तव्या त्रिग्रहाअधमस्थिता ॥ कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते
तेनहानिप्रजायते भौमपुच्छेरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित ॥ विशेषोलाभसंजातं भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोके सर्वतोदिशि
मंगलं ॥ अयत्नेनतदाकाव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमंत्रसुपुण्येन बहुत्वोलाभसंभवा ॥ आनन्दमंगलाचारं जीवहर्षचमोदिता
सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्योप्रतिष्टत ॥ यदामध्यदशायाव मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते ॥
१०३० क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पजन्मनूतनम् सुयत्नंदानमन्त्रेण सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ पुत्रचिंताभविष्यन्ति पत्नीक्लेशविव्हलं दशाश्रेष्ट
९३ प्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव ॥ कुबेरद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्यायुतोजीव सर्वेषांशुभचिंतकः ॥ नकस्याअशुभ
चित्य परनिंदाविनिर्मुखः क्वाचिन्हशरीरोपि शत्रुपक्षविरोधता ॥ तथापिसर्वसौख्यश्च सुपुण्यप्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव
सर्वथाकर्मकारणः पत्नीपुत्रमहाचिंता भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं इस कुण्डली का फल बहुत
उत्तम श्रेष्ठ था परन्तु पूरा फल देर से हो तीन ग्रह हानि कारक हैं सूर्य, मंगल और केतु इनका दान मन्त्र उपाय करने से
लाभ विशेष हो और भाग्य की वृद्धि होगी और यह जीव बड़ी इज्जत और प्रतिष्ठा पावे परन्तु इतने नोकिस ग्रहों का यत्न न
हो मध्यम फल हो और यत्न उपाय करने से अनेक प्रकार के लाभ हों और आनन्द मंगलाचार हों जीव की खुशी हो और
यह जीव बड़ी इज्जत कीर्ति पैदा करे मध्यम दशा में मध्यम लाभ और गुप्त चिंता अनेक प्रकार के खर्च एक अल्प से
बच कर नया जन्म हो और कहीं से अकस्मात लाभ हो यह जीव सब का भला चाहे एक मित्र से मिल कर लाभ हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

उञ्ची पदवी पावे शत्रु उपाय करे घर में क्लेश सा हो फिर मनोकामना पूरी हो हेशुक इस जीव का पञ्चम स्थान पूजनोक्त है
सब सुख देखे परन्तु विना उपाय पुत्रों के सुख से रहित रहे ॥ शुकोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्म
कथाकथ्यं श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता ऐसे कौन से खोटे कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो
पुत्रों के सुख प्राप्त नहों ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ मृगीपुत्र
न०जु० विलोकस्य क्षत्रीचापधारणम् दक्षिणेहस्तकंमाय मृगीपुत्रश्चमृत्युदा ॥ हाहाकारमृगकृत्वा पुत्रशोकोपिबूडनं मृगशापमुखंदत्वा
सप्तजन्मसुतहीनकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र पूर्व जन्म की कथा इस जन्म पत्र वाले जीव की तुम सुनो
६४ क्षत्री वंश में पूर्व से पूर्व जन्म में उत्पन्न हुवा सो शिकार खेलने गया तो इसने मृग का बच्चा मारा सो मृग ने दुखी हो शाप
दिया कि सात जन्म तक तुझे पुत्र का सुख नहो और पुत्रों के विलाप देखेगा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्र
किंजापकम् पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखभविश्यति ॥ भाषा ॥ शुकजी महाराज ने कहा हेपिता यह जीव कौन से दान मंत्र और
जाप करावे जो इस जीव को पूर्वका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र होकर जीवें और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥
भृगुवाच ॥ स्वर्णंचप्रतिमाकारः मृगमूर्तिलिपिकृतः ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ श्रद्धामात्रददेद्दानं अर्धरात्रप्रमाणकम् ॥
भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका बनवावे तिसपर मृगकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखे और शुद्ध करके घृतके भरे कलश
में मूर्ति गुप्त प्रवेश कर अर्धरात्रि प्रमाण दान करा कर श्रेष्ठ विप्रको देतो पुत्रका सुख निश्चय हो और मनोकामना पूर्ण होय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्येदंफलंदृश्य यथाभाग्यादिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवआशाविनिर्मुखः ॥ चिंतनंसुस्थिरंलोके
चञ्चलोचिवविशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चजायते ॥ नूतनंवार्तयाचित्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृश्यन्ते
विलम्बोजायतेपुनः ॥ क्लेशरोगेनपीड्यन्ते पुत्रशोकोपिचिंतनं लाभेशोपंचमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता ॥ फलश्रेष्ठसुखंप्राप्य सुपुण्यं
फलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण पुत्रचिंतानसंशयः ॥ बहुकृत्यमहलाभं सुजनानन्दवर्द्धन मित्रपक्षपरंप्राति आनन्दंभूमिमण्डले ॥
स०३० पितृपीड़ाग्रहयुक्त अकस्माद्भयदायकः पत्नीक्लेशनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः ॥ बंधुक्लेशविरोधश्च चंद्रपीड़ाविशेषतः अकस्मात्
६५ महाचिंता नान्यथावचनंमम ॥ गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधि तेनसौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं ॥ द्रव्यप्राप्तिविशेषेण
कुलबंधुचहर्षिता मध्यविद्याचप्राप्नोति भाग्यवृद्धिविशेषतः ॥ गुप्तलाभनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने पूर्वशापप्रभावेण पुत्रसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस पत्र का फल सुनो यह जीव ज्ञानवान् चतुर हो सब का भला चाहै भागवान् हो प्रसन्न रहै एक जीवको आस लगी रहै चित्त चलाय मानसा रहै और नई नई बार्ता सोचता रहे गुप्त चितासी हो जाया करे नये नये लाभहों कार्य की सिद्धि में विलम्बसा हो जाया करे और क्लेश पीड़ा होकर आनन्द हो पुत्रकी चिंता लगी रहे लाभेश और पञ्चमेश को पूजा दान से फल श्रेष्ठ और मनोकामना पूर्ण हो कृत्य में लाभ और मित्रों से प्रीत पृथ्वी पें आनन्द और पितृ पीड़ा का भय हो स्त्री को क्लेशसा हो किसी समय बन्धु या और शत्रुओं से विवाद दो अकस्मात चिंता हो जाय गायत्री मंत्र जाप करानेसे मन इच्छा पूर्णहो विद्या मध्यम और चतुर विशेषहो कहींस गुप्त लाभहो बहुतसी प्राप्तिहो हेशुक्र पूर्वपाप और शाप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

के कारण पुत्र का सुख नदेखे ॥ शुक्रोवाच ॥ शृणुतातकृपानाथ पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापं पुत्रसुखविनश्यति ॥
भाषा ॥ शुक्रजी ने कहा हेपिता कौन से पाप इस जीवने पूर्वजन्म में किये हैं जो पृथ्वी पर सब सुख देखे और पुत्रों के दर्शनों
को भटकता रहे सो कृपा कर कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते शृणुपुत्रोतिध्यानकं ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्मोपिकृत्यया ॥
गौबच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं वच्छोपिप्राणागवनं गौश्रापमुखंददेत ॥ दारुणादुखददेत्विप्र अग्रजन्मश्चभोक्तया पुत्रसुखविनश्यंति
स०उ० सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्म कुल में उत्पन्न हो कर खेती करता
९६ था सो रात्री को गौ और उसका बच्चा खेती में आघुसे तो बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह बछड़ा मृत्यु को प्राप्त हुवा
गौ ने विलाप कियां और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे मैंने बछड़ेका दुख देखा तैसे तूभी सातजन्मतक पुत्रों का दुख देखेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वंशापविनश्यंति पुत्रसुखञ्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा हे पिता कौन से
दान मंत्र जाप कराने से गौ का दिया हुवा शाप नष्ट हो संतान का सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गंगाजल
रक्तचंदनं गौबच्छतिआकारं तांदुलस्चेतगुप्तयां ॥ संकल्पंददेत्विप्रः मुखउच्चार्णमंत्रकं बटुकमंत्रकृतेजापं पूर्वशापविनश्यति ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुरस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्रस्वर्ण के पत्र परगौ के
बछड़े की मूर्ति रक्तचन्दन और गंगाजल से लिखे चावल का थाल भरकर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी
श्रेष्ठ ब्राह्मण कोदे और ऊपर लिखे मंत्र का श्रद्धा प्रमाण जाप करावे गायत्री मंत्र जपवावे तो पुत्र होकर जीवें मनोकामना पूर्णहो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं यथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्या चितचिंतातिमन्यते ॥ श्रमोपिजायतेदीर्घ ग्रहद्रव्यश्चन्यूनता विद्यावंतोसुबुद्धिश्च सर्वावस्थाप्रतिष्ठतः ॥ सत्यवक्तासुखीलोकं नकश्चितहानिचिंतकः परकृत्यरतोप्रेमी जनास्तेवें प्रशंसिता ॥ जीवचिंताविशेषेण मित्रप्रीतिबृहत्वया नूतनोवार्तयाचित्तं उद्यमेणधनाश्रयः ॥ कुलश्रेष्टसुभापीच सर्वेषांतोपणोरत

स०७० दशान्यूनमहाचिंता उद्यमेश्रमनिष्फलम् ॥ विलम्बोजायतेलाभम् अर्द्धकृत्यश्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्य पदउच्चमुपस्थितः ॥ विशेषोजायतेलाभम् मानकीर्तिविवर्द्धनम् पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनः ॥ पापक्रूरगृहापूज्यं पञ्चमेशोप्रयत्नतः दानमंत्र

६७ सुपुण्येन मनेच्छासर्वपूजिता ॥ सर्वावस्थामहलाभं भाग्योदयदिनेदिने अतश्चायुमहासुखं भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रप्राप्तिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी पत्री में गृह श्रेष्ट हैं लाभ खर्च विशेष हो लाभ के वास्ते नई नई बात का चिंतवन करे एक समय बुद्धि भ्रमसी हो घर में द्रव्य की न्यूनता प्रतीत पड़े विद्यावान् बुद्धिवान् हो इज्जत प्रतिष्ठा पावे सत्य बोलने वाला गुप्त चिंता सी हो जाया करे पराए काम सुधारने वाला लोग प्रशंसा करें मित्रसे प्रीत विशेष रहे नई नई बात का ध्यान धन की प्राप्ति का परिश्रम उद्यम करे न्यूनदशा में परिश्रम निष्फल हो अधूरा लाभ हो एक समय अकस्मात् लाभ विशेष हो उच्च पदवी पावे मान कीर्ति बढ़े स्त्री को पुत्र के न होने की चिंता लगी रहे और अन्त आयु सुख मिले हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्रों के सुख को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ श्रुत्वातातकृपानाथम् पुर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापम् पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता कौनसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाप इस जीवने पूर्व जन्ममें किये हैं जो पृथ्वीपर सब सुख देखे और पुत्रोंके दर्शनको भटकता रहे सो कृपाकर मुझसे कहो ॥
भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते श्रुणुपुत्रतिष्यानकम् ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्म्मासुकृत्यया ॥ गौवच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं
बच्छोपिप्राणगवनं गौशापसुखंददेव ॥ दारुणादुखददेविप्र अग्रजन्मचभोक्तया पुत्रसुखविनष्यति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्मकुलमें उत्पन्न होकर खेती करताथा सो रात्री को गौ और
१०७० उसका बच्चा इसकी खेती में आघुसे तो इसने बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह मृत्यु को प्राप्त हुवा तब उस गौने बड़ा
६८ विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे तैंने मेरे बछड़े को मारा और मैंने बछड़े का दुख देखा तैसे तूभी सात जन्म
तक पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपुजाच किंमंत्रंकिजापक पूर्वशापविनष्यंति पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्रजी
महाराज ने कहा हेपिता कौन से दान से और कौन से मंत्र जाप पुजा से पूर्व का गौ का दिया हुवा शाप नाश को प्राप्त हो
और यह जीव पुत्रोंका सुख देखे सो विधि पूर्वक कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गङ्गाजलरक्तचंदनं गौवच्छोतिआकारं
तांदुलस्वेतगुप्तया ॥ संकल्पंददेविप्रः मुखउच्चार्णमंत्रकम् बटुक त्रकृतेजापम् पूर्वशापविनष्यति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक
भैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुकुरुस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण के पत्र पर गौके
बछड़े की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और चावल का थाल भर कर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी
श्रेष्ट ब्राह्मण को दे और फिर ऊपर लिखे मन्त्र का श्रद्धा प्रमाण भक्ति पूर्वक जाप करावे तो निश्चय पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं विशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभागीच चित्तचिंताविशेषतः ॥ व्ययलाभविशेषेण सर्वावस्थासुमोदिता मात्रभग्निचप्राप्नोति अल्पसुखनसंशयः ॥ व्रणचिन्हशरीरश्च वायुखेदश्चपीडिका कस्मिन्कालउपाधीच बंधुपक्षविरोधता ॥ अकस्मात्उपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरेण महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभोभवतिनान्यथा ॥ युग्मविद्याचप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति मध्यप्राप्तिविजानीयात् व्ययदीर्घोनसंशय ॥ चन्द्रअल्पमहादुक्खं नर्वानोजन्मप्राप्तये आयुभोगंचपूर्वोगा भृगुणापरिभाषितः ॥ चन्द्रस्त्रीमहाप्रीति आनंदंभूमिमण्डले सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखविनश्यति ॥ पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रयोगश्च खण्डत मानसीविविधाचिंता भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ पूर्वपापप्रभावेण पूर्णवांछानदृश्यते पितृपीड़ाग्रहमध्ये श्रद्धामात्रश्चपूज्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ है गृह बलवान् पड़े हैं लाभ कारी और खर्च विशेष हो भग्नी और भ्राता का सुख मध्यम हो श्रेष्ट दशा में लाभ बहुत हो कीर्ति बढ़े शरीर में व्रण का चिन्ह कभी दर्द पीड़ा हो जाया करे और मित्र या बन्धु भ्रात से उपाधी हो अकस्मात् उपद्रव सा उठे शत्रुपक्ष से विरोध हो गुप्त चिंता सी हो जाय फिर बहुत सी प्राप्ति हो और इज्जत प्रतिष्ठा पावे दो विद्या का मध्यम योग हो ऊंचादर्जा पावे लाभ मध्यम हो किसी समय में खर्च विशेष हो एक अल्प आयु से बच कर उमर पूर्ण हो एक स्त्री से महा प्रीत हो कर एक जीव का ख्याल बना रहे हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्र की महा चिंता क्लेश स्त्री को रहा करे पूर्व पाप के प्रभाव के कारण पुत्रों का सुख कठिन है पितृ पीड़ा घर में हो गुप्त बीमारी हो अनेक प्रकार की चिंता हो सब सुख प्राप्त हों परन्तु पुत्रों का योग खंडत है पितृ पीड़ा को श्रद्धा मात्र उपाय भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करावे परंतु इच्छा पूर्ण विलंब से हो ॥ भृगुवाच ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः सर्वसुखश्चप्राप्नोति संततिवंशविनाशकः ॥
भाषा ॥ सूर्य वंश ऋषी पुत्र भृगुजी महाराज ने कहा हेपुत्र यह जीव सब सुख देखे परन्तु पुत्रों के सुख से क्लेशित रहे ॥
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मचभोतात पूर्वजन्मनिकथ्यते सर्वंचविस्तराद्ब्रुहि पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजी ने कहा हेपिता
पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म करे हैं जो सब सुख देखे और पुत्रोंके सुखसे रहित रहे सो पूर्व जन्मकी कथा कहो ॥
१०७० भृगुवाच ॥ सूर्यवंशसमुत्पन्न बहुसेवीनरोभवेत अश्वपतिगजग्रामी मानदीर्घोनसंशय ॥ तीर्थयात्रागवनकृत्वा मार्गेमध्यउपद्रवं
१०० अश्वश्वजीवइस्थित्वा अर्धरात्रिप्रमाणकम् ॥ ऋषिसुतवाटिकागच्छं अश्वचणातिमृत्युदा ऋषिपुत्रश्चहरयंते हाहाकारविह्वलं ॥
क्रोधोशापसुखंदत्वा त्रयजन्मोमतहीनक ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र प्रथम जन्ममें यहजीव सूर्यवंशीथा और बड़ाभागवान्था
हाथी घोड़े ग्रामथे तीर्थयात्रा करने जाताथा रुपयापायके अभिमान बहुत बढ़गया अर्धरात्रीको घोड़ेपर सवार होकर जाताथा रात्री
कासमय कुछ अभिमानमें अंधाहुवा जाताथा सोमार्गमें एक ऋषीका पुत्र खेलताथा उसके ऊपर घोड़ेका चरणआया तुरंत मृत्यु को
प्राप्तहुवा तब ऋषीने देखकर विलाप किया और शाप दिया किजैसेमें पुत्रोंके क्लेशमेंहुवा तैसे तूभी तीन जन्मतकपुत्रोंको भटकेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापप्रणाशंति वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दान जापसे शाप
नष्टहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकं ऋषिपुत्रलिखेन्मूर्ति सकल्पंब्राह्मणंददेव ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह
जीव श्रद्धाप्रमाण स्वर्णपत्र बनवाय उसपर ऋषीपुत्र की मूर्ति लिखाय विधिपूर्वक श्रेष्ठ ब्राह्मणको दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मपत्रफलेश्रेष्ट मध्ययोगश्चप्राप्तये तेजस्वीचप्रतापीच बुद्धिवानविशेषतः ॥ मध्यलाभनसंदेहो लाभईशपूजनं दीर्घज्ञानसमायुक्तो सुशीलोजीवदर्शनं ॥ दीर्घआयुसुयत्नेन बृहत्योफलप्राप्नुयात् आदपठनश्चविद्यायां अंते विद्याविसार्जनम् ॥ बहूविद्यानप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति कस्मिन्कालेमहापीड़ा औषधिप्रतिशांतये ॥ पशुजलभयजीव नवीनोजन्मप्राप्तये भाग्यवृद्धि विशेषेण आनन्दंभूमिमण्डले ॥ शत्रुपक्षविरोधीच गुप्तचिंताशरीरजं भ्रातभगिनसमायुक्तो भृगुणापरिभाषितः ॥ तेजस्वीप्रतापीच
८०८० सूरवीरमहोत्तरः पत्नीप्रीतिनसंदेहो बुद्धिचितचलायनं ॥ पुत्रहेतुकृतेयत्न दुर्लभसुतजीवः पत्नीगुप्तमहाक्लेश भृगुणापरिभाषितः
१०१ चौरभीतिविजानीयात् गुप्तशत्रुप्रहारकं धनव्ययविशेषेण अन्तशत्रुविनाशनं ॥ महाप्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्ष महाप्रीति गुप्तप्रीतिचलोकमा ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदर्शन ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस पत्र का फल श्रेष्ट है और मध्यम योग है यह जीव इज्जत प्रतिष्ठा वाला ज्ञानवान और सूरवीर, तथा सोच समझ कर बात कहने वाला मध्यम लाभ हो लाभेश के पुजन से विशेष प्राप्तिहो विद्या कार्य मात्र हो एक समय अल्प से नया जन्म हो पशु या जलका भय हो शत्रु पक्ष से विरोध गुप्त चिंता हो जाय बहन वा भाई का योग हो घर में कभी क्लेश गुप्त पीड़ा हो पुत्र के वास्ते यत्न करे परन्तु जीव ने दुर्लभ हों घर में स्त्री सुशील श्रेष्ट खान दान की चतुर हो दूसरी स्त्री से भी प्रीत हो एक समय गुप्त शत्रु और चोर का भयहो हानि पहुंचावे परन्तु अन्तमें शत्रु का नाशहो भागकी वृद्धिहो लाभ विशेषहो मित्रोंसे प्रीतहो शुभ काम में धन खर्चहो भाग्य दिनदिन उदयहोय हेशुक्र यहजीव पुर्व पापके कारण पुत्रोंको भटकता रहे पश्चात्में दान मंत्र उपायसे हो कर जीवें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मांतरंतात गाथाकथ्यंममप्रति ॥ भाषा ॥ इस जीव ने कौन से
पाप कर्म किये हैं जो यह पुत्रों का सुख न देखे इस जीव के पूर्व जन्म की कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं
पूर्वपापश्चकारणः राजपुत्रकुलेजन्म लक्षाद्धिभुविमण्डले ॥ हरिद्वारगवनंकृत्वा रथवाबाहनोदिपः बहूविप्रसहितपुत्रो कावेरीतट
वासकं ॥ वृषभदीर्घ चरंमार्ग द्विजपुत्रभयंवधो मृत्युपुत्रदशाविप्र हाहाकारविव्हल ॥ राजपुत्रददेतशापं अतिक्रोधोपिव्रुडनं
स०७० पुत्रक्लेशमहाशोक सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हे पुत्र यह जीव एक जन्म में राज पुत्र था सो बड़ा
१०२ अभिमानी था हरिद्वार पै जाय पराई स्त्रियों को खोटी दृष्टी से देखता था सो रथ में बैठ के गया गङ्गाजा के किनारे बहुत
से ब्राह्मण स्त्री पुत्र सहित बात करते थे सो अंधाधुन्ध रथ भगाया सो एक ब्राह्मण के दो पुत्र बाल अवस्था के रथ के पईये के
नीचे आन कर मृत्यु को प्राप्त हुवे सो ब्राह्मण पुत्रों की मृत्यु देख राज पुत्र को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक
पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किमन्त्रंकिजापकम् द्विजशापप्रणश्यति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हेपिता
यह जीव कौन से दान जाप करावे जो पूर्व जन्म का ब्राह्मणका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र पोतेके सुख देखे ॥
भृगुवाच ॥ शृणु त्रमहादान वंशवृद्धिचकारयेत स्वर्णपत्रमहाश्रेष्ठ कावेरीजलशुद्धयो ॥ रक्तचंदनमिश्राणि घृतपात्रश्चगुप्तया गायत्री
मंत्रजाप्यंते चंद्रलक्षप्रमाणकं ॥ संकल्पंपदेत्विप्र लोनपात्रद्विजोत्तमः वस्त्रआभूषणंदानं निश्चयपुत्रप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र
स्वर्ण पत्रपर रक्त चंदनसे ब्राह्मणके दोपुत्रों की मूर्ति लिखे घृतभरे कलश में प्रवेशकरे विधिपूर्वक ब्राह्मण को दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगे नरोजन्म आनंदं भूमिमंडले सत्यवादी भवेत्बालो भृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयो प्रमादोप्रसवःपुमान् देवद्विजरतोनित्यं मानकीर्तिविशेषतः ॥ बुद्धिर्दीर्घ आयुस्याद मत्कीर्ति कुलवर्द्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोवार्तथा चितः ॥ चन्द्रमित्रपरमप्रीति चित्तवृत्ति आशक्तया दीर्घकार्योपि आगत्वा सर्वसुखंव्यतीततः ॥ अकस्मात् उपद्रोवा कस्मिन् कालशांतये चन्द्रअल्प नसन्देहो नवीनोजन्म प्राप्नुय ॥ कुलबन्धु महाचिंता प्राणोभय भविश्यति दान
सं०उ० मन्त्रश्चकर्तव्यं औषधी प्रतिशांतये ॥ व्रणव्याधी शरीरेच चिन्हदेहोपिदृश्यते युवाआयु नसन्देहो धनप्राप्तिभविष्यति ॥
१०३ अतितेज प्रतिष्टोवा भाग्यवृद्धि दिनेदिने वामचिंता महाक्लेशं अल्पगर्भोच खण्डतः वंशवृद्धि नदृश्यंते गुप्तचिंता महानकं पित्रश्च देवपुजाच नेकयत्नश्च कारयेत् ॥ सुतःपुत्रस्व विनश्यन्ति भृगुवाक्यं नचान्यथा सर्वानन्द भोक्तव्यम् वंशवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र इस जीव की कुण्डली में ग्रह श्रेष्ठहैं सत्यबोलने वाला परमार्थी पराये काम मनसे करे सबका प्यारा देव ब्राह्मणों का मानने वाला इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे विद्या से बुद्धि विशेष हो श्रेष्ठ कुल वाला सुन्दर नई २ बात सोचे एक मित्र से प्रीति हो चित की वृत्ति आशक्त हो जाय लाभ मध्यमहो परन्तु बड़े २ काम खर्च के आवें सब आनन्द से पूरे उतरें एक समय अकस्मात उपद्रव हो एक अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो कुलबंधु चिंता कुछ विरोध प्राणका भय हो मंत्र औषधि से आरामहो फोड़ेका चिन्हहो युवा अवस्था में धन प्राप्तहो प्रतिष्ठा बढ़े भाग्य की वृद्धिहो स्त्रीको क्लेश बिना पुत्रोंके ध्यानमें दुखीरहे पुत्र नहो जोहो तो अल्प जीवी हो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सो हे शुक्र यह जीव पर सुख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखसे रहित रहे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भृगुवाच ॥ केनकर्मविपाकेन अग्रवंशविनाशकः पूर्वगाथाकथंतात श्रुणुत्वंमनवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव के
पूर्व जन्म की कथा वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ जटिलवंश कुलेजन्म धनधान्या भविश्यति अश्वपति गजग्रामीच
उच्चपदवी प्रधानक ॥ चापवाण गटीद्धार गवनखेटानु सारिणः मयूरासहितेवाल वनखंडा किलोलकं ॥ प्रधानोजटिलं
न॰ बाण संधानकंकिया मयूरोपुत्रकं वद्धो हाहाकार विलापन ॥ मयूरोश ॰दत्वा अतिक्लेश दुखदारुणः ममपुत्र
स०३० महाशोकं सप्तजन्मत्वयाप्रभो ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जाट वंशमें यह जीव प्रथम एक जन्ममें उत्पन्न हुवा था भाग्यवान
धनवान हाथी घोड़े गांव सब थे उच्चपदवी वाला प्रधान था सो शिकार खेलने गया जंगल में मोरके बच्चे मारे मोरने
१०४ बच्चों की मृत्यु देख शापदिया कि चौधरी प्रधान जैसे मुझे बच्चे का दुख दिया तैसे तूभी सात जन्म पुत्रोंका दुख देखे ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्रं किंजापकं मयूरो श्रापकंनष्टः सुपुत्रो भूमिमंडले ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे
दानमंत्र जाप करानेसे पूर्वजन्मका पापनष्टहो और पुत्रों के सुख यह जीव देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्र लिपिकृत्वा
युग्ममुद्राप्रमाणकं मयूरोपुत्रकंकार चित्रंतेविधिपूर्वकं ॥ रक्तचन्दन मिश्राणि गंगाजलस्नानकं षटरसदानसहितो गायत्री
मूलमंत्रकं ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन श्रद्धामंत्रजापकम् पठितविप्रददेत्दानं मुखउच्चार्णं मंत्रकं ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वटुकभैर
वाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवार्णार्थं स्वर्णमयूरदान कुरुकुरु स्वाहा ॥ इदंदानं कृतेसन्त मनवांछित फलप्रदा ॥
भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्ण का पत्र दो मुद्रा प्रमाण बनावे फिर उस पर रक्त चंदन से मोर की मूर्ति
लिख गायत्री लक्ष प्रमाण जपवावे सकल्प करके पढ़े हुवे श्रेष्ठ ब्राह्मण को देतो निश्चय कर के पुत्रों के सुख देखेगा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहा विराजत्वा श्रेष्ठपत्री सुखीनरः सुदशा फलप्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः ॥ पापक्रूर ग्रहापूजा क्रियतेफल प्राप्नुयात भाग्यवृद्धि विशेषेण मनवांछित फलप्रदा ॥ ग्रहापूजा नकर्तव्यम अर्धप्राप्ति नसंशयः चन्द्रस्त्री महाप्रीति आनन्द अति ध्यानकं ॥ आदिपठनश्च विद्यायां अन्तविद्या विसर्जनं बहूविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रश्च सिद्धति ॥ अष्टमेथादशे वर्षे बालवृद्धि दिने दिने तातधन शुभकार्य विवाहोत्सव मंगलम ॥ सप्तचन्द्र मितेवर्षे सून्यराम मितेतया भाग्यवृद्धि
सं०७० विशेषेण धनप्राप्तिनसंशयः ॥ देहकष्ट विजानीयात् औषधि प्रतिशांतये गुप्तचिंता शरीरेच शत्रुपक्ष विरोधता ॥ युग्म
१०५ अल्पगतेकाव्य पूर्णआयु नसंशयः व्ययदीर्घ विजानीयात छत्रचिंतान प्राप्तये ॥ गुप्तचधन प्राप्नोति कस्मिन् कालेन संशयः पत्नीगर्भश्च स्थित्वा अल्पजीवीच बालकः ॥ आदहर्ष विजानीयात पश्चाते शोकबूडनं सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रसुख विनश्यति ॥ बामचिंता महाक्लेशं भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जीव की कथा सुनो पत्र श्रेष्ठ है स्वदशा में फल अच्छा करेंगे पाप और क्रूर ग्रहों का मन्त्रजाप कराना श्रेष्ठ है भाग्य की वृद्धि होगी मन इच्छा पूर्ण होगी इतने पाप ग्रहों के दान मन्त्र न बनेंगे अधूरी लाभ होगी यह जीव बुद्धिवान् अक्लमन्द सूरमा दूसरे की बात को तोले सत्य झूठ को पहचाने धीरज धारी विद्यापूर्ण नहो परन्तु पढ़ों से भी ज्यादे प्रतिष्ठा हो ८ वर्ष से १८ तक विवाह स्त्री प्राप्त तात का धन शुभ काम में खर्च हो १७ वर्ष से ३० तक भाग्य की वृद्धि हो धन की प्राप्ति हो शरीर में कुछ खेद हो औषधि से आराम हो शत्रु पक्ष से विरोध हो कष्ट अल्प भुगत कर आयु पूर्ण ७२ वर्ष की हो खर्च विशेष हो छत्रचिंता [illegible] समय गुप्तधन की प्राप्ति हो पत्नीगर्भ धारण करे अल्पजीवी बालक हो माता पिता को दुख दिखावे हे शुक्र इस जीव को पृथ्वी पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुख हो परन्तु पुत्रोंके सुख को भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनपाप प्रभावेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथा
कथ्यं उचारण विधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ ठाकुरवंश कुलेजन्म बहुसेवी नरोभवेत् कोटपति गजग्रामीच बन्धुकुल
विरोधता ॥ ज्येष्ठभ्रातश्च पुत्रोवा अर्धभागीच बालकः तातमृत्यु भवेल्लोके सुमाता देवपूजनं ॥ ठाकुरं लोभकं कार्यं भ्रात
पुत्रश्चमृत्युदा माताच देवमन्द्रस्य दीर्घशाप मुखंददेत् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस जीव का पूर्व एक समय में ठाकुर वंश में
स०३० जन्म हुवा था सो हाथी घोड़े ग्राम बड़ा धनवान था सो बड़ा भ्रात एक पुत्र छोड़ के मृत्यु को प्राप्त हुवा और
१०६ उसकी स्त्री देवताओं के मन्द्र में पूजा करने लगी सो उस ठाकुर का आपस में हिस्सा बांटने में बहुत विवाद बढ़ गया
आखीर अन्त में ठाकुर ने अपने बड़े भ्रात के पुत्र को नष्ट करा दिया तो उसकी माता ने देवमन्द्र में जाय के बहुत रुदन
किया और शाप दिया कि तूभी सात जन्म तक बारंबार भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्र
किंजापकं बन्धुमुखंशापं सर्वपापश्चनष्टकं ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमन्त्र जाप कराने से पूर्वजन्म का पापनष्ट
हो और यह पुत्रोंके सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकारं सप्तटंकप्रमाणकं नराकारोलिखेन्मूर्ति गंगाजल
स्नानकं ॥ गायत्री मन्त्रकंजापं अर्धलक्ष प्रमाणकं मन्त्रमन्तानगोपालं श्रद्धामात्र कं तथा ॥ देवकीसुत गोविंद वासुदेव
जगत्पते देहिमेतनयंकृष्ण त्वामहंशरणंगतः ॥ श्रेष्ठविप्रदंदेत्दानं सर्वशापविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा पुत्र
स्वर्ण का पत्र सातटंक प्रमाण बनवावे तिसपर नर आकार मूर्ति चन्दन से लिखे तिसे विधि पूर्वक संकल्प करावे
और मंत्र गायत्री ५१ हजार और संतान गोपाल बहुतसा श्रद्धा प्रमाण जपवावे तो पुत्र होकर जीवें आनन्द भोगे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्यमागी सुखीलोके
श्रीगणेशायनमः ।। पत्रस्थित्वा ग्रहाचेदं बलवीर्य समन्वितः उद्यमेन धनंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः ।। मध्यमागी सुखीलोके धनप्राप्तिपरिश्रमः कार्यकृत्यविशेषेण उच्चपदवीचप्राप्तये ।। पूर्वपाप ग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं अतस्तेषां तुशांतिश्च कर्तव्याहि विनिश्चितम् ।। अनुष्ठान महादान सर्वसौख्य प्रदसदा गुप्तचिंता विनश्यन्ति मनिच्छा पूरितंततः ।। विद्यामध्यमाप्रीति आल क्रीड़ा किलोलकं मित्रपक्ष परंप्रीति आनन्द भूमिमण्डले ।। तातधनं शुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं पत्नीप्राप्ति नसंदेहो विंद्यादीर्घप्राप्तये ।। सत्यवादी प्रवक्ताच नवीनो चिंतनंकृते जलंपशु भयंलोके शत्रुपक्ष विरोधता ।। नवीनो कार्यकंकृत्वा
सं० ३० धनलाभ भविष्यति युवावस्थाच प्राप्नोति आनन्दभूमि मंडले पत्नीप्रीत सुखीलोके विद्यापठनंपाठनं बन्ध्यायोगश्च
१०७ प्राप्नोति अल्पगर्भोपि खण्डतः ।। वामचिंता विशेषेण पुत्रसुखंनदृश्यते पूर्वपाप प्रभावेण वंशवृद्धि विनश्यति ।। सर्वसुखश्च भोक्तव्यं सुतरहितोनसंशयः ।। भाषा ।। भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव ५परिश्रमी और पुरुषार्थी हो भाग्यश्रेष्ठ मध्यम हो अच्छे काम करे नीचसे चो पदवी पावे परन्तु पापक्रूर ग्रहोंके कारण किसी समय में गुप्तचिंता बुद्धिभ्रम चित स्थिर नरहे सोचे और होय और अधूरालाभ हो ग्रहोंके उपायसे मनोकामना पूर्णहो चिंताका नाशहो विद्याका उन्नति मित्रसे प्रीत बहुत बनी रहे एक जीवकी आशामें मनरहे पिताका धन शुभकाम में खर्चहो स्त्री श्रेष्ठकुल की हो पुत्र के सुख को भटके हे शुक्र यह जीव बड़े २ मामले देखे बहुतों के काम निकाले दयावान प्रेमप्रीत करने वाला किसी का बुरा न चाहे सबका भला चाहे अल्प आवे सो नया जन्महो फिर आयु पूर्णहो परन्तु इतने पूर्व पापके उपाय न बने इतने हे शुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पुत्रका सुख स्वप्न मात्र नहो ।। शुक्रोवाच ।। किंकर्मानुसारेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथासर्वं कथ्यन्तंमुनि सत्तमः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषा ॥ हे पिता कौन से कर्म करे हैं इस जीव ने जो सारे सुख दुःख देखे और पुत्रों के सुख से रहित रहे सो वर्णन करो ॥
भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्र कथासर्वं कथ्यन्ते विधिपुर्वकम् वैश्यवंश कुलेजन्म अतितेजो प्रतिष्ठा ॥ लोकंलक्ष पतिख्यातो
बहुदासी निजकृत्यये हटवा अन्न व्यापारे अकालो दीर्घभूमिक ॥ क्षुधातुर ब्रह्मणपुत्र अन्नलब्धश्च प्राप्तये वैश्यति क्रोधकं
कृत्या ब्रह्मपुत्रश्च ताडयेत् ॥ लष्टमुष्ट प्रहारेण द्विजपुत्रश्च मृत्युदा पुत्रमृत्यु दृश्यंतात कठिन शापिकंददेत्व ॥
स०उ० भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्र प्रथम एक जन्म में यह जीव वैश्य वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा धनवान् था अन्न का
व्यापार बहुत करता था एक समय अतिकाल पड़ा सो सहस्रों कंगले अन्न के अ॰ फिरते थे इसकी दूकान पर दो ब्राह्मण के
१०८ पुत्र याचना करने आये उससे विवाद हुवा इस वैश्यने क्रोधवशहो दोनोको मारा धक्के मुक्के में उनके प्राणगये तब उनके पिता
ब्राह्मण ने दो पुत्र मृतक देखे सो हाहाकार विव्हल होगया और वैश्यको शाप दिया कि तूभी बारम्बार तीन जन्म तक
पुत्रों का दुःख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ कियत्ने कुरुतात पूर्वशाप निवार्णं जाप्य पूजा महादानं क्रियते पुत्र सुक्खकं
भाषा ॥ हे पिता कौन से यत्न करे जो पूर्व शाप नष्टहो और दान मंत्र पूजा उपाय करने से पुत्रों का इस जीव को सुख प्राप्त हो
भृगुवाच ॥ स्वर्णश्चप्रतिमांचैव अष्टमाशाप्रमाणकी द्विजपुत्रलिखेन्मूर्ति गंगाजलस्नानकं ॥ ताम्रपात्रश्च घृतंमध्ये स्वर्णमूर्ति
प्रवेशकं मध्यकालप्रमाणश्च संकल्पब्राह्मणांददेत् ॥ श्रेष्ठविप्रपठंविद्या शुभदानोफलप्रदा पुत्रप्राप्तनसन्देहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्णका पत्र ८ माशे प्रमाण बनवावे ब्राह्मणके पुत्रोंकी मूर्ति रक्त चन्दनसे लिखे तिस को तांबेक
कलशमें घृत भर कर गुप्त प्रवेश करे संकल्प करके श्रेष्ठब्राह्मण कर्मेष्टिकोकोदे गायत्री मन्त्र जपवावेतो पुत्रोंकी प्राप्तिहो शाप नष्टहो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ अस्यश्लेटानुसारेण नरोजन्म भुवितले बालवृद्धि भवेल्लोके आदिक्रीडा यथाक्रमम् ॥ कालानुसारविद्याच मन्त्रौषधीचकारयेत् तीक्ष्णबुद्धिरिपोर्हंता मध्यभागीसुखान्वितः ॥ प्रलापीशीलवानज्ञेयो विवलश्चकलिप्रियः सुन्दरश्चपलोबाल यस्य जन्मश्चमोदिना ॥ राजद्वाराधनप्राप्ति विद्याभूषणभूषितः रूपवान्गुणसंपन्नो मासेव सुखगताः ॥ सवलंदीर्घदेहश्च तमोगुणविशेषतः प्रतापीसुखदःमर्वे हेमरत्नोर्विभूषितः ॥ सकामश्चपलोबाल सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्ता रिपुद्रोही गुप्तचिंतान्वितोभवेत् ॥

स०उ० वाहनादिसुखंजाते तस्यतेरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्च बुद्धिश्रेष्ठसुनिर्मलः ॥ श्रेष्ठग्रहोपिजन्मश्च सिंहतुल्यपराक्रमः बहुभृत्य

१०६ समायुक्तो सुकार्यकुशलंलभेत ॥ मातृपितृगुरुभक्त सुपवद्राजतेनर द्विजदेवार्चनोप्रीति रिपोपिदासवच्चरेत ॥ भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातभूतले ॥ धनपूर्णो तृषायुक्त सुशीलश्चतुरोधनी बहुपीडा मनोद्वेग बंधुवर्गव क्लेशता ॥ चन्द्रमित्र महाप्रीतिः आशक्तोतिमोहितम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जन्म पत्री में जो ग्रह विराजमान हैं तिनका फल कहता हूँ सोतू चित स सुन यह जीव विद्यावान् चतुर मंत्र औषधी भी करता रहै तीक्ष्णबुद्धि हो शत्रुओं को जीते मध्य भागी सुखी हो शीलवान् भोला अल छल न जाने राजद्वार से भी प्राप्तिहो रूपवान् गुणवान् हो अच्छे वस्त्र आभूषण भी जावें चञ्चल काम देव के जोर में उन्मत्त हो जाया करे मीठा बोलने वाला श्रेष्ठकुल एक मित्र से प्रीत गुप्त हो मगन रहै सूरवीर पराक्रमी बहुत से कारवार करे धन पैदा करे बड़े २ उद्योग करतारहै कष्ट बीमारीहो परन्तु आयु पूर्ण हो एक जीवका दुख देखे स्त्री को पुत्रकी चिंता क्लेश बनारहै प्रथमतो होने कठिन जो होयतो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सब सुख पृथ्वी पर देखे परन्तु पुत्रों का सुख खण्डित है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

शुकोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रयोगश्चखंडितः पूर्वजन्मकथंतातः कथ्यतेविधिपूर्वकम् ॥ भाषा ॥ शुक देवताने प्रार्थना
करी हे पिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म किए हैं जो पुत्रोंका योग खंडित आनके पड़ा सो विधि पूर्वक कहो
भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्नो राजमंत्रीमहाधनी ॥ लोकश्चधेनुविख्यातो अतिसूरोसुलीश्वरः
बाणवाण कृतेशरण गवनखेटानुसारेण ॥ मृगबाण बधोक्षत्री साधुपुत्रश्चमृत्युदा मृतकपुत्र हश्यंतात हाहाकार विह्वलं ॥
 साधुशापमुखदत्वा त्रियजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेशुक यह जीव क्षत्री कुलमें एक जन्म में जन्मा था सो बड़ा बुद्धि
 मान् धनवान् राजमंत्रीथा सो शिकार खेलने गया इसने जंगल में जाकर दूर से देखा तो मृग दृष्टी में पड़ा सो इसने तीर मारा
हिरन तो बच गया एक साधु दो बालकों को साथ लिये जाता था सो क्षत्री के बाण से दोनों साधु के शिष्य मृत्यु को प्राप्त
हुवे तब पश्चात् साधुने मृतक बालक देख बड़ा दुख माना और क्षत्री को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों
का दुख देखेगा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं साधुशापविनिर्मुक्तो पुत्रजीवीनसंशय ॥ भाषा ॥ शुक जी
ने कहा कौनसे दान मंत्र जाप करनेसे पूर्व जन्मका दिया हुवा साधुका शाप नष्टहो और पुत्रों की प्राप्तिहो तब भृगुजी ने कहा ॥
भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाचैव युग्मसुद्राप्रमाणकं रक्तचन्दनमिश्राधि गङ्गाजलस्नानकं ॥ वस्त्रआभूषणंदानंयुग्मबालश्च
मूर्तये संकल्पश्चददेत्विप्र पूज्यंतोविधिपूर्वक ॥ इददानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिर्नसंशय ॥ भाषा ॥ हेपुत्रस्वर्णके पत्रपर दो मूर्ति साधुके
बच्चोंकी लिखे और स्वर्णका पत्र दो मुद्राभर प्रमाणसे हो वह वस्त्र आभूषण सहित दानकरे तो निश्चय करके पुत्रोंके सुखदेखे ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पुत्रस्थितग्रहाएते भाग्यशालिश्चसुन्दरः ॥ पितृवाक्यकरोबालः भृगुणापरिभाषितः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति आनंदभूमि
मंडले विचित्रोवार्तयाकथ्यं कामक्रीडाकिलोलकृत ॥ भ्रातभग्नीचउत्पन्न अंतवंधुविरोधता भूमिलाभनसंदेहो गुप्तचिताशरीरजा ॥
मित्रपक्षेपरंप्रीति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रअल्पविजानीयात् नवीनोजन्मप्राप्तये ॥ आदौपठश्वविद्यायाः अंतविद्याविसार्जनं
बहुविधा नप्राप्नोति कार्यमात्रश्वसिद्धति ॥ द्विभार्यायोप्राप्नोति गुप्तप्रीतिनसंशयः उपद्रवीअकस्माश्च भयचिंताविशेषतः ॥
कु०उ० संतोषीधैर्यधारीच ज्ञानवांश्चसुखीनरः कस्मिन्कालभोकाव्य प्राणांभयतिचिंतया ॥ जलोपशुभयंपुत्र भृगुवाक्यंनचान्यथा
१११ दीर्घकष्टविजानीयाद् औषधीमंत्रशांतये ॥ छत्रचिंताभविष्यंति धनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतिचपराजयः ॥
नवीनोवार्तयाचित्त अर्धप्राप्तिचदृश्यते सर्वसुक्खश्चदृश्यते पुत्रसुखंविनश्यति ॥ अतिक्लेशमहाचिंता पत्नीकष्टविशेषतः ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव भाग्यवान् सुन्दर पिता की सम्मति वाला गुणवान् शीलवान् पृथ्वी पर आनंद देखे तरह २ की बात ध्यान से सोचे मित्रों से प्रीत, और भाई बहन भी हो परन्तु पीछे अभाव शत्रुतासी हो जाय भूमि से लाभ हो गुप्त चिंता बनी रहै एक जीव से विशेष ध्यान रहै चित्त दुख माने एक समय नया जन्म हो प्राण बचे दूसरा स्त्री से भी प्यार हो विद्या बहुत पूर्ण तो नहो परन्तु कार्य मात्र बहुत हो संतोषी धीरज धारण करने वाला ऋण का जोग होय खर्च विशेष छत्र की चिंता बड़ेकी मृत्यु हो शत्रुओं से विवाद होजाया करे शरार में पीड़ा हो जाया करे पितृ पीड़ा का उपाय करता रहै पुत्र के वास्ते स्त्री यत्न करे परन्तु पूर्व पाप के कारण पुत्र का सुख देखना बहुत कठिन है भटकता रहै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन संततवंशविनाशकः पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ शुक्र जी बोले हेपिता इस जीव ने पहले जन्म में कौन से पाप किए जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटकता रहै ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वंपापञ्चकथ्यते वैश्यवंशकुलेजन्म रसत्यागीचवाणियो त्रियसर्पगृहवासं तातपुत्रोत्तिनागकं ॥ गृहदेवकुरुरक्षा वैश्यलप्रहारकं नागपुत्रद्वयंमृत्यु अतिक्रोधोउपद्रवं ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र तूसुन मैं इस

ब०उ०
११२

जीव की एक पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ यह वैश्यकुल रसत्योगी बणिया था सो इसके घर में ३ सर्प पिता पुत्र रहते थे सो बणिया बहुत साहुकार था देवता के नाम के दूध पेड़े वस्त्र पहरात था फिर एक दिन दो सर्प के बच्चे वहीं इसके रसोई के चौके में फिरते थे इसने किसी की सम्मति से दोनों को लट्ठों से मार दिया तब सर्प ने दोना बच्चे मरे देख वैश्य को शाप दिया कि तुम भी सात जन्म तक पुत्रों के त्रास भुगतोगे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं सर्पशापविनश्यंति वैश्यपुत्रसुखंलभेत् ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजीने कहा हेपिता कौनसे दान पुण्य यत्न करने से इस जीवका पूर्व शाप दिया हुवा नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्य पतिमाचैव तृयमुद्रा प्रमाणकं तन्मध्येकामबीजञ्च रक्तचन्दनमुलिखेत् ॥ वस्त्रआभूषणंदानं षटरसअन्नकंददेत् संकल्पददेत्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं ॥ सर्पशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखंभविष्यति ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका पत्र तीन मुद्राभर प्रमाणका बनवावे लाल चन्दन से दो सर्प की मूर्ति विधिपूर्वक लिखे वस्त्र आभूषण षटरस अन्न दान करे तो शाप नष्ट हो और पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द. २९६४

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रेग्रहाःस्थिताएवं दीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहो चित्तोदारसुपुत्रवान् ॥ यशस्वीगुणवान्जीवो
सत्कीर्तिसुतनष्टकं अल्पविद्याचप्राप्नोति बुद्धिवांश्चविशेषतः ॥ गुप्तचिंताचप्राप्नोति चतुरोवामश्रेष्ठया भागवान्गुणसंपन्नो पत्नीप्रीतो
भविष्यति ॥ अकस्मातउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः प्रमेहव्याधिकंदेहं शीघ्रोवीर्यस्यखंडकः ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधिप्रतिशांतये
पितृपीडाग्रहेनित्यं मातृदैवश्चपूजनं ॥ वंशवृद्धिनदृश्यंते गर्भअल्पश्चखंडतः वंध्यायोगश्चप्राप्नोति सुतचिंताति व्याकुलः ॥
स०७० बहुयत्नश्चकर्तव्यम् पुत्रसुखंनदृश्यंते महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभप्रीति दिनेदिने ॥ ग्रहकष्टशरीरेच रेचनंव्याधिरक्तय
११३ कस्मिन्कालेमहल्लाभं भाग्यवृद्धिनसंशयः ॥ उच्चपदवीचप्राप्नोति प्रसिद्धोधेनुलोकमा व्रणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यदृश्यः ॥
मासेवर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा शाणार्थनपुत्रंतात पूर्वपापमहानकं ॥ सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति सुत्सुखस्वप्नदृश्यः ॥
भाषा ॥ भृगुजो महाराज शुक्रदेवता से कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी कथा वर्णन करते हैं सो सुनो यह जीव भाग्यवान् होय चित्त उदार हो सन्तान से रहित होय कीर्तिवान् हो गुणवान् हो और विद्यावान् भी हो परन्तु विद्या से बुद्धि विशेष हो गुप्त चिंता किसी समय में हो जाया करे इसकी स्त्री भाग्यवान् चतुर श्रेष्ठ कुल की हो प्रीति करने वाली शुद्ध चित्तहो एक समय अति विघ्न हो उसमें कुछ हानहो और किसी काल में शरीरके बीच में प्रमेह व्याधि हो शीघ्र वीर्य खंडतहो उपाय करने से औषधियों से आराम हो जाय घर में पितृ पीड़ा हो माता सीतला देवताओं के निमित्त सब कुछ करे परन्तु पुत्र का सुख नहो वा होके दुख देजावे बंध्या योग गर्भ खंडत उत्पन्न होके जाता रहै कई प्रकार की बंध्या हो हैं और आगे को सारी उमर लाभ प्राप्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अच्छी हो परन्तु पुत्र का सुख स्वप्न में भी न हो हे पुत्र इस जीव ने पूर्व जन्म में दीर्घ पाप करे हैं ॥ शुकोवाच ॥ केनकर्म विपाकन पूर्वजन्मनिकथ्यते पुत्रक्लेशभविष्यंति श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव ने कौन से खोटे कर्म प्रथम जन्म में करे हैं जो पुत्रों से क्लेशित रहै और वंश न चले सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रुणुपुत्रतिध्यानक शूद्रवंशकुलेजन्म मीनकरोतिकृत्यया ॥ जलजीववधोनित्यं मच्छकृत्यंधनंलभेव तिहिपापफलंप्राप्ति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हे शुक पूर्व जन्म में
 यह जीव शूद्र वंश में उत्पन्न हुवा और मछली जलचर जीवों को जाल में फांसकर लाता नगर में वेचता था सो लक्षों जीव
 का विध्वंस किया और बहुत सा धन प्राप्त किया परन्तु मूर्खों को अन्न बहुत बांटता था तिस कारण अच्छे कुल में उत्पन्न होकर पुत्रों का दुख देखे ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्णपापप्रणश्यंति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मंत्र जाप से ऐसे महापाप की शांति हो और पुत्र होकर जावें जो वंश की वृद्धिहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ रामनाम लिपिकृत्वा विप्रलेखधनंददेत् बहुअन्नवसंग्राही गोधूमन्नचूर्णकं चंद्रलक्षप्रमाणेन गुटिकारामअंकितः हरिद्वारीकुशावर्ते अथवा तीर्थतालकं रामांकितंददेत्थाम मीनदीर्घंचभोजनं स्वर्णंचदक्षिणाविप्रो बहुमिष्टान्नभोजनं दीर्घदानकुरुजीव पुत्रसुखंभविष्यति ॥ ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी महाराज ने कहा हे पुत्र बहुत सा अन्न गेहूं लाकर पिसवावे और एक लक्ष प्रमाण रामनाम की गोली बनवाकर हरिद्वार या कुशाघाट या तीर्थ तालाब पर जहां कहीं बहुत सी मच्छी हों तहां रामनाम उच्चारण हर गोलीके साथ कहता जाय जल में प्रवेश करता जाय और ब्राह्मणों को जिमाया करे कुछ दक्षिणा स्वर्ण की देतो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजाता सुकुलंमानवर्द्धनं जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखंगत ॥ दंतव्याधाज्वरोजाता
रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षयथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमं वृणव्याधीमहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये ॥ भ्रातयोगश्चप्राप्नोति भृगुणापरिभाषितः
अष्टमद्वादशेवर्षे षोडशाब्देचविनाशकः तातंधनंशुभंकार्यं विवाहादिचमंगलं विद्यायोगश्चप्राप्नोति पत्नीप्रीतिःचप्राप्तये ॥ चद्रमित्र
महाप्रीति आनंदम्भूमंडले तातलाभव्ययदीर्घं गुप्तचिताभविष्यति ॥ अल्पगर्भमहाकष्टं पुत्रसुखविनष्यति का कृत्यनसंदेहो
सउ० लाभंभवतिनान्यथा चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा नवीनोक्तकृतेजीव उच्चपदवीचप्राप्तये अतितेजप्रतिष्टोवा भाग्यवृद्धिदिनेदिने
११५ देहकष्टभयंघोरं औषधिमंत्रशांतये ॥ वामक्लेशर्भाविष्यंति वंशवृद्धिनदृश्यते आयुपूर्णश्चदृश्यंते शून्यसप्ताब्दिकेतथा सर्वकार्यश्चसिद्धंति
भूमिर्लाभभविष्यति गुप्तश्चधनंप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्ति आनन्दम्भूमिमंडले पूर्वपापश्चआपार्थ अग्रवंशनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस जीव की पत्री का फल कहता हूँ सुनो अच्छे कुल में जन्मे माता को कुछ कष्ट दांतों की पीड़ा दस्त रेचन व्रण व्याधी यत्न से शांति बहन भाई का योग सात वर्ष से अथवा आठ वर्ष से १२ १६ २० वर्ष तक शुभ कामों में पिताका धन खर्च, विद्या का योग, पत्नीकी प्राप्ति दूसरा स्त्री भी प्रीत रक्खे एक मित्र ऐसा हो चित्त एक शरीर दो पिता को लाभ खर्च विशेष हो अल्प गर्भ संतान योग खंडत इस जीव को और स्त्रीको संतान का खयाल बहुत बनारहै यत्नभी बहुतसे करे लाभ आमदनी अच्छीहो २१ ३० वर्ष तक नया कृत्य करे ऊंची पदवीपावे बड़ाई पावे तेज प्रतापी हो इज्जत प्रतिष्ठा बढ़े एक कष्ट बहुत भारी हो मंत्र औषधी से आराम हो पृथ्वी से लाभ गुप्त धनका लाभ आयुपूर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्तरसे अधिक हो हेशुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पूर्व पाप के अर्थ पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन्न पुत्रसुखविनस्यति पूर्वगाथाकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं ठाकुरवंशकुलेजन्म राजयोगश्चप्राप्तये ॥ अश्वपतिराजग्रामीच बहुसेवीनरोभवेत् परस्त्रीमहाप्रीति कुमार्गीदुष्टपापिनी द्विजपुत्रप्रथमप्रीति त्याज्यंराज वामकम् श ुपक्षप्रतिराजन् असत्यवाणिभाषणं ॥ कारागारद्विजपुत्र विषराज्यश्चमृत्युदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविहिनकं ॥

सं०ज० भाषा ॥ हेपुत्र एक जन्ममें यह ठाकुरवंशमें राजाथा पर स्त्रीगामी एकस्त्री ब्राह्मणके पुत्रकी बहुत सुन्दरथी तिसको लोभदेकर छीनला

११६ और स्त्री के असत्य बचन सुनकर ब्राह्मण पुत्रको कारागार भेजदिया और उसे विष दिवाकर मरवादिया तिस पापके कारण पुत्र का सुख नहीं हुवा ब्राह्मणका शाप लगा हुवाहै कि अगले जन्ममें तूभी पुत्रों के दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमापत्र पञ्चटंकप्रमाणकं अथवा अर्धस्वर्णंच लिख्यतेविधिपूर्वक रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकम् ताम्रकलशघृतंमध्य गुप्तमूर्तिप्रवेशण संकल्पंददेद्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्ष प्रमाणकं ॥ श्रेष्टवि्र ददेद्दानं विद्यापाठ नपानं इदंदान कृतेसंत पुत्रप्राप्ति च जावनं ॥

भाषा ॥ हेपुत्र स्वर्ण का पत्र पांच टंक अथवा इससे आधा प्रमाण से बनवावे तिस पर चंदन से ब्राह्मण के पु की मूर्ति लिखे और एक कलश में घृत भरकर गुप्त मूर्ति प्रवेश कर विधि पूर्वक दान करे उत्तम ब्राह्मण विद्यावान् कुटुम्बी कोदे और गायत्री मंत्र जाप करावे और ५१ सहस्र संतान गोपाल का मंत्र जपवावे तो पूर्व का दिया हुवा शाप नष्टहो और पुत्र होकर जीं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः कस्मिनकालगतेशुक्र बहुऐश्वर्यप्राप्तये ॥ दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवी
नरोभवेत् प्रथमआयुधनंन्यूनं पश्चातेसुखसंपदा ॥ बालआयुगतेकाव्य आनन्दभूमिमण्डले तातकष्टविजानीयात् भृगुणापरि
भाषितः ॥ सत्यवादीप्रवक्ताच परकायकरःसदा अतिज्ञानीमहाशूरो संतोषीवृतिधारणम् ॥ आज्ञाकारीसुतभृत्य नृपाद्भयसमन्वितः
दुष्टकर्मेणपीड्यन्ते पूर्वपापश्चदुःखिता ॥ अल्पायुदृश्यतेलोके सुकर्मेसुखसंभवः बंधुवर्गापवादीच शत्रुभःतप्यतेसदा
सं०उ० अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगतेनित्यं सुकीर्तिचःपिभूतल ना नः न सौख्यलभेजाव भजनानदसर्वदा पितुद्रव्य
११७ विनाशश्च सुयत्नेनविवद्धनम् ॥ कस्मिन्कालगतेशुक्र अकस्मात्अतिचिंतया व्ययदीघधनदान गुप्तचिंताशरीरकं ॥ मित्रप्रीति
महालोक आशक्तचितमाहित पत्नीकष्टभयघोरं सुतदुःखश्चप्राप्तये ॥ रात्रिदिनमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनं दोषपापप्रभावेण
अप्रवशविनाशकं ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं जिस जीव की पत्री में ऐसा योग पड़े
सो जीव भाग्यवान् और बड़ा ऐश्वर्य प्राप्त करे और दयावान् भोका पुरुष हो प्रथम तो थोड़ा ऐश्वर्य हो फिर विशेष बढ़
जाय बाल आयु आनन्द में रहे पिता को कष्ट हो औषधी से आराम हो जाय सत्यवादी पराये काय मन से करे अतिज्ञानी
शूरवार हो संतोषी वृत्ति धारण करे दुष्टकर्म से पीड़ा हो पूर्व करनी के कारण थोड़ी आयु में सुकर्म करे परन्तु कुल बन्धुओं
से शत्रुता विवाद रहे दुश्मन सदाजलने रहें पाप ग्रहों को शांति कराता रहे श्रेष्ठ फल हो आनन्द भोगे भजन आनन्द
करे पिता का धन जाय परन्तु कुछ सुकर्म बने किसी समय में अतिचिंता हो खर्च हो मित्र से बहुत प्रीति चित्त उस तरफ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष रहै पत्नी को सन्तान का कष्ट रहै पित पोड़ा हो सारे सुख दुख देखे परन्तु पुत्र का सुख प्राप्त होना कठिन है
शुक्रोवाच ॥ किंपापपूर्वजन्मञ्च वंध्यापुत्रविहीनकं जीवसर्वगाथायां कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने पूर्व किसी
जन्म में क्या पाप करे हैं जो वंशकी वृद्धि बंद होगई सो पूर्व कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथांसर्व पूर्वपापञ्चकारणः
कायस्थश्चकुलेजन्म चित्रगुप्तोतिवंशक ॥ यवनविद्याभविष्यंति धनधान्योभविष्यति· राजद्वारमहल्लाभं उच्चपदवीचप्राप्तये ॥
स०उ० बहुपक्षीबधनञ्च दयाहीनश्चदुष्टयः ततरोचित्रकंपक्षी वृक्षोजीवभक्षणम् ॥ उपवनंगवनंजीव दीमकोजीवभक्षणम् इदंपापप्रभावेण
११८ पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव प्रथम एक जन्म में कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा सो चित्र गुप्त वंशी था सो बड़ा
चतुर विद्यावान था बहुत सा धन राजदरबार से पैदा किया पुण्य भी करता था परन्तु तीतर नाम और बहुत से पक्षी थे
तिन को अपने साथ बागको ले जाता था और वृक्षों में दीमक नाम जन्तु होते हैं तिन को खुलाया करता था इस पाप के
प्रभाव से सन्तान कष्टी रहा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकं पूर्वपापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥
भाषा ॥ हेपिता कौन से उपाय करने से यह जीव पुत्रों के सुख देखे सो दान मन्त्र पूजा जाप कहो ॥ भृगुवाच ॥ मन्त्रसन्तान
गोपाल चंद्रलक्षप्रमाणकं अन्नमिष्टान्नकंभोजन यज्ञदानकरस्तथा ॥ पक्षीअन्नददेज्जीव मूर्गानित्यभोजनम् इदंदानकृतेसंत
पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पिछले पाप की निवृत्ति के अर्थ यज्ञ करे दान करे अच्छी सामग्री बनवावे
ब्राह्मणों को तृप्त करे और पक्षियों को अन्न डाला करे और चांटीनाल नेम करके देतो निश्चय करके पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलप्रोक्ता म॰ानघः त्रिग्रहाफलदंश्रेष्ठं नानालाभसमागमः । भूमिमन्द्रश्चप्राप्नोति कीर्तिर्वृद्धो धरातले क्रूरपापग्रहापूजा दानंचैवप्रयत्नतः ॥ जा॰चिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अयत्नेनैवभोकाव्य बुद्धिनःसुस्थिरभवः ॥ उद्योगोकुरुतेदीर्घ लाभचितात्रलीयसी प्रमेहोपीडितंगुप्त मित्रशत्रुवदाचरेत् ॥ प्रीतिकृत्वाकृतेघातं सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्ता सुखीलोके असत्यवचनंत्रजेत ॥ सुकीर्तिप्राप्तेलोके उद्यमेपोष्यतेकुलः परोपकारकरताच बुद्धिवंतोसुलक्षण ॥ ईशभक्तिसुसंचिंत्य

स०उ० सुस्थिरंनविसर्जन कामीकुतुहलीचैव कुटंबेप्रीतिवत्सलः ॥ पूर्वमायुसुखीजीव मध्येचसुखमध्यमं अत्यपापकुरुते॰ति कान्ताद्वौगुरु

११६ वत्सलः ॥ सुयत्नेसर्वथासौख्यं नात्रकार्यविचारणा कामवेगेनचोन्मत्तो चिंनचैवोपिविभ्रमः बुद्धिवन्तोयशीसौख्यी नकश्चि न्निदतोमति जीवंध्यानश्चसंमग्नः यौवनंरूपचिंतनं ॥ श्रेष्ठकर्मरतोचापी बहुबाधाचशांतये सर्वसुखश्चप्राप्नोति गुप्तचिंता॰वामक ॥ पुत्रकांक्षानसंदेहो भृगुवाक्यनचान्यथा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस पत्र में तीन ग्रह बहुत उत्तम पड़े हैं अनेक प्रकार के लाभ हों भूमि मंद्र कीर्ति पृथ्वी बढ़े क्रूर पाप ग्रहों का पुजा दान यत्न करना श्रेष्ठ है इतने न्यून ग्रहों का दान मन्त्र जाप न हो चिंता बुद्धि भ्रम लाभ मध्यम उद्योग बहुत करे फायदा मर्जी माफिक न हो गुप्त प्रमेह की पीड़ा मित्र से शत्रुता प्रीत के बदले हानि पहुंचावे यह जीव सत्य को पसन्द करे झूठ से बचे कीर्ति बढ़े पराये उपकार करने वाला बुद्धिमान सुलक्षण देवता में कुछ भक्ति अल्पस्थिर न हो कामदेव की उन्मत्तता, मित्रों से प्रीति, पूर्व आयु सुख, मध्यम आयु मध्यम सुख दो स्त्री से प्यार सुकर्म से सदा सुख मिले एक जीव के ध्यान में मग्न रहै हेशुक्र सम्पूर्ण काम हों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु मुख्य सुख पुत्रका है सो तिसकी भटकना बनीरहै त्रास देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ केन मंत्रप्रभावेण पुत्रस्वप्ननदृश्यते पूर्वगाथा कथातात श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव की पिछले जन्मों की कथा कहो ऐसे कौन से पाप दीर्घ करे हैं जो स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मश्चगाथायो श्रुणुपुत्रतिध्यानकं शूद्रवंशकुलेजन्म दीर्घअघकुरुतथा ॥ पापकर्मधनंप्राप्ति उच्चपदवीचप्राप्तये लोकेलक्षपतिख्यातो मानकीर्तिभविष्यति ॥ कमट्टाचमृतिकाअंड हस्थनित्यश्चधारण बहुपक्षिविशोजीव बारम्बार
सं०ज० भक्षणं ॥ विध्वंसचग्रहंपक्षो बच्चोभोजनंतथा दीर्घपापप्रभावेण पुत्रसुखविहीनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र इस जीव की पूर्व जन्म की कथा
१२० कहता हूं सो तुम ध्यान से सुनों पूर्व एक जन्म में यह जीव शूद्र वंशमें उत्पन्न हुवा था सो बड़ा धनवान् था इज्जत प्रतिष्ठा वाला था परन्तु गुल्लों से जीव मारने का बहुत अभ्यास था कमट्टा हाथ में लेकर बीसियों जीव पक्षी मार लाता था और उनके घौंसले तोड़ कर निकाल लाता था तिस पाप के प्रभाव से पुत्रों के सुख से हीन रहै क्यों कि पक्षियों का शाप लगा हुवा है शुक्रोवाच ! किंयत्नश्चकरतव्यं पक्षीशापविनाशनं पुत्रप्राप्तिचदृश्यते वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे यत्नकरनेसे पक्षियों का दिया हुवा शाप नाशकोप्राप्तहो और इसजीवको पुत्रोंका सुखमिले ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापक ब्राह्मणं भोजनंदानं कुर्वीतिविधिपूर्वकं पक्षीभोजनंअन्नम् नित्यप्रतिनित्यनेमकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षश्चजापकं अनुष्ठानकृतेसन्त पुत्रसुखभविष्यति ॥ भापा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र एक लक्ष प्रमाण गायत्री और अर्ध लक्ष मन्त्र सन्तान गोपाल जपवावे और ब्राह्मणों को स्वर्ण दक्षिणा दे और पक्षियों को नित्य प्रति रोज अन्न डाल कर जिमावे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्यतेधननिश्चितं ॥ कदापिसमयेवत्स स्वकुटम्ब

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेसमुत्पन्न युवाश्रेष्ठफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीच बुद्धिवंतो

विरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते ॥ स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभदृश्यते मध्यविद्यान्वितोपुन्स

विशेषतः ॥ अतितेजप्रतिष्ठोवा सुजनोमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् ईशस्यचिंतनंकृतः ॥ पत्नीश्रेष्ठकुलोप्राप्ति पुत्रचिंता

महानकं नेकयत्नकृतेपुत्र सुखस्वप्नेनदृश्यते ॥ दीर्घकष्टविजानीयात नवीनोजन्मप्राप्तये: दीयतेसुमतिसर्वं दुष्टकर्मविसार्जिता ॥

म०उ० सुमित्रोभाषणोप्रीति चिन्ताेदारनसंशयः हीनवार्त्तानकर्तव्या गुप्तचिंताचव्याप्तये ॥ सुकीर्तिचिंतयेनित्य सुकीर्तिचप्रधानकं

१९१ व्ययोर्दीर्घसमायात सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ भ्रातृभग्नीचउत्पन्न अल्पसुखश्चलोकमा कस्मिन्कालेमहत्प्राप्ति धनधान्यसमागमः ॥

युग्मजीवमहान्प्रीति सुन्दरमूर्तिसुलक्षणं पूर्वजन्मश्चपापार्थं वामचिंतामहानकं ॥ पुत्रसुखनदृश्यंते पृथ्वीजन्मप्रकार्णम् ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र इस जीवकी पत्रीका फल सुख दुख आदि वर्णन करते हैं सो तुम सुनो युवा अवस्था में बहुतसे काम करे और बड़े २ मनुष्यों से काम पड़े धन प्राप्त करे विद्यावान् हो किसी समय में कुटंब घर में विरोधसा हो धन खर्च हो शत्रु नुकसान पहुंचाना चाहे परन्तु श्रेष्ठ दशा में थोड़े परिश्रम से अकस्मात् लाभ खुशी हो विद्या से बुद्धि विशेष इज्जत प्रतिष्ठा वाला अच्छी शिक्षा देने वाला ईश्वर की तरफ ध्यान रखने वाला स्त्री श्रेष्ठ कुल की पुत्र को चिंता रहै यत्न भी करे परन्तु पूर्व जन्मों के पाप के अर्थ पुत्रों से रहित रहै शरीर पैं पीड़ा कष्ट भारी आवे सो नया जन्म हो नई २ वार्ता का विचार करे बड़े बड़े ख के काम आवें सो पूर्ण उतरें भाईयों से थोड़ा सुखहो जीवोंसे प्रीत लगी रहे हेशुक्र जो दुनियां के सुख हैं सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्त हों परन्तु पुत्रों के सुख को यह जीव और इसकी स्त्री भटकते रहैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण: वंशवृद्धिनदृश्यते
पूर्व जन्मकथाकथ्यं उच्चारणविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने कौन से पाप पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इस
की स्त्री पुत्रों को भटके हैं सो विधि पूर्वक वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वजन्मनिकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न
धनधान्यभविष्यति ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच भूमिलाभश्चदीर्घयो ॥ निजस्थानवसत्तिविप्र
भृ०उ० गृहभूमिउपाधकं लष्टमुष्टप्रहारेण द्विजस्थानभस्मकम् ॥ युग्मपुत्रत्रयंकन्या ग्रहमध्योतमृत्युदा तेनपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनाशनं ॥
१२२ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पहले एक जन्म में क्षत्री वश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा भाग्यवान् लक्षाधीश हाथी घोड़े ग्राम
थे इसकी जमीन में एक ब्राह्मण कुटंब सहित रहता था सो उससे किराए भाड़े के ऊपर बहुत विवाद हुवा यहां तक की
उसको बहुत पिटवाया और उसके घर में आग देदी सो उसके दो छोटे पुत्र और तीन कन्या जल कर भस्म हो गईं ॥
शुक्रोवाच ॥ किंयत्नदान मंत्रस्य किंविधानेतिजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुक्खञ्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हेपिता क्या यत्न करे और
कौन से दान मन्त्र जाप करवावे जो पूर्व जन्म के शापसे छूटे और पुत्रों के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे
और पुत्र जीवें सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्थानदानकुरुजीव गायत्रीमन्त्रजापकं स्वर्णस्यप्रतिमापत्रं द्विजसुतमूर्तिलिख्यते ॥
सर्वदानविधानेच संकल्पंब्राह्मणददेत् द्विजरंतुष्टकर्तव्यं पूर्वश्रापविनाशनं ॥ पत्रसुखंनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेपत्र यह
जीव दान करे गायत्रीमन्त्र जपवावे स्वर्ण पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र कन्याओं की मूर्ति लिखे ब्राह्मण को दे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वंखगास्थित्वा जन्मकालेयदानरः बृहत्वंफलमादाय आनन्दभूमिमण्डले ॥ बहुकृत्याधिकारीच सर्वेशां शुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीति नूतनंवार्तयाचितः ॥ सुन्दरश्चबलोधीरः प्रतापोशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छं पूजनात्सुखवर्द्धनं ॥ अतिप्रेमीसुकीर्तिच भृगुणापरिभाषितः पञ्चमेशंसुसंपूज्य वंशवृद्धिशुभप्रदा ॥ गोविप्ररक्षकोधीमान् सत्यवादीविचक्षणः कालानुकूल विद्याच पर्यटनंप्रियसदा ॥ चंद्रअल्पमहाकष्टं प्राणभीतिश्चचिंतनम् श्रेष्टकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णसुखीनरः ॥ गुप्तलाभविशेषेण
न०उ० अकस्माज्जायतेकदा भूमिलाभविशेषेण रचनामन्द्रवूतनं ॥ मनेच्छापूजितोवत्स अनुष्ठानंसुयत्नतः राजद्वाराधनंप्राप्य निजकृत्य
१२३ फलप्रदः ॥ पिताधिक्यप्रकोपीच कामाधिक्यबलान्वितः सुशीलश्चपलोपुन्स रिपुणांकष्टदायकः ॥ निष्ठुरंवचनंवक्ता कुमतिश्च उदारधी सर्वसंपत्समायुक्तो अंगनाप्रीतिकारकः ॥ जन्माद्धनयुतपुन्स गीतनादपरंप्रियः वृणपीड़ासमुत्पन्नो निजांगेनात्रसंशयः ॥ सर्वकार्याणिसिध्यंति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र जिसकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं सो पैदा होकर अनेक प्रकार के पृथ्वी पर आनन्द देखे बहुत से काम बढें और उसके शुभचिंतक बहुत हों नवीन विचित्र बातों में मन रहे एक जीव में चित्त बहुत रहा करे यह जीव सूरबीर प्रतापी धीर बंधाने वाला दूसरे की बात को तोले गुरु भौम केतु का पूजन श्रेष्ठ है भृगुजी कहते हैं पञ्चमेश की पुजा दान से वंश की वृद्धि हो पूर्व जन्म के पाप के कारण पुत्रों से रहित रहै दुख देखे स्त्री क्लेश माने और यह जीव विद्यावान् हो भ्रमण करने को चित्त चाहा करे एक समय अचानक में एक बार कष्ट भय हो अल्प भोग कर आयु पूरी हो राजद्वार से भाक्षी खुशी रहै भूमि से धन प्राप्त हो शत्रुओ से विवाद हो सर्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्पत हों परन्तु पुत्रों के दुख न देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात श्रृणुत्वंममवांछया ॥
भाषा ॥ हेपिता इस जीवकी प्रथम जन्म की कथा कहो ऐसे कौन से पाप इस जीवने किये थे जो यह पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥
भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापप्रकारणः यवनवंशकुलेजन्म आनन्दभूमिमण्डले ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो अतितेजोप्रतिष्टया ॥
बहुजीववधंकृत्वा निजभक्षोपिकारणं ॥ चापबाणकुरुधारण गवनखेटानुसारेण तिहिपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनश्यति ॥
स०३० भाषा ॥ हे पुत्र इस जीव से प्रथम जन्म में बहुत पाप बने हैं प्रथम जन्म में यह जीव यवन जाति में उत्पन्न हुवा था नित्य
१२४ प्रति शिकार खेलने जाता था और अनेक जीव मारकर लाता था और तिन्हें भक्षण करता था इस कारण पूर्व जन्म का
सात जन्म को शाप लगा हुवा है तिस कारण सन्तान का सुख कठिन है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजा च किंमंत्रंकिंजापकं
पूर्वशापविनश्यंति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से पूर्व जन्म का शाप नष्ट हो जो
पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या सप्तटंकप्रमाणकं विष्णुधेनुलिखेन्मूर्ति शुद्धचित्तंचशांतये रक्तचन्दन
मिश्राणि गंगाजलस्नानकं संकल्पंदद्देविप्र पूर्वपापप्रशांतये ॥ चन्द्रलक्ष प्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं ॥ भाषा ॥ हे पुत्र सप्तटंक
प्रमाण से स्वर्ण का पत्र बनवावे तिस पर विष्णु भगवान की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और गंगाजल से
स्नान करावे तिसके आगे एक लक्ष गायत्री मंत्र जाप करावे और (मुंह से यह मन्त्र कहता जाय) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं
विष्णु भगवान मम कार्य सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॥ फिर वह मूर्ति ब्राह्मण को संकल्प करके दे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रेष्ठपत्रंग्रहाकाव्य दीर्घमान्योप्रतिष्ठतः पुत्रदारादिसंचिंत्य भृगुणापरिभाषितः ॥ मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्धं सुखीन्नरः रूपयौवनसंपन्नो सुमित्रश्चारुभाषितः ॥ नानामंगलंकार्यं जायतेचमहोत्सवम मध्यसौख्याधिकारीच विलासीमति मान्नरः ॥ गुप्तशोकविशेषेण अकस्मात्भयमागमः दीर्घद्रव्यव्ययोचापि चिंतयतिदिनेदिने ॥ जलपशुभयंशुक तनकष्टम्पपाथयः शत्रुपक्षविरोधश्च कुलबधुविप्रीतये ॥ चिंतयेदीर्घकार्याणि अतसौख्यसमोयुतः द्वयोकष्टविशेषेण चंद्रअल्पमहाभयं ॥ सुयत्नं

सं०ज० रक्षितोप्राण नूतनंजन्ममन्यते ॥ दीर्घायुचततोलोके उद्यमेणधनस्थितः असत्योदोषकंप्राप्त शत्रुपक्षविरोधता ॥ व्ययदीर्घ

१२५ मुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः अल्पजीवीचबालोयं अथवागर्भखंडतः ॥ पत्नीकष्टविशेषेण पुत्रचिन्ताचव्याकुलः द्विभार्यायोग प्राप्यंते किंवान्यत्रस्त्रीप्रीतया ॥ बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षणः सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति वंशवृद्धिनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस पत्र के ग्रह श्रेष्ट हैं बड़ी प्रतिष्ठा वाला हो परन्तु यह जीव और इसकी स्त्री संतान, की चिंता में रहै मान कीर्ति बढ़े लोक में प्रसिद्ध हो सुन्दर स्वरूप मित्रों से प्रीति करने वाला अच्छे वचन बोलने वाला नाना प्रकार के सुख पृथ्वी पर देखे परन्तु गुप्त शोक सन्तान का रहै अकस्मात चित्त पर भय सा रहै बहुत खर्च हो जल से पशु से भय हो या कहीं से गिर कर चोट आवे शत्रु पक्ष से विरोध हो कुल बन्धुओं से विप्रीत हो चिंता क्लेश हो कर फिर अन्त में सुख प्राप्त हो दो कष्ट हों एक में प्राणों का भय हो फिर आयु पुर्ण हो किसी समय में झूंठा दोष लगे इलजाम का भय हो जाय पुत्र होने बहुत कठिन जो होय तो माता और पिता को भारी दुःख देकर बड़े बड़े तरसाव दिखा कर चले जांय ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ शुक्रोवाच ॥ भोतातःकृपानाथ अहमदासकुरुदया पूर्वपापञ्चवक्तव्यम् पुत्रस्वप्नेनपश्यति ॥ भाषा ॥ हे पिता मुझ पर कृपा करके
कहो इस जीवने ऐसे कौन से पाप किये हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहै ॥ ॥ भृगुवाच ॥ आदजन्मञ्चगाथायां कथ्यंतेविधिपूर्वकं
दीर्घंपापंकुरुजीव शृणुपुत्रतिध्यानकं ॥ चित्रगुप्तकुलेजन्म बहुभामीप्रधानक राजद्वारकंन्यायम् उच्चपदवीचप्रातये ॥ द्विजशूद्रउपाधीच
लष्टमुष्टप्रहारकं निजकरशूद्रमृत्युच विप्रदोषअसत्यक ॥ राजद्वारकृतेन्यासं न्यायकर्ताघनजभेत् प्राणदण्डददेत्विप्र सुद्राशूद्र
कंलभेत् तातपुत्रमृत्युदस्य न्यायाधीशोश्रापकम् ॥ भाषा ॥ हे पुत्र प्रथम जन्म में यह जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था
राजद्वार में बड़े ओहदे पर था मुकदमे में न्याय किया करता था सो एक शूद्र बूढ़े ने अपने हाथ से अपना अपघात
कर लिया उस शूद्र के वारिसों ने ब्राह्मण को फांस लिया और हाकिम को रिश्वत देदो सो न्यायाधोश ने
ब्राह्मण के पुत्र को प्राण दण्ड की आज्ञा दी सो ब्राह्मण ने श्राप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों का सुख न देखे ॥
॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजाच किंमंत्रकिंजापकं ब्रह्मश्रापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य
मन्त्र जाप से पूर्व जन्म का ब्राह्मण का दिया हुवा शाप नष्ट हो और पुत्र होकर जीवें ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या
युग्मसुद्राप्रमाणकं ब्रह्मपुत्रलिखेन्मूर्ति गायत्रीमंत्रजापकं ॥ तान्दूलंयथाशक्ति गुप्तमूर्तिप्रवेशकं संकल्पंददेत्विप्र पूर्वश्रापञ्चनष्टकं ॥
इदंदानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र स्वर्ण के दो मुद्रा प्रमाण भर के पत्र पर ब्राह्मण के
पुत्र की मूर्ति लिखे और चावलों में गुप्त रख कर दान करे ब्राह्मण को दे गायत्री मन्त्र जाप करावे तो निश्चय पूत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मकालइतिषेटा सर्वत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजाया अहसौख्यसुयत्नतः ॥ वाटिकामंद्रयानश्च विपाकेधन वर्धनं जीवोसत्यमान्श्रीमान् उपकारीविचक्षणः ॥ मित्रकृत्यघ्नतांयाति बांधवा...सुखलघु कवित्यमतिसजाते मिष्टभोज्य मतिप्रिय ॥ स्वभुजेनधनंप्राप्ते पंडितोनृपपूजितः विरोधश्चकुटम्बेन शत्रुवःतप्यतेसदाः ॥ देवविद्यामहाप्रीति गुणग्राहिभवेन्नरः अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनवर्धतेगृह नानाचतुस्यदानश्च धनकीर्तिविवर्धनः ॥ स्वजनेसुखभोक्तव्या धनरत्नानिसञ्चयः देवतागुरु
सं०उ० भक्तश्च सौम्यमूर्तिसुखीनरः ॥ दिव्यवस्त्रसदाधारी स्वजातिमानवर्धनं गुप्तचिताशरीरच पुत्रसुखनदृश्यते ॥ पत्नीस्थलरितमृशुको
१२७ भाग्यवृद्धिचन्यूनता विद्याबुद्धिविशेषेण भृगुणापरिभाषितः ॥ इन्द्रीव्याधिकं वित्काले शीघ्रवीर्यखंडनं चंद्रअल्पनसंदेहो प्राणोभय विनाशनं ॥ युग्मकष्टगतेशुक्र आनंदंभूमिमंडले पशुभयजलंप्राप्त उपरञ्चपपाथयः ॥ सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जीवकी पत्रीमें ऐसे गृहपड़ें सोजीव कन्या पुत्र स्त्रीके सुखका यत्नउपाय करता रहै और इसजीवको रास्तेमेंसे या मंद्रमेंसे धनकीप्राप्ति किसीकालमेंहो सत्यबातको पसंदकरनेवाला परोपकारी मित्रसे बंधुवोंसे किसी समयमें विपरीतताहो और कुछ कविता गानेसुन्नेका भी शौकहो मिष्ट भोजन प्यारालगे अपने पुरुषार्थसे पैदाकरे विद्यावान्हो बड़ेआदमीभी आदरकरे शत्रु जलतरहैं गुणग्राहीहो देवविद्यामें प्रीतहो सुन्दरस्वरूप भूमिसेलाभ चौपायेभीहों अच्छे आदमियोंसे लेनदेन ऐश्वर्य पैदाकरे अच्छेवस्त्र पहरे दरिद्रीसा नरहे बिरादरी में इज्जतहो गुप्तचिंता रहै बिनाकारण भी डरता रहै इज्जतका ध्यान रखनेवाला भलेबुरेको परखनेवाला अच्छी शिक्षा देनेवाला हेशुक्र पृथ्वीपर आनन्द कर यहजीव अनेक प्रकारके सुख दुःख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखको भटकता रहै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुकोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रचिंताभविष्यति पूर्वजन्मक तात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ हेपिता कौन कर्म इस जीवने पूर्व जन्म में करे हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के मुख न देखें ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रगतेजन्म कथ्यंतेविधिपूर्वकं मैथुलदेश कुलेजन्म अग्रवालोतिश्रेष्ठया ॥ व्यौहानधनप्राप्नोति धनधान्यसमागमः लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् ॥ ऋषीपुत्रजगन्नाथ तीर्थदेवदर्शनम् धनिधनअर्पणकृत्वा आगत्वाददेतममः ॥ अग्रवालोधनीपश्चात लाभार्थंवशिभूतकं दर्शनपर्शआगत्वा ऋषीपुत्र
सं०उ० धनददेत श्रृणुवाक्यधनामुख्य ऋषीपुत्रचविह्वल धनचिंताशरीरेच कृश्यदेहदुर्बलम् ॥ तणकालगतेकाव्य ऋषी पुत्रमृतंतथा
१२८ मृतकपुत्रलखंतात हाहाकारविह्वलं ॥ ऋषीशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ हेशुक प्रथम एक जन्म में एक ऋषी का पुत्र जगन्नाथ आदि देवदर्शन करने गया तिस के पास जो कुछ धन था अग्रवाल धनी सेठ तिस के पास धर गया जब दर्शन से आया तब लोभ के वशिभुत हो कर मुकर गया इसी चिंता में ऋषी के पुत्र ने प्राण दिये तब पुत्र को मृतक देख ऋषी पिता ने धनी को शाप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों के मुख न देखेगा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमत्रं किंजापकं ऋषीशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ स्वर्णपत्रलिखेन्मूर्ति ऋषीपुत्रस्वकारकं ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ वस्त्रआभूषणंदानं श्रद्धामात्रप्रमाणकं संकल्पंददेतविप्र अर्धांतेविधिपूर्वकं (मुख स कहे) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रींवटुकभरवाय आप दुद्धारणाय पूर्वशापनिवारणार्थं दानमंत्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ बव्रदानकृतेदंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः सर्वसुखमवाप्नोति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ हे पुत्र यह जीव स्वर्णपत्रपर ऋषी पुत्रकी मूर्ति लिखे घृतभरे तांबेके कलशमें गुप्तरख ब्राह्मणको दान करे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजन्म माननाथप्रतिष्ठता पञ्चमेशोपिपूज्यन्त दानमन्त्रव्रतोषिता ॥ विद्याबुद्धिविशेषेण पश्चातो
सुखपुत्रकं पूर्वणपप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ पूजादानञ्चमंत्रेण पूर्वशापविनश्यति सुतसुखश्चंतयोशुक्र भृगुणापरिभाषितः ॥
अष्टमद्वादशेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं युग्मविद्याचयभ्यासं भृगुणापरिभाषितः ॥ धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं तातमात
महासुखं जीवनंसुफलंममः ॥ त्रियोदशेषोडशवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा बहुविद्याचप्राप्नोति पत्नीप्रीतचयुग्मकं ॥ देहकष्टविजानीयात
स०उ० औषधीप्रतिशांतये गुप्तप्रीतिअन्यजीवो नान्यथावचनंममः ॥ जीवचिंताचप्राप्नोति अल्पगर्भोपिखंडतः चंद्रनेत्रमितेवर्षे सून्यराम
१२९ मितेतथा ॥ दीर्घलाभनमंदेहो उच्चपदवीचप्राप्तये महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने ॥ तातधनशुभंकार्यं विवाहोत्सव
मंगलं अचानकंउपद्रोवा ग्रहकष्टमहानकं ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधीप्रतिशांतये चद्रअल्पगतेकाव्य पूर्णआयुनसंशयः ॥
षष्टसप्ताङ्केवर्षे आनन्दभूमिमंडले सर्वानन्दभोक्तव्यम् पुत्रदुखञ्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव मध्यम
भागवाला प्रतिष्ठा पावेविद्या बुद्धि विशेष हो पञ्चम स्थान के पूजा दान से पुत्रों के सुख देखे पूर्व जन्म के पाप के प्रभाव से
संतान का दुख देखे परन्तु पाप निवारण का मन्त्र दान जाप करावे तो अन्त में पुत्र हो कर जीवें और आठवें बारवें
सोलवें वर्ष तक विद्या प्राप्ति स्त्री प्राप्ति पता का धन शुभ काम में खर्च हो प्रथम माता पिता को खुशी हो
जीवन सुफल माने दे कष्ट हों औषधी से आराम हो दूसरी स्त्री से प्रीत हो परन्तु अल्प गर्भ खंडत हो या बंध्या हो और
राजगार उत्तम हो उच्च पदवी पावे २१, ३० वर्ष तक फिर ऊपर अनेक प्रकार के सुख दुःख देखे आयु पूर्ण हो ७६ वर्ष के लग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भग आनंद देखे परन्तु पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मगतेजन्म पुत्रसुखविनश्यति विधिपूर्वकथंतात श्रुणुत्वं ममवांछया ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं कुर्मीवंशकुलेजन्म धनधान्यभविष्यति ॥ दाताभोक्ता कृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् राजमुद्राददेत्कुर्मी लक्ष्योवृक्षविनष्यति ॥ कोमलपातलतावृक्षे कोटोपक्षीवामकं जंगलुपवनंबद्धो सत्याजन उद्यानकं ॥ जीवआनंदभोक्तव्यं सर्वजीवविनष्यति बृक्षडालगृहपक्षी बालोकोटमृतंतथा ॥ पक्षीशापमहादीर्घ पुत्रस्वप्नेनजीवितं ॥

सं०उ० भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म की कथा इस जीवकी वर्णन करते हैं जो कुछ पाप इस जीवसे बने हैं सो सुनो राजा

१३० को मुद्रा देकर बड़े भारी बन काटने का ठेका लिया सो वह बन हरा भरा जहां अनगिनत जीव आराम पाते थे और भोजन फल फूल खाते थे और बृक्षों की डालो में घौंसले बना रखे थे सो बन कई योजन में का था इस धनवान् कुर्मी ने सब बन को काट कर विध्वंस कर दिया तिस कारण पुत्रों के सुख स्वप्न में भी होने दुर्लभ हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखस्वप्राप्तये ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं श्रेष्ठविप्रश्चकर्मेष्टि इच्छा भोजनददेत् स्वर्णश्चदक्षिणांचैव प्रसन्नात्मसंतुष्टयः बहुअन्नंददेत्पक्षी नितप्रतिकीटभोजनम् ॥ मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षप्रमाणकम् विधिपूर्वअनुष्ठानं पुत्रप्राप्तिचजीवितः ॥ सुतप्राप्तिनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पक्षियों के पाप निमित्त एक लक्ष गायत्री जपवावे श्रेष्ठ ब्राह्मण कर्मेष्टि बैठावे तिन्हें अच्छे पदार्थ जिमावे स्वर्ण की दक्षिणा दे और बहुत सा अन्न पक्षियों को जंगल या कोठे पर डाला करे और नित्य प्रति चींटीनाल जिमावे तो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभागमब्रवन मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितेसुमनोरथा ॥ पापग्रहप्रभावेण दीर्घचिंतावि
तोभवेत चित्तश्चचञ्चलोनित्यं लाभविघ्नसमुद्भवः ॥ विलम्बोजायतप्राज्ञ पुनदीर्घधनागमः हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेचिंतनकृतः ॥
नारीचिंताहृदेगुप्तः शत्रुमित्रवदाचरेत् जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशयः ॥ प्रायश्चितकृतेसंत पुत्रसौख्यनसंशयः लाभकृत्योपि
सिद्धंति बृहत्वोधनमागमः ॥ सत्यवक्तासुशीलश्च अमन्याक्रोधमभवः साहसीपुरुषार्थीच दुखसौख्यविशेषतः ॥ दानीबुद्धिमतोप्राज्ञ
स०उ० विभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्य कामाशक्तोण्गिुप्तता ॥ दानमन्त्रजपंपुण्य सर्वदानन्दसंभवः सर्वअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्च
१३१ सुखावहं ॥ मनेच्छापूजितेचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं इष्टदेवस्यपूजनम् ॥ सुन्दरमृदुवाणीच धनसंयुक्तकौशलः
वाणिज्यश्चधनदीर्घ भृगुणापरिभाषितः पुत्रजन्मनसंदेहो अल्पजीवीचमृत्युदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जन्मपत्री में
ऐसे गृह आनकर पड़ें सोमध्यम दशाभी देखेहै और श्रेष्ठदशाभी देखेहैं मनकी इच्छा सब पूर्ण होय परन्तु पापग्रहोंके प्रभाव करके
दीर्घचिंता होय लाभमें विघ्नआवे लाभ होता २ रुक जावे फिर बहुतसे धनका आगमनहो हीनकार्य करके पछतावे स्त्रीको गुप्तचिंतारहे
और जीवको चिंताक्लेश बनीरहै हेशुक्र पूर्व पापका प्रायश्चित करनेसे पुत्रोंका सुख देखे और यहजीव झूंठीवार्ता सुनकर क्रोधित
हुवाकरे सत्यसे प्रसन्नरहे साहसी पुरुषार्थी दानीसुकर्मी बुद्धिमान् कभी बुद्धिभ्रमसी होजावे अकलसे नवीन बात निकाले मनुष्य भला
कहैं कई अलायावें नयाजन्महो फिर आयु पूर्णभोगे हेशुक्र पृथ्वीपै यहजीव अनेकतरहके आनन्ददेखे परन्तुपुत्रके सुखसे रहितरहै
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से कर्म इस जीव से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी पूर्व जन्ममें बने हैं जो वंशकी वृद्धि नहो और पुत्रोंके क्लेश देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मनिपापार्थं श्रुणुपुत्रति
ध्यानक ग्वालवंशकुलेजन्म कृषीकर्मग्रहीरक ॥ मिष्टक्षेत्रञ्चउत्पत्ति गुड़खड़वाचभासये चद्रदिवसोपिहोतव्यं दीर्घपापंचभागिकं ॥
अग्निमन्द्रमहाज्वाला लोहपात्ररसाधिक युग्मसर्पमहान्दोर्घं भाविवशप्रवेशकं ॥ विषयरोरसाबूड गुडमिष्टान्नमेलनं ग्वालवंशोत्र
लोभार्थं मेलिकाकृत्यविक्रय ॥ बहुजीवगुडोभक्ष प्राणोचगवनंतथा दीर्घपापप्रभावेण वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ अतिक्लेशमहादुक्खं
स०उ० पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पूर्व जन्म में ग्वाल वंशी अहीर था और खेती का कृत्य करे था ईख बहुत
१३२ बोवेथा मिष्टान बनाता था सो कोल्हू में भट्टी पर रस पक रहा था भावी के वश दो सर्प बड़े २ मोटे जहरीले वषियर कड़ह
में आन पड़े सो गिरतेही मृत्यु हो गई तो इस ग्वाल वंशी ने सब होतव्य अपनी दृष्टी से देखा परन्तु उस रस का त्यागन
लोभ वश नहीं किया मर हुवे सर्पों को निकाल कर फेंक दिया और उस कड़ाह के पाक का गुड़ बनवा कर बेचा वो गुड़ जिस
जीव ने खाया वही मृत्यु का प्राप्त हुवा सो बड़े पाप का भागी है इस कारण वंश की वृद्धि नहीं होती और पुत्रों को भटके हैं ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानकस्यपूजाच किंमत्रंकिंजापकं पूर्वपापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या
श्रद्धामात्रमाणिक युग्मसर्पलिखेन्मूर्ति गायत्रीमन्त्रजापकं ॥ यज्ञहवनञ्चदानञ्च कुर्वंतिविधिपूर्वकं संकल्पंददेत्विप्र सहितोवस्त्रभूषणं ॥
दानमन्त्रकृतेनत पूर्वपापञ्चशांतये पुत्रसुखनसंदेहो वशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव श्रद्धामात्र स्वर्ण पर दो
सर्पोंको मूर्ति बनावे और वस्त्र भूषण सहित विधिपूर्वक कर्मेष्टि ब्राह्मणको दानकरे और हवन करे तो अवश्य पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एषग्रहस्थितपत्री बहुविद्याचप्राप्तये कलान्वितःविलासांच विमलःसर्वकार्यकृत ॥ मतिमानचारुशीलश्च
भृगुणापरिभाषितः जन्मश्रेष्ठकुलेयातो बहुभागीचलोकमा परोपकारकर्ताच चित्तचिंताचयुक्तता मित्रपक्षमहाप्रीति सर्वसुखंचप्राप्तये ॥
साहसांसन्मानीश्च दीर्घव्ययनसंशयः श्रेष्ठशिक्षाददेत्मित्र सूरवीरोपराक्रमः ॥ युग्मअल्पमहापीडा नवीनोजन्मप्राप्तये जलग्नि
भयजीव वृथाचिन्होतिदृष्यते ॥ कस्मिनकालउपद्रोवा गुप्तचिंताभविष्यति लाभप्राप्तिविशेषेण अतितेजोप्रतिष्ठया ॥ स्त्रीप्रीति
स०उ० नसंदेहो आशक्तंचित्तयुक्तत नवीनोमन्द्रकंरचना अस्त्रभयभृगुसनमः ॥ सर्वसुखचप्राप्नोति पुत्रदुखनसंशयः पत्नीक्लेशमहाचिंता
१३३ वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जिस जीव की पत्री में ऐसे गृह आन के पड़े हैं सो भागवान् विद्यावान् सूरवीर श्रेष्ठ कार्य
करने वाला परोपकारी पहली अवस्था से अन्त में सुख विशेष खर्च विशेष रहै श्रेष्ठ शिक्षा देने वाला इज्जत पैदा करे जल
अग्नि भय होय किसी काल में उपद्रव हो फिर शांत हो दो अल्प भुगत कर आयू पूर्ण हो स्त्री से मित्र से प्रीत नई २ लाभ
की वार्ता सोचा करे पुत्रों का दुख देखे स्त्री को क्लेश रहे सब सुख हों परन्तु पाप के कारण पुत्रों का दुख हो ॥
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन वंशवृद्धिनदृश्यते त्रासपुत्रश्चभोक्तव्यं पत्नीक्लेशोपिदीर्घता ॥ पूर्वगाथाइदंजीव श्रुणुत्वंममवांछया
केनपापप्रभावेण सुतानन्दनदृश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्र ज कहते हैं हेपिता कौन से पाप कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में
किये हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः आद्यजन्मांतरंगाथा
कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ ग्वालवंशसमुत्पन्न बहुसेवानरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच तेजस्वीप्रतिष्टवान् ॥ अरजुनधेनुविख्यातो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवपुरग्रामवासकम् बहुदानीप्रधानजीव ग्रानन्दभूमिमंडले ॥ हस्तितथापितेयात्रा स्नानेहरिद्वारकम् रविग्रास्तानिशामार्गें
ग्रन्धकारोपिगच्छति ॥ कुमार्गोगवनंकत्वा ग्रन्यपुर्षापिवर्जयेत् पशुसर्पइदंमार्गें पगडंडीनगच्छति ॥ यात्रीमंदश्रु शुशब्द
ग्रंगिकारनकृत्यया सर्पंचसहितपुत्रो गजचर्णोंपिमृत्युदा ॥ सर्पशापप्रमुखंदत्वा सप्तजन्मग्रपुत्रवान् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा
हेपुत्र प्रथम एक जन्म में यह जीव ग्वाल वंश था हरिद्वार गङ्गा स्नान करने जाता था सो रात्रि के समय ग्रन्य मनुष्यों ने
स०७० मना किया कि इस रास्ते में सर्प बहुत पड़े रहते हैं रात्री में मत जाग्रो सो यह न माना बहुत से सर्प ग्रादि जीवों का विध्वंस
१३४ हुवा तो पाप का भागी हुवा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकम् सर्पशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥
भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौनसे दान मंत्रसे पुत्रों के सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकम्
मृत्युसर्पलिखेन्मूर्ति रक्तचन्दनकारकम् ॥ गंगाजलेनसंशुद्धो धूपीदपंचचन्दनम् बीजमन्त्रश्चगायत्री लिपिकत्वाविधिपूर्वकम् ॥
दीर्घवज्रकतेदानं मन्त्रश्रद्धाप्रमाणकम् ताम्रकुम्भघृतमध्ये शुभमूर्तिप्रवेशकम् ॥ अन्नवस्त्रददेत्दानं जापंचविधिपूर्वकम् मंत्रमन्तान
गोपालं चन्द्रलक्षप्रमाणम् ॥ देवकीसुतगोविंद दूसरामन्त्र उच्चारण करे ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय ग्रापदुद्धारणाय
पूर्वशापनिवारणार्थं दानमन्त्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ मन्त्रदानकतेसन्त निश्चयपुत्रजीवितं पूर्वशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं स्वर्ण पत्र पर सर्पों की मूर्ति बनाय गंगाजल से शुद्ध कर विधिपूर्वक दान करे ऊपर लिखा मन्त्र पढ़ता
जाय ग्रौर एक लक्ष सन्तान गोपालका मन्त्र विद्वान् पंडित से जपवावें तो निश्चय पुत्र होकर जीवें इसमें कुछ संशय नहीं है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वग्रहस्थित्वा कुण्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितेलोके विलम्बोन्नात्रसंशयः ॥ युवावस्था यदाप्राप्य
भाग्योदयविशेषतः द्रव्यलाभंभवेच्चापि स्वकृत्यकुशलोगुणी ॥ बहुकार्यरतोनित्यं सुमित्रलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्
माननीयोविशेषतः ॥ यदौज्ञात्वामहद्दुखं पुनरांतोश्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितं नतुष्यतिकदाचनः ॥ गोधौम्रापिवर्णश्च बुद्धि
स०उ० वानोविशेषतः द्विभार्यागेहेप्राप्नोति अथवामंगलंत्यजेत् ॥ सत्यमार्गसुकृत्यश्च स्वकुलेपोषणेरतः प्रतिष्टावर्धतेलोके भूमिलाभ
१३५ नसंशयः ॥ श्रेष्टकृत्यविजानिया गुप्तचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंता देहपीडाचगुप्तता ॥ अकस्मात्महाद्दुखं भयभीतोचप्राणक
शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेपराजयम् ॥ प्रदेशोगवनंकृत्वा नान्यथावचनंमम शुभकार्येधनव्ययं अर्थप्राप्तिभविष्यति ॥ सर्वसुखश्च
प्राप्नोति पुत्रशोकनसंशयः ॥ भाषा ॥ हेशुक्र इस जीव की पत्री में श्रेष्ट ग्रह पड़े हैं परन्तु फल देर से करेंगे अन्त अच्छा हो
अच्छे लाभ के काम करे राजद्वार से लाभ हो बहुतों का काम निकले गुप्त प्रीत रहै दूसरी स्त्री भी प्यार करे सूरवीर किसी के
छल में न आवे सगाई हो के छूटे या द्विभार्या योग हो सत्य बोलने वाला दूसरे की बात को तोले बड़े बड़े मामले देखे स्त्री
पुत्रों का क्लेश चिंता रहे सब सुख देखे परन्तु पूर्ण पाप के प्रभाव से पुत्रों के शोक देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण
पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता कौनसे ऐसे कर्म इस जीवने पूर्वजन्म
में करे हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं यवनवंशकुलेजन्म षटकर्मापिवर्जयेत् ॥
पशुअंडश्चभोजनाय बहुजीवविनाशनं नित्यउपवनंगत्वा पक्षोत्रालभक्षणं ॥ सहस्रोजीवश्चापार्थं पुत्रसुखविनश्यति ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्पन्न हुवा था सो अपने षटकर्म से रहित रहा और नित्य
भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव एक पूर्व जन्म में यवन वंश में उत्पन्न हुवा था सो अपने षटकर्म से रहित रहा और नित्य
प्रति बागों में जाकर सैकड़ों पक्षियों के अंडे लाकर के भक्षण किया करता था और बड़ा धनवान् था बाग जमीन अनेक
तरह की सवारी थी परन्तु षटकर्म से रहित था और अपने आनन्द भोगे था सो सैंकड़ों पक्षियोंका शाप लगा हुवा है ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखंभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान

मन्त्र जाप कराने से इस जीव को पूर्व का दियो हुवा शाप नष्ट हो जो पुत्र के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥

भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या चन्द्रलक्षप्रमाणकी गायत्रीमूलमन्त्रस्य रक्तचन्दनम्प्रलिखेत ॥ पक्षीबालकम्प्रकारम् लिख्यतेविधि
पूर्वकम् षटरसआदिसामग्री संकल्पम्ब्राह्मणंददेत ॥ गायत्रीमूलमंत्रस्य चंद्रलक्षप्रमाणकं मन्त्रसन्तानगोपालम् श्रेष्ठविप्रजपंतथा ॥
दान करते समय श्रद्धा और भक्ति पूर्वक विष्णुभगवान् का ध्यान करे और मुख से यह मन्त्र उच्चारण करता जाय ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायण विष्णुभगवान् पूर्वशापनिवारणार्थं पुत्रसुखनिमित्यर्थं दान मन्त्र जाप करूं हूं सो ग्रहण करो ॥
मंत्रदानकृतेसन्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशय वंशवृद्धिभविष्यति भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण का पत्र एक
मुद्रा प्रमाण बनवावे और उसके ऊपर गङ्गा जल मिश्रित लाल चन्दन में मूल मन्त्र लिखे और पक्षियों का आकार बनवा कर
और षटरस आदिका संकल्प करा कर श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मण को दे और मन्त्र सन्तान गोपाल और गायत्री मन्त्र लक्ष प्रमाण
जपवावे हवन यज्ञ करेतो निश्चय पुत्र होकर जीवें और धन संतानकी वृद्धिहो और जीवन सुफल माने हर प्रकारके आनंद हों ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रइस्थित्वा बहुभागीचबालकः साहसोचप्रतापीच विनीतश्चतुरोगुणी ॥ मंत्रतंत्रविजानीयात्
शिवभक्तिचमध्यमा दृष्टीन्यूनविजानीयात् नेत्रपीडानसंशयः ॥ अंगरोगकचित्काले औषधिप्रतिशांतये मित्रश्रेष्टमहाप्रीति
नवीनोवार्तयाचितः ॥ अल्पकष्टभयंशुक्र नवीनोजन्मप्राप्तये मिष्टवाक्यप्रियवाणी धनचिंतानसंशयः ॥ महत्प्राप्तिमहोत्साहो
भाग्योदयदिनेदिने कटुवाक्यउपाधीच शत्रुपक्षविरोधता ॥ चौरभय विजानीयात् गुप्तशत्रुचप्राप्तये राजद्वारप्रतिष्टोवा भूमिलाभ
स०७० भविष्यति ॥ पुत्रचिंताविशेषेण पत्नीशोकबूडनं प्रमेहोव्याधिकंक्लिष्ट औषधीप्रतिशांतये ॥ कस्मिन्कालेउपद्रोवा शीघ्रोवीर्यखंडतः
१३७ अर्थआयुगतेशुक्र भाग्योदयदिनेदिने ॥ पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस जीव की पत्री
में ग्रह श्रेष्ट हैं इज्जत पावे चतुर बुद्धिमान् मन्त्र यन्त्र का भी कभी शौक हो शिव भक्ति करे मध्यम श्रद्धा से कभी आंख दुखनी
आवें दृष्टि मध्यम सी होवे एक मित्र से प्रीत बनी रहे चित्त उसकी तरफ विशेष रहे एक कष्ट अल्प समय हो फिर औषधी से
शांति हो श्रेष्टवार्ता बारम्बार सोचे किसी काल में क्रोध विशेष आया करे कैड़ा बोले शत्रु जला करें मार्ग में या और कहीं
चोर का भय हो स्त्री से प्रीत हो राजद्वार और भूमि से लाभ पुत्रों के दुख देखे स्त्री को औलाद की चिंता रहे अनेक यत्न करे
पूर्व पाप के कारण निष्फल जाय हेपुत्र यह जीव सर्व सुख देखे परन्तु पुत्र सुख न हो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण
पुत्रसुखविनष्यति पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रृणुत्वममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता पहले किसी जन्म में कौन से
पाप इस जीव से बने हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारणं

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारगः ॥ उपवनंगवनंकृत्वा सन्मुखोसिंहदृष्टयः क्षत्रोसिंहवधोबाण द्विजपुत्रचमृत्युदा ॥
चन्द्रपुत्रसुखीविप्र क्षत्री शविनाशनं द्विजदृष्टिकृतेपुत्र हाहाकारविव्हलं ॥ विप्रशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतदुखी ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव एक पूर्व जन्म क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया बड़ा भारी धनवान् था सो एक समय
धनुषबाण लेकर शिकार खेलने गया तहां सिंह दृष्टिमें आयातो क्षत्रीने तीरमारा सिंह तो वच गया एक ब्राह्मणका पुत्र सन्मुखसे
८०३० आवे था सो क्षत्री के बाणों से उसके प्राणों का नाश हुवा तो ब्राह्मण के यह एक ही पुत्र था सो उसका मृतक शरीर देख कर
१३८ हाहाकार कर के विव्हल हुवा और क्षत्री को ब्राह्मण ने शाप दिया कि तू भी सात जन्म तक पुत्रों को भटकता रहेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् विप्रशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान
मन्त्र जाप से पू का दिया हुवा ब्राह्मण का शाप छूटे जो इस जीव को पुत्रों का सुख हो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या
चन्द्रटंकप्रमाणकी तन्मध्येकामवीजश्च स्वर्णोशुद्धमाद्रशेत ॥ रक्तचन्दनमिश्राणि द्विजमूर्तिश्चकोरकम् चन्द्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्र
जापकं ॥ वस्त्रभोजनंदानं संकल्पंब्राह्मणाददेत वज्रदानविनिर्मुक्तो पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ वंशवृद्धिनसंदेहो भाग्योदयदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र एक टंक प्रमाण स्वर्ण का पत्र बनवा कर तिस के ऊपर रक्त चन्दन और
अनार के कलम से द्विज के पुत्र की मूर्ति लिखे और वस्त्र भोजन सहित सब सामग्री संकल्प कर के ब्राह्मण को दे
एक लक्ष गायत्री मन्त्र जपवावे हवन यज्ञ करे ब्राह्मण को दक्षिणा देकर तृप्त करे तो अवश्य पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेद एवंसाकुण्डलीफलं आदौभाग्यश्चमध्योपि पुनरंतेविशेषता ॥ बालवस्थाचक्रीड्यन्ते विद्याभ्यासेपिमंगलं तातद्रव्यंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवः ॥ भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेनात्रसंशयः वारिभीतोथवावन्हि चतुष्पादेन पीडितम् ॥ उच्चस्थेपतितोभूमौ शरीरोवातपीडितं बहुविद्यानप्राप्यन्ते कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ बुद्धि तोविशेषेण सुज्ञाताचसुलक्षणः युवावस्थासुखंप्राप्य पुत्रसुखविनश्यति ॥ व्ययलाभविशेषेण कीर्तिवंतोप्रतिष्ठत भाग्यवंतोधनाध्यक्ष सुप्रसिद्धंसुखीन्नरः ॥

८०७० चंद्रमित्रपरंप्रीति सर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिताद्धयोजीव प्राप्यतेशोकसंयुतं ॥ कदाचकष्टरोगार्तो बहुद्रव्यव्ययोभव राजद्वारे धनागम्य भूमिलाभस्त वच ॥ बरङ्गोसिंधुवच्चितं जायतेबहुनूतन अल्पोदीर्घभयंप्राप्य नूतनंजन्ममन्यते ॥ पुन तेसुखंप्राप्य आयुपूर्णभविष्यति पापक्रूरग्रहापूज्यं यक्रताभाग्यमन्दता ॥ दानमन्त्रविधानेन मनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्यविशेषेण परकाय रतोनरः ॥ दयालुसुविचारश्च गीतवाद्यतस्सदा सुन्दरंमृगुवाक्षीच धनसंयुक्तकौशल ॥ सत्यवक्ताप्रतापीच विनितश्चतुरोगुणी सर्वसुक्खश्चप्राप्नोति पुत्रप्राप्तिउपायकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ हो प्रथम मन्द भाग हो पश्चात् में विशेष भाग की वृद्धि हो बाल्यावस्था में बालक्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में खर्च हो बहन भाई का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय हो या कहीं से गिरे विद्या कार्य मात्र हो चतुर दाना युवा वस्था में बड़े काम और मामले देखे लाभ खर्च बहुत हो प्रतिष्ठा पावे एक मित्र से गुप्त प्रीति विशेष हो उससे मन की बात कहै और एक जीव का क्लेश बहुत माने कई बीमारियों में खर्च हो राजद्वार तथा भूमि से लाभ हो चित्त में समुद्र क सी नित्य नई तरंग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उठैं एक अल्प भारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हो हेशुक्र पुर्व जन्मों के कारण पुत्रों के सुख से रहित रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनपापश्चकर्तव्यं पूर्वजन्मनिकथ्यते विधिपुर्वकथंतात श्रुणुत्वंममवांछया ॥ सर्वसुलक्ष्मप्राप्नोति वामपुत्रश्चविन्हलं पुत्रप्राप्तिनदृश्यंते जन्मतेसुतमृत्युदा ॥ हेपिता इसजीवने पूर्वजन्ममें कौनसेपाप किएहैं सोकहो ॥ भृगुवाच ॥ ब्रह्मवंशकुलेजन्म कुरुक्षेत्रचवासयो दीर्घदानश्चग्रहणं यात्रापुत्रविनाशनं ॥ हेशुक्र तुम चित्तदेकर सुनो हम प्रथम जन्मसे पहले जन्मकी कथा वर्णन करते हैं क्योंकि शापतो सातजन्म तकभी फलकरेहैं सो यह प्रथमसे प्रथम जन्ममें ब्रह्मकुलमें कुरुक्षेत्रमें पराडाथे इन्होंने बहुत कुछ दानलिये परंतु एकदुष्टकी सम्मतिमें आनके एकयात्री जोसाथमें स्त्रीपुत्रकोलिए इनकेस्थानपरठहराथा उसकेपुत्रको स्वर्णकाआभूषण जड़ाऊ और सच्चेमोतियोंकी माला उतारकर उसके सोतेहुवे पुत्रको कूपमेंडालदिया सो उसयात्रीने अतिदुखीहो वहींतीर्थपर शापदिया कि जिसने मेरे पुत्रकी यहगतकी उसके सात जन्म तक पुत्रका सुख नहो और दुखित रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं यात्रीशापविनिर्मुक्तो सुखसंतानवर्द्धनः ॥ यहकथा सुनकर तिनके पुत्र शुक्रजीने भृगुजीसे प्रार्थना करके पुछा हेपिता कौनसे दानमंत्रजाप करानेसे इसजीवका शापनष्टहो औरपुत्रोंका सुखदेखे सोवर्णनकरो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिंकृत्वा यात्रीमुर्तिपुत्रकं रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ तीर्थदानददेविप्र गायत्री मंत्रजापकं वस्त्रआभूषणंमहितं संकल्पश्रेष्ठविप्रयो ॥ इदंदानकृतेजीव पूर्वशापनष्टकं पुत्रसुखनसंदेहो मनवांछितफलप्रदा ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यहजीव स्वर्णपत्रपर यात्री पुत्रकी मुर्ति लाल चंदनसे लिखे गंगाजलसे स्नान कराय तीर्थ पर जाय श्रेष्ठ ब्राह्मणको दानकरे गायत्रीमंत्र जपवावैतो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगोद्भवेकाल ग्रहाश्रेष्ठवलान्वितः फलपूर्णनकर्त्तव्या त्रिग्रहाअधमस्थिता ॥ कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते
तेनहानिश्चजायते भौमपुच्छेरविपूज्यं दानमंत्रशुभक्तित ॥ विशेषोलाभसंजातं भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोके सर्वतोदिशि
मंगलं ॥ अयत्नेनतदाकाठय मध्यलाभोतिचितया दानमंत्रसुपुण्येन बहुत्वोलाभसंभवा ॥ आनन्दमंगलाचारं जीवहर्षचमोदिता
सुकीर्तिश्चाप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्योप्रतिष्टत ॥ यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंत्तनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्वोपिजायते ॥
स०उ० क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पजन्मनूतनम् सुयत्नंदानमन्त्रेण सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ पुत्रचिंताभविष्यन्ति पत्नीक्लेशविह्वलं दशाश्रेष्ट
१४१ प्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव ॥ कुवेद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णयुतोजीव सर्वेषांशुभचिंतकः ॥ नकस्याअशुभ
चिंत्य परनिंदाविनिर्मुखः व्रणचिन्हशरीरोपि शत्रुपक्षविरोवता ॥ तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुण्यप्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव
सर्वथाकर्मकारणः पत्नीपुत्रमहाचिंता भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं इस कुण्डली का फल बहुत
उत्तम श्रेष्ठ था परन्तु पूरा फल देर से हो तीन ग्रह हानि कारक हैं सूर्य, मंगल और केतु इनका दान मन्त्र उपाय करने से
लाभ विशेष हो और भाग्य की वृद्धि होगी और यह जीव बड़ी इज्जत और प्रतिष्ठा पावे परन्तु इतने नाकिस ग्रहों का यत्न न
हो मध्यम फल हो और यत्न उपाय करने से अनेक प्रकार के लाभ हों और आनन्द मंगलाचार हों जीव की खुशी हो और
यह जीव बड़ी इज्जत कीर्ति पैदा करे मध्यम दशा में मध्यम लाभ और गुप्त चिंता अनेक प्रकार के खर्च एक अल्प से
बच कर नया जन्म हो और कहीं से अकस्मात लाभ हो यह जीव सब का भला चाहे एक मित्र से मिल कर लाभ हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऊंची पदवी पावे शत्रु उपाय करे घर में क्लेश सा हो फिर मनोकामना पूरी हो हेशुक इस जीव का पञ्चम स्थान पूजनीक है
सब सुख देखे परन्तु विना उपाय पुत्रों के सुख से रहित रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनष्यति पूर्वजन्म
कथाकथ्यं श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता ऐसे कौन से खोटे कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो
पुत्रों के सुख प्राप्त नहीं ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ मृगीपुत्र
विलोकस्य क्षत्रीचापधारणम् दक्षिणेहस्तकंसाय मृगीपुत्रश्चमृत्युदा ॥ हाहाकारमृगकृत्वा पुत्रशोकोपिबूडनं मृगशापमुखंदत्वा
सप्तजन्मसुतहानकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र पूर्व जन्म की कथा इस जन्म पत्र वाले जीव की तुम सुनो
क्षत्री वंश में पूर्व से पूर्व जन्म में उत्पन्न हुवा सो शिकार खेलने गया तो इसने मृग का बच्चा मारा सो मृग ने दुखी हो शाप
दिया कि सात जन्म तक तुझे पुत्र का सुख नहो और पुत्रों के विलाप देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रं
किंजापकम् पूर्वशापविनष्यंति पुत्रसुखभविश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी महाराज ने कहा हेपिता यह जीव कौन से दान मंत्र और
जाप करावे जो इस जीव को पूर्वका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र होकर जीवें और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥
भृगुवाच ॥ स्वर्णंचप्रतिमाकारः मृगमूर्तिलिपिकृतः ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ श्रद्धामात्रददेहानं अर्धरात्रप्रमाणकम् ॥
भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका बनवावे तिसपर मृगकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखे और शुद्ध करके घृतके भरे कलश
में मूर्ति गुप्त प्रवेश कर अर्धरात्रि प्रमाण दान करा कर श्रेष्ठ विप्रको देतो पुत्रका सुख निश्चय हो और मनोकामना पूर्ण होय ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्येदंफलंदृश्य यथाभाग्यादिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवआशाविनिर्मुखः ॥ चिंतनंसुस्थिरंलोके चञ्चलोचितविशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चजायते ॥ नूतनंवार्तयाचिंत्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृष्यन्ते विलम्बोजायतेपुनः ॥ क्लेशरोगेनपीड्यन्ते पुत्रशोकोपिचिंतनं लाभेशोपंचमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता ॥ फलश्रेष्ठसुखंप्राप्य सुपुण्यं फलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण पुत्रचिंतानसंशयः ॥ बहुकृत्यमहल्लाभं सुजनानन्दवर्द्धन मित्रपक्षपरंप्राप्ति आनन्दभूमिमण्डले ॥
स०उ० पितृपीड़ाग्रहगुप्त अकस्माद्भयदायकः पत्नींक्लेशनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः ॥ बंधुक्लेशविरोधश्च चंद्रपीड़ाविशेषतः अकस्मात्
१४३ महाचिंता नान्यथावचनंमम ॥ गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधि तेनसौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं ॥ द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलबंधुचहर्षिता मध्यविद्याचप्राप्नोति भाग्यवृद्धिविशेषतः ॥ गुप्तलाभनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने पूर्वशापप्रभावेण पुत्रसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस पत्र का फल सुनो यह जीव ज्ञानवान् चतुर हो सब का भला चाहे भागवान् हो प्रसन्न रहे एक जीवकी आस लगी रहै चित्त चलाय मानसा रहै और नई नई बार्ता सोचता रहे गुप्त चिंतासी हो जाया करे नये नये लाभहों कार्य की सिद्धि में विलम्बसा हो जाया करे और क्लेश पीड़ा होकर आनन्द हो पुत्रकी चिंता लगी रहे लाभेश और पञ्चमेश की पूजा दान से फल श्रेष्ठ और मनोकामना पूर्ण हो कृत्य में लाभ और मित्रों से प्रीत पृथ्वी पै आनन्द और पितृ पीड़ा का भय हो स्त्री को क्लेशसा हो किसी समय बन्धु या और शत्रुओं से विवाद हो अकस्मात चिंता हो जाय गायत्री मंत्र जाप करानेसे मन इच्छा पूर्णहो विद्या मध्यम और चतुर विशेषहो कहींसे गुप्त लाभहो बहुतसी प्राप्तिहो हेशुक्र पूर्वपाप और शाप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के कारण पुत्र का सुख नदेखे ॥ शुकोवाच ॥ श्रुणुतातकृपानाथ पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापं पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुकजी ने कहा हेपिता कौन से पाप इस जीवने पूर्वजन्म में किये हैं जो पृथ्वी पर सब सुख देखे और पुत्रों के दर्शनों को भटकता रहे सो कृपा कर कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते श्रुणुपुत्रोतिध्यानकं ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्मोपिकृत्यया ॥ गौबच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं बच्छोपिप्राणगवनं गौश्रापमुखंददेत ॥ दारुणदुखददेत्विप्र अग्रजन्मश्चभोक्तया पुत्रसुखविनश्यंति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक पहले जन्म में यह जीव ब्रह्म कुल में उत्पन्न हो कर खेती करता था सो रात्रीं को गौ और उसका बचा खेती में आघुसे तो बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह बछड़ा मृत्यु को प्राप्त हुवा गौ ने विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे मैंने बछड़ेका दुख देखा तैसे तूभी सातजन्मतक पुत्रों का दुख देखेगा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वंशापविनश्यंति पुत्रसुखश्चप्राप्नये ॥ भाषा ॥ शुक जी ने कहा हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से गौ का दिया हुवा शाप नष्ट हो संतान का सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गंगाजल रक्तचंदनं गौबच्छतिआकारं तांदुलस्वेतगुप्तया ॥ संकल्पंददेत्विप्रः सुखउच्चार्णमंत्रकं बटुकमंत्रकृतेजापं पुर्वशापविनश्वति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुरस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुकस्वर्ण के पत्र परगौ के बछड़े की मूर्ति रक्तचन्दन और गंगाजल से लिखे चावल का थाल भरकर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी श्रेष्ट ब्राह्मण कोदे और ऊपर लिखे मंत्र का श्रद्धा प्रमाण जाप करावे गायत्री मंत्र जपवावे तो पत्र होकर जीवें मनोकामना पूर्णहो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं यथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्या चितचिंतातिमन्यते ॥ श्रमोपिजायतेदीर्घ
श्रहद्रव्यश्चन्यूनता विद्यावंतोसुबुद्धिश्च सर्वावस्थाप्रतिष्ठतः ॥ सत्यवक्तासुखीलोके नकश्चितहानिचिंतकः परकृत्यरतोप्रेमी जनासर्वे
प्रशमिता ॥ जीवचिंताविशेषेण मित्रप्रीतिबृहत्वया नूतनोवार्तयाचित्तं उद्यमेणधनाश्रयः ॥ कुलश्रेष्टसुमार्गीच सर्वेषांतोषणोरत
दशान्यूनमहाचिंता उद्यमेश्रमनिष्फलम् ॥ विलम्बोजायतेलाभम् अर्द्धकृत्यश्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्य पदउच्चमुपस्थितः ॥
स०व० विशेषोजायतेलाभम् मानकीर्तिविवर्द्धनम् पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनः ॥ पापक्रूरगृहापूज्यं पञ्चमेशोप्रयत्नतः दानमंत्र
१४५ सुपुण्येन मनेच्छासर्वपूजिता ॥ सर्वावस्थामहल्लाभं भाग्योदयदिनेदिने अतश्चायुमहासुखं भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ सर्वसुखश्च
प्राप्नोति पुत्रप्राप्तिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी पत्री में गृह श्रेष्ट हैं लाभ खर्च विशेष हो
लाभ के वास्ते नई नई बात का चिंतवन करे एक समय बुद्धि भ्रमसी हो घर में द्रव्य की न्यूनता प्रतीत पड़े विद्यावान्
बुद्धिवान् हो इज्जत प्रतिष्ठा पावे सत्य बोलने वाला गुप्त चिंता सी हो जाया करे पराए काम सुधारने वाला लोग प्रशंसा
करें मित्रसे प्रीत विशेष रहे नई नई बात का ध्यान धन की प्राप्ति का परिश्रम उद्यम करे न्यूनदशा में परिश्रम
निष्फल हो अधूरा लाभ हो एक समय अकस्मात् लाभ विशेष हो उच्च पदवी पावे मान कीर्ति बढ़े स्त्री को पुत्र
के न होने की चिंता लगी रहे और अन्त आयु सुख मिले हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्रों के सुख को भटकता रहै ॥
शुक्रोवाच ॥ श्रुणुतातकृपानाथम् पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापम् पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता कौनसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाप इस जीवने पुर्व जन्ममें किये हैं जो पृथ्वीपर सब सुख देखे और पुत्रोंके दर्शनको भटकता रहे सो कृपाकर मुझसे कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते श्रृणुपुत्रतिध्यानकम् ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्म्मासुक्तत्यया ॥ गौवच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं बच्छोपिप्राणगवनं गौशापमुखंददेव ॥ दारुणदुखददेत्विप्र अग्रजन्मचभोत्तया पुत्रसुखविनष्यति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्मकुलमें उत्पन्न होकर खेती करताथा सो रात्री को गौ और उसका बच्चा इसकी खेती में आघुसे तो इसने बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह मृत्यु को प्राप्त हुवा तब उस गौने बड़ा विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे तैंने मेरे बछड़े को मारा और मैंने बछड़े का दुख देखा तैसे तूभी सात जन्म तक पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापक पूर्वशापविनष्यंति पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्रजी महाराज ने कहा हेपिता कौन से दान से और कौन से मंत्र जाप पुजा से पूर्व का गौ का दिया हुवा शाप नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रोंका सुख देखे सो विधि पूर्वक कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गङ्गाजलरक्तचंदनं गौवच्छोतिआकारं तांदुलस्वेतगुप्तया ॥ संकल्पंददेत्विप्रः मुखउच्चार्णमंत्रकम् बटुक त्रकृतेजापम् पूर्वशापविनष्यति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुकुरुस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण के पत्र पर गौके बछड़े की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और चावल का थाल भर कर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी श्रेष्ट ब्राह्मण को दे और फिर ऊपर लिखे मन्त्र का श्रद्धा प्रमाण भक्ति पूर्वक जाप करावे तो निश्चय पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं विशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभागीच चित्तचिंताविशेषतः ॥ व्ययलाभविशेषेण सर्वावस्थासुमोदिता मात्रभग्निचप्राप्नोति अल्पसुखनसंशयः ॥ व्रणचिन्हशरीरश्च वायुखेदश्चपीडिका कस्मिन्कालउपाधीच बंधुपक्षविरोधता ॥ अकस्मातउपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरेण महद्प्राप्तिमहोत्साहो लाभोभवतिनान्यथा ॥ गुप्तविद्याचप्राप्नोति कार्यमात्रञ्चसिद्धति मध्यप्राप्तिविजानीयात व्ययदीर्घोनसंशय ॥ चन्द्रअल्पमहादुक्खं नर्वानोजन्मप्राप्तये आयुभोगंचपुर्वोगा

सं०४० भृगुणापरिभाषितः ॥ चन्द्रस्त्रीमहाप्रीति आनंदंभूमिमण्डले सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रसुखविनश्यति ॥ पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रयोगश्च

१४७ खण्डत मानसीविविधाचिंता भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ पूर्वपापप्रभावेण पूर्णवांछानदृश्यते पितृपीड़ाग्रहमध्ये श्रद्धामात्रञ्चपूज्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ है गृह बलवान् पड़े हैं लाभ कारी और खर्च विशेष हो भग्नी और भ्राता का सुख मध्यम हो श्रेष्ट दशा में लाभ बहुत हो कीर्ति बढ़े शरीर में व्रण का चिन्ह कभी दर्द पीड़ा हो जाया करे और मित्र या बन्धु भ्रात से उपाधी हो अकस्मात् उपद्रव सा उठे शत्रुपक्ष से विरोध हो गुप्त चिंता सी हो जाय फिर बहुत सी प्राप्ति हो और इज्जत प्रतिष्ठा पावे दो विद्या का मध्यम योग हो ऊंचादर्जा पावे लाभ मध्यम हो किसी समय में खर्च विशेष हो एक अल्प आयु से बच कर उमर पूर्ण हो एक स्त्रा से महा प्रीत हो कर एक जीव का ख्याल बना रहे हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्र की महा चिंता क्लेश स्त्री को रहा करे पूर्व पाप के प्रभाव के कारण पुत्रों का सुख कठिन है पितृ पींड़ा घर में हो गुप्त बामारी हो अनेक प्रकार की चिंता हो सब सुख प्राप्त हों परन्तु पुत्रों का योग खंडत है पितृ पीड़ा को श्रद्धा मात्र उपाय भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करावे परंतु इच्छा पूर्ण विलंब से हो ॥ भृगुवाच ॥ मासेवर्षेसुखंप्रासि भृगुणापरिभाषितः सर्वसुखश्चप्राप्नोति संततिवंशविनाशकः ॥ भाषा ॥ सूर्य वंश ऋषी पुत्र भृगुजी महाराज ने कहा हेपुत्र यह जीव सब सुख देखे परन्तु पुत्रों के सुख से क्लेशित रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मंचभोतात पूर्वजन्मनिकथ्यते सर्वंचविस्तराद्ब्रुहि पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजी ने कहा हेपिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म करे हैं जो सब सुख देखे और पुत्रोंके सुखसे रहित रहे सो पूव जन्मकी कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ सूर्यवंशससुत्पन्न बहुसेवीनरोभवेत अश्वपतिगजग्रामी मानदीर्घोनसंशय ॥ तीर्थयात्रागवनंकृत्वा मार्गेमध्यउपद्रवं अश्वश्चजीवइस्थित्वा अर्धरात्रिप्रमाणकम् ॥ ऋषिसुतवाटिकागच्छं अश्वचणातिमृत्युदा ऋषिपुत्रश्चहरथंते हाहाकारविह्वलं ॥ क्रोधोशापमुखंदत्वा त्रयजन्मोमतहीनक ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र प्रथम जन्ममें यहजीव सूर्यवंशीथा और बड़ाभागवान्था हाथी घोड़े ग्रामथे तीर्थयात्रा करने जाताथा रुपयापायके अभिमान बहुत बढ़गया अर्धरात्रीको घोड़ेपर सवार होकर जाताथा रात्री कासमय कुछ अभिमानमें अंधाहुवा जाताथा सोमार्गमें एक ऋषीका पुत्र खेलताथा उसके ऊपर घोड़ेका चरणआया तुरंत मृत्यु को प्राप्तहुवा तब ऋषीने देखकर विलाप किया और शाप दिया किजैसेमें पुत्रोंके क्लेशमेंहुवा तैसे तूभी तीन जन्मतक पुत्रोंको भटकेगा॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापप्रणश्यति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दान जापसे शाप नष्टहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकं ऋषिपुत्रलिखेन्मूर्ति संकल्पंब्राह्मणांददेत ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव श्रद्धाप्रमाण स्वर्णपत्र बनवाय उसपर ऋषीपुत्र की मूर्ति लिखाय विधिपुर्वक श्रेष्ट ब्राह्मणको दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मपत्रफलेश्रेष्ट मध्ययोगश्चप्राप्तये तेजस्वीचप्रतापाच बुद्धिवानविशेषतः ॥ मध्यलाभनसंदेहो लाभईशपूजनं दीर्घज्ञानसमायुक्तो सुशीलोजीवदर्शनं ॥ दीर्घयायुसुयत्नेन वृहत्योफलप्राप्नुयात् आदपठनश्चविद्यायां अंते विद्याविसार्जनम ॥ बहूविद्यानप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति कस्मिन्कालेमहापीड़ा औषधिप्रतिशांतये ॥ पशुजलभयजीव नवीनोजन्मप्राप्तये भाग्यवृद्धि विशेषेण आनन्दंभूमिमण्डले ॥ शत्रुपक्षविरोधीच गुप्तचिंताशरीरजं भ्रातभग्निसमायुक्तो भृगुणापरिभाषितः ॥ तेजस्वीप्रतापीच

न० ७०

१४९ सूरवीरमहानरः पत्नीप्रीतिनसंदेहो बुद्धिचितचलायनं ॥ पुत्रहेतुकृतेयत्न दुर्लभसुतजीवः पत्नीगुप्तमहाक्लेश भृगुणापरिभाषितः ॥ चौरभीतिविजानीयात गुप्तशत्रुमहारकं धनव्ययविशेषेण अन्तशत्रुविनाशनं ॥ महाप्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्ष महाप्रीति गुप्तप्रीतिचलोकमा ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदर्शन ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस पत्र का फल श्रेष्ट है और मध्यम योग है यह जीव इज्जत प्रतिष्ठा वाला ज्ञानवान और सूरवीर, तथा सोच समझ कर बात कहने वाला मध्यम लाभ हो लाभेश के पूजन से विशेष प्राप्तिहो विद्या कार्य मात्र हो एक समय अल्प से नया जन्म हो पशु या जलका भय हो शत्रु पक्ष से विरोध गुप्त चिंता हो जाय बहन वा भाई का योग हो घर में कभी क्लेश गुप्त पीड़ा हो पुत्र के वास्ते यत्न करे परन्तु जीव ने दुर्लभ हों घर में स्त्री सुशील श्रेष्ट खान दान की चतुर हो दूसरी स्त्री से भी प्रीत हो एक समय गुप्त शत्रु और चोर का भयहो हानि पहुंचावे परन्तु अन्तमें शत्रु का नाशहो भागकी वृद्धिहो लाभ विशेषहो मित्रोंसे प्रीतहो शुभ काम में धन खर्चहो भाग्य दिनदिन उदयहोय हेशुक्र यहजीव पूर्व पापके कारण पुत्रोंको भटकता रहे पश्चात्में दान मंत्र उपायसे हो कर जीवें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनश्यति पुर्वजन्मांतरंतात गाथाकथ्यंममप्रति ॥ भाषा ॥ इस जीव ने कौन से पाप कर्म किये हैं जो यह पुत्रों का सुख न देखे इस जीव के पूर्व जन्म की कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः राजपुत्रकुलेजन्म लक्षाद्धिभुविमण्डले ॥ हरिद्वारगवनंकृत्वा अथवावाहनोदिपः बहुविप्रसहितपुत्रो कावेरीतट वासकं ॥ वृषभदीर्घ चरंमार्ग द्विजपुत्रभयंवधो मृत्युपुत्रदशाविप्र हाहाकारविह्वल ॥ राजपुत्रददेतशापं अतिक्रोधोपिबूडनं

७०७० पुत्रक्लेशमहाशोक सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हे पुत्र यह जीव एक जन्म में राज पुत्र था सो बड़ा

१५० अभिमानी था हरिद्वार पै जाय पराई स्त्रियों को खोटी दृष्टी से देखता था सो रथ में बैठ के गया गङ्गाजा के किनारे बहुत से ब्राह्मण स्त्री पुत्र सहित बात करते थे सो अन्धाधुन्ध रथ भगाया सो एक ब्राह्मण के दो पुत्र बाल अवस्था के रथ के पईये के नीचे आन कर मृत्यु को प्राप्त हुवे सो ब्राह्मण पुत्रों की मृत्यु देख राज पुत्र को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिजापकम् द्विजशापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौन से दान जाप करावे जो पूर्व जन्म का ब्राह्मणका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र पोतेके सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ शृणु पुत्रमहादान वंशवृद्धिचकारयेत स्वर्णपत्रमहाश्रेष्ठ कावेरीजलशुद्धयो ॥ रक्तचंदनमिश्राणि घृतपात्रश्चगुतया गायत्री मंत्रजाप्यंवे चंद्रलक्षप्रमाणकं ॥ संकल्पंपदेत्विप्र लोनपात्रद्विजोत्तमः वस्त्रआभूषणंदानं निश्चयपुत्रप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण पत्रपर रक्त चंदनसे ब्राह्मणके दोपुत्रों की मूर्ति लिखे घृतभरे कलश में प्रवेशकरे विधिपूर्वक ब्राह्मण को दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगे नरोजन्म आनंदं भूमिमंडने सत्यवादी भवेत्बालो भृगुणापरिभाषितः परमार्थीपविज्ञेयो प्रमादीप्रसवःपुमान् देवद्विजरतोनित्यं मानकीर्तिविशेषतः ॥ बुद्धिदीर्घ आयुस्याद मत्कीर्ति कुलवर्द्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोवार्तयाचितः ॥ चन्द्रमित्रपरमप्रीति चितवृत्ति आशक्तया दीर्घकार्योपि आगत्वो सर्वसुखंव्यतीततः ॥ अकस्मात् उपद्रोवा कस्मिन् कालशांतये चद्रअल्प नसन्देहो नवीनोजन्म प्राप्तय ॥ कुलबन्धु महाचिंता प्राणोभय भविश्यति दान
स०उ० मन्त्रश्चकर्तव्यं औषधी प्रतिशांतये ॥ बृणव्याधी शरीरेच चिन्हदेहोपिदृश्यते युवाआयु नसन्देहो धनप्राप्तिभविष्यति ॥
१८१ यातितेज प्रतिष्ठोवा भाग्यवृद्धि दिनेदिने वामचिंता महाक्लेशं अल्पगर्भोत्र खणडतः वंशवृद्धि नदृश्यंते गुप्तचिता महानकं पित्रश्च देवपूजाच नेकयत्नश्च कारयेत् ॥ सुतःपुक्ख विनश्यन्ति भृगुवाक्यं नचान्यथा सर्वानन्द भोक्तव्यम् व धवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र इस जीव की कुणडली में ग्रह श्रेष्टहैं सत्यबोलने वाला परमार्थी पराये काम मनसे करे सबका प्यारा देव ब्राह्मणों का मानने वाला इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे विद्या से बुद्धि विशेष हो श्रेष्ठ कुल वाला सुन्दर नई २ बात सोचे एक मित्र से प्रीति हो चित्त की वृत्ति आशक्तमी हो जाय लाभ मध्यमहो परन्तु बड़े २ काम खर्च के आवें सब आनन्द से पूरे उतरें एक समय अकस्मात उपद्रव हो एक अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो कुलबंधु चिंता कुछ विरोध प्राणका भय हो मंत्र औषधि से आरामहो फोड़ेका चिन्हहो युवा अवस्था में धन प्राप्तहो प्रतिष्ठा बढ़े भाग्य की वृद्धिहो स्त्रीको क्लेश चिंता पुत्रांक ध्यानमें दुखारहे पुत्र नहो जोहो तो अल्प जीवी हो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सो हे शुक्र यह जीव मां पुत्र देखे परन्तु पुत्रोंके सुखसे रहित रहे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भृगुवाच ॥ केनकर्मविपाकेन अग्रवंशविनाशकः पूर्वगाथाकथंतात शृणुत्वंमनवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव के
पूर्व जन्म की कथा वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ जटिलवंश कुलेजन्म धनधान्या भविश्यति अश्वपति गजग्रामीच
उच्चपदवी प्रधानक ॥ चापबाण गटीद्वार गवनखेटानु सारिणः मयूरांसहितेबाल बनखंडा किलोलकं ॥ प्रधानोजटिलं
चाप बाण संधानकंक्रिया मयूरोपुत्रकं बद्धो हाहाकार विलापन ॥ मयूरोशापकंदत्वा अतिक्लेश दुखदारुणः ममपुत्र
स०उ० महाशोकं सप्तजन्मत्वयाप्रभो ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जाट वंशमें यह जीव प्रथम एक जन्ममें उत्पन्न हुवा था भाग्यवान
धनवान हाथी घोड़े गांव सब थे उच्चपदवी वाला प्रधान था सो शिकार खेलने गया जंगल में मोरके बच्चे मारे मोरने
१५२ बच्चों की मृत्यु देख शापदिया कि चौधरी प्रधान जैसें मुझे बच्चे का दुख दिया तैसे तूभी सात जन्म पुत्रोंका दुख देखे ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजात्र किंमन्त्रं किंजापकं मयूरो श्रापकंनष्टः सुपुत्रो भूमिमंडले ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे
दानमंत्र जाप करानेसे पूर्वजन्मका पापनष्टहो और पुत्रों के सुख यह जीव देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्र लिपिकृत्वा
युग्ममुद्राप्रमाणकं मयूरोपुत्रकंकार चित्रंतेविधिपूर्वकं ॥ रक्तचन्दन मिश्राणि गंगाजलस्नानकं षटरसदानसहितो गायत्री
मूलमंत्रकं ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन श्रद्धामंत्रजापकम् पठितविप्रददेत्दानं मुखउच्चार्णं मंत्रकं ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वटुकभैर
वाय आपदुद्धारणाय पूर्वंशापनिवार्णार्थं स्वर्णमयूरदान कुरुकुरु स्वाहा ॥ इदंदानं कृतेसन्त मनवांछित फलप्रदा ॥
भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्ण का पत्र दो मुद्रा प्रमाण बनावे फिर उस पर रक्त चंदन से मोर की मूर्ति
लिख गायत्री लक्ष प्रमाण जपवावे सकल्प करके पढ़े हुवे श्रेष्ठ ब्राह्मण को देतो निश्चय कर के पुत्रों के सुख देखेगा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहा विराजत्वा श्रेष्ठपत्री सुखीनरः सुदशा फलप्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः ॥ पापक्रूर ग्रहापुजा क्रियतेफल प्राप्नुयात भाग्यवृद्धि विशेषेण मनवांछित फलप्रदा ॥ ग्रहापुजा नकर्तव्यम अर्धप्राप्ति नसंशयः चन्द्रस्त्री महाप्रीति आनन्द अति ध्यानकं ॥ आदिपठनश्च विद्यायां अन्तविद्या विसर्जनं बहूविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रश्च सिद्धति ॥ अष्टमेथादशे वर्षे बालवृद्धि दिने दिने तातधन शुभकार्य विवाहोत्सव मंगलम ॥ सप्तचन्द्र मितेवर्षे सून्यराम मितेतथा भाग्यवृद्धि
स०३० विशेषेण धनप्राप्तिनसंशयः ॥ देहकष्ट विजानीयात् औषधि प्रतिशांतये गुप्तचिंता शरीरेच शत्रुपक्ष विरोधता ॥ युग्म
१५३ अल्पगतेकाव्य पूर्णंआयु नसंशयः व्ययदीर्घ विजानीयात छत्रचिंतान प्राप्तये ॥ गुप्तचधन प्राप्नोति कस्मिन् कालेन संशयः पत्नीगर्भश्च स्थित्वा अल्पजीवीच बालकः ॥ मादहर्ष विजानीयात पश्चाते शोकबूडनं सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रसुख विनश्यति ॥ बामचिंता महाक्लेशं भृगुणाणरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जीव की कथा सुनो पत्र श्रेष्ठ है स्वदशा में फल अच्छा करेंगे पाप और क्रूर ग्रहों का मन्त्रजाप कराना श्रेष्ठ है भाग्य की वृद्धि होगी मन इच्छा पूर्ण होगी इतने पाप ग्रहों के दान मन्त्र न बनेंगे अधूरी लाभ होगी यह जीव बुद्धिवान् अक्लमन्द सूरमा दूसरे की बात को तोले सत्य झूठ को पहचाने धीरज धारी विद्यापूर्ण नहो परन्तु पढ़ों से भी ज्यादे प्रतिष्ठा हो ८ वर्ष से १८ तक विवाह स्त्री प्राप्त तात का धन शुभ काम में खर्च हो १७ वर्ष से ३० तक भाग्य की वृद्धि हो धन की प्राप्ति हो शरीर में कुछ खेद हो औषधि से आराम हो शत्रु पक्ष से विरोध हो कष्ट अल्प भुगत कर आयु पूर्ण ७२ वर्ष की हो खर्च विशेष हो छत्रचिंता किस समय गुप्तधन की प्राप्ति हो पत्नीगर्भ धारण करे अल्पजीवी बालक हो माता पिता को दुख दिखावे हे शुक्र इस जीव को पृथ्वी पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

सुख हो परन्तु पुत्रोंके सुख को भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनपाप प्रभावेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथा
कथ्यं उचारण विधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ ठाकुरवंश कुलेजन्म बहुसैवी नरोभवेत् कोटपति गजग्रामीच बन्धुकुल
विरोधता ॥ ज्येष्ठभ्रातश्च पुत्रोवा अर्धभागीत्र बालकः तातमृत्यु भवेल्लोके सुमाता देवपूजनं ॥ ठाकुरं लोभकं कार्णं भ्रात
पुत्रश्चमृत्युदा माताच देवमन्द्रस्य दीर्घशाप मुखंददेत् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस जीव का पूर्व एक समय में ठाकुर वंश में
न०ज० जन्म हुवा था सो हाथी घोड़े ग्राम बड़ा धनवान था सो बड़ा भ्रात एक पुत्र छोड़ के मृत्यु को प्राप्त हुवा और
उसकी स्त्री देवताओं के मन्द्र में पूजा करने लगा सो उस ठाकुर का आपस में हिस्सा बांटने में बहुत विवाद बढ़ गया
१५९ आखीर अन्त में ठाकुर ने अपने बड़े भ्रात के पुत्र को नष्ट करा दिया तो उसकी माता ने देवमन्द्र में जाय के बहुत रुदन
किया और शाप दिया कि तूभी सात जन्म तक बारंबार भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्र
किंजापकं बन्धुमुखंशापं सर्वपापश्चनष्टकं ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमन्त्र जाप कराने से पूर्वजन्म का पापनष्ट
हो और यह पुत्रोंके सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकारं सप्तटंकप्रमाणकं नराकारोलिखेन्मूर्ति गंगाजल
स्नानकं ॥ गायत्री मन्त्रकंजापं अर्धलक्ष प्रमाणकं मन्त्रमन्तानगोपालं श्रद्धामात्र कं तथा ॥ देवकीसुत गोविंद वासुदेव
जगत्पते देहिमतनयंकृष्ण त्वामहंशरणंगतः ॥ श्रेष्ठविप्रददेत्दानं सर्वशापविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र
स्वर्ण का पत्र सातटंक प्रमाण बनवावे तिसपर नर आकार मूर्ति चन्दन से लिखे तिसे विधि पूर्वक संकल्प करावे
और मंत्र गायत्री ५१ हजार और संतान गोपाल बहुतसा श्रद्धा प्रमाण जपवावे तो पुत्र होकर जीवें आनन्द भोगे ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वा ग्रहाचेदं बलवीर्य समन्वितः उद्यमेन धनंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः ॥ मध्यभागी सुखीलोके धनप्राप्तिपरिश्रमः कार्यकृत्यविशेषेण उच्चपदवीचप्राप्तय ॥ पूर्वपाप ग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं अतस्तेषां तुशांतिश्च कर्तव्याहि विनिश्चितम् ॥ अनुष्ठान महादान सर्वसौख्य प्रदंसदा गुप्तचिंता विनश्यन्ति मनिच्छा पूरितंततः ॥ विद्यामध्यमाप्नोति बाल क्रीड़ा किलोलकं मित्रपक्ष परंप्नोति आनन्द भूमिमण्डले ॥ तातवन शुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं पत्नीप्राप्ति नसंदेहो

सं०३० विद्यादीर्घप्राप्तये ॥ सत्यवादी प्रवक्ताच नवीनो चितनंकृते जलंपशु मर्यलोके शत्रुपक्ष विरोधता ॥ नवीनो कार्यकंकृत्वा

धनलाभ भविष्यति युवावस्थात्र प्राप्नोति आनन्दभूमि मंडले ॥ पत्नीप्रीत सुखीलोके विद्याण्ठनंपाठनं बन्ध्यायोगश्च

१५५ प्राप्नोति अल्पगर्भोपि खण्डतः ॥ वामचिंता विशेषेण पुत्रसुखंनदृश्यते पूर्वपाप प्रभावेण वंशवृद्धि विनश्यति ॥ सर्वसुखश्च भोक्तव्यं सुतरहितोनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव परिश्रमी और पुरुषार्थी हो भाग्यश्रेष्ठ मध्यम हो अच्छे काम करे नीचसे ऊंची पदवी पावे परन्तु पापक्रूर ग्रहोंके कारण किसी समय में गुप्तचिंता बुद्धिभ्रम चित्त स्थिर नरहे सोचे और होय और अधूरालाभ हो ग्रहोंके उपायसे मनोकामना पूर्णहो चिंताका नाशहो विद्याकी उन्नति मित्रसे प्रीत बहुत बनी रहे एक जीवकी आशामें मनरहे पिताका धन शुभकाम में खर्चहो स्त्री श्रेष्ठकुल की हो पुत्र के सुख को भटके हे शुक्र यह जीव बड़े २ मामले देखे बहुतों के काम निकाले दयावान प्रेमप्रीत करने वाला किसी का बुरा न चाहे सबका भला चाहे अल्प आवे सो नया जन्महो फिर आयु पूर्णहो परन्तु इतने पूर्व पापके उपाय न बने इतने हे शुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पुत्रका सुख स्वप्न मात्र नहो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथासर्वं कथ्यन्तेमुनि सत्तमः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषा ॥ हे पिता कौन से कर्म करे हैं इस जीव ने जो सारे सुख दुःख देखे और पुत्रों के सुख से रहित रहे सो वर्णन करो ॥
भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्र कथासर्वं कथ्यन्ते विधिपूर्वकम् वैश्यवंश कुलेजन्म अतितेजो प्रतिष्टया ॥ लोकंलक्ष पतिख्यातो
बहुदासी निजकृत्यये हटवा अन्न व्यापारे अकालो दीर्घभूमिक ॥ क्षुधातुर ब्रह्मणपुत्र अन्नलब्धश्च प्राप्तये वैश्यति क्रोधकं
कृत्या ब्रह्मपुत्रश्च ताडयेत् ॥ लष्टमुष्ट प्रहारेण द्विजपुत्रश्च मृत्युदा पुत्रमृत्यु दृश्यंतात कठिन शापिकंददेव ॥
स०उ० भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्र प्रथम एक जन्म में यह जीव वैश्य वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा धनवान् था अन्न का
१५६ व्यापार बहुत करता था एक समय अतिकाल पड़ा सो सहस्रों कंगले अन्न के अ फिरते थे इसकी दूकान पर दो ब्राह्मण के
पुत्र याचना करने आये उससे विवाद हुवा इस वैश्यने क्रोधवशहो दोनोको मारा धक्के मुक्के में उनके प्राणगये तब उनके पिता
ब्राह्मण ने दो पुत्र मृतक देखे सो हाहाकार विह्वल होगया और वैश्यको शाप दिया कि तूभी बारम्बार तीन जन्म तक
पुत्रों का दुःख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ कियत्ने कुरुतात पूर्वशाप निवार्णं जाप्य पूजा महादानं क्रियते पुत्र सुख्वकं
भाषा ॥ हे पिता कौन से यत्न करे जो पूर्व शाप नष्टहो और दान मंत्र पूजा उपाय करने से पुत्रों का इस जाव को सुख प्राप्त हो
भृगुवाच ॥ स्वर्णश्चप्रतिमांचैव अष्टमाशाप्रमाणकी द्विजपुत्रलिखेन्मूर्ति गंगाजलस्नानकं ॥ ताम्रपात्रश्च घृतंमध्ये स्वर्णमूर्ति
प्रवेशकं मध्यकालप्रमाणश्च संकल्पब्राह्मणंददेत ॥ वेदविप्रपठंनित्या शुभदानोफलप्रदा पुत्रप्राप्तिनसन्देहो वंशवृद्धिर्दिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्णका पत्र ८ माशे प्रमाण बनवावे ब्राह्मणके पुत्रोंकी मूर्ति रक्त चन्दनसे लिखे तिस को तांबेके
कलशमें घृत भर कर गुप्त प्रवेश करे संकल्प करके श्रेष्ठब्राह्मण कर्मैष्टिकोकोदे गायत्री मन्त्र जपवावेतो पुत्रोंकी प्राप्तिहो शाप नष्टहो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ अस्यखेटानुसारेण नरोजन्म भुवितले बालवृद्धि भवेल्लोक आदिक्राडा यथाक्रमम् ॥ कालानुसारविद्याच
मन्त्रौषधीचकारयेत् तीक्ष्णबुद्धिरिपोहंता मध्यभागीसुखान्वितः ॥ प्रलापीशीलवानज्ञेयो विवलश्चकलिप्रियः सुन्दरश्चपलोबाल यस्य
जन्मश्चमोदिता ॥ राजद्वाराधनप्राप्ति विद्याभूषणभूषितः रूपवान्गुणसंपन्नो मासेवं सुखंगताः ॥ सवलंदीर्घदेहश्च तमोगुणविशेषतः
प्रतापीसुखदःमर्वें हेमरत्नोर्विभूषितः ॥ सकामश्चपलोबाल सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्ता रिपुद्रोही गुप्तचिंतान्वितोभवेत् ॥
स०उ० वाहनादिसुखंजाते तप्यतेरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्च बुद्धिश्रेष्ठसुनिर्मलः ॥ श्रेष्ठग्रहोपिजन्मश्च सिंहतुल्यपराक्रमः बहुभृत्य
१५७ समायुक्तो सुकार्यकुशलंलभेत ॥ मातृपितृगुरुर्भक्त मुपवद्राजतेनर द्विजदेवार्चनोप्रीति रिपोपिदासवच्चरेत ॥ भोगमैश्वर्यसंयुक्त
कीर्तिविख्यातभूतले ॥ धनपूर्णो तृषायुक्त सुशीलश्चतुरोधर्नी बहुपीडा मनोद्वेगं बंधुवर्गेव क्लेशता ॥ चन्द्रमित्र महाप्रीतिः
आशक्तोतिमोहितम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जन्म पत्री में जो ग्रह विराजमान हैं तिनका फल कहता हूँ सोतू
चित से सुन यह जीव विद्यावान् चतुर मंत्र औषधी भी करता रहै तीक्ष्णबुद्धि हो शत्रुओं को जीते मध्य भागी सुखी हो शीलवान्
भोला अल छल न जाने राजद्वार से भी प्राप्तिहो रूपवान् गुणवान् हो अच्छे वस्त्र आभूदण भी जावें चञ्चल काम देव के जोर
में उन्मत्त हो जाया करे मीठा बोलने वाला श्रेष्ठकुल एक मित्र से प्रात गुप्त हो मगन रहे सूरवीर पराक्रमी बहुत से कारवार करे
धन पैदा करे बड़े २ उद्योग करतारहै कष्ट बीमारीहो परन्तु आयु पूर्ण हो एक जीवका दुख देखे स्त्री को पुत्रकी चिंता क्लेश बनारहै
प्रथमतो होने कठिन जो होयतो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सब सुख प्रथ्वा पर देखे परन्तु पुत्रों का सुख खण्डित है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रयोगश्चखंडितः पूर्वजन्मकथंतातः कथ्यतेविधिपूर्वकम् ॥ भाषा ॥ शुक्र देवताने प्रार्थना करी हे पिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म किए हैं जो पुत्रोंका योग खंडित आनके पड़ा सो विधि पूर्वक कहो भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्नो राजमंत्रीमहाधनी ॥ लोकश्चधेनुविख्यातो अतिसूरोसुधीन्नरः चापवाण कृतेधारण गवनखेटानुसारेण ॥ मृगबाण बधोक्षत्री साधुपुत्रश्चमृत्युदा मृतकपुत्र दृश्यंतात हाहाकार विव्हलं ॥ साधुशापमुखदत्वा त्रियजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेशुक्र यह जीव क्षत्री कुलमें एक जन्म में जन्मा था सो बड़ा बुद्धिमान् धनवान् राजमंत्रीथा सो शिकार खेलने गया इसने जंगल में जाकर दूर से देखा तो मृग दृष्टी में पड़ा सो इसने तीर मारा हिरन तो बच गया एक साधु दो बालकों को साथ लिये जाता था सो क्षत्री के बाण से दोनों साधु के शिष्य मृत्यु को प्राप्त हुवे तब पश्चात् साधुने मृतक बालक देख बड़ा दुख माना और क्षत्री को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों का दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं साधुशापविनिर्मुक्तो पुत्रजीवीनसंशय ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा कौनसे दान मंत्र जाप करनेसे पूर्व जन्मका दिया हुवा साधुका शाप नष्टहो और पुत्रों की प्राप्तिहो तब भृगुजी ने कहा ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाचैव युग्ममुद्राप्रमाणकं रक्तचन्दनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ वस्त्रआभूषणंदानंयुग्मबालश्च मूर्तये संकल्पश्चददेत्विप्र पूज्यंतोविधिपूर्वकं ॥ इददानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिर्नसंशय ॥ भाषा ॥ हेपुत्रस्वर्णके पत्रपर दो मूर्ति साधुके बच्चोंकी लिखे और स्वर्णका पत्र दो मुद्राभर प्रमाणसे हो वह वस्त्र आभूषण सहित दानकरे तो निश्चय करके पुत्रोंके सुखदेखे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पुत्रस्थितग्रहाएते भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यकरोबालः भृगुणापरिभाषितः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति आनंदभूमि मंडले विचित्रोवार्तयाकथ्यं कामक्रीडाकिलोलकृत ॥ भ्रातभग्नीचउत्पन्न अंतबंधुविरोधता भूमिलाभनसंदेहो गुप्तचिंताशरीरजा ॥ मित्रपक्षेपरंप्रीति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रग्रल्पविजानीयात् नवीनोजन्मप्राप्तये ॥ आदौपठश्चविद्यायाः अंतेविद्याविसार्जनं बहुविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ द्विभार्यायोप्राप्नोति गुप्तप्रीतिनसंशयः उपद्रवीश्चकस्माश्च भयचिंताविशेषतः ॥

न०उ०
१५९ संतोषीश्चैर्यधारीच ज्ञानवांश्चसुखीनरः कस्मिन्कालभोकाव्य प्राणंभयतिचिंतया ॥ जलोपशुभयंपुत्र भृगुवाक्यंनचान्यथा दीर्घकष्टविजानीयात् औषधीमंत्रशांतये ॥ छत्रचिंताभविष्यंति धनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेचपराजयः ॥ नवीनोवार्तयाचित्त ग्रर्थप्राप्तिचदृश्यते सर्वसुक्खश्चदृश्यते पुत्रसुखंविनश्यति ॥ अतिक्लेशमहाचिंता पत्नीकष्टविशेषतः ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव भाग्यवान् सुन्दर पिता की सम्मति वाला गुणवान् शीलवान् पृथ्वी पर आनंद देखे तरह २ की बात ध्यान से सोचे मित्रों में प्रीत, और भाई बहन भी हो परन्तु पीछे अभाव शत्रुतासी हो जाय भूमि से लाभ हो गुप्त चिंता बनी रहै एक जीव से विशेष ध्यान रहै चित्त दुख माने एक समय नया जन्म हो प्राण बचे दूसरा स्त्री से भी प्यार हो विद्या बहुत पूर्ण तो नहो परन्तु कार्य मात्र बहुत हो संतोषी धीरज धारण करने वाला ऋण का जोग होय खर्च विशेष छत्र की चिंता बड़ेकी मृत्यु हो शत्रुओं से ववाद होजाया करे शरार में पीड़ा हो जाया करे पितृ पीड़ा का उपाय करता रहै पुत्र के वास्ते स्त्री यत्न करे परन्तु पूर्व पाप के कारण पुत्र का सुख देखना बहुत कठिन है भटकता रहै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन संतत्वंशविनाशकः पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणाममप्रति ॥ भाषा ॥ शुक्र जी बोले हेपिता इस
जीव ने पहले जन्म में कौन से पाप किए जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटकता रहै ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं
पूर्वंपापश्चकथ्यते वैश्यवंशकुलेजन्म रसत्यागीचवाणियो त्रियसर्पगृहवासं तातपुत्रोतिनागकं ॥ गृहदेवक्षुरक्षा वैश्यलक्ष्महारकं
नागपुत्रद्वयंमृत्यु अतिक्रोधोउपद्रवं ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र तूसुन मैं इस
अ०३० जीव की एक पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ यह वैश्यकुल रसत्योगी बणिया था सो इसके घर में ३ सर्प पिता पुत्र रहते थे सो
१६० बणिया बहुत साहुकार था देवता के नाम के दूध पेड़े वस्त्र पहरात था फिर एक दिन दो सर्प के बच्चे वहीं इसके रसोई के
चौके में फिरते थे इसने किसी की सम्मति से दोनों को लट्ठों से मार दिया तब सर्प ने दोना बच्चे मरे देख वैश्य को
शाप दिया कि तुम भी सात जन्म तक पुत्रों के त्रास भुगतोगे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं
सर्पशापविनश्यंति वैश्यपुत्रसुखंलभेत् ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजीने कहा हेपिता कौनसे दान पुण्य यत्न करने से इस जीवका पूर्व
शाप दिया हुवा नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्य पतिमाचैव तृयमुद्रा प्रमाणकं
तन्मध्येकामबीजश्च रक्तचन्दनसुलिखेत् ॥ वस्त्रआभूषणंदानं षटरसअन्नकंददेत् संकल्पंददेतिवि गायत्रीमंत्रजापकं ॥
सर्पशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखंभविष्यति ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका पत्र तीन मुद्राभर प्रमाणका बनवावे लाल
चन्दन स दो सर्प का मूर्ति विधिपूर्वक लिखे वस्त्र आभूषण षटरस अन्न दान करे तो शाप नष्ट हो और पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रेग्रहाःस्थिताएवं दीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहो चित्तोदारसुपुत्रवान् ॥ यशस्वीगुणवान्जीवो सत्कीर्तिसुतनष्टकं अल्पविद्याचप्राप्नोति बुद्धिवांश्चविशेषतः ॥ गुप्तचिंताचप्राप्नोति चतुरोवामश्रेष्ठया भागवान्गुणसंपन्नो पत्नीप्रीतो भविष्यति ॥ अकस्मातउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः प्रमेहव्याधिकंदेहं शीघ्रोवीर्यस्यखंडकः ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधिप्रतिशांतये पितृपीडाग्रहेनित्यं मातृदेवश्चपूजनं ॥ वंशवृद्धिनदृश्यंते गर्भअल्पश्चखंडतः वंध्यायोगश्चप्राप्नोति सुतचिंताति व्याकुलः ॥ बहुयत्नश्चकर्तव्यम् पुत्रसुखंनदृश्यंते महन्प्राप्तिमहोत्साहो लाभप्रीति दिनेदिने ॥ ग्रहकष्टशरीरेच रेचनंव्याधिरक्तय

स०उ० १६१ कास्मन्कालेमहल्लाभं भाग्यवृद्धिनसंशयः ॥ उच्चपदवीचप्राप्नोति प्रसिद्धोधेनुलोकमा व्रणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यदृश्यः ॥ मासेवर्षेसुखप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा शाणर्थंनपुत्रंतात पूर्वपापमहानकं ॥ सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति सुतसुखस्वप्नंदृश्यः ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज शुक्रदेवता से कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी कथा वर्णन करते हैं सो सुनो यह जीव भाग्यवान् होय चित्त उदार हो सन्तान से रहित होय कीर्तिवान् हो गुणवान् हो और विद्यावान् भी हो परन्तु विद्या से बुद्धि विशेष हो गुप्त चिंता किसी समय में हो जाया करे इसकी स्त्री भाग्यवान् चतुर श्रेष्ठ कुल की हो प्रीति करने वाली शुद्ध चित्तहो एक समय अति विघ्न हो उसमें कुछ हानहो और किसी काल में शरीरके बीच में प्रमेह व्याधि हो शीघ्र वीर्य खंडतहो उपाय करने से औषधियों से आराम हो जाय घर में पितृ पीड़ा हो माता सीतला देवताओं के निमित्त सब कुछ करे परन्तु पुत्र का सुख नहो वा होके दुख देजावे बंध्या योग गर्भ खंडत उत्पन्न होके जाता रहै कई प्रकार की बंध्या हो हैं और आगे को सारी उमर लाभ प्राप्ति

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अच्छी हो परन्तु पुत्र का सुख स्वप्न में भी न हो हे पुत्र इस जीव ने पुर्व जन्म में दीर्घ पाप करे हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्म
विपाकन पूर्वजन्मनिकथ्यते पुत्रक्लेशभविष्यंति श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव ने कौन से खोटे कर्म प्रथम जन्म
में करे हैं जो पुत्रों से क्लेशित रहै और वंश न चले सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रुणुपुत्रतिध्यानक शूद्रवंशकुलेजन्म
मीनकरोतिकृत्यया ॥ जलजीववधोनित्यं मच्छकृत्यंधनंलभेत तिहिपापफलंप्राप्ति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हे शुक्र पुर्व जन्म में
स०उ० यह जीव शूद्र वंश में उत्पन्न हुवा और मछली जलचर जीवों को जाल में फांसकर लाता नगर में बेचता था सो लक्षों जीव
१६२ का विध्वंस किया और बहुत सा धन प्राप्त किया परन्तु भूखों को अन्न बहुत बांटता था तिस कारण अच्छे कुल में उत्पन्न होकर
पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्णपापप्रणश्यंति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन
से दान पुराय मंत्र जाप से ऐसे महापाप की शांति हो और पुत्र होकर जावें जो वंश की वृद्धिहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ रामनाम
लिपिकृत्वा विप्रलेखधनंददेत् बहुअन्नश्चसंग्राही गोधूम्रश्चचूर्णकं चंद्रलक्षप्रमाणेन गुटिकारामश्चंकितः हरिद्वारोकुशावर्तें अथवा
तीर्थतालकं रामांकितंददेत्प्राप्तं मीनदीर्घंचभोजनं स्वर्णंचदक्षिणाविप्रो बहुमिष्टान्नभोजनं दीर्घदानकुरुजीव पुत्रसुखंभविष्यति ॥
॥ भाषा ॥ तब भृगुजी महाराज ने कहा हे पुत्र बहुत सा अन्न गेहूं लाकर पिसवावे और एक लक्ष प्रमाण रामनाम की गोली
बनवाकर हरिद्वार या कुशाघाट या तीर्थ तालाब पर जहां कहीं बहुत सी मच्छी हों तहां रामनाम उच्चारण हर गोलीके साथ कहता
जाय जल में प्रवेश करता जाय और ब्राह्मणों को जिमाया करे कुछ दक्षिणा स्वर्ण की देतो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजाता सुकुलंमानवर्द्धनं जन्मतोमातृबाधाया मासेमासेसुखंगत ॥ दंतव्याधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षयथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रम व्रणव्याधीमहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये ॥ भ्रातयोगश्चप्राप्नोति भृगुणापरिभाषितः अष्टमद्वादशेवर्षे षोडशाब्देचविनाशकः तातंधनंशुभंकार्यं विवाहादिचमंगलं विद्यायोगश्चप्राप्नोति पत्नीप्रीतिःचप्राप्तये ॥ चद्रमित्र महाप्रीति आनंदम्भूमंडले तातलाभव्ययदीर्घं गुप्तचिताभविष्यति ॥ अल्पगर्भमहाकष्टं पुत्रसुखविनष्यति का कृत्यनसंदेहो लाभंभवतिनान्यथा चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा नवीनोक्तकृतेजीव उच्चपदवीचप्राप्तये अतितेजप्रतिष्ठोवा भाग्यवृद्धिदिनेदिने

सउ०
१६२ देहकष्टमयंघोरं औषधिमंत्रशांतये ॥ वामक्लेशभविष्यंति वंशवृद्धिनदृश्यते आयुपूर्णश्चदृश्यंते शून्यसप्ताब्दिकेतथा सर्वकार्यश्चसिद्धंति भूमिलाभभविष्यति गुप्तश्चधनंप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्ति आनन्दम्भूमिमंडले पूर्वपापश्चश्रापार्थ अग्रवंशनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस जीव की पत्री का फल कहता हूँ सुनो अच्छे कुल में जन्म माता को कुछ कष्ट दांतों की पीड़ा दस्त रेचन व्रण व्याधी यत्न से शांति बहन भाई का योग सात वर्ष से अथवा आठ वर्ष से १२ १६ २० वर्ष तक शुभ कामों में पिताका धन खर्च, विद्या का योग, पत्नीकी प्राप्ति दूसरा स्त्री भी प्रीत रक्खे एक मित्र ऐसा हो चित्त एक शरीर दो पिता को लाभ खर्च विशेष हो अल्प गर्भ संतान योग खंडत इस जीव को और स्त्रीको संतान का खयाल बहुत बनारहै यत्नभी बहुतसे करे लाभ आमदनी अच्छीहो २१ ३० वर्ष तक नया कृत्य करे ऊंची पदवीपावे बड़ाई पावे तेज प्रतापी हो इज्जत प्रतिष्ठा बढ़े एक कष्ट बहुत भारी हो मंत्र औषधी से आराम हो प्रथ्वी से लाभ गुप्त धनका लाभ आयुपूर्ण

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्तरसे अधिक हो हेशुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पूर्व पाप के अर्थ पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन
पुत्रसुखविनस्यति पूर्वगाथाकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारणं ठाकुःवंशकुलेजन्म
राजयोगञ्चप्राप्तये ॥ अश्वपतिराजग्रामीच बहुसेवीनरोभवेत् ५रस्त्रीमहाप्रीति कुमार्गीदुष्टपापिनी द्विजपुत्रप्रथमप्रीति त्याज्यंराज
वामकम् श्‌ पक्षप्रतिराजन् असत्यवाणिभाषणं ॥ कारागारद्विजपुत्र विषराज्यञ्चमृत्युदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविहिनकं ॥
स०ज० भाषा ॥ हेपुत्र ऐक जन्ममें यह ठाकुरवंशमें राजाथा पर स्त्रीगामी एकस्त्री ब्राह्मणके पुत्रकी बहुत सुन्दरथी तिसको लोभदेकर छीनला
१६४ और स्त्री के असत्य बचन सुनकर ब्राह्मण पुत्रको कारागार भेजदिया और उसे विष दिवाकर मरवादिया तिस पापके कारण पुत्र
का सुख नहीं हुवा ब्राह्मणका शाप लगा हुवाहै कि अगले जन्ममें तूभी पुत्रों के दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच
किंमंत्रकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमापत्र पञ्चटंकप्रमाणकं अथवा अर्धस्वर्णञ्च
लिख्यतेविधिपूर्वक रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकम् ताम्रकलशघृतंमध्य गुप्तमूर्तिप्रवेशण संकल्पंददेद्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं
मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्ष प्रमाणकं ॥ श्रेष्ठविप्र ददेद्दानं विद्यापाठ नपानं इदंदान कृतेसंत पुत्रप्राप्ति च जावनं ॥
भाषा ॥ हेपुत्र स्वर्ण का पत्र पांच टंक अथवा इससे आधा प्रमाण से वनवावे तिस पर चंदन से ब्राह्मण के पु की मूर्ति
लिखे और एक कलश में घृत भरकर गुप्त मूर्ति प्रवेश कर विधि पूर्वक दान करे उत्तम ब्राह्मण विद्यावान् कुटुम्बी कोदे और गायत्री
मंत्र जाप करावे और ५१ सहस्र संतान गोपाल का मंत्र जपवावे तो पूर्व का दिया हुवा शाप नष्टहो और पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः कस्मिनकालगतेशुक्र बहुऐश्वर्यप्राप्तये ॥ दाताभोक्ताकृतज्ञश्च ग्रहुसेवी नरोभवेत् प्रथमआयुधनंन्यूनं पश्चातेसुखसंपदा ॥ बालआयुगतेकाव्य आनन्दभूमिमण्डले तातकष्टविजानीयात् भृगुणापरि भाषितः ॥ सत्यवादीप्रवक्ताच परकार्यकरःसदा अतिज्ञानीमहाशूरो संतोषीवृतिधारणम् ॥ आज्ञाकारीसुतभृत्य नृपाद्भयसमन्वितः दुष्टकर्मेणपीड्यन्त पूर्वपापश्चदुक्खिता ॥ अल्पायुदृश्यतेलोके सुकर्मसुखसंभवः बंधुवर्गोपवादीच शत्रुवःतप्यतेसदा ॥

स०उ० अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगतेनित्यं सुकीर्तिच पिभूत न न न न सौख्यलभेजीव भजनानदसर्वदा पितुर्द्रव्य

१६५ विनाशश्च सुयत्नेनविवर्द्धनम् ॥ कस्मिन्कालगतशुक्र अकस्मात्अतिचिंतया व्ययदीर्घधनंदान गुप्तचिंताशरीरकं ॥ मित्रप्रीति महालोके आशक्तचितमाहित पत्नीकष्टभयघोरं सुतदुक्खश्चप्राप्तये ॥ रात्रिदिनमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनं दीर्घपापप्रभावेण अप्रवशविनाशकं ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं जिस जीव की पत्री में ऐसा योग पड़े सो जीव भाग्यवान् और बड़ा ऐश्वर्य प्राप्त करे और दयावान् भोक्ता पुरुष हो प्रथम तो थोड़ा ऐश्वर्य हो फिर विशेष बढ़ जाय बाल आयु आनन्द में बाचे पिता को कष्ट हो औषधी से आराम हो जाय सत्यवादी पराये कार्य मन से करे अतिज्ञानी शूरवीर हो संतोषी वृति धारण करे दुष्टकर्म से पीड़ा हो पूर्व करनी के कारण थोड़ी आयु में सुकर्म करे परन्तु कुल बन्धुओं से शत्रुता विवाद रहै दुश्मन सदाजलते रहें पाप ग्रहों की शांति कराता रहै श्रेष्ठ फल हो आनन्द भोगे भजन आनन्द करे पिता का धन जाय परन्तु कुछ सुकर्म बने किसी समय में अतिचिंता हो खर्च हो मित्र से बहुत प्रीति चित्त उस तरफ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष रहै पत्नी को सन्तान का कष्ट रहै पित पीड़ा हो सारे सुख दुख देखे परन्तु पुत्र का सुख प्राप्त होना कठिन है
शुक्रोवाच ॥ किंपापपूर्वजन्मञ्च वंध्यापुत्रविहीनक जीवसर्वगाथायां कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने पूर्व किसी
जन्म में क्या पाप करे हैं जो वंशकी वृद्धि बंद होगई सो पूर्व कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथांसर्वं पूर्वपापञ्चकारणः
कायस्थञ्चकुलेजन्म चित्रगुप्तोतिवंशक ॥ यवनविद्याभविष्यंति धनधान्योभविष्यति राजद्वारमहल्लाभं उच्चपदवीचप्राप्तये ॥
सं०उ० बहुपक्षीबधनञ्च दयाहीनञ्चदुष्टयः ततरोचित्रकंपक्षी वृक्षोर्जीवभक्षणम् ॥ उपवनंगवनंजीव दीमकोजीवभक्षणम् इदंपापप्रभावेण
१६६ पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव प्रथम एक जन्म में कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा सो चित्र गुप्त वंशी था सो बड़ा
चतुर विद्यावान था बहुत सा धन राजदरबार से पैदा किया पुण्य भी करता था परन्तु तीतर नाम और बहुत से पक्षी थे
तिन को अपने साथ बागको ले जाता था और वृक्षों में दीमक नाम जन्तु होते हैं तिन को खुलाया करता था इस पाप के
प्रभाव से सन्तान कष्टी रहा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकं पूर्वपापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥
भाषा ॥ हेपिता कौन से उपाय करने से यह जीव पुत्रों के सुख देखे सो दान मन्त्र पूजा जाप कहो ॥ भृगुवाच ॥ मन्त्रसन्तान
गोपाल चंद्रलक्षप्रमाणकं अन्नमिष्टान्नकंभोजन यज्ञदानकरस्तथा ॥ पक्षीअन्नददेज्जीव मृगानित्यभोजनम् इदंदानकृतेसंत
पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पिछले पाप की निवृत्ति के अर्थ यज्ञ करे दान करे अच्छी सामग्री बनवावे
ब्राह्मणों को तृप्त करे और पक्षियों को अन्न डाला करे और चांटीनाल नेम करके देतो निश्चय करके पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलप्रोक्ता मयानघः विग्रहाफलदंश्रेष्ठं नानालाभसमागमः । भूमिमन्द्रश्चप्राप्नोति कीर्तिवृद्धो
धरातले क्रूरपापग्रहापूजा दानंचैवप्रयत्नतः ॥ जीवचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः ग्रयत्नेनैवभोक्तव्य बुद्धिनःसुस्थिरभवः ॥
उद्योगोकुरुतेदीर्घ लाभचितावलीयसी प्रमेहोपीडिनंगुप्त मित्रशत्रुवदाचरेत् ॥ प्रीतिकृत्वाकृतेघातं सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्ता
सुखीलोके असत्यवचनंत्रजेत ॥ सुकीर्तिप्राप्तेलोके उद्यमेपोष्यतेकुलः परोपकारकरताच बुद्धिवंतोसुलक्षण ॥ ईशभक्तिसुसंचित्य
स०उ० सुस्थिरंनविसर्जन कामीकुतुहलीचैव कुटंबेप्रीतिवत्सलः ॥ पूर्वमायुसुखीजीव मध्येचसुखमध्यमं अत्यपापकुरुशांति कान्ताद्वौगुरु
१६७ वत्सलः ॥ सुयत्नेसर्वथासौख्यं नात्रकार्यविचारणा कामवेगेनचोन्मत्तो चिन्नचैवोपिविभ्रमः बुद्धिवन्तोयशीसौख्यी नकश्चि
न्निंदतोमति जीवंध्यानश्चसंमग्नः यौवनंरूपचिंतनं ॥ श्रेष्ठकर्मरतोचापी बहुबाधाचशांतये सर्वसुखश्चप्राप्नोति गुप्तचिंतावामक ॥
पुत्रकांक्षानसंदेहो भृगुवाक्यनचान्यथा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस पत्र में तीन ग्रह बहुत
उत्तम पड़े हैं अनेक प्रकार के लाभ हों भूमि मंद्र कीर्ति पृथ्वी बढ़े क्रूर पाप ग्रहों का पूजा दान यत्न करना श्रेष्ठ है इतने न्यून
ग्रहों का दान मन्त्र जाप न हो चिंता बुद्धि भ्रम लाभ मध्यम उद्योग बहुत करे फायदा मर्जी माफिक न हो गुप्त प्रमेह की पीड़ा
मित्र से शत्रुता प्रीत के बदले हानि पहुंचावे यह जीव सत्य को पसन्द करे झूठ से बचे कीर्ति बढ़े पराये उपकार करने वाला
बुद्धिमान सुलक्षण देवता में कुछ भक्ति अल्पस्थिर न हो कामदेव की उन्मत्तता, मित्रों से प्रीति, पूर्व आयु सुख, मध्यम
आयु मध्यम सुख दो स्त्री से प्यार सुकर्म से सदा सुख मिले एक जीव के ध्यान में मग्न रहै हेशुक्र सम्पूर्ण काम हों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु मुख्य सुख पुत्रका है सो तिसकी भटकना बनीरहै त्रास देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनपापप्रभावेण पुत्रस्वप्ननदृश्यते पूर्वगाथा कथातात श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव की पिछले जन्मों की कथा कहो ऐसे कौन से पाप दीर्घ करे हैं जो स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मश्चगाथायो श्रुणुपुत्रतिध्यानकं शूद्रवंशकुलेजन्म दीर्घअघकुरुतथा ॥ पापकर्मधनंप्राप्ति उच्चपदवीचप्राप्तये लोकेलक्षपतिख्यातो मानकार्तिभविष्यति ॥ कमट्टाचमृतिकाअंड हस्थनित्यश्चधारण बहुपक्षिविशेजीव बारम्बार भक्षणं ॥ विध्वंसचग्रहंपक्षी बच्चोभोजनंतथा दीर्घपापप्रभावेण पुत्रसुखविहीनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र इस जीव की पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ सो तुम ध्यान से सुनों पूर्व एक जन्म में यह जीव शूद्र वंशमें उत्पन्न हुवा था सो बड़ा धनवान् था इज्जत प्रतिष्ठा वाला था परन्तु गुलों से जीव मारने का बहुत अभ्यास था कमट्टा हाथ में लेकर बीसियों जीव पक्षी मार लाता था और उनके घौंसले तोड़ कर निकाल लाता था तिस पाप के प्रभाव से पुत्रों के सुख से हीन रहै क्यों कि पक्षियों का शाप लगा हुवा है शुक्रोवाच ! कियत्नश्चकरतव्यं पक्षीशापविनाशनं पुत्रप्राप्तिचदृश्‌ते वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे यत्नकरनेसे पक्षियों का दिया हुवा शाप नाशकोप्राप्तहो और इसजीवको पुत्रोंका सुखमिले ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापक ब्राह्मणं भोजनंदानं कुर्वंतिविधिपूर्वकं पक्षीभोजनंअन्नम् नित्यप्रतिनित्यनेमकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षश्चजापकं अनुष्ठानकृतेसन्त पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र एक लक्ष प्रमाण गायत्री और अर्ध लक्ष मन्त्र सन्तान गोपाल जपवावे और ब्राह्मणों को स्वर्ण दक्षिणा दे और पक्षियों को नित्य प्रति रोज अन्न डाल कर जिमावे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ।। एतद्योगेसमुत्पन्न युवाश्रेष्ठफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीच प्राप्यतेधननिश्चितं ।। कदापिसमयेवत्स स्वकुटम्ब
विरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते ।। स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभदृश्यते मध्यविद्यान्वितोपुन्स बुद्धिवंतो
विशेषतः ।। अतितेजप्रतिष्ठोवा सुजनोमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातिलोकस्मिन् ईशस्यचिंतनंकृतः ।। पत्नीश्रेष्ठकुलोप्राप्ति पुत्रचिंता
महानकं नेकयत्नकृतेपुत्र सुखस्वप्नेनदृश्यते ।। दीर्घकष्टविजानीयात नवीनोजन्मप्राप्तये: दीयतेसुमतिसर्वं दुष्टकर्मविसार्जिता ।।
स०उ० सुमित्रोभाषणोप्रीति चिन्तोदारनसंशयः हीनवार्त्तानकर्तव्या गुप्तचिंताचव्याप्तये ।। सुकीर्तिचिंतयेनित्य सुकीर्तिचभयानकं
१६६ व्ययोदीर्घसमायात सर्वकार्यंचसिद्धति ।। भ्रातृभग्नीचउत्पन्न अल्पसुखञ्चलोकमा कस्मिन्कालेमहत्प्राप्ति धनधान्यसमागमः ।।
युग्मजीवमहान्प्रीति सुन्दरमूर्तिसुलक्षणां पूर्वजन्मञ्चपापार्थं वामचिंतामहानकं ।। पुत्रसुखनदृश्यंते प्रथ्वीजन्मअकारणम् ।।

भाषा ।। भृगुजी कहते हैं हेशुक्र इस जीवकी पत्रीका फल सुख दुख आदि वर्णन करते हैं सो तुम सुनो युवा अवस्था में बहुतसे काम करे और बड़े २ मनुष्यों से काम पड़े धन प्राप्त करे विद्यावान् हो किसी समय में कुटंब घर में विरोधसा हो धन खर्च हो शत्रु नुकसान पहुंचाना चाहे परन्तु श्रेष्ठ दशा में थोड़े परिश्रम से अकस्मात् लाभ खुशी हो विद्या से बुद्धि विशेष इज्जत प्रतिष्ठा वाला अच्छी शिक्षा देने वाला ईश्वर की तरफ ध्यान रखने वाला स्त्री श्रेष्ठ कुल की पुत्र को चिंता रहै यत्न भी करे परन्तु पूर्व जन्मों के पाप के अर्थ पुत्रों से रहित रहै शरीर पै पीड़ा कष्ट भारी आवे सो नया जन्म हो नई २ वार्ता का विचार करे बड़े बड़े ख के काम आवें सो पूर्ण उतरें भाईयों से थोड़ा सुखहो जीवोंसे प्रीत लगी रहे हेशुक्र जो दुनियां के सुख हैं सब

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्त हों परन्तु पुत्रों के सुख को यह जीव और इसकी स्त्री भटकते रहैं ॥ शुकोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण: वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथाकथ्यं उच्चारणविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने कौन से पाप पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इस की स्त्री पुत्रों को भटके हैं सो विधि पूर्वक वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वजन्मनिकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न धनधान्यभविष्यति ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच भूमिलाभश्चदीर्घयो ॥ निजस्थानवसतिविप्र

स०७० गृहभूमिउपाधकं लष्टमुष्टप्रहारेण द्विजस्थानभस्मकम् ॥ युग्मपुत्रत्रयंकन्या ग्रहमध्योतमृत्युदा तेनपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनाशनं ॥

१७० भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पहले एक जन्म में क्षत्री वश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा भाग्यवान् लक्षाधीश हाथी घोड़े ग्राम थे इसकी जमीन में एक ब्राह्मण कुटंब सहित रहता था सो उससे किराए भाड़े के ऊपर बहुत विवाद हुवा यहां तक की उसको बहुत पिटवाया और उसके घर में आग देदी सो उसके दो छोटे पुत्र और तीन कन्या जल कर भस्म हो गईं ॥ शुकोवाच ॥ किंयत्नदान मंत्रस्य किंविधानेतिजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुक्खश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हेपिता क्या यत्न करे और कौन से दान मन्त्र जाप करवावे जो पूर्व जन्म के शापसे छूटे और पुत्रों के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे और पुत्र जीवें सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्थानदानकुरुजीव गायत्रीमन्त्रजापकं स्वर्णस्यप्रतिमापत्रं द्विजसुतमूर्तिलिख्यते ॥ सर्वदानविधानेच संकल्पंब्राह्मणददेत् द्विजसंतुष्टकर्तव्यं पूर्वश्रापविनाशनं ॥ पत्रसुखंनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेपत्र यह जीव दान करे गायत्रीमन्त्र जपवावे स्वर्ण पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र कन्याओं की मूर्ति लिखे ब्राह्मण को दे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदानरः बृहत्वंफलमादाय आनन्दभूमिमण्डले ॥ बहुकृत्याधिकारीच सर्वेशां
शुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीति नूतनंवार्तयाचिंतः ॥ सुन्दरमथलोधीरः प्रतापोशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छं पूजनात्सुखवर्द्धनं ॥
अतिप्रेमीसुकीर्तिंच भृगुणापरिभाषितः पञ्चमेशंसुसंपूज्य वंशवृद्धिशुभप्रदा ॥ गोविप्ररक्षकोधीमान् सत्यवादीविचक्षणः कालानुकूल
विद्याच पर्यटनंप्रियसदा ॥ चंद्रअल्पमहाकष्टं प्राणभीतिश्चचिंतनम् श्रेष्टकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णसुखीनरः ॥ गुप्तलाभविशेषेण
ग०उ० अकस्माज्जायतेकदा भूमिलाभविशेषेण रचनामन्दिरनूतनं ॥ मनेच्छापुजितोवत्स अनुष्ठानंसुयत्नतः राजद्वाराधनंप्राप्य निजकृत्य
१७१ फलप्रदः ॥ पिताधिक्यप्रकोपीच कामाधिक्यबलान्वितः सुशीलश्चपलोपुन्स रिपुणांकष्टदायकः ॥ निष्ठुरंवचनंवक्ता कुमतिश्च
उदारधी सर्वसंपत्समायुक्तो अंगनाप्रीतिकारकः ॥ जन्माद्वनशुतपुन्स गीतनादपरंप्रियः वृणपीड़ासमुत्पन्नो निजांगेनात्रसंशयः ॥
सर्वकार्याणिसिध्यंति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र जिसकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं सो पैदा
होकर अनेक प्रकार क पृथ्वी पर आनन्द देखे बहुत से काम बढें और उसके शुभचिंतक बहुत हों नवीन विचित्र बातों म
मन रहै एक जीव में चित्त बहुत रहा करे यह जीव सूरवीर प्रतापी धीर बंधाने वाला दूसरे की बात को तोले गुरु भौम
केतु का पूजन श्रेष्ठ है भृगुजी कहते हैं पञ्चमेश की पूजा दान से वंश की वृद्धि हो पूर्व जन्म के पाप के कारण पुत्रों स रहित
रहै दुख देखे स्त्री क्लेश माने और यह जीव विद्यावान् हो भ्रमण करने को चित्त चाहा करे एक समय अचानक में एक बार
कष्ट भय हो अल्प भोग कर आयु पूरी हो राजद्वार से भारी खुशी रहै भूमि से धन प्राप्त हो शत्रुओं से विवाद हो सर्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्पत हों परन्तु पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात श्रुणुत्वंममवांछया ॥
भाषा ॥ हेपिता इस जीवकी प्रथम जन्म की कथा कहो ऐसे कौन से पाप इस जीवने किये ये जो यह पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥
भृगुवाच, ॥ श्रुणोपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः यवनवंशकुलेजन्म आनन्दभूमिमण्डले ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो अतितेजोप्रतिष्टया
बहुजीववधकृत्वा निजभक्षोपिकारणं ॥ चापबाणकुरुधारण गवनखेटावुसारेण तिहिपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनश्यति ॥
न०उ० भाषा ॥ हे पुत्र इस जीव से प्रथम जन्म में बहुत पाप बने हैं प्रथम जन्म में यह जीव यवन जाति में उत्पन्न हुवा था नित्य
१७२ प्रति शिकार खेलने जाता था और अनेक जीव मारकर लाता था और तिन्हें भक्षण करता था इस कारण पूर्व जन्म का
सात जन्म को शाप लगा हुवा है तिस कारण सन्तान का सुख कठिन है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजा च किंमंत्रकिंजापकं
पूर्वशापविनश्यंति वंशवृद्धिभविष्यति ॥ हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से पूर्व जन्म का शाप नष्ट हो जो
पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या सप्तटंकप्रमाणकं विष्णुधेनुलिखेन्मूर्ति शुद्धचित्तंचशांतये रक्तचन्दन
मिश्राणि गंगाजलस्नानकं संकल्पंददेद्विप्र पूर्वपापश्चशांतये ॥ चन्द्रलक्ष प्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं ॥ भाषा ॥ हे पुत्र सप्तटंक
प्रमाण से स्वर्ण का पत्र बनवावे तिस पर विष्णु भगवान की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और गंगाजल से
स्नान करावे तिसके आगे एक लक्ष गायत्री मंत्र जाप करावे और (मुंह से यह मन्त्र कहता जाय) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं
विष्णु भगवान मम कार्य सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॥ फिर वह मूर्ति ब्राह्मण को संकल्प करके दे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रेष्टपत्रंग्रहाकाव्य दीर्घमान्योप्रतिष्टतः पुत्रदारादिसंचित्य भृगुणापरिभाषितः ॥ मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्धं
सुखीन्नरः रूपयौवनसंपन्नो सुमित्रश्चारुभाषितः ॥ नानामंगलकार्यं जायतंचमहोत्सवम् मध्यसौख्याधिकारीच विलासीमति
मान्नरः ॥ गुप्तशोकविशेषेण अकस्मात्भयमागमः दीर्घद्रव्यव्ययोचापि चिंतयतिदिनेदिने ॥ जलपशुभयंशुक्र तनकष्टमपपाथयः
शत्रुपक्षविरोधश्च कुलवधुविप्रीतये ॥ चिंतयेदीर्घकार्याणि अतसौख्यसमायुतः द्वयोकष्टविशेषेण चद्रअल्पमहाभयं ॥ सुयत्नं
न० ३० रक्षितोप्राण नूतनंजन्ममन्यते ॥ दीर्घायुचततोलोके उद्यमेणधनस्थितः असत्योदोषकंप्राप्त शत्रुपक्षविरोधता ॥ व्ययदीर्घ
१७३ मुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः अल्पजोवीचबालोयं अथवागर्भखंडतः ॥ पत्नीकष्टविशेषेण पुत्रचिन्ताचव्याकुलः द्विभार्यायोग
प्राप्यंते किंवान्यत्रस्त्रीप्रीतया ॥ बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षणः सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति वंशवृद्धिनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस पत्र के ग्रह श्रेष्ट हैं बड़ी प्रतिष्टा वाला हो परन्तु यह जीव और इसकी स्त्री संतान की चिंता में रहै मान कीर्ति बढ़े लोक में प्रसिद्ध हो सुन्दर स्वरूप मित्रों से प्रीति करने वाला अच्छे वचन बोलने वाला नाना प्रकार के सुख पृथ्वी पर देखे परन्तु गुप्त शोक सन्तान का रहै अकस्मात चित्त पर भय सा रहै बहुत खर्च हो जल से पशु से भय हो या कहीं से गिर कर चोट आवे शत्रु पक्ष से विरोध हो कुल बन्धुओं से विप्रीत हो चिंता क्लेश हो कर फिर अन्त में सुख प्राप्त हो दो कष्ट हों एक में प्राणों का भय हो फिर आयु पूर्ण हो किसी समय में झूंठा दोष लगे इलजाम का भय हो जाय पुत्र होने बहुत कठिन जो होय तो माता और पिता को भारी दुःख देकर बड़े बड़े तरसाव दिखा कर चले जांय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ शुक्रोवाच ॥ भोतातःकृपोनाथ अहमदासकुरुदया पूर्वपापश्चवक्तव्यम् पुत्रस्वप्नेनपश्यति ॥ भाषा ॥ हे पिता मुझ पर कृपा करके कहो इस जीवने ऐसे कौन से पाप किये हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहै ॥ ॥ भृगुवाच ॥ आदजन्मश्चगाथायां कथ्यंतेविधिपूर्वकं दीर्घपापंकुरुजीव शृणुपुत्रतिध्यानकं ॥ चित्रगुप्तकुलेजन्म बहुनामोप्रधानकः राजद्वारकंन्यायम् उच्चपदवीचप्राप्तये ॥ द्विजशूद्रउपाधीच लष्टमुष्टप्रहारकं निजकरशूद्रमृत्युच विप्रदोषअसत्यक ॥ राजद्वारकृतेन्यायं न्यायकर्ताधनजमेत् प्राणदण्डददेत्विप्र मुद्राशूद्र

सं०३० कंलभेत् तातपुत्रमृत्युदृश्य न्यायाधीशोश्रापकम् ॥ भाषा ॥ हे पुत्र प्रथम जन्म में यह जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था

१७४ राजद्वार में बड़े ओहदे पर था मुकदमे में न्याय किया करता था सो एक शूद्र बूढ़े ने अपने हाथ से अपना अपघात कर लिया उस शूद्र के वारिसों ने ब्राह्मण को फांस लिया और हाकिम को रिश्वत देदी सो न्यायाधीश ने ब्राह्मण के पुत्र को प्राण दण्ड की आज्ञा दी सो ब्राह्मण ने श्राप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों का सुख न देखे ॥ ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजाच किंमंत्रकिंजापकं ब्रह्मश्रापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मन्त्र जाप से पूर्व जन्म का ब्राह्मण का दिया हुवा शाप नष्ट हो और पुत्र होकर जीवें ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या युग्ममुद्राप्रमाणकं ब्रह्मपुत्रलिखेन्मूर्ति गायत्रोमंत्रजापकं ॥ तान्दूलंयथाशक्ति गुप्तमूर्तिप्रवेशकं संकल्पंददेत्विप्र पूर्वश्रापश्चनष्टकं ॥ इदंदानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र स्वर्ण के दो मुद्रा प्रमाण भर के पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति लिखे और चावलों में गुप्त रख कर दान करे ब्राह्मण को दे गायत्री मन्त्र जाप करावे तो निश्चय पूत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मकालईतषेटा सर्वत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजाया ग्रहसौख्यसुयत्नतः ॥ वाटिकामंद्रयानञ्च विपाकेधन
वर्धनं जीवोसत्यमान्श्रीमान् उपकारीविचक्षणः ॥ मित्रकृत्यघ्नतांयाति बांधवा.।सुखलघु कवित्वमतिसजातं मिष्टभोज्य
मतिप्रिय ॥ स्वभुजेनधनंप्राप्ते पंडितोनृपपूजितः विरोधश्चकुटम्बेन शत्रुवःतप्यतसदाः ॥ देवविद्यामहाप्रीति गुणग्राहिभवेन्नरः
अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनवर्धतेगृह नानाचतुस्यदानञ्च धनकीर्तिविवर्धनः ॥ स्वजनेसुखभोक्तव्या धनरत्नानिसञ्चयः देवता।गुरु
स०उ० भक्तश्च सौम्यमूर्तिसुखीनरः ॥ दिव्यवस्त्रसदाधारी स्वजातिमानवर्धनं गुप्तचिंताशरीरेच पुत्रसुखनदृश्यते ॥ पत्नीक्लेशितम्शुक्रो
१७५ भाग्यवृद्धिचन्यूनता विद्याबुद्धिविशेषेण भृगुणापरिभाषितः ॥ इन्द्रीव्याधिक्वचित्काले शीघ्रवीर्यखंडनं चंद्रअल्पनसंदेहो प्राणभय
विनाशनं ॥ युग्मकष्टगतेशुक्र आनंदंभूमिमंडले पशुभयजलंप्राप्त उपरञ्चपपाथयः ॥ सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रश्चसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जीवकी पत्रीमें ऐसे गृहपड़ें सोजीव कन्या पुत्र स्त्रीके सुखका यत्नउपाय करता रहै और इसजीवको रास्तेमेंसे या मंद्रमेंसे धनकीप्राप्ति किसीकालमेंहो सत्यवातको पसंदकरनेवाला परोपकारी मित्रसे बंधुवोंसे किसी समयमें विपरीततांहो और कुछ कविता गानेसुन्नेका भी शौकहो मिष्ट भोजन प्यारालगे अपने पुरुषार्थसे पैदाकरे विद्यावानहो बड़ेआदमीभी आदरकरे शत्रु जलतरहैं गुणग्राहीहो देवविद्यामें प्रीतहो सुन्दरस्वरूप भूमिसेलाभ चौपायेभीहों अच्छे आदमियोंसे लेनदेन ऐश्वर्य पैदाकरे अच्छेवस्त्र पहरे दरिद्रीसा नरहै बिरादरी में इज्जतहो गुप्तचिंता रहै बिनाकारण भी डरता रहै इज्जतका ध्यान रखनेवाला भलेवुरेको परखनेवाला अच्छी शिक्षा देनेवाला हेशुक्र पृथ्वीपर आनन्द कर यहजीव अनेक प्रकारके सुख दुःख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखको भटकता रहै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रचिंताभविष्यति पूर्वजन्मक तात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ हेपिता कौन कर्म इस जीवने पूर्व जन्म में करे हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख न देखें ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रगतेजन्म कथ्यंतेविधिपूर्वकं मैथुलदेश कुलेजन्म अग्रवालोतिश्रेष्ठया ॥ व्यौहानधनप्राप्नोति धनधान्यसमागमः लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् ॥ ऋषीपुत्रजगन्नाथ तीर्थदेवदर्शनम् धनिधनअर्पणंकृत्वा आगत्वाददेतममः ॥ अग्रवालोधनीपश्चात लाभार्थंवशिभूतकं दर्शनपर्शआगत्वा ऋषीपुत्र धनददेत् श्रृणुवाक्यधनामुख्य ऋषीपुत्रचविव्हल धनचिंताशरीरेच कृश्यदेहदुर्बलम् ॥ तणकालगतेकाव्य ऋषी त्रमृतंतथा मृतकपुत्रलखंतात हाहाकारविव्हलं ॥ ऋषीशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ हेशुक्र प्रथम एक जन्म में एक ऋषी का पुत्र जगन्नाथ आदि देवदर्शन करने गया तिस के पास जो कुछ धन था अग्रवाल धनी सेठ तिस के पास धर गया जब दर्शन से आया तब लोभ के वशिभूत हो कर मुकर गया इसी चिंता में ऋषी के पुत्र ने प्राण दिये तब पुत्र को मृतक देख ऋषी पिता ने धनी को शाप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों के सुख न देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमत्रं किंजापकं ऋषीशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ स्वर्णपत्रलिखेन्मूर्ति ऋषीपुत्रश्चकारकं ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ वस्त्रआभुषणंदानं श्रद्धामात्रप्रमाणकं संकल्पंददेत्विप्र श्रधांतेविधिपूर्वकं (मुख से कहे) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रींबटुकभैरवाय आप दुद्धारणाय पूर्वशापनिवारणार्थं दानमंत्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ बश्रदानकृतेदंत पुत्रप्राप्तिर्नसंशयः सर्वसुखमप्रोति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ हे पुत्र यह जीव स्वर्णपत्रपर ऋषी पुत्रकी मूर्ति लिखे घृतभरे तांबेके कलशमें गुप्तरख ब्राह्मणको दान करे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजन्म माननोयप्रतिष्ठता पञ्चमेशोपिपूज्यन्ते दानमन्त्रश्चतोषिता ॥ विद्याबुद्धिविशेषेण पश्चातो सुखपुत्रकं पूर्वणपप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ पूजादानश्चमंत्रेण पूर्वशापविनश्यति सुतसुखश्चंतयोशुक्र भृगुणापरिभाषितः ॥ अष्टमेद्वादशेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं युग्मविद्याचअभ्यासं भृगुणापरिभाषितः ॥ धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं तातमात महासुखं जोवनंसुफलंममः ॥ त्रियोदशेषोडशवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा बहुविद्याचप्राप्नोति पत्नीप्रीतचयुग्मकं ॥ देहकष्टविजानीयात

सं०उ० औषधीप्रतिशांतये गुप्तप्रीतिअन्यजीवो नान्यथावचनंममः ॥ जीवचिंताचप्राप्नोति अल्पगर्भोपिखंडतः चंद्रनेत्रमितेवर्षे सून्यराम

१७७ मितेतथा ॥ दोर्घलाभनमंदेहो उच्चपदवीचप्राप्तये महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने ॥ तातधनशुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं अचानकंउपद्रोवा ग्रहकष्टमहानं ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधीप्रतिशांतये चद्रअल्पगतेकाव्य पूर्णआयुनसंशयः ॥ षष्टसप्ताद्धकेवर्षे आनन्दभूमिमंडले सर्वानन्दभोक्तव्यम् युत्रदुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जोव मध्यम भागवाला प्रतिष्ठा पावेविद्या बुद्धि विशेष हो पञ्चम स्थान के पूजा दान से पुत्रों के सुख देखे पूर्व जन्म के पाप के प्रभाव से संतान का दुख देखे परन्तु पाप निवारण का मन्त्र दान जाप करावे तो अन्त में पुत्र हो कर जीवें और आठवें बारवें सोलवें वष तक विद्या प्राप्ति स्त्री प्राप्ति पता कर धन शुभ काम में खर्च हो प्रथम माता पिता को खुशी हो जीवन सुफल माने दे कष्ट हों औषधी से आराम हो दूसगी स्त्रो से प्रीत हो परन्तु अल्प गर्भ खंडत हो या बंध्या हो और रोजगार उत्तम हो उच्च पदवी पावे २१, ३० वर्ष तक फिर ऊपर अनेक प्रकार के सुख दुःख देखे आयु पूर्ण हो ७६ वर्ष के लग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भग आनंद देखे परन्तु पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मगतेजन्म पुत्रसुखविनश्यति विधिपूर्वकथंतात श्रुणुत्वं ममवांछया ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं कुर्मीवंशकुलेजन्म धनधान्यभविष्यति ॥ दाताभोक्ता कृतज्ञश्च बहूसेवीनरोभवेत राजमुद्रादददेत्कुर्मी लदयोवृक्षविनष्यति ॥ कोमलपातलतावृक्षे कोटोपक्षीबासकं जंगलुपवनंबद्धो मत्याजन उद्यानकं ॥ जीवग्रानंदभोक्तव्यं सर्वजीवविनष्यति बृक्षडालगृहपक्षी बालोकोटमृतंतथा ॥ पक्षीशापमहादीर्घ पुत्रस्वप्नेनजावितं ॥

स०उ० भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म की कथा इस जीवकी वर्णन करते हैं जो कुछ पाप इस जीवसे बन हैं सो सुनो राजा

१७८ को मुद्रा देकर बड़े भारी बन काटने का ठेका लिया सो वह बन हरा भरा जहां अनगिनत जीव आराम पाते थे और भोजन फल फूल खाते थे और बृक्षों की डालो में घौंसले बना रखे थे सो बन कई योजन में का था इस धनवान् कुर्मी ने सब बन को काट कर विध्वंस कर दिया तिस कारण पुत्रों के सुख स्वप्न में भी होने दुर्लभ हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुक्खश्चप्राप्तये ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं श्रेष्ठविप्रश्चकर्मेष्टि इच्छा भोजनददेत् स्वर्णश्चदक्षिणांचैव प्रसन्नात्मसंतुष्टयः बहूअन्नंददेत्पक्षी नितप्रतिकीटभोजनम् ॥ मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षप्रमाणकम् विधिपूर्वग्रनुष्ठानं पुत्रप्राप्तिचजीवितः ॥ सुतप्राप्तिनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पक्षियों के पाप निमित्त एक लक्ष गायत्री जपवावे श्रेष्ठ ब्राह्मण कर्मेष्टि बैठावे तिन्हें अच्छे२ पदार्थ जिमावे स्वर्ण की दक्षिणा दे और बहुत सा अन्न पक्षियों को जंगल या कोठे पर डाला करे और नित्य प्रति चींटीनाल जिमावे तो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभागमब्रवन मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितेसुमनोरथा ॥ पापग्रहप्रभावेण दीर्घचिंतावि
तोभवेत् चित्तश्चचञ्चलोनित्यं लाभविघ्नसमुद्भवः ॥ विलम्बोजायतेप्राज्ञ पुनर्दीर्घधनागमः हीनकार्यभवेच्चापि पश्चांतेचिंतनकृतः ॥
नारीचिंताहृदेगुप्तः शत्रुमित्रवदाचरेत् जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशयः ॥ प्रायश्चितकृतेप्रत पुत्रसौख्यनसंशयः लाभकृत्योपि
सिद्धंति बृहत्वोधनमागमः ॥ सत्यवक्तासुशीलश्च अमन्याक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीच दुखसौख्यविशेषतः ॥ दानीबुद्धिमतोप्राज्ञ
सं०उ० विभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्य कामाशक्तोणिगुप्तता ॥ दानमन्त्रजपंपुण्य सर्वदानन्दसंभवः सर्वअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्च
१७९ सुखावहं ॥ मनेच्छापूजितेचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं इष्टदेवस्यपूजनम् ॥ सुन्दरमृदुवाणीच धनसंयुक्तकौशलः
वाणिज्यश्चधनदीर्घ भृगुणापरिभाषितः पुत्रजन्मनसंदेहो अल्पजीवीचमृत्युदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जन्मपत्री में
ऐसे गृह आनकर पड़ें सोमध्यम दशाभी देखेहै और श्रेष्ठदशाभी देखेहैं मनकी इच्छा सब पूर्ण होय परन्तु पापग्रहोंके प्रभाव करके
दीर्घचिंता होय लाभमें विघ्नआवे लाभ होता २ रुक जावे फिर बहुतसे धनका आगमनहो हीनकार्यकरके पछतावे स्त्रीको गुप्तचिंतारहै
और जीवको चिंताक्लेश बनीरहै हेशुक्र पूर्व पापका प्रायश्चित करनेसे पुत्रोंका सुख देखे और यहजीव झूंठीवार्ता सुनकर क्रोधित
हुवाकरे सत्यमे प्रसन्नरहै साहसी पुरुषार्थी दानीसुकर्मी बुद्धिमान् कभी बुद्धिभ्रमसी होजावे अकलसे नवीन बात निकाले मनुष्य भला
कहैं कई अलाआवें नयाजन्महो फिर आयु पूर्णभोगे हेशुक्र पृथ्वीपै यहजीव अनेकतरहके आनन्ददेखे परन्तुपुत्रके सुखसे रहितरहै
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से कर्म इस जीव से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी पूर्व जन्ममें बने हैं जो वंशकी वृद्धि नहो और पुत्रोंके क्लेश देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मनिपापार्थं शृणुपुत्रति ध्यानक ग्वालवंशकुलेजन्म कृषीकर्मग्रहीरक ॥ मिष्टत्तेत्रश्चउत्पत्ति गुड़खड़वाचप्राप्तये चद्रदिवसोपिहोतव्यं दीर्घपापचभागिकं ॥ अग्निमन्द्रमहाज्वाला लोहपात्ररसाधिक युग्मसर्पमहान्दीर्घं भाविवशप्रवेशकं ॥ विषयरोरसाबूड गुडमिष्टान्नमेलनं ग्वालवंशीच लोभार्थं मेलिकाकृत्यविक्रय ॥ बहुजोवगुडोभक्ष प्राणोचगवनंतथा दीर्घपापप्रभावेण वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ अतिक्लेशमहादुक्खं

स०उ० पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पूर्व जन्म में ग्वाल वंशी अहीर था और खेती का कृत्य करे था ईख बहुत

१८० बोवेथा मिष्ठान बनाता था सो कोल्हू में भट्टी पर रस पक रहा था भावी के वश दो सर्प बड़े २ मोटे जहरीले विषियर कड़ह में आन पड़े सो गिरतेही मृत्यु हो गई तो इस ग्वाल वंशी ने सब होतव्य अपनी दृष्टी से देखा परन्तु उस रस का त्यागन लोभ वश नहीं किया मर हुवे सर्पों को निकाल कर फेंक दिया और उस कड़ाह के पाक का गुड़ बनवा कर बेचा वो गुड़ जिन जीव ने खाया वही मृत्यु का प्राप्त हुवा सो बड़े पाप का भागी है इस कारण वंश की वृद्धि नहीं होती और पुत्रों को भटके है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानकस्यपूजाच किंमत्रंकिंजापकं पूर्वपापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धमात्रमाणक युग्मसर्पलिखेन्मूर्ति गायत्रीमन्त्रजापकं ॥ यज्ञहवनश्चदानश्च कुर्वंतिविधिपूर्वकं संकल्पंददेत्विप्र सहितोवस्त्रभूषणं ॥ दानमन्त्रकृतेसत पूर्वपापप्रशांतये पुत्रसुखनसंदेहो वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव श्रद्धामात्र स्वर्ण पर दो सर्पोंको मूर्ति बनावे और वस्त्र भूषण सहित विधिपूर्वक कर्मेष्टि ब्राह्मणको दानकरे और हवन करे तो अवश्य पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एषग्रहस्थितपत्री बहुविद्याचप्राप्तये कलान्वितःविलासीच विमलःसर्वकार्यकृत ॥ मतिमानचारुशीलश्च
भृगुणापरिभाषितः जन्मश्रेष्ठकुलेयातो बहुभागीचलोकमा परोपकारकर्ताच चित्तचिंताचयुक्तता मित्रपक्षमहाप्रीति सर्वसुखंचप्राप्तये ॥
सांहसांसन्मानीश्च दीर्घव्ययनसंशयः श्रेष्ठशिक्षाददेत्मित्र सूरवीरोपराक्रमः ॥ युग्मअल्पमहापीडा नवीनोजन्मप्राप्तये जलग्नि
भयजीव वृथाचिन्होतिदृष्यते ॥ कस्मिनकालउपद्रोवा गुप्तचिंताभविष्यति लाभप्राप्तिविशेषेण अतितेजोप्रतिष्ठया ॥ स्त्रीप्रीति
स०उ० नसंदेहो आरात्कंचित्तयुक्तत नवीनोमन्द्रकंरचना अखभवभृगुसनमः ॥ सर्वसुखचप्राप्नोति पुत्रदुखनसंशयः पत्नीक्लेशमहाविता
१८१ वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जिस जीव की पत्री में ऐसे गृह थान के पड़े हैं सो भागवान् विद्यावान् सूरवीर श्रेष्ठ कार्य
करने वाला परोपकारी पहली अवस्था से अन्त में सुख विशेष खर्च विशेष रहै श्रेष्ठ शिक्षा देने वाला इज्जत पैदा करे जल
अग्नि भय होय किसी काल में उपद्रव हो फिर शांत हो दो अल्प भुगत कर आयू पूर्ण हो स्त्री से मित्र से प्रीत नई २ लाभ
की वार्ता सोचा करे पुत्रों का दुख देखे स्त्री को क्लेश रहे सब सुख हों परन्तु पाप के कारण पुत्रों का दुख हो ॥
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन वंशवृद्धिनदृश्यते त्रासपुत्रश्चभोक्तव्यं पत्नीक्लेशोपिदीर्घता ॥ पूर्वगाथाइदंजीव श्रृणुत्वंममवांछया
केनपापप्रभावेण सुतानन्दनदृश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्र ज कहते हैं हेपिता कौन से पाप कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में
किये हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः आद्यजन्मांतरंगाथा
कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ ग्वालवंशसमुत्पन्न बहुसेवानरोभवेत अश्वपतिगजग्रामीच तेजस्वीप्रतिष्ठवान् ॥ अरजुनधेनुविख्यातो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवपुरग्रामवासकम् बहुदानीप्रधानजीव आनन्दभूमिमंडले ॥ हस्तिथापितेयात्रा स्नानेहरिद्वारकम् रविग्रास्तानिशोमार्गे
अन्धकारोपिगच्छति ॥ कुमार्गोगवनंकृत्वा अन्यपुर्षांपिवर्जयेत् पशुसर्पइदंमार्गे पगडंडीनगच्छति ॥ यात्रीमंदशृणुशब्द
अंगिकारनकृत्यया सर्पंचसहितपुत्रो गजचर्णौपिमृत्युदा ॥ सर्पशापसुखंदत्वा सप्तजन्मअपुत्रवान् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा
हेपुत्र प्रथम एक जन्म में यह जीव ग्वाल वंश था हरिद्वार गङ्गा स्नान करने जाता था सो रात्रि के समय अन्य मनुष्यों ने
स०३० मना किया कि इस रास्ते में सर्प बहुत पड़े रहते हैं रात्री में मत जाओ सो यह न माना बहुत से सर्प आदि जीवों का विध्वंस
१८२ हुवा तो पाप का भागी हुवा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकम् सर्पशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥
भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौनसे दान मंत्रसे पुत्रों के सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकम्
मृत्युसर्पलिखेन्मूर्ति रक्तचन्दनकारकम् ॥ गंगाजलेनसंशुद्धो धूपीदपंचचन्दनम् बीजमन्त्रञ्चगायत्री लिपिकृत्वाविधिपूर्वकम् ॥
दीर्घवस्त्रकृतेदानं मन्त्रश्रद्धाप्रमाणकम् ताम्रकुम्भघृतमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकम् ॥ अन्नवस्त्रददेत्दानं जापंचविधिपूर्वकम् मंत्रसन्तान
गोपालं चन्द्रलक्षप्रमाणम् ॥ देवकीसुतगोविंद दूसरामन्त्र उच्चारण करे ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय
पूर्वशापनिवारणार्थं दानमन्त्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ मन्त्रदानकृतेसन्त निश्चयपुत्रजीवितं पूर्वशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं स्वर्ण पत्र पर सर्पों की मूर्ति बनाय गंगाजल से शुद्ध कर विधिपूर्वक दान करे ऊपर लिखा मन्त्र पढ़ता
जाय और एक लक्ष सन्तान गोपालका मन्त्र विद्वान् पंडित से जपवावैं तो निश्चय पुत्र होकर जीवें इसमें कुछ संशय नहीं है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वग्रहस्थित्वा कुण्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितेलोके विलम्बोन्नात्रसंशयः ॥ युवावस्था प्रदाप्राप्य
भाग्योदयविशेषतः द्रव्यलाभंभवेचापि स्वकृत्यकुशलोगुणी ॥ बहुकार्यरतोनित्यं सुमित्रलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्
माननीयोविशेषतः ॥ स्त्रीदोज्ञात्वामहद्दुखं पुनरंतोश्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितं नतुष्यतिकदाचनः ॥ गोधौम्रापिवर्णांश्च बुद्धि
वानोविशेषतः द्विभार्यागेहेप्राप्नोति अथवामंगलंत्यजेत ॥ सत्यमार्गसुकृत्यञ्च स्वकुलेपोषणोरतः प्रतिष्ठावर्धतेलोके भूमिलाभ
नसंशयः ॥ श्रेष्ठकृत्यविजानिया गुप्तचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंता देहपीडाचगुप्तता ॥ अकस्मात्महद्दुखं भयभीतोचप्राणक
शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेपराजयम् ॥ प्रदेशोगवनंकृत्वा नान्यथावचनंमम शुभकार्येधनव्ययं अर्थप्राप्तिभविष्यति ॥ सर्वसुखञ्च
प्राप्नोति पुत्रशोकनसंशयः ॥ भाषा ॥ हेशुक्र इस जीव की पत्री में श्रेष्ठ ग्रह पड़े हैं परन्तु फल देर से करेंगे अन्त अच्छा हो
अच्छे लाभ के काम करे राजद्वार से लाभ हो बहुतों का काम निकले गुप्त प्रीत रहै दूसरी स्त्री भी प्यार करे सूरवीर किसी के
छल में न आवे सगाई हो के छूटे या द्विभार्या योग हो सत्य बोलने वाला दूसरे की बात को तोले बड़े बड़े मामले देखे स्त्री
पुत्रों का क्लेश चिंता रहै सब सुख देखे परन्तु पूर्ण पाप के प्रभाव से पुत्रों के शोक देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण
पुत्रसुखंविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता कौनसे ऐसे कर्म इस जीवने पूर्वजन्म
में करे हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारणं यवनवंशकुलेजन्म षटकर्मापिवर्जयेत् ॥
पशुअंडञ्चभोजनाय बहुजीवविनाशनं नित्यउपवनंगत्वा पक्षीणालभक्षणं ॥ सहस्रोजीवश्चापार्थं पुत्रसुखंविनश्यति ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव एक पूर्व जन्म में यवन वंश में उत्पन्न हुवा था सो अपने षटकर्म से रहित रहा और नित्य प्रति बागों में जाकर सैकड़ों पक्षियों के अंडे लाकर के भक्षण किया करता था और बड़ा धनवान् था बाग जमीन अनेक तरह की सवारी थी परन्तु षटकर्म से रहित था और अपने आनन्द भोगे था सो सैंकड़ों पक्षियोंका शाप लगा हुवा है ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान
१०७० मन्त्र जाप कराने से इस जीव को पूर्व का दियो हुवा शाप नष्ट हो जो पुत्र के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥
१८४ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या चन्द्रलक्षप्रमाणकी गायत्रीमूलमन्त्रस्य रक्तचन्दनम्लिखेत ॥ पक्षीबालकमृकारम् लिख्यतेविधि पूर्वकम् षटरसआदिसामग्री संकल्पम्ब्राह्मणंददेत ॥ गायत्रीमूलमंत्रस्य चंद्रलक्षप्रमाणकं मन्त्रसन्तानगोपालम् श्रेष्ठविप्रजपंतथा ॥ दान करते समय श्रद्धा और भक्ति पूर्वक विष्णुभगवान् का ध्यान करे और मुख से यह मन्त्र उच्चारण करता जाय ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायण विष्णुभगवान् पूर्वशापनिवारणार्थं पुत्रसुखनिमित्यर्थं दान मन्त्र जाप करूं हूं सो ग्रहण करो ॥ मंत्रदानकृतेसन्त पुत्रप्राप्तिर्निसंशय वंशवृद्धिभविष्यति भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण का पत्र एक मुद्रा प्रमाण बनवावे और उसके ऊपर गङ्गा जल मिश्रित लाल चन्दन में मूल मन्त्र लिखे और पक्षियों का आकार बनवा कर और षटरस आदिका संकल्प करा कर श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मण को दे और मन्त्र सन्तान गोपाल और गायत्री मन्त्र लक्ष प्रमाण जपवावे हवन यज्ञ करेतो निश्चय पुत्र होकर जीवें और धन संतानकी वृद्धिहो और जीवन सुफल माने हर प्रकारके आनंद हों ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रइस्थित्वा बहुभागीचबालकः साहसोचप्रतापीच विनीतश्चतुरोगुणी ॥ मंत्रतंत्रविजानीयात शिवभक्तिचमध्यमा दृष्टीन्यूनविजानीयात नेत्रपाडानसंशयः ॥ अंगरोगक्वचित्काले औषधिप्रतिशांतये मित्रश्रेष्टमहाप्रीति नवीनोवार्तयाचितः ॥ अल्पकष्टभयंशुक्र नवीनोजन्मप्राप्तये मिष्टवाक्यप्रियवाणी धनचिंतानसंशयः ॥ महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने कटुवाक्यउपाधीच शत्रुपक्षविरोधता ॥ चौरभय विजानीयात गुप्तशत्रुचप्राप्तये राजद्वारप्रतिष्टोवा भूमिलाभ
१०३० भविष्यति ॥ पुत्रचिंताविशेषेण पत्नीशोकबूडनं प्रमेहोव्याधिकंक्लिष्ट औषधीप्रतिशांतये ॥ कस्मिन्कालेउपद्रोवा शीघ्रोवीर्यखंडतः
१८५ अर्धआयुगतेशुक्र भाग्योदयदिनेदिने ॥ पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस जीव की पत्री में ग्रह श्रेष्ट हैं इज्जत पावे चतुर बुद्धिमान् मन्त्र यन्त्र का भी कभी शौक हो शिव भक्ति करे मध्यम श्रद्धा से कभी आंख दुखनी आवें दृष्टि मध्यम सी होवे एक मित्र से प्रीत बनी रहे चित्त उसकी तरफ विशेष रहे एक कष्ट अल्प समय हो फिर औषधी से शांति हो श्रेष्टवार्ता बारम्बार सोचे किसी काल में क्रोध विशेष आया करे कैंड़ा बोले शत्रु जला करें मार्ग में या और कहीं चोर का भय हो स्त्री से प्रीत हो राजद्वार और भूमि से लाभ पुत्रों के दुख देखे स्त्री को औलाद की चिंता रहे अनेक यत्न करे पूर्व पाप के कारण निष्फल जाय हेपुत्र यह जीव सर्व सुख देखे परन्तु पुत्र सुख न हो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनष्यति पुर्वजन्मकथाकथ्यं श्रृणुत्वममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता पहले किसी जन्म में कौन से पाप इस जीव से बने हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारण

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गजनंदानुसारणः ॥ उपवनंगवनंकृत्वा सन्मुखोसिंहदृष्टयः क्षत्रोसिंहवधोवाण द्विजपुत्रचमृत्युदा ॥
चन्द्रपुत्रसुखीविप्र क्षत्री शविनाशनं द्विजदृष्टिकृतेपुत्र हाहाकारविह्वलं ॥ विप्रशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतदुखी ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक यह जीव एक पूर्व जन्म क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया बड़ा भारी धनवान् था सो एक समय
धनुषबाण लेकर शिकार खेलने गया तहां सिंह दृष्टिमें आयातो क्षत्रीने तीरमारा सिंह तो बच गया एक ब्राह्मणका पुत्र सन्मुखसे
५०३० आवे था सो क्षत्री के बाणों से उसके प्राणों का नाश हुवा तो ब्राह्मण के यह एक ही पुत्र था सो उसका मृतक शरीर देख कर
१८६ हाहाकार कर के विह्वल हुवा और क्षत्री को ब्राह्मण ने शाप दिया कि तू भी सात जन्म तक पुत्रों को भटकता रहेगा ॥
शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् विप्रशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान
मन्त्र जाप से पू ं का दिया हुवा ब्राह्मण का शाप छूटे जो इस जीव को पुत्रों का सुख हो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या
चन्द्रटंकप्रमाणकी तन्मध्येकामवीजश्च स्वर्णोशुद्धमाद्रशेव ॥ रक्तचन्दनमिश्राणि द्विजमूर्तिप्रकारकम् चन्द्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्र
जापकं ॥ वस्त्रभोजनंदानं संकल्पंब्राह्मणददेत वज्रदानविनिर्मुक्तो पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ वंशवृद्धिनसंदेहो भाग्योदयदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र एक टंक प्रमाण स्वर्ण का पत्र बनवा कर तिस के ऊपर रक्त चन्दन और
अनार के कलम से द्विज के पुत्र की मूर्ति लिखे और वस्त्र भोजन सहित सब सामग्री संकल्प कर के ब्राह्मण को दे
एक लक्ष गायत्री मन्त्र जपवावे हवन यज्ञ करे ब्राह्मण को दक्षिणा देकर तृप्त करे तो अवश्य पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेद एवंसाकुण्डलीफलं आदौभाग्यञ्चमध्योपि पुनरंतेविशेषता ॥ बालवस्थाचक्रीड्यन्ते
विद्याभ्यासेपिमंगलं तातद्रव्यंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवः ॥ भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेनात्रसंशयः वारिभीतोथवावन्हि चतुष्पादेन
पीडितम् ॥ उच्चस्थेपतितोभूमौ शरीरोबातपीडिनं बहुविद्यानप्राप्यन्ते कार्यमात्रञ्चसिद्धति ॥ बुद्धि तोविशेषेण सुज्ञाताचसुलक्षणः
युवावस्थासुखंप्राप्य पुत्रसुखंविनश्यति ॥ व्ययलाभविशेषेण कीर्तिवंतोप्रतिष्ठत भाग्यवंतोधनाध्यक्ष सुप्रसिद्धंसुखीनरः ॥
म०उ० चंद्रमित्रपरंप्रीति सर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिताद्वयोजीव प्राप्यतेशोकसंयुतं ॥ कदाचकष्टरोगार्तो बहुद्रव्यव्ययोभव राजद्वारे
१८७ धनागम्य भूमिलाभस्त वत्र ॥ बरङ्गोसिंधुवच्चित्तं जायतेबहुनूतन अल्पोदीर्घभयंप्राप्य नूतनंजन्ममन्यते ॥ पन तेसुखंप्राप्य
आयुपूर्णंभविष्यति पापक्रूरग्रहापूज्यं यकृताभाग्यमन्दता ॥ दानमन्त्रविधानेन मनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्यविशेषेण परकाय
रतोनरः ॥ दयालुसुविचारश्च गीतवाद्यतस्सदा सुन्दरंभृगुवाक्षीच धनसंयुक्तकौशल ॥ सत्यवक्ताप्रतापीच विनितश्चतुरोगुणा
सर्वसुखमवाप्नोति पुत्रप्राप्तिउपायकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ हो प्रथम मन्द
भाग हो पश्चात् में विशेष भाग की वृद्धि हो बाल्यावस्था में बालक्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में
खर्च हो बहन भाई का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय हो या कहीं से गिरे विद्या कार्य मात्र हो चतुर दाना युवा वस्था
में बड़े काम और मामले देखे लाभ खर्च बहुत हो प्रतिष्ठा पावे एक मित्र से शुद्ध प्रीति विशेष हो उससे मन की बात कहै और
एक जीव का क्लेश बहुत माने कई बीमारियों में खर्च हो राजद्वार तथा भूमि से लाभ हो चित्त में समुद्र क सी नित्य नई तरंग

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उठैं एक अस्थ भारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हो हेशुक पूर्व जन्मों के कारण पुत्रों के सुख से रहित रहै ॥
शुकोवाच ॥ केनपापश्चकर्तव्यं पूर्वजन्मनिकथ्यते विधिपूर्वकथंतात शृणुत्वंममवांछया ॥ सर्वसुलक्षमाप्नोति वामपुत्रश्चविन्हलं
पुत्रमासिनहश्यंते जन्मतेसुतमृत्युदा ॥ हेपिता इसजीवने पूर्वजन्ममें कौनसेपाप किएहैं सोकहो ॥ भृगुवाच ॥ ब्रह्मवंशकुलेजन्म
कुरुक्षेत्रनिवासयो दीर्घदानश्चग्रहणं यात्रापुत्रविनाशनं ॥ हेशुक तुम चित्तदेकर सुनो हम प्रथम जन्मसे पहले जन्मकी कथा वर्णन
म०ज० करते हैं क्योंकि शापतो सातजन्म तकभी फलकरैहैं सो यह प्रथमसे-प्रथम जन्ममें ब्रह्मकुलमें कुरुक्षेत्रमें पराडाथे इन्होंने बहुत कुछ
१८८ दानलिये परंतु एकदुष्टकी सम्मतिमें आनके एकयात्री जोसाथमें स्त्रीपुत्रकोलिए इनकेस्थानपरठहराथा उसकेपुत्रको स्वर्णकाआभूषण
जड़ाऊ और सच्चेमोतियोंकी माला उतारकर उसके मोतहुवे पुत्रको कूपमेंडालदिया सोउसयात्रीने अतिदुखीहो वहींतीर्थपर शापदिया
कि जिसने मेरे पुत्रकी यहगतकी उसके सात जन्म तक पुत्रका सुख नहो और दुखित रहै ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच
किंमत्रंकिंजापकं यात्रीशापविनिर्मुक्तो सुखसंतानवर्द्धनः ॥ यहकथा सुनकर तिनके पुत्र शुकजीने भृगुजीसे प्रार्थना करके पूछा
हेपिता कौनसे दानमंत्रजाप करानेसे इसजीवका शापनष्टहो औरपुत्रोंका सुखदेखे सोवर्णनकरो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा
यात्रीमूर्तिपुत्रकं रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ तीर्थदानददेविप्र गायत्री मंत्रजापकं वस्त्रआभूषणसहितं संकल्पश्रेष्ठविप्रयो ॥
इदंदानकृतेजीव पूर्वशापनष्टकं पुत्रसुखनसंदेहो मनवांछितफलप्रदा ॥ भाषा ॥ हेशुक यहजीव स्वर्णपत्रपर यात्री पुत्रको मूर्ति लाल
चंदनसे लिखे गंगाजलसे स्नान कराय तीर्थ पर जाय श्रेष्ठ ब्राह्मणको दानकरे गायत्रीमंत्र जपवावेतो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगोद्भवेन्नाल ग्रहाश्रेष्ठबलान्वितः फलपूर्णनकर्ततव्या त्रिग्रहाग्रधमस्थिता ॥ कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते
तेनहानिप्रजायते भौमपुच्छेरविपूज्यं दानमंत्रशुभक्तित ॥ विशेषोलाभसंजातं भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोके सर्वतोदिशि
मंगलं ॥ अथयत्नेनतदाकाव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमंत्रसुपुण्येन बहूत्वोलाभसंभवा ॥ आनन्दमंगलाचारं जोवहर्षचमोदिता
सुकीतिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्योप्रतिष्ठत ॥ यदामध्यदशायाव मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते ॥
सं०७० क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पजन्मनूतनम् सुयत्नंदानमन्त्रेण सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ पुत्रचिंताभविष्यन्ति पत्नीक्लेशविह्वलं दशाश्रेष्ट
१८९ प्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव ॥ कुवोद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णयुतोजीव सर्वेषांशुभचिंतकः ॥ नकस्याग्रशुभ
चित्य परनिंदाविनिर्मुखः व्रणचिन्हशरीरोपि शत्रुपक्षविरोधता ॥ तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुण्यप्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव
सर्वथाकर्मकारणः पत्नीपुत्रमहाचिंता भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं इस कुण्डली का फल बहुत
उत्तम श्रेष्ठ था परन्तु पुरा फल देर से हो तीन ग्रह हानि कारक हैं सूर्य, मंगल और केतु इनका दान मन्त्र उपाय करने से
लाभ विशेष हो और भाग्य की वृद्धि होगी और यह जीव बड़ी इज्जत और प्रतिष्ठा पावे परन्तु इतने नाकिस ग्रहों का यत्न न
हो मध्यम फल हो और यत्न उपाय करने से अनेक प्रकार के लाभ हों और आनन्द मंगलाचार हों जीव की खुशी हो और
यह जीव बड़ी इज्जत कीर्ति पैदा करे मध्यम दशा में मध्यम लाभ और गुप्त चिंता अनेक प्रकार के खर्च एक अल्प से
बच कर नया जन्म हो और कहीं से अकस्मात लाभ हो यह जीव सब का भला चाहै एक मित्र से मिल कर लाभ हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऊंचो पदवी पावे शत्रु उपाय करे घर में क्लेश सा हो फिर मनोकामना पूरी हो हेशुक इस जीव का पञ्चम स्थान पूजनीक है
सब सुख देखे परन्तु बिना उपाय पुत्रों के सुख से रहित्त रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्म
कथाकथ्यं श्रृणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता ऐसे कौन से खोटे कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो
पुत्रों के सुख प्राप्त नहों ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ मृगीपुत्र
स० उ० विलोकस्य क्षत्रीचापधारणम् दक्षिणहस्तकंसाय मृगीपुत्रश्चमृत्युदा ॥ हाहाकारमृगकृत्वा पुत्रशोकोपिबूडनं मृगशापमुखंदत्वा
१६० सप्तजन्मसुतहानकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र पूर्व जन्म की कथा इस जन्म पत्र वाले जीव की तुम सुनो
क्षत्री वंश में पूर्व से पूर्व जन्म में उत्पन्न हुवा सो शिकार खेलने गया तो इसने मृग का बच्चा मारा सो मृग ने दुखी हो शाप
दिया कि सात जन्म तक तुझे पुत्र का सुख नहो और पुत्रों के विलाप देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रं
किंजापकम् पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखभविश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी महाराज ने कहा हेपिता यह जीव कौन से दान ंत्र और
जाप करावे जो इस जीव को पूर्वका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र होकर जीवें और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥
भृगुवाच ॥ स्वर्णंचप्रतिमाकारः मृगमूर्तिलिपिक्तः ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ श्रद्धामात्रददेहानं अर्धरात्रप्रमाणकम् ॥
भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका बनवावे तिसपर मृगकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखे और शुद्ध करके घृतके भरे कलश
में मूर्ति गुप्त प्रवेश कर अर्धरात्रि प्रमाण दान करा कर श्रेष्ठ विप्रको देतो पुत्रका सुख निश्चय हो और मनोकामना पूर्ण होय ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्येदंफलंद्रस्य यथाभाग्यादिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवआशाविनिर्मुखः ॥ चिंतनंसुस्थिरंलोके
चञ्चलोचित्‌विशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चजायते ॥ नूतनंवार्तयाचित्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुद्रष्यन्ते
विलम्बोजायतेपुनः ॥ क्लेशरोगेनपाद्यन्ते पुत्रशोकोपिचिंतनं लाभेशोपंचमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता ॥ फलश्रेष्ठसुखंप्राप्य सुपुरायं
फलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण पुत्रचिंतानसंशयः ॥ बहुकृत्यमहलाभं सुजनानन्दवर्द्धन मित्रपक्षपरंप्राति आनन्दभूमिमण्डले ॥
सं०उ० पितृपीड़ाग्रहगुप्त अकस्माद्भयदायकः पत्नीक्लेशनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः ॥ बंधुक्लेशविरोधश्च चंद्रपीड़ाविशेषतः अकस्मात्
२६१ महाचिंता नान्यथावचनंमम: ॥ गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधि तेनसौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोभाग्यमंगलं ॥ द्रव्यप्राप्तिविशेषेण
कुलबंधुचहर्षिता मध्यविद्याचप्राप्नोति भाग्यवृद्धिविशेषतः ॥ गुप्तलाभनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने पूर्वशापप्रभावेण पुत्रसुखनदृश्यते ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस पत्र का फल सुनो यह जीव ज्ञानवान् चतुर हो सब का भला चाहै भागवान् हो
प्रसन्न रहे एक जीवकी आस लगी रहै चित्त चलाय मानसा रहै और नई नई बार्ता सोचता रहे गुप्त चिंतासी हो जाया करे नये
नये लाभहों कार्य की सिद्धि में विलम्बसा हो जाया करे और क्लेश पीड़ा होकर आनन्द हो पुत्रकी चिंता लगी रहे लाभेश और
पञ्चमेश की पूजा दान से फल श्रेष्ठ और मनोकामना पूर्ण हो कृत्य में लाभ और मित्रों से प्रीत पृथ्वी पै आनन्द और पितृ
पीड़ा का भय हो स्त्री को क्लेशसा हो किसी समय बन्धु या और शत्रुओं से विवाद हो अकस्मात् चिंता हो जाय गायत्री मंत्र
जाप करानेसे मन इच्छा पूर्णहो विद्या मध्यम और चतुर विशेषहो कहींसे गुप्त लाभहो बहुतसी प्राप्तिहो हेशुक्र पूर्वपाप और शाप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के कारण पुत्र का सुख नदेखे ॥ शुक्रोवाच ॥ श्रृणुतातकृपानाथ पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापं पुत्रसुखविनश्यति ॥
भाषा ॥ शुक्रजी ने कहा हेपिता कौन से पाप इस जीवने पूर्वजन्म में किये हैं जो पृथ्वी पर सब सुख देखे और पुत्रों के दर्शनों
को भटकता रहे सो कृपा कर कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते श्रृणुपुत्रोतिध्यानकं ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्मोपिकृत्यया ॥
गौवच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं वच्छोपिप्राणागवनं गौश्चापमुखंददेत ॥ दारुणदुखददेत्विप्र अग्रजन्मस्वभोक्तया पुत्रसुखविनश्यंति
स०७० सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्म कुल में उत्पन्न हो कर खेती करता
२६२ था सो रात्री को गौ और उसका बचा खेती में आघुसे तो बड़ा मोटा लठ्ठ बछड़े के मारा सो वह बछड़ा मृत्यु को प्राप्त हुवा
गौ ने विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे मैंने बछड़ेका दुख देखा तैसे तूभी सातजन्मतक पुत्रों का दुख देखेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखस्यप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा हे पिता कौन से
दान मंत्र जाप कराने से गौ का दिया हुवा शाप नष्ट हो संतान का सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गंगाजल
रक्तचंदनं गौवच्छतिआकारं तांदुलस्येतगुप्तयां ॥ संकल्पंददेत्विप्रः सुखउच्चार्णमंत्रकं वटुकमंत्रकृतेजापं पूर्वशापविनश्यति ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुरस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्र स्वर्ण के पत्र परगौ के
बछड़े की मूर्ति रक्तचन्दन और गंगाजल से लिखे चावल का थाल भरकर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी
श्रेष्ठ ब्राह्मण कोदे और ऊपर लिखे मंत्र का श्रद्धा प्रमाण जाप करावे गायत्री मंत्र जपवावे तो पुत्र होकर जीवें मनोकामना पूर्णहो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं यथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्या चितचिंतातिमन्यते ॥ भ्रमोपिजायतेदीर्घ श्चद्रव्यश्चन्यूनता विद्यावंतोसुबुद्धिश्च सर्वावस्थाप्रतिष्ठतः ॥ सत्यवक्तासुखीलोके नकश्चितहानिचिंतकः परकृत्यरतोप्रेमी जनासर्वे प्रशंसिता ॥ जीवचिंताविशेषेण मित्रप्रीतिबृहत्वया नूतनोवार्तयाचित्तं उद्यमेणधनाश्रयः ॥ कुलश्रेष्टसुभार्याच सर्वेषांतोषणेरत दशान्यूनमहाचिंता उद्यमेश्रमनिष्फलम् ॥ त्रिलम्बोजायतेलाभम अर्द्धकृत्यअसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्य पदउच्चमुपस्थितः ॥

स०७० विशेषोजायतेलाभम मानकीर्तिविवर्द्धनम् पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनः ॥ पापकूरगृहापुज्यं पञ्चमेशोप्रयत्नतः दानमंत्र

१८३ सुपुण्येन मनेच्छासर्वपूजिता ॥ सर्वावस्थामहल्लाभं भाग्योदयदिनेदिने अतआयुमहासुखं भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रप्राप्तिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी पत्री में गृह श्रेष्ट हैं लाभ खर्च विशेष हो लाभ के वास्ते नई नई बात का चिंतवन करे एक समय बुद्धि भ्रमसी हो घर में द्रव्य की न्यूनता प्रतीत पड़े विद्यावान् बुद्धिवान् हो इज्जत प्रतिष्टा पावे सत्य बोलने वाला गुप्त चिंता सी हो जाया करे पराए काम सुधारने वाला लोग प्रशंसा करें मित्रसे प्रीत विशेष रहे नई नई बात का ध्यान धन की प्राप्ति का परिश्रम उद्यम करे न्यूनदशा में परिश्रम निष्फल हो अधूरा लाभ हो एक समय अकस्मात् लाभ विशेष हो उच्च पदवी पावे मान कीर्ति बढ़े स्त्री को पुत्र के न होने की चिंता लगी रहे और अन्त आयु सुख मिले हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्रों के सुख को भटकता रहे ॥ शुकोवाच ॥ श्रुत्वातातकृपानाथम् पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापम् पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता कौनसे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाप इसजीवने पूर्व जन्ममें किये हैं जो पृथ्वीपर सब सुख देखे और पुत्रोंके दर्शनको भटकता रहे सो कृपाकर मुझसे कहो ॥
भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते शृणुपुत्रतिष्यानकम् ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्म्मासुकृत्यया ॥ गोवच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं
बच्छोपिप्राणगवनं गौशापमुखंददेत ॥ दारुणदुखददेतिम्र अग्रजन्मचभोक्तया पुत्रसुखविनष्यति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक पहले जन्म में यह जीव ब्रह्मकुलमें उत्पन्न होकर खेती करताथा सो रात्रीं को गौ और
 उसका बच्चा इसकी खेती में आघुसे तो इसने बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह मृत्यु को प्राप्त हुवा तब उस गौने बड़ा
 विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे तैंने मेरे बछड़े को मारा और मैंने बछड़े का दुख देखा तैसे तूभी सात जन्म
तक पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापविनष्यंति पुत्रसुखचप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्रजी
महाराज ने कहा हेपिता कोन से दान से और कौन से मंत्र जाप पुजा से पूर्व का गौ का दिया हुवा शाप नाश को प्राप्त हो
और यह जीव पुत्रोंका सुख देखे सो विधि पूर्वक कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रेलिपिकृत्वा गङ्गाजलरक्तचंदनं गौवच्छोतिआकारं
तांदुलस्वेतपुष्पया ॥ संकल्पंददेतिम्रः मुखउच्चार्णमंत्रकम् बटुक त्रकृतेजापम् पूर्वशापविनष्यति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वटुक
भैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुकुरुस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण के पत्र पर गौके
बछड़े की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और चावल का थाल भर कर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी
श्रेष्ट ब्राह्मण को दे और फिर ऊपर लिखे मन्त्र का श्रद्धा प्रमाण भक्ति पूर्वक जाप करावे तो निश्चय पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चे विशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभागीच चित्तचिंताविशेषतः ॥ व्ययलाभविशेषेण
सर्वावस्थासुमोदिता भ्रातृभगिनिचप्राप्नोति अल्पसुखनसंशयः ॥ व्रणचिन्हशरीरश्च वायुखेदश्चपीडिका कस्मिन्कालउपाधीच
बन्धुपक्षविरोधता ॥ अकस्मात्उपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरेषु महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभोभवतिनान्यथा ॥ युग्मविद्याचप्राप्नोति
ब०उ० कार्यमाश्चसिद्धति मध्यप्राप्तिविजानीयात व्ययदीर्घोनसंशय ॥ चन्द्रअल्पमहादुक्खं नवीनोजन्मप्राप्तये आयुभोगंचपूर्वोगा
१६५ भृगुणापरिभाषितः ॥ चन्द्रस्त्रोमहाप्रीति आनंदंभूमिमण्डले सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखविनश्यति ॥ पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रयोगश्च
खण्डत मानसीविविधाचिंता भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ पूर्वपापप्रभावेण पूर्णवांछानदृश्यते पितृपीड़ाग्रहमध्ये श्रद्धामात्रश्चपुज्यते ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ है गृह बलवान् पड़े हैं लाभ कारी और खर्च विशेष हो
भग्नी और भ्राता का सुख मध्यम हो श्रेष्ट दशा में लाभ बहुत हो कीर्ति बढ़े शरीर में व्रण का चिन्ह कभी दर्द पीड़ा हो जाया
करे और मित्र या बन्धु भ्रात से उपाधी हो अकस्मात् उपद्रव सा उठे शत्रुपक्ष से विरोध हो गुप्त चिंता सी हो जाय फिर बहुत
सी प्राप्ति हो और इज्जत प्रतिष्ठा पावे दो विद्या का मध्यम योग हो ऊंचादर्जा पावे लाभ मध्यम हो किसी समय में खर्च विशेष
हो एक अल्प आयु से बच कर उमर पूर्ण हो एक स्त्रा से महा प्रीत हो कर एक जीव का ख्याल बना रहे हेशुक्र सब सुख हो
परन्तु पुत्र की महा चिंता क्लेश स्त्री को रहा करे पूर्व पाप के प्रभाव के कारण पुत्रों का सुख कठिन है पितृ पीड़ा घर में हो गुप्त
बामारी हो अनेक प्रकार की चिंता हो सब सुख प्राप्त हों परन्तु पुत्रों का योग खंडत है पितृ पीड़ा को श्रद्धा मात्र उपाय भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मासेवर्षेसुखंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः सर्वसुखञ्चप्राप्नोति संततिवंशविनाशकः ॥
करावे परंतु इच्छा पूर्ण विलंब से हो ॥ भृगुवाच ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः सर्वसुखञ्चप्राप्नोति संततिवंशविनाशकः ॥
भाषा ॥ सूर्य वंश ऋषी पुत्र भृगुजी महाराज ने कहा हेपुत्र यह जीव सब सुख देखे परन्तु पुत्रों के सुख से क्लेशित रहे ॥
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मंचभोतात पूर्वजन्मनिकथ्यते सर्वंचविस्तराद्ब्रुहि पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजी ने कहा हेपिता
पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म करे हैं जो सब सुख देखे और पुत्रोंके सुखसे रहित रहे सो पूव जन्मकी कथा कहो ॥
भृगुवाच ॥ सूर्यवंशसमुत्पन्न बहुसेवीनरोभवेत अश्वपतिगजग्रामी मानदीर्घोनसंशय ॥ तीर्थयात्रागवनंकृत्वा मार्गेमध्यउपद्रवं
अश्वञ्चजीवइस्थित्वा अर्धरात्रिप्रमाणकम् ॥ ऋषिसुतवाटिकागच्छं अश्वचणातिमृत्युदा ऋषिपुत्रश्चदृश्यते हाहाकारविव्हलं ॥
क्रोधोशापसुखंदत्वा त्रयजन्मोमतहीनक ॥ भाषा ॥ भृगजी कहते हैं हेशुक्र प्रथम जन्ममें यहजीव सूर्यवंशीथा और बड़ाभागवान्था
हाथी घोड़े ग्रामथे तीर्थयात्रा करने जाताथा रुपयापायके अभिमान बहुत बढ़गया अर्धरात्रीको घोड़ेपर सव.र होकर जाताथा रात्री
कासमय कुछ अभिमानमें अधाहुवा जाताथा सोमार्गमें एक ऋषीका पुत्र खेलताथा उसके ऊपर घोड़ेका चरणआया तुरंत मृत्यु को
प्राप्तहुवा तब ऋषीने देखकर विलाप किया और शाप दिया किजैसेमें पुत्रोंके क्लेशमेंहुवा तैसे तूभी तीन जन्मतक पुत्रोंको भटकेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापप्रणाश ति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दान जापसे शाप
नष्टहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकं ऋषिपुत्रलिखेन्मूर्ति संकल्पंब्राह्मणंददेत ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह
जीव श्रद्धाप्रमाण स्वर्णपत्र बनवाय उसपर ऋषीपुत्र की मूर्ति लिखाय विधिपूर्वक श्रेष्ट ब्राह्मणको दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मपत्रफलंश्रेष्ट मध्यमोगश्चप्राप्तये तेजस्वीचप्रतापीच बुद्धिवानविशेषतः ॥ मध्यलाभनसंदेहो लाभईशपूजनं
दीर्घज्ञानसमायुक्तो सुशीलोजीवदर्शनं ॥ दीर्घश्चायुसुयत्नेन बृहत्योफलमाप्नुयात् ग्रादपठनचविद्यायां ग्रंते विद्याविसार्जनम ॥
बहूविद्यानमाप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति कस्मिन्कालेमहापीड़ा ग्रौषधिप्रतिशांतये ॥ पशुजलभयजीव नवीनोजन्मप्राप्तये भाग्यवृद्धि
विशेषेण ग्रानन्दंभूमिमण्डले ॥ शत्रुपक्षविरोधीच गुप्तचिंताशरीरजं भ्रातभग्निसमायुक्तो भृगुणापरिभाषितः ॥ तेजस्वीप्रतापीच
१०८० सूरवीरमहान्नरः पत्नीप्रीतिनसंदेहो बुद्धिचितचलायनं ॥ पुत्रहेतुकृतेयत्न दुर्लभसुतजीवः पत्नीगुप्तमहाक्लेश भृगुणापरिभाषितः
१६७ चौरभीतिविजानीयात् गुप्तशत्रुप्रहारकं धनव्ययविशेषेण ग्रन्तशत्रुविनाशनं ॥ महाप्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्ष
महाप्रीति गुप्तप्रीतिचलोकमा ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदर्शन ॥ भाषा ॥ भृगुजा महाराज कहते हैं हेपुत्र इस पत्र का
फल श्रेष्ट है ग्रौर मध्यम योग है यह जीव इज्जत प्रतिष्ठा वाला ज्ञानवान ग्रौर सूरवीर, तथा सोच समझ कर बात कहने वाला
मध्यम लाभ हो लाभेश के पूजन से विशेष प्राप्तिहो विद्या कार्य मात्र हो एक समय ग्रल्प से नया जन्म हो पशु या जलका भय
हो शत्रु पक्ष से विरोध गुप्त चिंता हो जाय बहन वा भाई का योग हो घर में कभी क्लेश गुप्त पीड़ा हो पुत्र के वास्ते यत्न करे
परन्तु जीव ने दुर्लभ हों घर में स्त्री सुशील श्रेष्ट खान दान की चतुर हो दूसरी स्त्री से भी प्रीत हो एक समय गुप्त शत्रु ग्रौर
चोर का भयहो हानि पहुंचावे परन्तु ग्रन्तमें शत्रु का नाशहो भागकी वृद्धिहो लाभ विशेषहो मित्रोंसे प्रीतहो शुभ काम में धन
खर्चहो भाग्य दिनदिन उदयहोय हेशुक यहजीव पूर्व पापके कारण पुत्रोंको भटकता रहे पश्चात्में दान मंत्र उपायसे हो कर जीवें

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मांतरंतात गाथाकथ्यंममप्रति ॥ भाषा ॥ इस जीव ने कौन से
पाप कर्म किये हैं जो यह पुत्रों का सुख न देखे इस जीव के पूर्व जन्म की कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं
पूर्वपापप्रकारण: राजपुत्रकुलेजन्म लक्षाद्धिभुविमण्डले ॥ हरिद्वारगवनंकृत्वा अथवाहनोदिप: बहुविप्रसहितपुत्रो कावेरीतट
वासक ॥ वृषभदीर्घ चरंमार्ग द्विजपुत्रभयंवधो मृत्युपुत्रदशाविप्र हाहाकारविव्हल ॥ राजपुत्रददेतशापं अतिक्रोधोपविवृडनं
१०७० पुत्रक्लेशमहाशोक सप्तजन्मपुन:पुन: ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हे पुत्र यह जीव एक जन्म में राज पुत्र था सो बड़ा
१९८ अभिमानो था हरिद्वार पै जाय पराई स्त्रियों को खोटा दृष्टी से देखता था सो रथ में बैठ के गया गङ्गाजी के किनारे बहुत
से ब्राह्मण स्त्री पुत्र सहित बात करते थे सो अंधाधुन्ध रथ भगाया सो एक ब्राह्मण के दो पुत्र बाल अवस्था के रथ के पईये के
नीचे आन कर मृत्यु को प्राप्त हुवे सो ब्राह्मण पुत्रों की मृत्यु देख राज पुत्र को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक
पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किमन्त्रंकिजापकम् द्विजशापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हेपिता
यह जीव कौन से दान जाप करावे जो पूर्व जन्म का ब्राह्मणका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र पोतेके सुख देखे ॥
भृगुवाच ॥ श्रृणु त्रमहादान वंशवृद्धिचकारयेत स्वर्णपत्रमहाश्रेष्ठ कावेरीजलशुद्धयो ॥ रक्तचंदनमिश्राणि घृतपात्रप्रशुतया गायत्री
मंत्रजाप्यंते चंद्रलक्षप्रमाणकं ॥ संकल्पदेत्विप्र लीनपात्रद्विजोत्तम: वस्त्राभूषणंदानं निश्चयपुत्रप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक
स्वर्ण पत्रपर रक्त चंदनसे ब्राह्मणके दोपुत्रों की मूर्ति लिखे घृतभरे कलश में वेशकर विधिपूर्वक ब्राह्मण को दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगे नरोजन्म आनंदं भूमिमंडले सत्यवादी भवेत्बालो भृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयो प्रेमादीप्रसवःपुमान् देवद्विजरतोनित्यं मानकीर्तिविशेषतः ॥ बुद्धिदीर्घ आयुस्याद सत्कीर्ति कुलवर्द्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोवार्तयाचितः ॥ चन्द्रमित्रपरमप्रीति चित्तवृत्ति आशक्तया दीर्घकार्योपि आगत्वा सर्वसुखंव्यतीततः ॥ अकस्मात् उपद्रोवा कस्मिन् कालशांतये चद्रअल्प नसन्देहो नवीनोजन्म प्राप्नय ॥ कुलबन्धु महाचिंता प्राणोभय भविश्यति दान

सं०३० मन्त्रयकर्तव्यं औषधी प्रतिशांतये ॥ वृणव्याधी शरीरेच चिन्हदेहोपिदृश्यते युवाआयु नसन्देहो धनप्राप्तिभविष्यति ॥ अतिवेज प्रतिष्टोवा भाग्यवृद्धि दिनेदिने वामचिंता महाक्लेशं अलागर्भोव खण्डतः वंशवृद्धि नदृश्यंते गुप्तचिता

१९६ महानकं पित्रश्च देवपूजाच नेकयत्नश्च कारयेत् ॥ सुतःपुक्ख विनश्यन्ति भृगुवाक्यं नचान्यथा सर्वानन्द भोक्तव्यम् वंशवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहने हैं हे शुक्र इस जीव की कुण्डली में ग्रह श्रेष्टहैं सत्यबोलने वाला परमार्थी कराये काम मनसे करे सबका प्यारा देव ब्राह्मणों का मानने वाला इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे विद्या से बुद्धि विशेष हो श्रेष्ठ कुल वाला सुन्दर नई २ बात सोचे एक मित्र से प्रीति हो चित की वृत्ति आसक्तभी हो जाय लाभ मध्यमहो परन्तु बड़े २ काम खर्च के आवें सब आनन्द से पुरे उतरें एक समय अकस्मात उपद्रव हो एक अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो कुलबंधु चिंता कुछ विरोध प्राणका भय हो मंत्र औषधि से आरामहो फोड़ेका चिन्हहो युवा अवस्था में धन प्राप्तहो प्रतिष्ठा बढ़े भाग्य की वृद्धिहो स्त्रीको क्लेश चिंता पुत्रोंके ध्यानमें दुखारहे पुत्र नहो जोहो तो अल्प जीवी हो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सो हे शुक्र यह जीव सब सुख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखसे रहित रहे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन अग्रवंशविनाशकः पूर्वगाथाकथंतात श्रृणुत्वंमनवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव के
भृगुवाच ॥ जटिलवंश कुलेजन्म धनधान्या भविश्यति अश्वपति गजग्रामीच
पूर्व जन्म की कथा वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ जटिलवंश कुलेजन्म धनधान्या भविश्यति अश्वपति गजग्रामीच
उच्चपदवी प्रधानक ॥ चापवाण गटीद्धार गत्रनखेटानु सारिणः मयूरासहितेवाल बनखंडा किलोलकं ॥ प्रधानोजटिलं
चाप बाण संधानकंक्रिया मयूरोपुत्रकं बद्धो हाहाकार विलापनं ॥ मयूरोशापकंदत्वा अतिक्लेश दुखदारुणः ममपुत्र
महाशोकं सप्तजन्मत्वयाप्रभो ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जाट वंशमें यह जीव प्रथम एक जन्ममें उत्पन्न हुवा था भाग्यवान
स०३० धनवान हाथी घोड़े गांव सब थे उच्चपदवी वाला प्रधान था सो शिकार खेलने गया जंगल में मोरके वच्चे मारे मोरने
२०० बच्चों की मृत्यु देख शापदिया कि चौधरी प्रधान जैसे मुझे बच्चे का दुख दिया तैसे तूभी सात जन्म पुत्रोंका दुख देख ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजात्र किंमन्त्रं किंजापकं मयूरो श्रापकनष्टः सुपुत्रो भूमिमंडले ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे
दानमंत्र जाप करानेसे पूर्वजन्मका पापनष्टहो और पुत्रों के सुख यह जीव देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्र लिपिकृत्वा
युग्ममुद्राप्रमाणकं मयूरोपुत्रकंकार चित्रंतेविधिपूर्वकं ॥ रक्तचन्दन मिश्राणि गंगाजलस्नानकं षटरसदानसहितो गायत्री
मूलमंत्रकं ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन श्रद्धामत्रजापकम् पठितविप्रददेत्दानं मुखउच्चार्णं मंत्रकं ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैर
वाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवार्णार्थं स्वर्णमयूरदान कुरुकुरु स्वाहा ॥ इदंदानं कृतेसन्त मनवांछित फलप्रदा ॥
भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्ण का पत्र दो मुद्रा प्रमाण बनावे फिर उस पर रक्त चंदन से मोर की मूर्ति
लिख गायत्री लक्ष प्रमाण जपवावे सकल्प करके पढ़े हुवे श्रेष्ठ ब्राह्मण को देता निश्चय कर के पुत्रों के सुख देखेगा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहा विराजत्वा श्रेष्ठपत्री सुखीनरः सुदशा फलप्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः ॥ पापक्रूर ग्रहापुजा क्रियतेफल प्राप्नुयात भाग्यवृद्धि विशेषेण मनवांछित फलप्रदा ॥ ग्रहापुजा नकर्तव्यम अर्थप्राप्ति नसंशयः चन्द्रस्त्री महाप्रीति आनन्द अति ध्यानकं ॥ आदिपठनश्च विद्यायां अन्तविद्या विसर्जनं बहुविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रश्च सिद्धति ॥ अष्टमेथदशे वर्षे बालवृद्धि दिने दिने तातधन शुभकार्थ विवाहोत्सव मंगलम ॥ सप्तचन्द्र मितेवर्षे सून्यराम मितेतया भाग्यवृद्धि
सं०३० विशेषेण धनप्राप्तिनसंशयः ॥ देहकष्ट विजानीयात् औषधि प्रतिशांतये गुप्तचिंता शरीरेच शत्रुपक्ष विरोधता ॥ युग्म
२०१ अल्पगतेकाव्य पूर्णआयु नसंशयः व्ययदीर्घ विजानीयात छत्रचिंतान प्राप्तये ॥ गुप्तधन प्राप्नोति कस्मिन् कालेन संशयः पत्नीगर्भश्च स्थित्वा अल्पजीवीच बालकः ॥ आदहर्ष विजानीयात पश्चाते शोकबूडनं सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रसुख विनश्यति ॥ बामचिंता महाक्लेशं भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जीव की कथा सुनो पत्र श्रेष्ठ है स्वदशा में फल अच्छा करेंगे पाप और क्रूर ग्रहों का मन्त्रजाप कराना श्रेष्ठ है भाग्य की वृद्धि होगी मन इच्छा पूर्ण होगी इतने पाप ग्रहों के दान मन्त्र न बनेंगे अधूरी लाभ होगी यह जीव बुद्धिवान् अक्लमन्द सूरमा दूसरे की बात को तोले सत्य झूठ को पहचाने धीरज धारी विद्यापूर्ण नहो परन्तु पढ़ों से भी ज्यादे प्रतिष्ठा हो ८ वष से १८ तक विवाह स्त्री प्राप्त तात का धन शुभ काम में खर्च हो १७ वर्ष से ३० तक भाग्य की वृद्धि हो धन की प्राप्ति हो शरीर में कुछ खेद हो औषधि से आराम हो शत्रु पक्ष से विरोध हो कष्ट अल्प भुगत कर आयु पूर्ण ७२ वर्ष की हो खर्च विशेष हो छत्रचिंता किसी समय गुप्तधन की प्राप्ति हो पत्नीगर्भ धारण करे अल्पजीवी बालक हो माता पिता को दुख दिखावे हे शुक्र इस जीव को पृथ्वी पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

सुख हो परन्तु पुत्रोंके सुख को भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनपाप प्रभावेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथा
कथ्यं उचारण विधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ ठाकुरवंश कुलेजन्म बहुसेवी नरोभवेत् कोटपति गजग्रामीच बन्धुकुल
विरोधता ॥ ज्येष्ठभ्रातश्च पुत्रोवा अर्धभागीच बालकः तातमृत्यु भवेल्लोके सुमाता देवपूजनं ॥ ठाकुरं लोभकं कार्णं भ्रात
पुत्रश्चमृत्युदा माताच देवमन्द्रस्य दीर्घशाप मुखंददेत् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस जीव का पूर्व एक समय में ठाकुर वंश में
स०उ० जन्म हुवा था सो हाथी घोड़े ग्राम बड़ा धनवान था सो बड़ा भ्रात एक पुत्र छोड़ के मृत्यु को प्राप्त हुवा और
उसकी स्त्री देवताओं के मन्द्र में पूजा करने लगी सो उस ठाकुर का आपस में हिस्सा बांटने में बहुत विवाद बढ़ गया
२०२ आखीर अन्त में ठाकुर ने अपने बड़े भ्रात के पुत्र को नष्ट करा दिया तो उसकी माता ने देवमन्द्र में जाय के बहुत रुदन
किया और शाप दिया कि तूभी सात जन्म तक बारंबार भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्र
किंजापकं बन्धुमुखंशापं सर्वपापश्चनष्टकं ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमन्त्र जाप कराने से पूर्वजन्म का पापनष्ट
हो और यह पुत्रोंके सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकारं सप्तटंकप्रमाणकं नराकारोलिखेन्मूर्ति गंगाजल
स्नानकं ॥ गायत्री मन्त्रकंजापं अर्धलक्ष प्रमाणकं मन्त्रमन्तानगोपालं श्रद्धामात्र कं तथा ॥ देवकीसुत गोविंद वासुदेव
जगत्पते देहिमेतनयंकृष्ण त्वामहंशरणंगतः ॥ श्रेष्ठविप्रददेत्दानं सर्वशापविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र
स्वर्ण का पत्र सातटक प्रमाण बनवावे तिसपर नर आकार मूर्ति चन्दन से लिखे तिसे विधि पूर्वक संकल्प करावे
और मंत्र गायत्री ५१ हजार और संतान गोपाल बहुतसा श्रद्धा प्रमाण जपवावे तो पुत्र होकर जीवें आनन्द भोगे ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्यभागी सुखीलोके
श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वा ग्रहाश्चेदं बलवीर्य समन्वितः उद्यमेन धनंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः ॥ कर्तव्याहि
धनप्राप्तिपरिश्रमः कार्यकृत्यविशेषेण उच्चपदवीचप्राप्तये ॥ पूर्वपाप ग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं अतस्तेषां तुशांतिश्च
विनिश्चितम् ॥ अनुष्ठान महादान सर्वसौख्य प्रदसदा गुप्तचिंता विनष्यन्ति मनिच्छा पुरितंततः ॥ विद्यामध्यमाप्रीति आल
क्रीड़ा किलोलकं मित्रपक्ष परंप्रीति आनन्द भूमिमण्डले ॥ तातधनं शुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं पत्नीप्राप्ति नसंदेहो
विंद्यादीर्घप्राप्तये ॥ सत्यवादी प्रवक्ताच नवीनो चिंतनंकृते जलंपशु भयंलोके शत्रुपक्ष विरोधता ॥ नवीनो कार्यकंकृत्वा
सं०उ० धनलाभ भविष्यति युवावस्थाच प्राप्नोति आनन्दभूमि मंडले ॥ पत्नीप्रीत सुखीलोके विद्याण्ठनंपाठनं बन्ध्यायोगश्च
२०३ प्राप्नोति अल्पगर्भोपि खण्डतः ॥ वामचिंता विशेषेण पुत्रसुखंनदृश्यते पूर्वपाप प्रभावेण वंशवृद्धि विनश्यति ॥ सर्वसुखश्च
भोक्तव्यं सुतरहितोनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव परिश्रमी और पुरुषार्थी हो भाग्यश्रेष्ठ मध्यम हो
अच्छे काम करे नीचसे ऊंची पदवी पावे परन्तु पापक्रूर ग्रहोंके कारण किसी समय में गुप्तचिंता बुद्धिभ्रम चित स्थिर
नरहे सोचे और होय और अधूरालाभ हो ग्रहोंके उपायसे मनोकामना पूर्णहो चिंताका नाशहो विद्याकी उन्नति मित्रसे
प्रीत बहुत बनी रहे एक जीवकी आशामें मनरहे पिताका धन शुभकाम में खर्चहो स्त्री श्रेष्ठकुल की हो पुत्र के सुख को भटके
हे शुक्र यह जीव बड़े २ मामले देखे बहुतों क काम निकाले दयावान प्रेमप्रीत करने वाला किसी का बुरा न चाहे सबका भला
चाहे अल्प आवे सो नया जन्महो फिर आयु पूर्णहो परन्तु इतने पूर्व पापके उपाय न बने इतने हे शुक्र सर्व सुख देखे परन्तु
पुत्रका सुख स्वप्न मात्र नहो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथासर्वं कथ्यन्तंमुनि सत्तमः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषा ॥ हे पिता कौन से कर्म करे हैं इस जीव ने जो सारे सुख दुःख देखे और पुत्रों के सुख से रहित रहे सो वर्णन करो ॥
भृगुवाच ॥ शृणुपुत्र कथासर्वं कथ्यन्ते विधिपूर्वकम् वैश्यवंश कुलेजन्म अतितेजो प्रतिष्ठया ॥ लोकंलक्ष पतिख्यातो
बहुदासी निजकृत्यये हटवा अन्न व्यापारं अकालो दीर्घभूमिक ॥ क्षुधातुर ब्रह्मणपुत्र अन्नलब्धश्च प्रासये वैश्यति क्रोधकं
कृत्या ब्रह्मपुत्रश्च ताडयेत् ॥ लष्टमुष्ट प्रहारेण द्विजपुत्रश्च मृत्युदा पुत्रमृत्यु दृश्यंतात कठिन शापिकंददत ॥
भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्र प्रथम एक जन्म में यह जीव वैश्य वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा धनवान् था अन्न का
व्यापार बहुत करता था एक समय अतिकाल पड़ा सो सहस्रों कंगले अन्न के अर्थ फिरते थे इसकी दूकान पर दो ब्राह्मण के
पुत्र याचना करने आये उससे विवाद हुवा इस वैश्यने क्रोधवशहो दोनोको मारा धक्के मुक्के में उनके प्राणगये तब उनके पिता
ब्राह्मण ने दो पुत्र मृतक देखे सो हाहाकार विव्हल होगया और वैश्यको शाप दिया कि तूभी बारम्बार तीन जन्म तक
पुत्रों का दुःख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ कियत्ने कुरुतात पूर्वशाप निवार्णं जाप्य पूजा महादानं क्रियते पुत्र सुखकं
भाषा ॥ हे पिता कौन से यत्न करे जो पूर्व शाप नष्टहो और दान मंत्र पूजा उपाय करने से पुत्रों का इस जीव को सुख प्राप्त हो
भृगुवाच ॥ स्वर्णश्चप्रतिमांचैव अष्टमाशाप्रमाणकी द्विजपुत्रलिखेन्मूर्ति गंगाजलस्नानकं ॥ ताम्रपात्रश्च घृतंमध्ये स्वर्णमूर्ति
प्रवेशकं मध्यकालप्रमाणाश्च संकल्पब्राह्मणांददेत ॥ श्रेष्ठविप्रपठंविद्या शुभदानोफलप्रदा पुत्रप्राप्तनसन्देहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्णका पत्र ८ माशे प्रमाण बनवावे ब्राह्मणके पुत्रोंकी मूर्ति रक्त चन्दनसे लिखे तिस को तांबेक
कलशमें घृत भर कर गुप्त प्रवेश करे संकल्प करके श्रेष्ठब्राह्मण कर्मेष्टिकोकोदे गायत्री मन्त्र जपवावेतो पुत्रोंकी प्राप्तिहो शाप नष्टहो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ अस्यखेटानुसारेण नरोजन्म भुवितले बालवृद्धि भवेल्लोक आदिक्रीडा यथाक्रमम् ॥ कालानुसारविद्याच
मन्त्रौषधीचकारयेत् तीक्ष्णबुद्धिरिपोर्हंता मध्यभागीसुखान्वितः ॥ प्रलापीशीलवानज्ञेयो विवलश्चकलिप्रियः सुन्दरश्चपलोबाल यस्य
जन्मश्चमोदिना ॥ राजद्वाराधनप्राप्ति विद्याभूषणभूषितः रूपवान्गुणसंपन्नो मासेवे सुखंगताः ॥ सवलंदीर्घदेहश्च तमोगुणविशेषतः
प्रतापीसुखदःमवे हेमरत्नोर्विभूषितः ॥ सकामश्चपलोबाल सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्ता रिपुद्रोही गुप्तचिंतान्वितोभवेत् ॥
स०उ० वाहनादिसुखंजाते नश्यतेरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्च बुद्धिश्रेष्ठपुनिर्मलः ॥ श्रेष्ठग्रहोपिजन्मश्च सिंहतुल्यपराक्रमः बहुभृत्य
२०५ समायुक्तो सुकार्यकुशलंलभेत ॥ मातृपितृगुरुभक्त मुपवद्राजतेनर द्विजदेवार्चनेप्रीति रिपोपिदासवच्चरेत ॥ भोगमैश्वर्यसंयुक्त
कीर्तिविख्यातभूतले ॥ धनपूर्णो तृषायुक्त सुशीलश्चतुरोधर्मा बहुपीडा मनोद्वेग बंधुवर्गेच क्लेशता ॥ चन्द्रमित्र महाप्रीतिः
आशक्तोतिमोहितम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जन्म पत्री में जो ग्रह विराजमान हैं तिनका फल कहता हूँ सोतू
चित से सुन यह जीव विद्यावान् चतुर मंत्र औषधी भी करता रहै तीक्ष्णबुद्धि हो शत्रुओं को जीते मध्य भागी सुखी हो शीलवान्
भोला अल छल न जाने राजद्वार से भी प्राप्तिहो रूपवान् गुणवान् हो अच्छे वस्त्र आभूषण भी जावें चञ्चल काम देव के जोर
में उन्मत्त हो जाया करे मीठा बोलने वाला श्रेष्ठकुल एक मित्र से प्रात गुप्त हो मगन रहे सूरवीर पराक्रमी बहुत से कारबार करे
धन पैदा करे बड़े २ उद्योग करतारहै कष्ट बीमारीहो परन्तु आयु पूर्ण हो एक जीवका दुख देखे स्त्रीकोपुत्रकी चिंता क्लेश बनारहै
प्रथमतो होने कठिन जो होयतो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सब सुख प्रथ्वा पर देखे परन्तु पुत्रों का सुख खण्डित है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुकोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रयोगश्चखंडितः पूर्वजन्मकथंतातः कथ्यतेविधिपूर्वकम् ॥ भाषा ॥ शुक देवताने पार्थना
करी है पिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म किए हैं जो पुत्रोंका योग खंडित आनके पड़ा सो विधि पूर्वक कहो
भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्नो राजमंत्रीमहाधनी ॥ लोकश्चषेनुविख्यातो अतिसूरोसुखीनरः
चापबाण कृतेधारणा गवनखेटानुसारेण ॥ मृगबाण बधोक्षत्री साधुपुत्रश्चमृत्युदा मृतकपुत्र दृश्यंतात हाहाकार विह्वलं ॥
साधुशापमुखदत्वा त्रियजन्मपुतहीनकं ॥ भाषा ॥ भृगुजो ने कहा हेशुक यह जीव क्षत्री कुलमें एक जन्म में जन्मा था सो बड़ा बुद्धि
मान् धनवान् राजमंत्रीथा सो शिकार खेलने गया इसने जगल में जाकर दूर से देखा तो मृग दृष्टी में पड़ा सो इसने तीर मारा
हिरन तो बच गया एक साधु दो बालकों को साथ लिये जाता था सो क्षत्री के बाण से दोनों साधु के शिष्य मृत्यु को प्राप्त
हुये तब पश्चात् साधुने मृतक बालक देख बड़ा दुख माना और क्षत्री को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों
का दुख देखेगा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं साधुशापविनिर्मुक्तो पुत्रजीवीनसंशय ॥ भाषा ॥ शुक जी
ने कहा कौनसे दान मंत्र जाप करनेसे पूर्व जन्मका दिया हुवा साधुका शाप नष्टहो और पुत्रों की प्राप्तिहो तब भृगुजी ने कहा ॥
भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाचैव युग्ममुद्राप्रमाणकं रक्तचन्दनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानक ॥ वस्त्रआभूषणंदानंयुग्मबालश्च
मूर्तये संकल्पश्चददेत्विप्र पुज्यंतोविधिपूर्वक ॥ इददानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिर्नसंशय ॥ भाषा ॥ हेपुत्रस्वर्णके पत्रपर दो मूर्ति साधुके
बचोंकी लिखे और स्वर्णका पत्र दो मुद्राभर प्रमाणसे हो वह वस्त्र आभूषण सहित दानकरे तो निश्चय करके पुत्रोंके सुखदेखे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः ॥ पुत्रस्थितग्रहाएते भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यकरोबालः भृगुणापरिभाषितः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति आनंदभूमि
मंडले विचित्रोवार्तयाकथ्यं कामक्रीडाकिलोलकृत ॥ भ्रातभग्नीचउत्पन्न अंतदंधुविरोधता भूमिलाभनसंदेहो गुप्तचिंताशरीरजा ॥
मित्रपक्षेपरंप्रीति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रअल्पविजानीयात् नवीनोजन्मप्राप्तये ॥ आदौपठश्चविद्यायाः अंतविद्याविसार्जनं
बहुविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ द्विभार्यायोप्राप्नोति गुप्तप्रीतिनसंशयः उपद्रवीअकस्माश्च भयचिंताविशेषतः ॥
१०२७० संतोषीधैर्यधारीच ज्ञानवांश्चसुखीनरः कस्मिन्कालभोकाठ्य प्राणंभयतिचिंतया ॥ जलोपशुभयपुत्र भृगुवाक्यंनचान्यथा
२०७ दीर्घकष्टंविजानीयात् औषधीमंत्रशांतये ॥ छत्रचिंताभविष्यंति धनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतचपराजयः ॥
नवीनोवार्तयाचित्त अर्धप्राप्तिचदृश्यते सर्वसुक्खश्चदृश्यते पुत्रसुखंविनश्यति ॥ अतिक्लेशमहाचिंता पत्नीकष्टविशेषतः ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव भाग्यवान् सुन्दर पिता की सम्मति वाला गुणवान् शीलवान् पृथ्वी पर आनंद देखे तरह २ की बात ध्यान से सोचे मित्रों से प्रीत, और भाई बहन भी हो परन्तु पीछे अभाव शत्रुतासी हो जाय भूमि से लाभ हो गुप्त चिंता बनी रहै एक जीव से विशेष ध्यान रहै चित्त दुख माने एक समय नया जन्म हो प्राण बचे दूसरा स्त्री से भी प्यार हो विद्या बहुत पूर्ण तो नहो परन्तु कार्य मात्र बहुत हो संतोषी धीरज धारण करने वाला ऋण का जोग होय खर्च विशेष छत्र की चिंता बड़ेकी मृत्यु हो शत्रुओं से ववाद होजाया करे शरार में पीड़ा हो जाया करे पितृ पीड़ा का उपाय करता रहै पुत्र के वास्ते स्त्री यत्न करे परन्तु पूर्व पाप के कारण पुत्र का सुख देखना बहुत कठिन है भटकता रहै ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन संततंवंशविनाशकः पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ शुक्र जी बोले हेपिता इस
जीव ने पहले जन्म में कौन से पाप किए जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटकता रहै ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं
पूर्वंपापञ्चकथ्यते वैश्यवंशकुलेजन्म रसत्यागीचवाणियो त्रियसर्पगृहवासं तातपुत्रोतिनागकं ॥ गृहदेवक्कुरुरक्षा वैश्यलक्ष्महारकं
नागपुत्रद्धयंमृत्यु अतिक्रोधोउपद्रवं ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र तूसुन मैं इस
ब०उ० जीव की एक पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ यह वैश्यकुल रसत्योगी बणिया था सो इसके घर में ३ सर्प पिता पुत्र रहते थे सो
२०८ बणिया बहुत साहुकार था देवता के नाम के दूध पेड़े वस्त्र पहरात था फिर एक दिन दो सर्प के बच्चे वहीं इसके रसोई के
चौके में फिरते थे इसने किसी की सम्मति से दोनों को लट्ठों से मार दिया तब सर्प ने दोना बच्चे मरे देख वैश्य को
शाप दिया कि तुम भी सात जन्म तक पुत्रों के त्रास भुगतोगे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं स्वपूजाच किंमंत्रकिंजापकं
सर्पशापविनश्यंति वैश्यपुत्रसुखंलभेत ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजीने कहा हेपिता कौनसे दान पुण्य यत्न करने से इस जीवका पूर्व
शाप दिया हुवा नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्य पतिमाचैव तृयमुद्रा प्रमाणकं
तन्मध्येकामबीजञ्च रक्तचन्दनमुलिखेत ॥ वस्त्रआभूषणंदानं षटरसअन्नकंददेत संकल्पंददेत्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं ॥
सर्पशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखंभविष्यति ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका पत्र तीन मुद्राभर प्रमाणका बनवावे लाल
चन्दन से दो सर्प का मूर्ति विधिपूर्वक लिखे वस्त्र आभूषण षटरस अन्न दान करे तो शाप नष्ट हो और पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रेग्रहाःस्थिताएवं दीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहो चित्तोदारश्चपुत्रवान् ॥ यशस्वीगुणवान्जीवो
सत्कीर्तिसुतनष्टकं अल्पविद्याचप्राप्नोति बुद्धिवांश्चविशेषतः ॥ गुप्तचिंताचप्राप्नोति चतुरोवामश्रेष्ठया भाग्यवान्गुणसंपन्नो पत्नीप्रीतो
भविष्यति ॥ अकस्मातउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः प्रमेहव्याधिकंदेहं शीघ्रोवीर्यस्यखंडकः ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधिप्रतिशांतये
पितृपीडाग्रहेनित्यं मातदेवश्चपूजनं ॥ वंशवृद्धिनदृश्यंते गर्भअल्पश्चखंडतः वंध्यायोगश्चप्राप्नोति सुतचिंताति व्याकुलः ॥
स०उ० बहुयत्नश्चकर्तव्यम् पुत्रसुखंनदृश्यंते महन्प्राप्तिमहोत्साहो लाभप्रीति दिनेदिने ॥ ग्रहकष्टशरीरेच रेचनव्याधिरक्तय
२०६ कस्मिन्कालेमहल्लाभं भाग्यवृद्धिनसंशयः ॥ उच्चपदवीचप्राप्नोति समृद्धोधेनुलोकमा व्रणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यदृश्यः ॥
मासेवर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा शाणार्थंनपुत्रंतात पूर्वपापमहानकं ॥ सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति सुतसुखस्वप्नदृश्यः ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज शुक्रदेवता से कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी कथा वर्णन करते हैं सो सुनो यह जीव भाग्यवान् होय चित्त
उदार हो सन्तान से रहित होय कीर्तिवान् हो गुणवान् हो और विद्यावान् भी हो परन्तु विद्या से बुद्धि विशेष हो गुप्त चिंता
किसी समय में हो जाया करे इसकी स्त्री भाग्यवान् चतुर श्रेष्ठ कुल की हो प्रीति करने वाली शुद्ध चित्तहो एक समय अति
विघ्न हो उसमें कुछ हानहो और किसी काल में शरीरके बीच में प्रमेह व्याधि हो शीघ्र वीर्य खंडतहो उपाय करने से औषधियों
से आराम हो जाय घर में पितृ पीड़ा हो माता सीतला देवताओं के निमित्त सब कुछ करे परन्तु पुत्र का सुख नहो वा होके
दुख देजावे बंध्या योग गर्भ खंडत उत्पन्न होके जाता रहै कई प्रकार की बंध्या हो हैं और आगे को सारी उमर लाभ प्राप्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अच्छी हो परन्तु पुत्र का सुख स्वप्न में भी न हो हे पुत्र इस जीव ने पूर्व जन्म में दीर्घ पाप करे हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्म
विपाकेन पूर्वजन्मनिकथ्यते पुत्रक्लेशंभविष्यंति श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव ने कौन से खोटे कर्म प्रथम जन्म
में करे हैं जो पुत्रों से क्लेशित रहै और वंश न चले सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रुणुपुत्रतिध्यानक शूद्रवंशकुलेजन्म
मीनकरोतिकृत्यया ॥ जलजीववधोनित्यं मच्छकृत्यंधनंलभेत तिहिपापफलंप्राप्ति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में
न०व० यह जीव शूद्र वंश में उत्पन्न हुवा और मछली जलचर जीवों को जाल में फांसकर लाता नगर में बेचता था सो लक्षों जीव
२१० का विध्वंस किया और बहुत सा धन प्राप्त किया परन्तु भूखों को अन्न बहुत बांटता था तिस कारण अच्छे कुल में उत्पन्न होकर
पुत्रों का दुख देखे । शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजात्र किंमंत्रंकिंजापकं पूर्णपापप्रणश्यंति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन
से दान पुण्य मंत्र जाप से ऐसे महापाप की शांति हो और पुत्र होकर जीवें जो वंश की वृद्धिहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ रामनाम
लिपिकृत्वा विप्रलेखधनंददेत् बहुअन्नक्षसंग्राही गोधूमश्चचूर्णकं चंद्रलक्षप्रमाणेन गुटिकारामअंकितः हरिद्वारोकुशावर्ते अथवा
तीर्थतालकं रामांकितंददेत्ग्रासं मीनदीर्घंचभोजनं स्वर्णंचदक्षिणाविप्रो बहुमिष्टान्नभोजनं दीपदानकुरुजीव पुत्रसुखंभविष्यति ॥
॥ भाषा ॥ तब भृगुजी महाराज ने कहा हे पुत्र बहुत सा अन्न गेहूं लाकर पिसवावे और एक लक्ष प्रमाण रामनाम की गोली
बनवाकर हरिद्वार या कुशावर्त या तीर्थ तालाब पर जहां कहीं बहुत सी मच्छी हों तहां रामनाम उच्चारण हर गोलीके साथ कहता
जाय जल में प्रवेश करता जाय और ब्राह्मणों को जिमाया करे कुछ दक्षिणा स्वर्ण की देतो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजाता सुकुलंमानवर्द्धनं जन्मतोमातृबाधाया मासेमासेसुखगत ॥ दंतव्याधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षयथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमं वृणव्याधीमहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये ॥ भ्रातयोगश्चप्राप्नोति भृगुणापरिभाषितः अष्टमद्वादशेवर्षे षोडशाब्देर्चाविनाशकः तातंधनंशुभंकार्यं विवाहादिचमंगलं विद्यायोगश्चप्राप्नोति पत्नीप्रीतिःचप्राप्तये ॥ चद्रमित्र महाप्रीति आनंदम्भूमंडले तातलाभव्ययदीर्घं गुप्तचिताभविष्यति ॥ अल्पगर्भमहाकष्टं पुत्रसुखविनष्यति कार्यकृत्यनसंदेहो

सउ० लाभंभवतिनान्यथा चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा नवीनोक्तकृतेजीव उच्चपदवीचप्राप्तये अतितेजप्रतिष्ठोवा भाग्यवृद्धिदिनेदिने

२११ देहकष्टभयंघोरं औषधिमंत्रशांतये ॥ वामक्लेशर्भविष्यंति वशवृद्धिनदृश्यते आयुपूर्णश्चदृश्यंते शून्यसप्ताब्दिकेतथा सर्वकार्यश्चसिद्धंति भूमिर्लाभभविष्यति गुप्तश्चधनंप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखप्राप्ति आनन्दम्भूमिमंडले पूर्वपापञ्चप्रापार्थ अग्रवंशनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस जीव की पत्री का फल कहता हूँ सुनो अच्छे कुल में जन्मे माता को कुछ कष्ट दांतों की पीड़ा दस्त रेचन व्रण व्याधी यत्न से शांति बहन भाई का योग सात वर्ष से अथवा आठ वर्ष से १२ १६ २० वर्ष तक शुभ कामों में पिताका धन खर्च, विद्या का योग, पत्नोंकी प्राप्ति दूसरा स्त्री भी प्रीत रक्खे एक मित्र ऐसा हो चित्त एक शरीर दो पिता को लाभ खर्च विशेष हो अल्प गर्भ संतान योग खंडत इस जीव को और स्त्रीको संतान का खयाल बहुत बनारहे यत्नभी बहुतसे करे लाभ आमदनी अच्छीहो २१ ३० वर्ष तक नया कृत्य करे ऊंची पदवीपावे बड़ाई पावे तेज प्रतापी हो इज्जत प्रतिष्ठा बढ़े एक कष्ट बहुत भारी हो मंत्र औषधी से आराम हो प्रथ्वी से लाभ गुप्त धनका लाभ आयुपूर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्तरसे अधिक हो हेशुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पूर्व पाप के अर्थ पुत्रों को भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनस्यति पूर्वगाथाकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारणं ठाकुरवंशकुलेजन्म राजयोगञ्चप्राप्तये ॥ अश्वपतिराजग्रामीच बहुसेवीनरोभवेत् परस्त्रीमहाप्रीति कुमार्गीदुष्टपापिनी ॥ द्विजपुत्रप्रथमप्रीति त्याज्यंराज वामकम् श पक्षप्रतिराजन् असत्यवाणिभाषणं ॥ कारागारद्विजपुत्र विषराज्यञ्चमृत्युदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविहिनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र एक जन्ममें यह ठाकुरवंशमें राजाथा पर स्त्रीगामी एकस्त्री ब्राह्मणके पुत्रकी बहुत सुन्दरथी तिसको लोभदेकर छीनली और स्त्री के असत्य बचन सुनकर ब्राह्मण पुत्रको कारागार भेजदिया और उसे विष दिवाकर मरवादिया तिस पापके कारण पुत्र का सुख नहीं हुवा ब्राह्मणका शाप लगा हुवाहै कि अगले जन्ममें तूभी पुत्रों के दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमापत्र पञ्चटंकप्रमाणकं अथवा अर्धस्वर्णञ्च लिख्यतेविधिपूर्वक रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकम् ताम्रकलशघृतंमध्य गुप्तमूर्तिप्रवेशण संकल्पंददेद्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्ष प्रमाणकं ॥ श्रेष्ठविप्र ददेद्दानं विद्यापाठ नपानं इदंदान कृतेसंत पुत्रप्राप्ति च जीवनं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र स्वर्ण का पत्र पांच टंक अथवा इससे आधा प्रमाण से बनवावे तिस पर चंदन से ब्राह्मण के पु की मूर्ति लिखे और एक कलश में घृत भरकर गुप्त मूर्ति प्रवेश कर विधि पूर्वक दान करे उत्तम ब्राह्मण विद्यावान् कुटुम्बी कोदे और गायत्री मंत्र जाप करावे और ५१ सहस्र संतान गोपाल का मंत्र जपवावे तो पूर्व का दिया हुवा शाप नष्टहो और पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः कस्मिनकालगतेशुक्र बहुऐश्वर्यप्राप्तये ॥ दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवो नरोभवेत प्रथमआयुधनंन्यूनं पश्चातेसुखसंपदा ॥ बालआयुगतेकाव्य आनन्दभूमिमण्डले तातकष्टविजानीयात् भृगुणापरि भाषितः ॥ सत्यवादीप्रवक्ताच परकार्यकरःसदा अतिज्ञानीमहाशूरो संतोषीवृतिधारणम् ॥ आज्ञाकारीसुतभृत्य नृपाद्भयसमन्वितः दुष्टकर्मेणपीड्यन्ते पूर्वपापश्चदुखिता ॥ अल्पायुदृश्यतेलोके सुकर्मेसुखसंभवः बंधुवर्गापवादीत्र शत्रुवःतप्यतेसदा ॥
स०उ० अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगतेनित्यं सुकीर्तिच पिभूतन नन न सौख्यलभेजीव भजनानदसर्वदा पितुद्रव्य
२१३ विनाशश्च सुयत्नेनविवर्द्धनम् ॥ कस्मिन्कालगतशुक्र अकस्मात्अतिचिंतया व्ययदीघवनदान गुप्तचिंताशरीरकं ॥ मित्रप्रीति महालोके आशक्तचितमाहित पत्नीकष्टभयघोरं सुतदुक्खश्चप्राप्तये ॥ रात्रिदिनमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनं दीघपापप्रभावेण अश्ववशविनाशकं ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रस्तुनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं जिस जीव की पत्री में ऐसा योग पड़े सो जीव भाग्यवान् और बड़ा ऐश्वर्य प्राप्त कर और दयावान् भोक्ता पुरुष हो प्रथम तो थोड़ा ऐश्वर्य हो फिर विशेष बढ़ जाय बाल आयु आनन्द में बाचे पिता को कष्ट हो औषधी से आराम हो जाय सत्यवादी पराये कार्य मन से करै अतिज्ञानी शूरवीर हो संतोषी वृति धारण करे दुष्टकर्म से पीड़ा हो पूर्व करनी के कारण थोड़ी आयु में सुकर्म करे परन्तु कुल बन्धुओं से शत्रुता विवाद रहै दुश्मन सदाजलते रहें पाप ग्रहों की शांति कराता रहै श्रेष्ठ फल हो आनन्द भोगे भजन आनन्द करे पिता का धन जाय परन्तु कुछ सुकर्म बने किसी समय में अतिचिंता हो खर्च हो मित्र से बहुत प्रीति चित्त उस तरफ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष रहै पत्नी को सन्तान का कष्ट रहै पित पोड़ा हो सारे सुख दुख देखे परन्तु पुत्र का सुख प्राप्त होना कठिन है
शुकोवाच ॥ किंपापपूर्वजन्मश्च वंध्यापुत्रविहीनक जीवसर्वगाथायां कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने पूर्व किसी
जन्म में क्या पाप करे हैं जो वंशकी वृद्धि बंद होगई सो पूर्व कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथांसर्व पूर्वपापश्चकारणः
कायस्थश्चकुलेजन्म चित्रगुप्तोतिवंशक ॥ यवनविद्याभविष्यंति धनधान्योभविष्यति राजद्वारमहल्लाभं उच्चपदवीचप्राप्तये ॥
स०उ० बहुपक्षोवधनश्च दयाहीनश्चदुष्टयः ततरोचित्रकंपक्षी बृक्षोजीवभक्षणम् ॥ उपवनगवनंजीव दीमकोजीवभक्षणम् इदंपापप्रभावेण
२१४ पुत्रसुखविनष्यति भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव प्रथम एक जन्म में कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा सो चित्र गुप्त वंशी था सो बड़ा
चतुर विद्यावान था बहुत सा धन राजदरबार से पैदा किया पुण्य भी करता था परन्तु तीतर नाम और बहुत से पक्षी थे
तिन को अपने साथ बागको ले जाता था और वृक्षों में दीमक नाम जन्तु होते हैं तिन को खुलाया करता था इस पाप के
प्रभाव से सन्तान कष्टी रहा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकं पूर्वपापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥
भाषा ॥ हेपिता कौन से उपाय करने से यह जीव पुत्रों के सुख देखे सो दान मन्त्र पूजा जाप कहो ॥ भृगुवाच ॥ मन्त्रसन्तान
गोपाल चंद्रलक्षप्रमाणकं अन्नमिष्टान्नकंभोजन यज्ञदानकरस्तथा ॥ पक्षीअन्नददेज्जीव मूर्गानित्यभोजनम् इदंदानकृतेसंत
पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पिछले पाप की निवृत्ति के अर्थ यज्ञ करे दान करे अच्छी सामग्री बनवावे
ब्राह्मणों को तृप्त करे और पक्षियों को अन्न डाला करे और चांटीनाल नेम करके देतो निश्चय करके पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलप्रोक्ता मगानव: त्रिग्रहाफलदंश्रेष्ठं नानालाभसमागमः । भूमिमन्द्रश्चप्राप्नोति कीर्तिवृद्धो धरातले क्रूरपापग्रहापूजा दानंचैवप्रयत्नतः ॥ जोचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अयत्नेनैवभोकाव्य बुद्धिनःसुस्थिरभवः ॥ उद्योगोकुरुतेदीर्घ लाभचितात्रलीयसी प्रमेहोपीडिनंगुप्त मित्रशत्रुवदाचरेत् ॥ प्रीतिकृत्वाकृतेघातं सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्ता सुखीलोके असत्यवचनंत्रजेत ॥ सुकीर्तिप्राप्तेलोके उद्यमेपोष्यतेकुलः परोपकारकरताच बुद्धिवंतोसुलक्षण ॥ ईशभक्तिसुसंचित्य

स०उ० सुस्थिरंनविपर्जन कामीकुतुहलीचैव कुटंबेप्रीतिवत्सलः ॥ पूर्वमायुसुखीजीव मध्येचसुखमध्यमं अत्यपापकुरुतेति कान्ताद्वौगुरु

२१५ वत्सलः ॥ सुयत्नेसर्वथासौख्यं नात्रकार्यविचारणा कामवेगेनचोन्मत्तो चिनचैवोपिविभ्रमः बुद्धिवन्तोयशीसौख्यी नकश्चि न्निदतोमति जीवंध्यानश्चसंमग्नः यौवनंरूपचिंतनं ॥ श्रेष्ठकर्मरतोचापी बहुबाधाचशांतये सर्वसुखश्चप्राप्नोति गुप्तचिंतादवामक ॥ पुत्रकांक्षानसंदेहो भृगुवाक्यनचान्यथा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस पत्र में तीन ग्रह बहुत उत्तम पड़े हैं अनेक प्रकार के लाभ हों भूमि मंद्र कीर्ति पृथ्वी बढ़े क्रूर पाप ग्रहों का पूजा दान यत्न करना श्रेष्ठ है इतने न्यून ग्रहों का दान मन्त्र जाप न हो चिंता बुद्धि भ्रम लाभ मध्यम उद्योग बहुत करे फायदा मर्जी माफिक न हो गुप्त प्रमेह की पीड़ा मित्र से शत्रुता प्रीत के बदले हानि पहुंचावे यह जीव सत्य को पसन्द करे झूठ से बचे कीर्ति बढ़े पराये उपकार करने वाला बुद्धिमान सुलक्षण देवता में कुछ भक्ति अल्पस्थिर न हो कामदेव की उन्मत्तता, मित्रों से प्रीति, पूर्व आयु सुख, मध्यम आयु मध्यम सुख दो स्त्री से प्यार सुकर्म से सदा सुख मिले एक जीव के ध्यान में मग्न रहै हेशुक्र सम्पूर्ण काम हों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु मुख्य सुख पुत्रका है सो तिसकी भटकना बनीहै ग्राम देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ केन पापप्रभावेण पुत्रस्वप्ननदृश्यते पूर्वगाथा कथातात श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव की पिछले जन्मों की कथा कहो ऐसे कौन से पाप दीर्घ करे हैं जो स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मस्यगाथायो श्रुणुपुत्रतिध्यानकं शूद्रवंशकुलेजन्म दीर्घअघकुरुतथा ॥ पापकर्मधनंप्राप्ति उच्चपदवीचप्राप्तये लोकेलक्षपतिख्यातो मानकीर्तिभविष्यति ॥ कमट्ठाचमृतिकाखंड हस्थनित्यस्यधारणा बहुपक्षिविनोजीव बारम्बार
सं०उ० भक्षणं ॥ विध्वंसचग्रहंपक्षी बच्चोभोजनंतथा दीर्घपापप्रभावेण पुत्रसुखविहीनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र इस जीव की पूर्व जन्म की कथा
२१६ कहता हूँ सो तुम ध्यान से सुनों पूर्व एक जन्म में यह जीव शूद्र वंशमें उत्पन्न हुवा था सो बड़ा धनवान् था इज्जत प्रतिष्ठा वाला था परन्तु गुलों से जीव मारने का बहुत अभ्यास था कमट्ठा हाथ में लेकर बीसियों जीव पक्षी मार लाता था और उनके घौंसले तोड़ कर निकाल लाता था तिस पाप के प्रभाव से पुत्रों के सुख से हीन रहै क्यों कि पक्षियों का शाप लगा हुवा है शुक्रोवाच ! कियत्नश्चकरतव्यं पक्षीशापविनाशनं पुत्रप्राप्तिचदृश्ते वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे यत्नकरनेसे पक्षियों का दिया हुवा शाप नाशकोप्राप्तहो और इसजीवको पुत्रोंका सुखमिले ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापक ब्राह्मणं भोजनंदानं कुर्वंतिविधिपूर्वकं पक्षीभोजनंअन्नम् नित्यप्रतिनित्यनेमकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षश्चजापकं अनुष्ठानकृतेसन्त पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र एक लक्ष प्रमाण गायत्री और अर्ध लक्ष मन्त्र सन्तान गोपाल जपवावे और ब्राह्मणों को स्वर्ण दक्षिणा दे और पक्षियों को नित्य प्रति रोज अन्न डाल कर जिमावे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेसमुत्पन्न युवाश्रेष्ठफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीच प्राप्यतेधननिश्चितं ॥ कदापिसमयेवत्स स्वकुटम्ब
विरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते ॥ स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभदृश्यते मध्यविद्यान्वितोपुन्स बुद्धिवंतो
विशेषतः ॥ अतितेजप्रतिष्ठोवा सुजनोमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातिलोकस्मिन् ईशस्यचिंतनंकृतः ॥ पत्नीश्रेष्ठकुलोप्राप्ति पुत्रचिंता
महानकं नेकयत्नकृतेपुत्र सुखस्वप्नेनदृश्यत ॥ दीर्घकष्टविजानीयात नवीनोजन्मप्राप्तये: दोयतेसुमतिसर्वं दुष्टकर्मविसार्जिता ॥
८०३० सुमित्रोभाषणोप्रीति चिन्तोदारनसंशयः हीनवार्त्तानकर्तव्या गुप्तचिंताचव्याप्तये ॥ सुकीर्तिचिंतयेंनित्य सुकीर्तिचप्रधानकं
२३७ व्ययोदायसमायात सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ भ्रातृभग्नाचउत्पन्न अल्पसुखचलोकमा कस्मिन्कालेमहत्प्राप्ति धनधान्यसमागमः ॥
युग्मजीवमहान्प्रीति सुन्द्रमूर्तिसुलक्षणं पूर्वजन्मकृपापार्थं वामचिंतामहानकं ॥ पुत्रसुखनदृश्यंते प्रथ्वीजन्मअकारणम् ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक इस जीवकी पत्रीका फल सुख दुख आदि वर्णन करते हैं सो तुम सुनो युवा अवस्था में वहुतसे
काम करे और बड़े २ मनुष्यों से काम पड़े धन प्राप्त करे विद्यावान् हो किसी समय में कुटंब घर में विरोधसा हो धन खर्च हो
शत्रु नुकसान पहुंचाना चाहे परन्तु श्रेष्ठ दशा में थोड़े परिश्रम से अकस्मात् लाभ खुशी हो विद्या से बुद्धि विशेष इज्जत प्रतिष्ठा
वाला अच्छी शिक्षा देने वाला ईश्वर की तरफ ध्यान रखने वाला स्त्री श्रेष्ठ कुल की पुत्र को चिंता रहै यत्न भी करे परन्तु
पूर्व जन्मों के पाप के अर्थ पुत्रों से रहित रहै शरीर पे पीड़ा कष्ट भारी आवे सो नया जन्म हो नई २ वार्ता का विचार करे
बड़े बड़े स के काम आवें सो पूर्ण उतरें भाईयों से थोड़ा सुखहो जीवोंसे प्रीत लगी रहे हेशुक जो दुनियां के सुख हैं सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्त हों परन्तु पुत्रों के सुख को यह जीव और इसकी स्त्री भटकते रहैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण: वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथाकथ्यं उच्चारणविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने कौन से पाप पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इस की स्त्री पुत्रों को भटके हैं सो विधि पूर्वक वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वजन्मनिकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न धनधान्यभविष्यति ॥ लोकंलक्षपतिस्यातो बहुसेवीनरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच भूमिलाभश्चदीर्घयो ॥ निजस्थानवसत्तिविप्र गृहभूमिउपाधकं लष्टमुष्टप्रहारेण द्विजस्थानभस्मकम् ॥ युग्मपुत्रत्रयंकन्या ग्रहमध्योतमृत्युदा तेनपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पहले एक जन्म में क्षत्री वश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा भाग्यवान् लक्षाधीश हाथी घोड़े ग्राम थे इसकी जमीन में एक ब्राह्मण कुटंब सहित रहता था सो उससे किराए भाड़े के ऊपर बहुत विवाद हुवा यहां तक की उसको बहुत पिटवाया और उसके घर में आग देदी सो उसके दो छोटे पुत्र और तीन कन्या जल कर भस्म हो गईं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंयत्नदान मंत्रस्य किंविधानेतिजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हेपिता क्या यत्न करे और कौन से दान मन्त्र जाप करवावे जो पूर्व जन्म के शापसे छूटे और पुत्रों के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे और पुत्र जीवें सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्थानदानकुरुजीव गायत्रीमन्त्रजापकं स्वर्णस्यप्रतिमापत्रं द्विजसुतमूर्तिलिख्यते ॥ सर्वदानविधानेच संकल्पंब्राह्मणददेत् द्विजदंतुष्टकर्तव्यं पूर्वश्रापविनाशनं ॥ पत्रसुखंनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेपत्र यह जीव दान करे गायत्रीमन्त्र जपवावे स्वर्ण पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र कन्याओं की मूर्ति लिखे ब्राह्मण को दे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदानरः वृद्धत्वंफलमादाय आनन्दभूमिमण्डले ॥ बहुकृत्याधिकारीच सर्वेशां
शुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीति नूतनंवार्तयाचितः ॥ सुन्दरप्रबलोधीरः प्रतापोशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छं पूजनात्सुखवर्द्धनं ॥
अतिप्रेमीसुकीर्तिच भृगुणापरिभाषितः पञ्चमेशंसुसंपूज्य वंशवृद्धिशुभप्रदा ॥ गोविप्ररक्षकोधीमान् सत्यवादीविचक्षणः कालानुकूल
विद्याच पर्यटनंप्रियसदा ॥ चंद्रअल्पमहाकष्टं प्राणभीतिभचिंतनम् श्रेष्ठकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णासुखीनरः ॥ गुप्तलाभविशेषेण
न०उ० अकस्माज्जायतेकदा भूमिलाभविशेषेण रचनामन्दनूतनं ॥ धनेच्छापूजितोवत्स अनुष्ठानंसुयत्नतः राजद्वाराधनंप्राप्य निजकृत्य
२१६ फलप्रदः ॥ पिताधिक्यप्रकोपीच कामाधिक्यबलान्वितः सुशीलभपलोपुन्स रिपुणांकष्टदायकः ॥ निष्ठुरंवचनंवक्ता कुमतिश्च
उदारधी सर्वसंपत्समायुक्तो अंगनाप्रीतिकारकः ॥ जन्मादवश्रुतपुन्स गीतनादपरंप्रियः व्रणपीड़ासमुत्पन्नो निजांगेनात्रसंशयः ॥
सर्वकार्याणिसिध्यंति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र जिसकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं सो पैदा
होकर अनेक प्रकार क पृथ्वी पर आनन्द देखे बहुत से काम बढें और उसके शुभचिंतक बहुत हों नवीन विचित्र बातों में
मन रहै एक जीव में चित्त बहुत रहा करे यह जीव सूरवीर प्रतापी धीर बंधाने वाला दूसरे की बात को तोले गुरु भौम
केतु का पूजन श्रेष्ठ है भृगुजी कहते हैं पञ्चमेश की पुजा दान से बंस की वृद्धि हो पूर्व जन्म के पाप के कारण पुत्रों से रहित
रहै दुख देखे स्त्री क्लेश माने और यह जीव विद्यावान् हो भ्रमण करने को चित्त चाहा करे एक समय अचानक में एक बार
कष्ट भय हो अल्प भोग कर आयु पुरी हो राजद्वार से भारी खुशी रहै भूमि से धन प्राप्त हो शत्रुओ से विवाद हो सर्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्पत हों परन्तु पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीवकी प्रथम जन्म की कथा कहो ऐसे कौन से पाप इस जीवने किये ये जो यह पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणोपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणः यवनवंशकुलेजन्म आनन्दभूमिमण्डले ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो अतितेजोप्रतिष्ठया बहुजीववधंकृत्वा निजभक्षोपिकारणं ॥ आपवापांकुरुधारण गवनखेटानुसारेण तिहिपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनश्यति ॥ भाषा ॥ हे पुत्र इस जीव से प्रथम जन्म में बहुत पाप बने हैं प्रथम जन्म में यह जीव यवन जाति में उत्पन्न हुवा था नित्य प्रति शिकार खेलने जाता था और अनेक जीव मारकर लाता था और तिन्हें भक्षण करता था इन कारण पूर्व जन्म का सात जन्म को शाप लगा हुवा है तिस कारण सन्तान का सुख कठिन है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजा च किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से पूर्व जन्म का शाप नष्ट हो जो पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या सप्तटंकप्रमाणकं विष्णुधेनुलिखेन्मूर्ति शुद्धचित्तंचशांतये रक्तचन्दन मिश्राणि गंगाजलस्नानकं संकल्पंददेत्विप्र पूर्वपापस्यशांतये ॥ चन्द्रलक्ष प्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं ॥ भाषा ॥ हे पुत्र सप्तटंक प्रमाण से स्वर्ण का पत्र बनवावे तिस पर विष्णु भगवान की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और गंगाजल से स्नान करावे तिसके आगे एक लक्ष गायत्री मंत्र जाप करावे और (मुंह से यह मन्त्र कहता जाय) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णु भगवान मम कार्य सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॥ फिर वह मूर्ति ब्राह्मण को संकल्प करके दे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ श्री ...ग्रहाकाव्य दीर्घधान्योप्रतिष्ठतः पुत्रदारादिसंचिंत्य ...परिभाषितः ॥ मान...विशेषेण सुप्रसिद्ध सुखीन्नरः रूप...संपन्नो सुमित्रश्चारुभाषितः ॥ नानामंगलकार्यं जायतचमहोत्सवम मध्यसौख्याधिकारीच विलासीमति मान्नरः ॥ गुप्तशोकविशेषेण अकस्मात्भयमागमः दीर्घद्रव्यव्ययोचापि चिंतयतिदिनेदिने ॥ जलपशु...शुक तनकष्टप्रपाथयः शत्रुपक्षविरोधश्च कुलबधुविप्रीतये ॥ चिंतयेदीर्घकार्याणि अतसौख्यसमायुतः द्वयोकष्टविशेषेण चद्रच्रत्पमहाभयं ॥ सुयत्नं

८०७० रक्षितोप्राण नूतनजन्ममन्यते ॥ दीर्घायुचततोलोके उद्यमेणधनस्थितः असत्योदोषकंप्राप्त शत्रुपक्षविरोधता ॥ व्ययदीर्घ

२२१ सुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः अल्पजीवीचबालोयं अथवागर्भखंडतः ॥ पत्नीकष्टविशेषेण पुत्रचिन्ताचव्याकुलः द्विभार्यायोग प्राप्यंते किंवान्यत्रस्त्रीप्रीतया ॥ बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षणः सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति वंशवृद्धिनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस पत्र के ग्रह श्रेष्ठ हैं बड़ी प्रतिष्ठा वाला हो परन्तु यह जीव और इसको स्त्री संतान की चिंता में रहै मान कीर्ति बढ़े लोक में प्रसिद्ध हो सुन्दर स्वरूप मित्रों से प्रीति करने वाला अच्छे वचन बोलने वाला नाना प्रकार के सुख पृथ्वी पर देखे परन्तु गुप्त शोक सन्तान का रहै अकस्मात चित्त पर भय सा रहै बहुत खर्च हो जल से पशु से भय हो या कहीं से गिर कर चोट आवे शत्रु पक्ष से विरोध हो कुल बन्धुओं से विप्रीत हो चिंता क्लेश हो कर फिर अन्त में सुख प्राप्त हो दो कष्ट हों एक में प्राणों का भय हो फिर आयु पूर्ण हो किसी समय में झूंठा दोष लगे इलजाम का भय हो जाय पुत्र होने बहुत कठिन जो होय तो माता और पिता को भारी दुःख देकर बड़े बड़े तरसाव दिखा कर चले जांय ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ शुक्रोवाच ॥ भोतातःकृपोनाथ अहम्दासकुरुदया पूर्वंपापअवक्तव्यम् पुत्रस्वप्नेनपश्यति ॥ भाषा ॥ हे पिता मुझ पर कृपा करके कहो इस जीवने ऐसे कौन से पाप किये हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहै ॥ ॥ भृगुवाच ॥ आदजन्मअगाथायां कथ्यंतेविधिपूर्वकं दीर्घंपापंकुरुजीव श्रुणुपुत्रतिध्यानकं ॥ चित्रगुप्तकुलेजन्म बहुभाग्येप्रधानकं राजद्वारकंन्यायम् उच्चपदवीप्रमाप्तये ॥ द्विजशूद्रउपाधीच लष्टमुष्टप्रहारकं निजकरशूद्रमृत्युच विप्रदोषअसत्यकं ॥ राजद्वारकृतेन्यायं न्यायकर्ताधनजभेत् प्राणदण्डददेत्विप्र मुद्राशूद्र कंलभेत् तातपुत्रमृत्युदश्य न्यायाधीशोश्रापकम् ॥ भाषा ॥ हे पुत्र प्रथम जन्म में यह जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था

म०उ०

२२२

राजद्वार में बड़े औहदे पर था मुकदमे में न्याय किया करता था सो एक शूद्र बूढ़े ने अपने हाथ से अपना अपघात कर लिया उस शूद्र के वारिसों ने ब्राह्मण को फांस लिया और हाकिम को रिश्वत देदी सो न्यायाधीश ने ब्राह्मण के पुत्र को प्राण दण्ड की आज्ञा दी सो ब्राह्मण ने श्राप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों का सुख न देखे ॥

॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजाच किंमंत्रकिंजापकं ब्रह्मश्रापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मन्त्र जाप से पूर्व जन्म का ब्राह्मण का दिया हुवा शाप नष्ट हो और पुत्र होकर जीवें ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या युग्ममुद्राप्रमाणकं ब्रह्मपुत्रलिखेन्मूर्ति गायत्रीमंत्रजापकं ॥ तान्दूलंयथाशक्ति गुप्तमूर्तिप्रवेशकं संकल्पंददेत्विप्र पूर्वश्रापश्चनष्टकं ॥ इदंदानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र स्वर्ण के दो मुद्रा प्रमाण भर के पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति लिखे और चावलों में गुप्त रख कर दान करे ब्राह्मण को दे गायत्री मन्त्र जाप करावे तो निश्चय पूत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मकालइतिषेटा सर्वत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजाया ग्रहसौख्यसुयत्नतः ॥ वाटिकामंद्रयानञ्च विपाकेधन
वर्धनं जीवोसत्यमान्श्रीमान् उपकारीविचक्षणः ॥ मित्रकृत्यघ्नतांयाति बांधवा‌ासुखलघु कवित्वमतिसजातं मिष्टभोज्य
मतिप्रिय ॥ स्वभुजेनधनंप्राप्ते पंडितोनृपपूजितः विरोधञ्चकुटम्बेन शत्रुवःतप्यतसदाः ॥ देवविद्यामहाप्रीति गुणग्राहिभवेन्नरः
अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनवर्धतेगृह नानाचतुस्यदानञ्च धनकीर्तिविवर्धनः ॥ स्वजनेसुखभोक्तव्या धनरत्नानिसञ्चयः देवतागुरु
स०उ० भक्तश्च सौम्यमूर्तिसुखीनरः ॥ दिव्यवस्त्रसदाधारी स्वजातिमानवर्धनं गुप्तचिंताशरीरेच पुत्रसुखनदृश्यते ॥ पत्नीस्वेलितमशुक्रो
२२३ भाग्यवृद्धिचन्यूनता विद्याबुद्धिविशेषेण भृगुणापरिभाषितः ॥ इन्द्रीव्याधिकचित्काले शीघ्रवीर्यखंडनं चंद्रअल्पनसंदेहो प्राणोभय
विनाशनं ॥ युग्मकष्टगतेशुक्र आनंदंभूमिमंडले पशुभयजलंप्राप्त उपरञ्चपपाथयः ॥ सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जीवकी पत्रीमें ऐसे गृहपड़ें सोजीव कन्या पुत्र स्त्रीके सुखका यत्नउपाय करता रहै और इसजीवको रास्तेमेंसे या मंद्रमेंसे धनकीप्राप्ति किसीकालमेंहो सत्यबातको पसंदकरनेवाला परोपकारी मित्रसे बंधुवोंसे किसी समयमें विपरीतताहो और कुछ कविता गानेसुन्नेका भी शौकहो मिष्ट भोजन प्यारालगे अपने पुरुषार्थसे पैदाकरे विद्यावानहो बड़ेआदमीभी आदरकरे शत्रु जलतरहैं गुणग्राहीहो देवविद्यामें प्रीतहो सुन्दरस्वरूप भूमिसेलाभ चौपायेभीहों अच्छे आदमियोंसे लेनदेन ऐश्वर्य पैदाकरे अच्छेवस्त्र पहरे दरिद्रीसा नरहै बिरादरी में इज्जतहो गुप्तचिंता रहै बिनाकारण भी डरता रहै इज्जतका ध्यान रखनेवाला भलेबुरेको परखनेवाला अच्छी शिक्षा देनेवाला हेशुक्र पृथ्वीपर आनन्द कर यहजीव अनेक प्रकारके सुख दुःख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखको भटकता रहै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रचिंताभविष्यति पूर्वजन्मक तात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ हेपिता कौन कर्म इस जीवने पूर्व जन्म में करे हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख न देखें ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रगतेजन्म कथ्यंतेविधिपूर्वकं मैथुलदेश कुलेजन्म अग्रवालोतिश्रेष्ठया ॥ व्यौहानधनप्राप्नोति धनधान्यसमागमः लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् ॥ ऋषीपुत्रजगन्नाथ तीर्थदेवदर्शनम् धनिधनअपणाकृत्वा आगत्वाददेतममः ॥ अग्रवालोधनीपश्चात लाभार्थवशिभूतकं दर्शनपर्शआगत्वा ऋषीपुत्र

स०उ० धनददेत् शृणुवाक्यधनामुख्य ऋषीपुत्रचविह्हल धनचिंताशरीरेच कृश्यदेहदुर्बलम् ॥ तणाकालगतेकाव्य ऋषी त्रमृतंतथा

२२४ मृतकपुत्रलखंतात हाहाकारविह्हलं ॥ ऋषीशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ हेशुक्र प्रथम एक जन्म में ऐक ऋषी का पुत्र जगन्नाथ आदि देवदर्शन करने गया तिस के पास जो कुछ धन था अग्रवाल धनी सेठ तिस के पास धर गया जब दर्शन मे आया तब लोभ के वशिभूत हो कर मुकर गया इसी चिंता में ऋषी के पुत्र ने प्राण दिये तब पुत्र को मृतक देख ऋषी पिता ने धनी को शाप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों के सुख न देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानकस्यपूजाच किंमत्रं किंजापकं ऋषीशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ स्वर्णपत्रलिखेन्मूर्ति ऋषीपुत्रप्रकारकं ताम्रपात्रघृतमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ वस्त्रआभूषणंदानं श्रद्धामात्रप्रमाणकं संकल्पंददेत्विप्र श्रधांतेविधिपूर्वकं (मुख में कहे) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रींबटुकभरवाय आप दुद्धारणाय पूर्वशापनिवार्णार्थं दानमंत्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ बत्रदानकृतेदंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः सर्वसुखमप्राप्नोति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ हे पुत्र यह जीव स्वर्णपत्रपर ऋषी पुत्रकी मूर्ति लिखे घृतभरे तांबेके कलशमें गुप्तरख ब्राह्मणको दान करे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजन्म माननोयप्रतिष्ठता पञ्चमेशोऽपिपूज्यन्ने दानमंत्रव्रतोपिता ॥ विद्याबुद्धिविशेषेण पश्चातो सुखपुत्रकं पूर्वणपप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ पूजादानद्यमंत्रेण पूर्वशापविनश्यति सुतसुखअंतयोशुक्र भृगुणापरिभाषितः ॥ अष्टमेद्वादशेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं युग्मविद्याचअभ्यासं भृगुणापरिभाषितः ॥ धनव्ययशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं तातमात महासुखं जीवनंसुफलंमम: ॥ त्रियोदशेषोडशवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा बहुविद्याचप्राप्नोति पत्नीप्रीतचयुग्मकं ॥ देहकष्टविजानीयात
सं०उ० औषधीप्रतिशांतये गुप्तप्रीतिअन्यजीवो नान्यथावचनंमम: ॥ जीवचिंताचप्राप्नोति अल्पगर्भोपिखंडतः चंद्रनेत्रमितेवर्षे सून्यराम
१२५ मितेतथा ॥ दीर्घलाभनसंदेहो उच्चपदवीचप्राप्तये महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने ॥ तातधनशुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं अचानकंउपद्रोवा ग्रहकष्टमहानकं ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधीप्रतिशांतये चद्रअल्पगतेकाव्य पूर्णआयुनसंशयः ॥ षष्टसप्ताद्धकेवर्षे आनन्दभूमिमंडले सर्वानन्दभोक्तव्यम् पुत्रदुखव्रप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव मध्यम भागवाला प्रतिष्ठा पावेविद्या बुद्धि विशेष हो पञ्चम स्थान के पूजा दान से पुत्रों के सुख देखे पूर्व जन्म के पाप के प्रभाव से संतान का दुख देखे परन्तु पाप निवारण का मन्त्र दान जाप करावे तो अन्त में पुत्र हो कर जीवें और आठवें बारवें सोलवें वर्ष तक विद्या प्राप्ति स्त्री प्राप्ति पता का धन शुभ काम में खर्च हो प्रथम माता पिता को खुशी हो जीवन सुफल माने दे कष्ट हों औषधी से आराम हो दूसरी स्त्री से प्रीत हो परन्तु अल्प गर्भ खंडत हो या बंध्या हो और रोजगार उत्तम हो उच्च पदवी पावे २१, ३० वर्ष तक फिर ऊपर अनेक प्रकार के सुख दुःख देखे आयु पूर्ण हो ७६ वर्ष के लग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भग आनंद देखे परन्तु पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मगतेजन्म पुत्रसुखविनश्यति विधिपूर्वकथंतात श्रृणुत्वं
ममवांछया ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं कुर्मीवंशकुलेजन्म धनधान्यभविष्यति ॥ दाताभोक्ता कृतज्ञश्च
बहूसेवीनरोभवेत् राजमुद्राददेत्कुर्मी लद्द्योवृक्षविनष्यति ॥ कोमलपातलतावृक्षे कोटोपक्षीबासकं जंगलुपवनंबद्धो सत्याजन
उद्यानकं ॥ जीवआनंदभोक्तव्यं सर्वजीवविनष्यति बृक्षडालगृहपक्षी बालोकोटमृतंतथा ॥ पक्षीशापमहादीर्घ पुत्रस्वप्नेनजावितं ॥
स०उ० भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म की कथा इस जीवकी वर्णन करते हैं जो कुछ पाप इस जीवसे बने हैं सो सुनो राजा
२२६ को मुद्रा देकर बड़े भारी बन काटने का ठेका लिया सो वह बन हरा भरा जहां अनगिनत जीव आराम पाते थे और भोजन
फल फूल खाते थे और बृक्षों की डालो में घौंसले बना रखे थे सो बन कई योजन में का था इस धनवान् कुर्मी ने सब बन को
काट कर विध्वंस कर दिया तिस कारण पुत्रों के सुख स्वप्न में भी होने दुर्लभ हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच
किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुक्खश्चप्राप्तये ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं श्रेष्ठविप्रश्चकर्मेष्टि इच्छा
भोजनददेत् स्वर्णश्चदक्षिणांचैव प्रसन्नात्मसंतुष्टयः बहूअन्नंददेत्पक्षी नितप्रतिकीटभोजनम् ॥ मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षप्रमाणकम्
विधिपूर्वअनुष्ठानं पुत्रप्राप्तिचजीवितः ॥ सुतप्राप्तिनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पक्षियों के पाप निमित्त
एक लक्ष गायत्री जपवावे श्रेष्ठ ब्राह्मण कर्मेष्टि बैठावे तिन्हें अच्छे पदार्थ जिमावे स्वर्ण की दक्षिणा दे और बहुत सा अन्न
पक्षियों को जंगल या कोठे पर डाला करे और नित्य प्रति चींटीनाल जिमावे तो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पापग्रहप्रभावेण दीर्घचिंताऽवि
श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभागमभवन मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितेसुमनोरथा ॥ हीनकार्यभवेच्चापि पश्चांतेचिंतनंकृतः ॥
तोभवेत् चित्तश्चचञ्चलोनित्यं लाभविघ्नसमुद्भवः ॥ विलम्बोजायतप्राज्ञ पुनदीर्घधनागमः प्रायश्चितकृतेसंत पुत्रसौख्यनसंशयः लाभकृत्योपि
नारीचिंताहृदेगुप्तः शत्रुमित्रवदाचरेत् जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशयः ॥ दुखसौख्यविशेषतः ॥ दानाबुद्धिमतोप्राज्ञ
सिद्धंति बृहत्वोधनमागमः ॥ सत्यवक्तासुशीलश्च अमन्याक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीच सर्वअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्च
स०उ० विभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्य कामाशक्तोण्गिुप्तता ॥ दानमन्त्रजपंपुण्य सर्वदानन्दसंभवः सुन्दरमृदुवाणीच धनसंयुक्तकौशलः
२२७ सुखावहं ॥ मनेच्छापूजितेचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं इष्टदेवस्यपूजनम् ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जन्मपत्री में
वाणिज्यश्चधनदीर्घ भृगुणापरिभाषितः पुत्रजन्मनसंदेहो अल्पजीवीचमृत्युदा ॥ भाषा ॥ परन्तु पापग्रहोंके प्रभाव करके
ऐसे गृह आनकर पड़ें सोमध्यम दशाभी देखेहै और श्रेष्ठदशाभी देखेहैं मनकी इच्छा सब पूर्ण होय पछतावे स्त्रीको गुप्तचिंतारहै
दीर्घचिंता होय लाभमें विघ्नआवे लाभ होता २ रुक जावे फिर बहुतसे धनका आगमनहो हीनकार्यकरके पछतावे स्त्रीको गुप्तचिंतारहै
और जीवको चिताक्लेश बनीरहै हेशुक्र पूर्व पापका प्रायश्चित करनेसे पुत्रोंका सुख देखे और यहजीव झूंठीवार्ता सुनकर क्रोधित
हुवाकरे सत्यमे प्रसन्नरहे साहसी पुरुषार्थी दानीसुकर्मी बुद्धिमान् कभी बुद्धिभ्रमसी होजावे अकलसे नवीन बात निकाले मनुष्य भला
कहैं कई अलाआवें नयाजन्महो फिर आयु पूर्णभोगे हेशुक्र पृथ्वीपे यहजीव अनेकतरहके आनन्ददेखे परन्तुपुत्रके सुखसे रहितरहै
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से कर्म इस जीव से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी पूर्व जन्ममें बने हैं जो वंशकी वृद्धि नहो और पुत्रोंके क्लेश देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मनिपापार्थं श्रुणुपुत्रति ध्यानक ग्वालवंशकुलेजन्म कृषीकर्मग्रहीरक ॥ मिष्टान्नेत्रञ्चउत्पत्ति गुड़खड़वाचभासये चंद्रदिवसोपिहोतव्यं दीर्घपापंचभागिकं ॥ अग्निमन्द्रमहाज्वाला लोहपात्ररसाधिक युग्मसर्पमहान्दोर्घं भाविवशप्रवेशकं ॥ विषयरोरसाबूडं गुडमिष्टान्नमेलनं ग्वालवंशोच लोभार्थं मेलिकाकत्यविक्रय ॥ बहुजावगुडोभक्ष प्राणोचगवनंतथा दीर्घपापप्रभावेण वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ अतिक्लेशमहादुक्खं

स०उ० पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पूर्व जन्म में ग्वाल वंशी अहीर था और खेतो का कृत्य करे था ईख बहुत

२२८ बोवेथा मिष्टान बनाता था सो कोल्हू में भट्टी पर रस पक रहा था भावी के वश दो सर्प बड़े २ मोटे जहरीले वषियर कड़ह में आन पड़े सो गिरतेहो मृत्यु हो गई तो इस ग्वाल वंशी ने सब होतव्य अपनी दृष्टी से देखा परन्तु उस रस का त्यागन लोभ वश नहीं किया मरे हुवे सर्पों को निकाल कर फेंक दिया और उस कड़ाह के पाक का गुड़ बनवा कर बेचा वो गुड़ जिस जीव ने खाया वही मृत्यु का प्राप्त हुवा सो बड़े पाप का भागी है इस कारण वंश की वृद्धि नहीं होती और पुत्रों को मटके है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानकस्यपूजाच किमत्रंकिंजापकं पूर्वपापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धमात्रमाणक युग्मसर्पलिखेन्मूर्ति गायत्रीमन्त्रजापकं ॥ यज्ञहवनञ्चदानञ्च कुर्वंतिविधिपूर्वकं संकल्पंददेत्विप्र सहितोवस्त्रभूषणं ॥ दानमन्त्रकृतेसत पूर्वपापञ्चशांतये पुत्रसुखनसंदेहो वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव श्रद्धामोत्र स्वर्ण पर दो सर्पोंकी मूर्ति बनावे और वस्त्र भूषण सहित विधिपूर्वक कर्मेष्टि ब्राह्मणको दानकरे और हवन करे तो अवश्य पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एषग्रहस्थितपत्री बहुविद्याचप्राप्तये बलान्वितःविलासोच विमलःसर्वकार्यकृत ॥ मतिमानचारुशीलश्च
भृगुणापरिभाषितः जन्मश्रेष्ठकुलेयातो बहुभागीचलोकमा परोपकारकर्ताच चित्तचिंताचगुप्तता मित्रपक्षमहाप्रीति सर्वसुखंचप्राप्तये ॥
साहसासन्मानीश्च दीर्घव्ययनसंशयः श्रेष्ठशिक्षाददेतिमत्रं सूरवीरोपराक्रमः ॥ युग्मअल्पमहापीडा नवीनोजन्मप्राप्तये जलग्नि
भयजीव वृथाचिन्होतिदृष्यते ॥ कस्मिनकालउपद्रोवा गुप्तचिंताभविष्यति लाभप्राप्तिविशेषेण अतितेजोप्रतिष्ठया ॥ स्त्रीप्रीति
स०उ० नसंदेहो आराक्तंचित्तगुप्तत नवीनोमन्द्रकंरचना अभभयभृगुसनमः ॥ सर्वसुखचप्राप्नोति पुत्रदुखनसंशयः पत्नीक्लेशमहार्विता
२२६ वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जिस जीव की पत्री में ऐसे गृह आन के पड़े हैं सो भागवान् विद्यावान् सूरवीर श्रेष्ठ कार्य
करने वाला परोपकारी पहली अवस्था से अन्त में सुख विशेष खर्च विशेष रहै श्रेष्ठ शिक्षा देने वाला इज्जत पैदा करे जल
अग्नि भय होय किसी काल में उपद्रव हो फिर शांत हो दो अल्प भुगत कर आयू पूर्ण हो स्त्री से मित्र से प्रीत नई २ लाभ
की वार्ता सोचा करे पुत्रों का दुख देखे स्त्री को क्लेश रहे सब सुख हों परन्तु पाप के कारण पुत्रों का दुख हो ॥
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन वंशवृद्धिनदृश्यते त्रासपुत्रअभोक्तव्यं पत्नीक्लेशोपिदीर्घता ॥ पूर्वगाथाइदंजीव श्रुणुत्वंममवांछया
केनपापप्रभावेण सुतानन्दनदृश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्र ज कहते हैं हेपिता कौन से पाप कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में
किये हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः आद्यजन्मांतरंगाथा
कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ ग्वालवंशसमुत्पन्न बहुसेवानरोभवेत अश्वपतिगजग्रामाव तेजस्वीप्रतिष्ठवान् ॥ अरजुनधेनुविख्यातो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

शिवपुरग्रामवासकम् बहुदानीप्रधानजीव आनन्दभूमिमंडले ॥ हस्तिस्थापितेयात्रा स्नानेहरिद्वारकम् रविग्रास्तानिशामार्गे
अन्धकारोपिगच्छति ॥ कुमार्गोगवनंकत्वा अन्यपुर्षापिवर्जयेत् पशुसर्पइदंमार्गे पगडंडीनगच्छति ॥ यात्रीमंदश्रु सुशब्द
अंगिकारनकृत्ययथा सर्पंचसहितपुत्रो गजचर्णोपिमृत्युदा ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मअपुत्रवान् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा
हेपुत्र प्रथम एक जन्म में यह जीव ग्वाल वंश था हरिद्वार गङ्गा स्नान करने जाता था सो रात्रि के समय अन्य मनुष्यों ने
भ०उ० मना किया कि इस रास्ते में सर्प बहुत पड़े रहते हैं रात्री में मत जाओ सो यह न माना बहुत से सर्प आदि जीवों का विध्वंस
२३० हुवा तो पाप का भागी हुवा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकम् सर्पशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥
भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौनसे दान मंत्रसे पुत्रों के सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकम्
मृत्युसर्पलिखेन्मूर्ति रक्तचन्दनकारकम् ॥ गंगाजलेनसंशुद्धो धूपीदपंचचन्दनम् बीजमन्त्रश्चगायत्री लिपिकृत्वाविधिपूर्वकम् ॥
दीर्घवस्त्रकृतेदानं मन्त्रश्रद्धाप्रमाणकम् ताम्रकुम्भघृतमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकम् ॥ अन्नवस्त्रददेद्दानं जापंचविधिपूर्वकम् मंत्रसन्तान
गोपालं चन्द्रलक्षप्रमाणम् ॥ देवकीसुतगोविंद दूसरामन्त्र उच्चारण करे ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय
पूर्वशापनिवारणार्थं दानमन्त्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ मन्त्रदानकृतेसन्त निश्चयपुत्रजीवितं पूर्वशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं स्वर्ण पत्र पर सर्पों की मूर्ति बनाय गंगाजल से शुद्ध कर विधिपूर्वक दान करे ऊपर लिखा मन्त्र पढ़ता
जाय और एक लक्ष सन्तान गोपालका मन्त्र विद्वान् पंडित से जपवावें तो निश्चय पुत्र होकर जीवें इसमें कुछ संशय नहीं है ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स०उ० २३१

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वग्रहस्थित्वा कुण्डलीस्यफलस्त्विदं मनेच्छापूजितेलोके विलम्बोनात्रसंशयः ॥ युवावस्था यदाप्राप्य भाग्योदयविशेषतः द्रव्यलाभंभवेच्चापि स्वकृत्यकुशलोगुणी ॥ बहुकार्यरतोनित्यं सुमित्रलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् माननीयोविशेषतः ॥ यदोज्ञात्वामहदुखं पुनसंतोषश्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितं नतुष्यतिकदाचनः ॥ गोवौप्रापिवर्णाश्च बुद्धि वानोविशेषतः द्विभार्यागेहेप्राप्नोति अथवामंगलंत्यजेत ॥ सत्यमार्गसुकृत्यश्च स्वकुलेपोषणोरतः प्रतिष्टावर्धतेलोके भूमिलाभ नसंशयः ॥ श्रेष्टकृत्यविजानियां गुप्तचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंता देहपीडाचगुप्तता ॥ अकस्मातमहादुखं भयभीतोचप्राप्तक शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेपराजयम् ॥ प्रदेशोगवनंकृत्वा नान्यथावचनंमम शुभकार्येधनव्ययं अर्थप्राप्तिभविष्यति ॥ सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रशोकनसंशयः ॥ भाषा ॥ हेशुक्र इस जीव की पत्री में श्रेष्ट ग्रह पड़े हैं परन्तु फल देर से करेंगे अन्त अच्छा हो अच्छे लाभ के काम करे राजद्वार से लाभ हो बहुतों का काम निकले गुप्त प्रीत रहै दूसरी स्त्री भी प्यार करे सूरवीर किसी के छल में न आवे सगाई हो के छूटे या द्विभार्या योग हो सत्य बोलने वाला दूसरे की बात को तोले बड़े बड़े मामले देखे स्त्री पुत्रों का क्लेश चिंता रहै सब सुख देखे परन्तु पूर्ण पाप के प्रभाव से पुत्रों के शोक देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता कौनसे ऐसे कर्म इस जीवने पूर्वजन्म में करे हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं यवनवंशकुलेजन्म षटकर्माविवर्जयेत् ॥ पशुअंडश्चभोजनाय बहुजीवविनाशनं नित्यउपवनंगत्वा पक्षोजालभक्षणं ॥ सहस्रोजीवश्चापार्थं पुत्रसुखविनश्यति ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव एक पूर्व जन्म में यवन वंश में उत्पन्न हुवा था सो अपने षटकर्म से रहित रहा और नित्य
प्रति बागों में जाकर सैकड़ों पक्षियों के अंडे लाकर के भक्षण किया करता था और वड़ा धनवान् था बाग जमीन अनेक
तरह की सवारी थी परन्तु षटकर्म से रहित था और अपने आनन्द भोगे था सो सैंकड़ों पक्षियोंका शाप लगा हुवा है ॥
शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान
 मन्त्र जाप कराने से इस जीव को पूर्व का दियो हुवा शाप नष्ट हो जो पुत्र के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥
 भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या चन्द्रलक्षप्रमाणकी गायत्रीमूलमन्त्रस्य रक्तचन्दनप्रलिखेत ॥ पक्षीनालकप्रकारम् लिख्यतेविधि
पूर्वकम् षटरसप्रादिसामग्री संकल्पम्ब्राह्मणंददेत ॥ गायत्रीमूलमंत्रस्य चंद्रलक्षप्रमाणकं मन्त्रसन्तानगोपालम् श्रेष्ठविप्रजपंतथा ॥
दान करते समय श्रद्धा और भक्ति पूर्वक विष्णुभगवान् का ध्यान करे और सुख से यह मन्त्र उच्चारण करता जाय ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायण विष्णुभगवान् पूर्वशापनिवार्णार्थं पुत्रसुखनिमित्यर्थं दान मन्त्र जाप करूं हूं सो ग्रहण करो ॥
मंत्रदानकृतेसन्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशय वंशवृद्धिभविष्यति भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक स्वर्ण का पत्र एक
मुद्रा प्रमाण बनवावे और उसके ऊपर गङ्गा जल मिश्रित लाल चन्दन में मूल मन्त्र लिखे और पक्षियों का आकार बनवा कर
और षटरस आदिका संकल्प करा कर श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मण को दे और मन्त्र सन्तान गोपाल और गायत्री मन्त्र लक्ष प्रमाण
जपवावे हवन यज्ञ करेतो निश्चय पुत्र होकर जीवें और धन संतानकी वृद्धिहो और जीवन सुफल माने हर प्रकारके आनंद हों ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रइस्थित्वा बहुभागीचबालकः साहसोचप्रतापीच विनीतश्चतुरोगुणी ॥ मंत्रतंत्रविजानीयात
शिवभक्तिचमध्यमा दृष्टीन्यूनविजानीयात नेत्रपाडानसंशयः ॥ अंगरोगकचित्काले औषधिप्रतिशांतये मित्रश्रेष्टमहाप्रीति
नवीनोवार्तयाचितः ॥ अल्पकष्टभयंशुक्र नवीनोजन्मप्राप्तये मिष्टवाक्यप्रियवाणी धनचितानसंशयः ॥ महत्प्राप्तिमहोत्साहो
भाग्योदयदिनेदिने कटुवाक्यउपाधीच शत्रुपक्षविरोधता ॥ चौरभय विजानीयात गुप्तशत्रुचप्राप्तये राजद्वारप्रतिष्टोवा भूमिलाभ
स०३० भविष्यति ॥ पुत्रचिंताविशेषेण पत्नीशोकबूडनं प्रमेहोव्याधिकंलिष्ट औषधीप्रतिशांतये ॥ कस्मिन्कालेउपद्रोवा शीघ्रोवीर्यखंडतः
२३३ अर्धआयुगतेशुक्र भाग्योदयदिनेदिने ॥ पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस जीव की पत्री
में ग्रह श्रेष्ट हैं इज्जत पावे चतुर बुद्धिमान् मन्त्र यन्त्र का भी कभी शौक हो शिव भक्ति करे मध्यम श्रद्धा से कभी आंख दुखनी
आवें दृष्टि मध्यम सी होवे एक मित्र से प्रीत बनी रहे चित उसकी तरफ विशेष रहे एक कष्ट अल्प समय हो फिर औषधी से
शांति हो श्रेष्टवार्ता बारम्बार सोचे किसी काल में क्रोध विशेष आया करे कैंड़ा बोले शत्रु जला करें मार्ग में या और कहीं
चोर का भय हो स्त्री से प्रीत हो राजद्वार और भूमि से लाभ पुत्रों के दुख देखे स्त्री को औलाद की चिंता रहे अनेक यत्न करे
पूर्व पाप के कारण निष्फल जाय हेपुत्र यह जीव सर्व सुख देखे परन्तु पुत्र सुख न हो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण
पुत्रसुखविनष्यति पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रृणुत्वममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता पहले किसी जन्म में कौन से
पाप इस जीव से बने हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ उपवनंगवनंकृत्वा सन्मुखोसिंहदृष्टयः क्षत्रासिंहवधोवाण द्विजपुत्रचमृत्युदा ॥
चन्द्रपुत्रसुखीविप्र क्षत्री शविनाशनं द्विजदृष्टिकृतेपुत्र हाहाकारविह्वलं ॥ विप्रशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतदुखी ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव एक पूर्व जन्म क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया बड़ा भारी धनवान् था सो एक समय
धनुषबाण लेकर शिकार खेलने गया तहां सिंह दृष्टिमें आयातो क्षत्रांने तीरमारा सिंह तो बच गया एक ब्राह्मणका पुत्र सन्मुखसे
८०३० आवे था सो क्षत्री के बाणों से उसके प्राणों का नाश हुवा तो ब्राह्मण के यह एक ही पुत्र था सो उसका मृतक शरीर देख कर
२३४ हाहाकार कर के विह्वल हुवा और क्षत्री को ब्राह्मण ने शाप दिया कि तू भी सात जन्म तक पुत्रों को भटकता रहेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् विप्रशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान
मन्त्र जाप से पू॑ का दिया हुवा ब्राह्मण का शाप छूटे जो इस जीव को पुत्रों का सुख हो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या
चन्द्रटंकप्रमाणकी तन्मध्येकामवीजञ्च स्वर्णोशुद्धमाद्रशेत ॥ रक्तचन्दनमिश्राणि द्विजमूर्तिश्रकोरकम् चन्द्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्र
जापकं ॥ वस्त्रभोजनंदानं संकल्पंब्राह्मणददेत वज्रदानविनिर्मुक्तो पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ वंशवृद्धिनसंदेहो भाग्योदयदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र एक टंक प्रमाण स्वर्ण का पत्र बनवा कर तिस के ऊपर रक्त चन्दन और
अनार के कलम से द्विज के पुत्र की मूर्ति लिखे और वस्त्र भोजन सहित सब सामग्री संकल्प कर के ब्राह्मण को दे
एक लक्ष गायत्री मन्त्र जपवावे हवन यज्ञ करे ब्राह्मण को दक्षिणा देकर तृप्त करे तो अवश्य पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेद एवंसाकुण्डलीफलं आदौभाग्यश्चमध्योपि पुनरंतेविशेषता ॥ बालवस्थाचक्रीड्यन्ते
विद्याभ्यासेपिमंगलं तातद्रव्यंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवः ॥ भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेनात्रसंशयः वारिभीतोथवावन्हि चतुष्पादेन
पीडितः ॥ उच्चस्थेपतितोभूमौ शरीरोबातपोडिनं बहुविद्यानप्राप्यन्ते कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ बुद्धिं तोविशेषेण सुज्ञाताचसुलक्षणः
युवावस्थासुखंप्राप्य पुत्रसुखविनश्यति ॥ व्ययलाभविशेषेण कीर्तिवंतोप्रतिष्ठत भाग्यवंतोधनाध्यक्ष सुप्रसिद्धंसुखीन्नरः ॥
म०उ० चंद्रमित्रपरंप्रीति सर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्धयोजीव प्राप्यतेशोकसंयुतं ॥ कदाचकष्टरोगार्तो बहुद्रव्यव्ययोभव राजद्वारे
२३५ धनागम्य भूमिलाभस्तथैव च ॥ बरङ्गोसिंधुवच्चितं जायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्य नूतनंजन्ममन्यते ॥ पन तेसुखंप्राप्य
आयुपूर्णभविष्यति पापक्रूरग्रहापुज्यं यकृताभाग्यमन्दता ॥ दानमन्त्रविधानेन मनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्यविशेषेण परकाय
रतोनरः ॥ दयालुसुविचारश्च गीतवाद्यतस्सदा सुन्दरंमृगुवाक्षीच धनसंयुक्तकौशल ॥ सत्यवक्ताप्रतापीच विनितश्चतुरोगुणा
सर्वसुक्खश्चप्राप्नोति पुत्रप्राप्तिउपायकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ हो प्रथम मन्द
भाग हो पश्चात् में विशेष भाग की वृद्धि हो बाल्यावस्था में बालक्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में
खर्च हो बहन भाई का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय हो या कहीं से गिरे विद्या कार्य मात्र हो चतुर दाना युवा वस्था
में बड़े काम और सामने देखे लाभ खर्च बहुत हो प्रतिष्ठा पावे एक मित्र से गुप्त प्रीति विशेष हो उससे मन की बात कहे और
एक जीव का क्लेश बहुत माने कई बीमारियों में खर्च हो राजद्वार तथा भूमि से लाभ हो चित्त में समुद्र क सी नित्य नई तरंग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उठें एक अल्प भारी हो नथा जन्म माने आयु पूर्ण हो हेशुक्र पुर्व जन्मों के कारण पुत्रों के सुख से रहित रहै ॥
शुक्रोवाच ॥ केनपापश्चकर्तव्यं पूर्वजन्मनिकथ्यते विधिपुर्वकथंतात शृणुत्वंममवांछया ॥ सर्वफलश्चप्राप्नोति वामपुत्रश्चविह्वलं
पुत्रप्राप्तिनहश्यंते जन्मतेसुतमृत्युदा ॥ हेपिता इसजीवने पूर्वजन्ममें कौनसेपाप कियेहैं सोकहो ॥ भृगुवाच ॥ ब्रह्मवंशकुलेजन्म
कुरुक्षेत्रचवासयो दीर्घदानश्चग्रहणं यात्रापुत्रविनाशनं ॥ हेशुक्र तुम चित्तदेकर सुनो हम प्रथम जन्मसे पहले जन्मकी कथा वर्णन
म०३० करते हैं क्योंकि शापतो सातजन्म तकभी फलकरेहैं सो यह प्रथमसे प्रथम जन्ममें ब्रह्मकुलमें कुरुक्षेत्रमें पराडाथे इन्होंने बहुत कुछ
२३६ दानलिये परंतु एकदुष्टकी सम्मतिमें ध्यानके एकयात्री जोसाथमें स्त्रीपुत्रकोलिए इनकेस्थानपरठहराथा उसकेपुत्रको स्वर्णकाआभूषण
जड़ाऊ और सच्चेमोतियोंकी माला उतारकर उसके सोतेहुवे पुत्रको कूपमेंडालदिया सोउसयात्रीने अतिदुखीहो वहींतीर्थपर शापदिया
कि जिसने मेरे पुत्रकी यहगतकी उसके सात जन्म तक पुत्रका सुख नहो और दुखित रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपुजाच
किंमंत्रंकिंजापकं यात्रीशापविनिर्मुक्तो सुखसंतानवर्द्धनः ॥ यहकथा सुनकर तिनके पुत्र शुक्रजीने भृगुजीसे प्रार्थना करके पुछा
हेपिता कौनसे दानमंत्रजाप करानेसे इसजीवका शापनष्टहो औरपुत्रोंका सुखदेखे सोवर्णनकरो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा
यात्रीमूर्तिपुत्रकं रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ तीर्थदानददेत्विप्र गायत्री मंत्रजापकं वस्त्रआभूषणसहितं संकल्पश्रेष्ठविप्रयो ॥
इदंदानकृतेजीव पूर्वशापनष्टकं पुत्रसुखनसंदेहो मनवांछितफलप्रदा ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यहजीव स्वर्णपत्रपर यात्री पुत्रको मूर्ति लाल
चंदनसे लिखे गंगाजलसे स्नान कराय तीर्थ पर जाय श्रेष्ठ ब्राह्मणको दानकरे गायत्रीमंत्र जपवावैतो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्ठबलान्वितः फलपूर्णनकर्तव्या त्रिग्रहाअग्रमस्थिता ॥ कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते तेनहानिप्रजायते भौमपुच्छेरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित ॥ विशेषोलाभसंजातं भाग्यवृद्धिर्दिनेदिने मनेच्छापूजितेलोके सर्वतोदिशि मंगलं ॥ अयत्नेनतदाकाव्य मध्यलाभोतिचितया दानमंत्रसुपुण्येन बहुत्वोलाभसंभवा ॥ आनन्दमंगलाचारं जीवहर्षचमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्योप्रतिष्ठत ॥ यदामध्यदशाथाव मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते ॥
ब०उ० क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पजन्मनूतनम् सुयत्नंदानमन्त्रेण सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ पुत्रचिंताभविष्यन्ति पत्नीक्लेशविह्वलं दशाश्रेष्ट
२३७ प्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव ॥ कुवेद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णयुतोजीव सर्वेषांशुभचिंतकः ॥ नकस्याअशुभ चित्य परनिंदाविनिर्मुखः क्वाचिन्हशरीरोपि शत्रुपक्षविरोधता ॥ तथापिसर्वसौख्यश्च सुपुण्यप्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणः पत्नीपुत्रमहाचिंता भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं इस कुण्डली का फल बहुत उत्तम श्रेष्ठ था परन्तु पूरा फल देर से हो तीन ग्रह हानि कारक हैं सूर्य, मंगल और केतु इनका दान मन्त्र उपाय करने से लाभ विशेष हो और भाग्य की वृद्धि होगी और यह जीव बड़ी इज्जत और प्रतिष्ठा पावे परन्तु इतने नोकिस ग्रहों का यत्न न हो मध्यम फल हो और यत्न उपाय करने से अनेक प्रकार के लाभ हों और आनन्द मंगलाचार हों जीव की खुशी हो और यह जीव बड़ी इज्जत कीर्ति पैदा करे मध्यम दशा में मध्यम लाभ और गुप्त चिंता अनेक प्रकार के खर्च एक अल्प से बच कर नया जन्म हो और कहीं से अकस्मात लाभ हो यह जीव सब का भला चाहै एक मित्र से मिल कर लाभ हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

ऊंची पदवी पावे शत्रु उपाय करे घर में क्लेश सा हो फिर मनोकामना पुरी हो हेशुक इस जीव का पञ्चम स्थान पूजनीक है
सब सुख देखे परन्तु बिना उपाय पुत्रों के सुख से रहित्त रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनष्यति पूर्वजन्म
कथाकथ्यं श्रुणुत्वममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता ऐसे कौन से खोटे कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो
पुत्रों के सुख प्राप्त नहीं ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ मृगीपुत्र
विलोकस्य क्षत्रीचापधारणम् दक्षिणोहस्तकंसाघ मृगीपुत्रश्चमृत्युदा ॥ हाहाकारमृगकृत्वा पुत्रशोकोपिबूडनं मृगशापसुखंदत्वा
सप्तजन्मसुतहानकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र पूर्व जन्म की कथा इस जन्म पत्र वाले जीव की तुम सुनो
क्षत्री वंश में पूर्व से पूर्व जन्म में उत्पन्न हुवा सो शिकार खेलने गया तो इसने मृग का बच्चा मारा सो मृग ने दुखी हो शाप
दिया कि सात जन्म तक तुझे पुत्र का सुख नहो और पुत्रों के विलाप देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रं
किंजापकम् पूर्वशापविनष्यंति पुत्रसुखभविश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी महाराज ने कहा हेपिता यह जीव कौन से दान मंत्र और
जाप करावे जो इस जाव को पूर्वका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र होकर जीवें और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥
भृगुवाच ॥ स्वर्णंचप्रतिमाकारः मृगमूर्तिलिपिक्तः ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ श्रद्धामात्रददेद्दानं अर्धरात्रप्रमाणकम् ॥
भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका बनवावे तिसपर मृगकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखे और शुद्ध करके घृतके भरे कलश
में मूर्ति गुप्त प्रवेश कर अर्धरात्रि प्रमाण दान करा कर श्रेष्ठ विप्रको देतो पुत्रका सुख निश्चय हो और मनोकामना पूर्ण होय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्येदंफलंदृश्य यथाभाग्यादिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवआशाविनिर्मुखः ॥ चिंतनंसुस्थिरंलोके
चञ्चलोचित्तविशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चजायते ॥ नूतनंवार्तयाचिंत्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृश्यन्ते
विलम्बोजायतेपुनः ॥ क्लेशरोगेनपाद्यन्ते पुत्रशोकोपिचिंतनं लाभेशोपंचमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता ॥ फलश्रेष्ठसुखंप्राप्य सुपुण्यं
फलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण पुत्रचिंतानसंशयः ॥ बहुकृत्यमहल्लाभं सुजनानन्दवर्द्धन मित्रपक्षपरंप्राप्ति आनन्दभूमिमण्डले ॥
स०३० पितृपीड़ाग्रहगुप्त अकस्माद्भयदायकः पत्नीक्लेशनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः ॥ बंधुक्लेशविरोधश्च चंद्रपीड़ाविशेषतः अकस्मात्
२३६ महाचिंता नान्यथावचनंमम ॥ गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधि तेनसौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं ॥ द्रव्यप्राप्तिविशेषेण
कुलबंधुचहर्षिता मध्यविद्याचप्राप्नोति भाग्यवृद्धिविशेषतः ॥ गुप्तलाभनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने पू शापप्रभावेण पुत्रसुखनदृश्यते ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस पत्र का फल सुनो यह जीव ज्ञानवान् चतुर हो सब का भला चाहै भागवान् हो
प्रसन्न रहै एक जीवकी आस लगी रहै चित्त चलाय मानसा रहै और नई नई बार्ता सोचता रहे गुप्त चिंतासी हो जाया करे नये
नये लाभहों कार्य की सिद्धि में विलम्बसा हो जाया करे और क्लेश पीड़ा होकर आनन्द हो पुत्रकी चिंता लगी रहे लाभेश और
पञ्चमेश को पुजा दान से फल श्रेष्ठ और मनोकामना पूर्ण हो कृत्य में लाभ और मित्रों से प्रीत पृथ्वी पै आनन्द और पितृ
पीड़ा का भय हो स्त्री को क्लेशसा हो किसी समय बन्धु या और शत्रुओं से विवाद हो अकस्मात चिंता हो जाय गायत्री मंत्र
जाप करानेसे मन इच्छा पूर्णहो विद्या मध्यम और चतुर विशेषहो कहींसे गुप्त लाभहो बहुतसी प्राप्तिहो हेशुक्र पूर्वपाप और शाप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के कारण पुत्र का सुख नदेखे ॥ शुक्रोवाच ॥ श्रृणुतातकृपानाथ पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापं पुत्रसुखविनश्यति ॥
भाषा ॥ शुक्रजी ने कहा हेपिता कौन से पाप इस जीवने पूर्वजन्म में किये हैं जो पृथ्वी पर सब सुख देखे और पुत्रों के दर्शनों
को भटकता रहे सो कृपा कर कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते श्रृणुपुत्रोतिध्यानकं ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्मोपिकृत्यया ॥
गौवच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं वच्छोपिप्राणगवनं गौश्चापमुखंददेत ॥ दारुणदुखददेत्विप्र अग्रजन्मसभोक्तया पुत्रसुखविनश्यंति
१०३० सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्म कुल में उत्पन्न हो कर खेती करता
९८० था सो रात्री को गौ और उसका बच्चा खेती में आघुसे तो बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह बछड़ा मृत्यु को प्राप्त हुवा
गौ ने विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे मैंने बछड़ेका दुख देखा तैसे तूभी सातजन्मतक पुत्रों का दुख देखेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा हे पिता कौन से
दान मंत्र जाप कराने से गौ का दिया हुवा शाप नष्ट हो संतान का सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गंगाजल
रक्तचंदनं गौवच्छतियाकारं तांदुलस्थेतगुप्तगा ॥ संकल्पंददेत्विप्रः मुखउच्चार्यमंत्रकं वटुकमंत्रकृतेजापं पूर्वशापविनश्यति ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुकुरु स्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्रस्वर्ण के पत्र परगौ के
बछड़े की मूर्ति रक्तचन्दन और गंगाजल से लिखे चावल का थाल भरकर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी
श्रेष्ठ ब्राह्मण कोदे और ऊपर लिखे मंत्र का श्रद्धा प्रमाण जाप करावे गायत्री मंत्र जपवावे तो पुत्र होकर जीवें मनोकामना पूर्णहो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं यथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्या चितचितातिमन्यते ॥ भ्रमोपिजायतेदीर्घ
ग्रहद्रव्यश्चन्यूनता विद्यावंतोसुबुद्धिश्च सर्वावस्थाप्रतिष्ठतः ॥ सत्यवक्तासुखीलोके नकश्चितहानिचिंतकः परकृत्यरतोप्रेमी जनासर्वे
प्रशंसिता ॥ जीवचिंताविशेषेण मित्रप्रीतिबृहत्वया नूतनोवार्तयाचित्तं उद्यमेणधनाशयः ॥ कुलश्रेष्टसुभार्षीच सर्वेषांतोषणोरत
दशान्यूनमहाचिंता उद्यमेश्रमनिष्फलम् ॥ विलम्बोजायतेलाभम् अर्द्धकृत्यचसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्य पदउच्चमुपस्थितः ॥
१०७० विशेषोजायतेलाभम् मानकीर्तिविवर्द्धनम् पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनः ॥ पापक्रूरगृहापुज्य पञ्चमेशोप्रयत्नतः दानमंत्र
२४१ सुपुण्येन मनेच्छासर्वपूजिता ॥ सर्वावस्थामहल्लाभं भाग्योदयदिनेदिने अतश्चायुमहासुखं भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ सर्वसुखञ्च
प्राप्नोति पुत्रप्राप्तिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी पत्री में गृह श्रेष्ट हैं लाभ खर्च विशेष हो
लाभ के वास्ते नई नई बात का चिंतवन करे एक समय बुद्धि भ्रमसी हो घर में द्रव्य की न्यूनता प्रतीत पड़े विद्यावान्
बुद्धिवान् हो इज्जत प्रतिष्ठा पावे सत्य बोलने वाला गुप्त चिंता सी हो जाया करे पराए काम सुधारने वाला लोग प्रशंसा
करें मित्रसे प्रीत विशेष रहे नई नई बात का ध्यान धन की प्राप्ति का परिश्रम उद्यम करे न्यूनदशा में परिश्रम
निष्फल हो अधूरा लाभ हो एक समय अकस्मात् लाभ विशेष हो उच्च पदवी पावे मान कीर्ति बढ़े स्त्री को पुत्र
के न होने की चिंता लगी रहे और अन्त आयु सुख मिले हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्रों के सुख को भटकता रहे ॥
शुक्रोवाच ॥ श्रुतातकृपानाथम् पूर्वगाथावक्ष्यते केनकर्ममहापापम् पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता कौनसे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के कारण पुत्र का सुख नदेखे ॥ शुक्रोवाच ॥ शृणुतातकृपानाथ पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापं पुत्रसुखविनश्यति ॥
भाषा ॥ शुकजी ने कहा हेपिता कौन से पाप इस जीवने पूर्वजन्म में किये हैं जो पृथ्वी पर सब सुख देखे और पुत्रों के दर्शनों
को भटकता रहे सो कृपा कर कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते शृणुपुत्रोतिध्यानकं ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्मोपिकृत्यया ॥
गौवच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं वच्छोपिप्राणागवनं गौश्रापमुखंददेत ॥ दारुणदुखददेत्विप्र अग्रजन्मश्चभोक्तया पुत्रसुखविनष्यंति
स०उ० सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक पहले जन्म में यह जीव ब्रह्म कुल में उत्पन्न हो कर खेती करता
२८० था सो रात्री को गौ और उसका बच्चा खेती में आघुसे तो बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह बछड़ा मृत्यु को प्राप्त हुवा
गौ ने विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे मैंने बछड़ेका दुख देखा तैसे तूभी सातजन्मतक पुत्रों का दुख देखेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखश्चप्राप्नुये ॥ भाषा ॥ शुक जी ने कहा हे पिता कौन से
दान मंत्र जाप कराने से गौ का दिया हुवा शाप नष्ट हो संतान का सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गंगाजल
रक्तचंदनं गौवच्छतियाकारं तांदुलस्थेतगुप्तया ॥ संकल्पंददेत्विप्रः मुखउच्चार्यमंत्रकं बटुकमंत्रकृतेजापं पूर्वशापविनश्यति ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुरस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुकस्वर्ण के पत्र परगौ के
बछड़े की मूर्ति रक्तचन्दन और गंगाजल से लिखे चावल का थाल भरकर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी
श्रेष्ठ ब्राह्मण कोदे और ऊपर लिखे मंत्र का श्रद्धा प्रमाण जाप करावे गायत्री मंत्र जपवावे तो पत्र होकर जीवें मनोकामना पूर्णहो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं यथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्या चितचिंतातिमन्यते ॥ श्रमोपिजायतेदीर्घ
ग्रहद्रव्यश्चन्यूनता विद्यावंतोसुबुद्धिश्च सर्वावस्थाप्रतिष्ठतः ॥ सत्यवक्तासुखीलोके नकश्चितहानिचिंतकः परकृत्यरतोप्रेमी जनासर्वे
प्रशमिता ॥ जीवचिंताविशेषेण मित्रप्रीतिर्बृहत्वया नूतनोवार्तयाचित्तं उद्यमेणधनासयः ॥ कुलश्रेष्ठसुभाषीच सर्वेषांतोषणेरत
दशान्यूनमहाचिंता उद्यमेश्रमनिष्फलम् ॥ विलम्बोजायतेलाभम् अर्द्धसत्यवसिद्धाति दशाश्रेष्ठपुनःप्राप्य पदउच्चमुपस्थितः ॥
८०७० विशेषोजायतेलाभम् मानकीर्तिविवर्द्धनम् पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनः ॥ पापक्रूरगृहापुज्य पञ्चमेशोप्रयत्नतः दानमंत्र
२४१ सुपुण्येन मनेच्छासर्वपूजिता ॥ सर्वावस्थामहलाभं भाग्योदयदिनेदिने अतश्चायुमहासुखं भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ सर्वसुखञ्च
प्राप्नोति पुत्रप्राप्तिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी पत्री में गृह श्रेष्ट हैं लाभ खर्च विशेष हो
लाभ के वास्ते नई नई बात का चिंतवन करे एक समय बुद्धि भ्रमसी हो घर में द्रव्य की न्यूनता प्रतीत पड़े विद्यावान्
बुद्धिवान् हो इज्जत प्रतिष्टा पावे सत्य बोलने वाला गुप्त चिंता सी हो जाया करे पराए काम सुधारने वाला लोग प्रशंसा
करें मित्रसे प्रीत विशेष रहे नई नई बात का ध्यान धन की प्राप्ति का परिश्रम उद्यम करे न्यूनदशा में परिश्रम
निष्फल हो अधूरा लाभ हो एक समय अकस्मात् लाभ विशेष हो उच्च पदवी पावे मान कीर्ति बढ़े स्त्री को पुत्र
के न होने की चिंता लगी रहे और अन्त आयु सुख मिले हेशुक्र सब सुख हो परन्तु पुत्रों के सुख को भटकता रहै ॥
शुक्रोवाच ॥ श्रुतातातकृपानाथम् पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापम् पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता कौनसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाप इसजीवने पूर्व जन्ममें किये हैं जो पृथ्वीपर सब सुख देखे और पुत्रोंके दर्शनको भटकता रहे सो कृपाकर मुझसे कहो ॥
गोवत्सछत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टमहारकं
भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते शृणुपुत्रतिष्यानकम् ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्म्मासुकृत्यया ॥
पुत्रसुखविनष्यति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥
वत्सोपिप्राणगवनं गौशापमुखंददेत ॥ दारुणदुखददेत्विप्र अत्रजन्मचभोक्तया
सो रात्रीं को गौ और
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक पहले जन्म में यह जीव ब्रह्मकुलमें उत्पन्न होकर खेती करताथा
सं०उ० उसका बच्चा इसकी खेती में आघुसे तो इसने बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह मृत्यु को प्राप्त हुवा तब उस गौने बड़ा
२४२ विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे तैंने मेरे बछड़े को मारा और मैंने बछड़े का दुख देखा तैसे तूभी सात जन्म
तक पुत्रों का दुख देखे ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापविनष्यंति पुत्रसुखचप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुकजी
महाराज ने कहा हेपिता कौन से दान से और कौन से मंत्र जाप पूजा से पूर्व का गौ का दिया हुवा शाप नाश को प्राप्त हो
और यह जीव पुत्रोंका सुख देखे सो विधि पूर्वक कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रोलिपिकृत्वा गङ्गाजलरक्तचंदनं गौवत्सोतिआकारं
तांदुलस्वेतपुष्पया ॥ संकल्पंददेत्विप्रः मुखउच्चार्णमंत्रकम् बटुक त्रकृतेजापम् पूर्वशापविनष्यति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक
भैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुकुरुस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक स्वर्ण के पत्र पर गौके
बछड़े की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और चावल का थाल भर कर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी
श्रेष्ट ब्राह्मण को दे और फिर ऊपर लिखे मन्त्र का श्रद्धा प्रमाण भक्ति पूर्वक जाप करावे तो निश्चय पुत्र हो कर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चे विशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभागीन चित्तचिंताविशेषतः ॥ व्ययलाभविशेषेण
सर्वावस्थासुमोदिता भ्रातृभगिनिनप्राप्नोति अल्पसुखनसंशयः ॥ व्रणाचिन्हशरीरश्च वासुखेदश्चपीडिका कस्मिन्कालउपाधीच
न शुत्रपक्षविरोधता ॥ अकस्मात्उपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरेषु महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभोभवतिनान्यथा ॥ युग्मविद्याचप्राप्नोति
कार्यमान्यसिद्धति मध्यप्राप्तिविजानीयात् व्ययदीर्घोनसंशय ॥ चन्द्रअल्पमहादुक्खं नवीनोजन्मप्राप्तये आयुभोगंचपूर्वोगा
व०७७ भृगुणापरिभाषितः ॥ चन्द्रस्त्रोमहाप्रीति आनंदंभूमिमण्डले सर्वसुखम्प्राप्नोति पुत्रसुखविनश्यति ॥ पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रयोगश्च
२८२ खण्डत मानसीविविधाचिंता भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ पूर्वपापप्रभावेण पूर्णवांछानदृश्यते पितृपीड़ाग्रहमध्ये श्रद्धामात्रश्चपूज्यते ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ है गृह बलवान् पड़े हैं लाभ कारी और खर्च विशेष हो
भग्नी और भ्राता का सुख मध्यम हो श्रेष्ठ दशा में लाभ बहुत हो कीर्ति बढ़े शरीर में व्रण का चिन्ह कभी दर्द पीड़ा हो जाया
करे और मित्र या बन्धु भ्रात से उपाधी हो अकस्मात् उपद्रव सा उठे शत्रुपक्ष से विरोध हो गुप्त चिंता सी हो जाय फिर बहुत
सी प्राप्ति हो और इज्जत प्रतिष्ठा पावे दो विद्या का मध्यम योग हो ऊंचादर्जा पावे लाभ मध्यम हो किसी समय में खर्च विशेष
हो एक अल्प आयु से बच कर उमर पूर्ण हो एक स्त्री से महा प्रीत हो कर एक जीव का रुयाल बना रहे हेशुक सब सुख हो
परन्तु पुत्र की महा चिंता क्लेश स्त्री को रहा करे पूर्व पाप के प्रभाव के कारण पुत्रों का सुख कठिन है पितृ पीड़ा घर में हो गुप्त
बामारी हो अनेक प्रकार की चिंता हो सब सुख प्राप्त हों परन्तु पुत्रों का योग खंडत है पितृ पीड़ा को श्रद्धा मात्र उपाय भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मासेवर्षेसुखंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः सर्वंसुखञ्चप्राप्नोति संततिवंशविनाशकः
करावे परंतु इच्छा पूर्ण विलंब से हो ॥ भृगुवाच ॥
भाषा ॥ सूर्य वंश ऋषी पुत्र भृगुजी महाराज ने कहा हेपुत्र यह जीव सब सुख देखे परन्तु पुत्रों के सुख से क्लेशित रहे ॥
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मंचभोतात पूर्वजन्मनिकथ्यते सर्वंचविस्तराद्ब्रुहि पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजी ने कहा हेपिता
पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म करे हैं जो सब सुख देखे और पुत्रोंके सुखसे रहित रहे सो पूर्व जन्मकी कथा कहो ॥
१०८० भृगुवाच ॥ सूर्यवंशसमुत्पन्न बहुसेवीनरोभवेत अश्वपतिगजग्रामी मानदीर्घोनसंशय ॥ तीर्थयात्रागवनंकृत्वा मार्गेमध्यउपद्रवं
२४४ अश्वश्चजीवइस्थित्वा अर्धरात्रिप्रमाणकम् ॥ ऋषिसुतवाटिकागच्छं अश्वचरणातिमृत्युदा ऋषिपुत्रश्चदृश्यते हाहाकारविव्हलं ॥
क्रोधोशापमुखंदत्वा त्रयजन्मोमतहीनक ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र प्रथम जन्ममें यहजीव सूर्यवंशीथा और बड़ाभागवान्था
हाथी घोड़े ग्रामथे तीर्थयात्रा करने जाताथा रुपयापायके अभिमान बहुत बढ़गया अर्धरात्रीको घोड़ेपर सवार होकर जाताथा रात्री
कासमय कुछ अभिमानमें अंधाहुवा जाताथा सोमार्गमें एक ऋषीका पुत्र खेलताथा उसके ऊपर घोड़ेका चरणआया तुरंत मृत्यु को
प्राप्तहुवा तब ऋषीने देखकर विलाप किया और शाप दिया किजैसेमें पुत्रोंके क्लेशमेंहुवा तैसे तूभी तीन जन्मतक पुत्रोंको भटकेगा॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापप्रणाशंति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दान जापसे शाप
नष्टहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकं ऋषिपुत्रलिखेन्मूर्ति संकल्पंब्राह्मणांददेत ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह
जीव श्रद्धाप्रमाण स्वर्णपत्र बनवाय उसपर ऋषीपुत्र की मूर्ति लिखाय विधिपुर्वक श्रेष्ट ब्राह्मणको दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मपत्रफलंश्रेष्ट मध्ययोगश्चप्राप्तये तेजस्वीचप्रतापोच बुद्धिवानविशेषतः ॥ मध्यलाभनसंदेहो लाभईशपूजनं
दीर्घज्ञानसमायुक्तो सुशोलोजीवदर्शनं ॥ दीर्घआयुसुयत्नेन बृहत्योफलप्राप्नुयात् आदपठनश्चविद्यायां अंते विद्याविसार्जनम ॥
बहूविद्यानप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति कस्मिन्कालेमहापाड़ा औषधिप्रतिशांतये ॥ पशुजलभयजीव नवीनोजन्मप्राप्तये भाग्यवृद्धि
विशेषेण आनन्दंभूमिमण्डले ॥ शत्रुपक्षविरोधीच गुप्तचिंताशरीरजं भ्रातभगिनसमायुक्तो भृगुणापरिभाषितः ॥ तेजस्वीप्रतापीच
६०७० सूरवीरमहानरः पत्नीप्रीतिनसंदेहो बुद्धिचितचलायनं ॥ पुत्रहेतुकृतेयत्न दुर्लभसुतजीवः पत्नीगुप्तमहाक्लेश भृगुणापरिभाषितः
२८५ चौरभीतिविजानीयात् गुप्तशत्रुप्रहारकं धनव्ययविशेषेण अन्तशत्रुविनाशनं ॥ महाप्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्ष
महाप्रीति गुप्तप्रीतिचलोकमा ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदर्शन ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस पत्र का
फल श्रेष्ट है और मध्यम योग है यह जाव इज्जत प्रतिष्ठा वाला ज्ञानवान और सूरवीर, तथा सोच समझ कर बात कहने वाला
मध्यम लाभ हो लाभेश के पूजन से विशेष प्राप्तिहो विद्या कार्य मात्र हो एक समय अल्प से नया जन्म हो पशु या जलका भय
हो शत्रु पक्ष से विरोध गुप्त चिंता हो जाय बहन वा भाई का योग हो घर में कभी क्लेश गुप्त पीड़ा हो पुत्र के वास्ते यत्न करे
परन्तु जीव ने दुर्लभ हों घर में स्त्री सुशील श्रेष्ट खान दान को चतुर हो दूसरी स्त्री से भीं प्रीत हो एक समय गुप्त शत्रु और
चोर का भयहो हानि पहुंचावे परन्तु अन्तमें शत्रु का नाशहो भागकी वृद्धिहो लाभ विशेषहो मित्रोंसे प्रीतहो शुभ काम में धन
खर्चहो भाग्य दिनदिन उदयहोय हेशुक्र यहजीव पूर्व पापके कारण पुत्रोंको भटकता रहे पश्चात्में दान मंत्र उपायसे हो कर जीवें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुकोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मांतरंतात गाथाकथ्यंममप्रति ॥ भाषा ॥ इस जीव ने कौन से
पाप कर्म किये हैं जो यह पुत्रों का सुख न देखे इस जीव के पुर्व जन्म की कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं
पुर्वपापप्रकारणः राजपुत्रकुलेजन्म लक्षाद्धिभुविमण्डले ॥ हरिद्वारगवनंकृत्वा ग्रथवावाहनोदिपः बहुविप्रसहितपुत्रो कावेरीतट
वासकं ॥ वृषभदीर्घ चरंमार्ग द्विजपुत्रमयंवधो मृत्युपुत्रदशाविप्र हाहाकारविव्हल ॥ राजपुत्रददेतशापं ग्रतिक्रोधोपिव्रडनं
पुत्रक्लेशमहाशोक सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हे पुत्र यह जीव एक जन्म में राज पुत्र था सो बड़ा
२४६ ग्रभिमानी था हरिद्वार पे जाय पराई स्त्रियों को खोटा दृष्टीं से दखता था सो रथ में बैठ क गया गङ्गाजा के किनारे बहुत
से ब्राह्मण स्त्री पुत्र सहित बात करते थे सो अंधाधुन्ध रथ भगाया सो एक ब्राह्मण के दो पुत्र बाल ग्रवस्था के रथ के पईये के
नीचे ग्रान कर मृत्यु को प्राप्त हुवे सो ब्राह्मण पुत्रों की मृत्यु देख राज पुत्र को शाप दिया कि तूभी ग्रगले सात जन्म तक
पुत्रों के दुख देखे ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपुजाच किंमन्त्रंकिंजापकम् द्विजशापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हेपिता
यह जीव कौन से दान जाप करावे जो पूर्व जन्म का ब्राह्मणका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो ग्रौर पुत्र पोतेके सुख देखे ॥
भृगुवाच ॥ श्रुणु त्रमहादान वंशवृद्धिचकारयेत स्वर्णपत्रमहाश्रेष्ठ कावेरीजलशुद्धयो ॥ रक्तचंदनमिश्राणि घृतपात्रश्चपुत्रया गायत्री
मंत्रजाप्यंते चंद्रलक्षप्रमाणकं ॥ संकल्प पदेत्विप्र लीनपात्रद्विजोत्तमः वस्त्रग्राभुषणंदानं निश्चयपुत्रप्रातये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक
स्वर्ण पत्रपर रक्त चदनसे ब्राह्मणके दोपुत्रों की मूर्ति लिखे घृतभरे कलश में वेशकर विधिपुर्वक ब्राह्मण को दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नं० २१७४

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगुसंहिता संतान उपाय खंड

समाप्तम्

पं० श्यामभरोसे गंगाशरण ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ शहर ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१) भृगुसंहिता — संतान [illegible] खण्ड (२ प्रति)

महायात्रा प्रत्यक्ष मूकप्रश्न, (२ प्रति)

(२) " " नष्टजंमाग दीपिका (२ प्रति)

(३) " " फलित खण्ड (२ प्रति)

(४) " "

(५) " " [illegible] ज्योतिष (२ प्रति)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu